गुरुवर की धरोहर

(द्वितीय भाग)

ॐ

गुरुवर की धरोहर

(द्वितीय भाग)

परम पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी
द्वारा अभिव्यक्त अमृतवाणी :
प्रवचनों का संकलन

संकलन, संपादन :
डा. प्रणव पण्ड्या, एम.डी.

प्रकाशक :
युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट
गायत्री तपोभूमि, मथुरा
फोन : (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९
मो. ०९९२७०८६२८७, ०९९२७०८६२८९
फैक्स नं०- २५३०२००
पुनरावृत्ति सन् २०१०, **मूल्य : ३३.०० रुपये**

प्राक्कथन

आश्चर्य होता है जब हम परम पूज्य गुरुदेव की लेखनी से निस्सृत संस्कृतनिष्ठ शब्दों को उनकी अमृतवाणी के रूप में सुनते हैं । बहुत विरले होते हैं जो बोलते समय अपने अंदर का लेखक हावी न होने देकर बोधगम्य जन सामान्य की भाषा बोल पाते हों । परम पूज्य गुरुदेव एक ऐसी ही विभूति थे जिनका भाषा व वाणी पर, लेखनी व वक्तृता पर समान अधिकार था । लाखों व्यक्तियों के मन-मस्तिष्क को बदल देने वाली उनकी लेखनी २७०० पुस्तकों के रूप में अभिव्यक्त हुई जो अभी तक प्रकाशित हैं । अभी भी ५०० से अधिक अप्रकाशित ग्रंथ हैं जो समय-समय पर परिजनों के सम्मुख आते रहेंगे । किंतु उनकी वाणी इतनी मुखर व पूरे समय तक श्रोताओं को बाँधे रखने वाली २७०० कैसेट्स में भी बाँधी नहीं जा सकती, इतना कुछ बोला है उस युगदृष्टा ने ।

परिजनों के समक्ष, परम पूज्य गुरुदेव की हम सबके लिए बहुमूल्य धरोहर, उनकी अमृतवाणी को दो भागों में हम प्रकाशित कर रहे हैं । उनकी वाणी से मुखरित ये विचार-कण सीधे हृदय तक उतर जाते हैं, इसीलिए जन-जन यहाँ तक कि छोटे बच्चों के लिए भी यह ग्रंथ उतना ही उपयोगी है । परम वंदनीया माता जी के महाप्रयाण के बाद हम सभी बच्चे शोकाकुल हैं पर हमें अपनी आराध्यसत्ता के आश्वासन पर, उनके शब्द-शब्द पर विश्वास है । इस विराट गायत्री परिवार को एकसूत्र में बाँधने वाली युगदृष्टा की अमृतवाणी प्रस्तुत है जन-जन के समक्ष ।

नववर्ष संवत २०५२ विक्रमी
(१-४-१९९५)

विनीत
संपादक

नवरात्र साधना का तत्वदर्शन

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ बोलिए ।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि
धियो यो नः प्रचोदयात् ।

मित्रो ! नवरात्र अब समाप्त होने जा रही है । आइए जरा विचार करें, इन दिनों हमने क्या किया व किसलिए किया ? इन दो प्रश्नों के उत्तर ठीक तरह से सोच लेंगे तो यह संभावना भी साकार होती चली जाएगी कि इससे हमें क्या मिलना चाहिए व क्या फायदा होना चाहिए ? आपकी सारी गतिविधियों पर हमने दृष्टि डाली व उसमें से यह निष्कर्ष निकालते हैं कि आपको अपने स्वाभाविक ढर्रे में हेर-फेर करना पड़ा है । स्वाभाविक ढर्रा यह था कि आप बहुत देर तक सोए रहते थे । दिन में जब नींद आ गई सो गए, रात्रि देर तक जगते रहे । अब ? अब हमने आपको दबोच दिया है कि सबेरे साढ़े तीन बजे उठना चाहिए । उठना ही पड़ेगा । नहाने का मन नहीं है । नहाना ही पड़ेगा । ये क्या किया ? यह हमने आपको दबोच दिया व पुराने ढर्रे में आमूलचूल हेर-फेर कर दिया है ।

आप क्या खाते थे-हमें क्या मालूम ? आप नीबू का अचार भी खाते थे, पापड़ भी खाते थे, चटनी भी खाते थे, जाने क्या-क्या खाते थे । हमने आपको दबोच दिया, कहा-यह नहीं चल सकता । यह खाना पड़ेगा व अपने पर अंकुश लगाना पड़ेगा । टाइम का आपका कोई ठिकाना नहीं था । जब चाहा तब बैठ गए । मन आया तो पूजा कर ली नहीं आया तो नहीं ही करी । अब आपको व्रत व संकल्प के बंधनों में बाँधकर हमने दबोच दिया कि सत्ताईस माला तो नियमित रूप से करनी ही होंगी । ढाई घंटे तो बैठना ही पड़ेगा । संकल्प लेने के बाद उसे पूरा नहीं करेंगे तो गायत्री माता नाराज होंगी, आपको पाप लगेगा, आप नरक में जाएंगे, अनुष्ठान खंडित हो जाएगा, यह डर आपको दिखाकर आपको दबोच दिया गया । पूर्व की गतिविधियों में हेर-फेर करके आपको इस बात के लिए मजबूर किया गया कि जो आदतें अपने स्वभाव में नहीं हैं, उनका पालन भी करना आना चाहिए ।

क्या नौ दिन मात्र काफी नहीं है ? नहीं, नौ दिन काफी नहीं हैं । यह अभ्यास है सारे जीवन को कैसे जिया जाना चाहिए, उसका । आप इस शिविर में आकर और कुछ सीख पाए कि नहीं पर एक बात अवश्य नोट

करके जाना । क्या ? वह है अध्यात्म की परिभाषा अर्थात 'साइंस ऑफ सोल', अपने आपको सुधारने की विधा, अपने आपको संभालने की विधा, अपने आपको समुन्नत करने की विधा । आपने तो यह समझा है कि अध्यात्म अर्थात देवता को जाल में फँसाने की विधा, देवता की जेब काटने की विधा । आपने यही समझ रखा है न । मैं आपको यकीन दिलाता हूँ कि आप जो सोचते हैं बिल्कुल गलत है । जब तक बेवकूफी से भरी बेकार बातें आप अपने दिमाग में जड़ जमाए बैठे रहेंगे, तब तक आप भटकते ही रहेंगे, झख ही मारते रहेंगे । खाली हाथ मारे-मारे फिरेंगे । आप देवता को समझते क्या हैं ? देवता को कबूतर समझ रखा है जो दाना फैला दिया और चुपके-चुपके कबूतर आने लगे । बहेलिया रास्ते में छिपकर बैठ गया, झटका दिया और कबूतर रूपी देवता फँस गया । दाना फेंकर, चावल फेंककर, नैवेद्य फेंककर, धूपवत्ती फेंककर बहेलिए के तरीके से फँसाना चाहते हैं, उसका कचूमर निकालना चाहते हैं ? इसी का नाम भजन है ? तपश्चर्या, साधना क्या इसी को कहते हैं ? योगाभ्यास का सिद्धांत यही है ? मैं आपसे ही पूछता हूँ, जरा बताइए तो सही ।

आप देवियों को क्या समझते हैं ? हम तो मछली समझते हैं । आटे की गोली बनाकर फेंकी व बगुले की तरह झट उसे निगल लिया । धन्य हैं आप । आपके बराबर दयालु कोई नहीं हो सकता । मछली को पकड़ा तो कहा कि बहनजी आइए जरा । आपको सिंहासन पर बैठाएंगे, आपकी आरती उतारेंगे और आपका जुलूस निकालेंगे । ऐसी-ऐसी बातें करते हैं और जीवन भर इसी प्रवंचना में उलझे रहते हैं । देवियाँ कौन हैं ? मछलियाँ । देवता कौन हैं ? कबूतर । आप कौन हैं ? बहेलिया । यही धंधा है । चुप । बहेलिए का मछली मार धंधा करता है कहता है हम भजन करते हैं, हम देवी के भक्त है । हम आस्तिक हैं । चुप, खबरदार । कभी मत कहना ऐसी बात । इसी को भजन कहते हैं तो हम यह कहेंगे कि यह भजन नहीं हो सकता आप ध्यान रखिएगा । आप अपने ख्यालातों को सही कीजिए, अपने विचारों को सही कीजिए, अपने सोचने के तरीके को बदलिए यह हम आपको कहते हैं ।

मित्रो ! मैं आपसे कह रहा था कि आप एक सिद्धांत यहाँ से नोट करके ले जाना कि अध्यात्म का अर्थ होता है-अपने आपको सही करना-साइंस ऑफ सोल । यह आत्मा को चेताने का विज्ञान है । चमत्कारों, मैजिक व सिद्धियों का विज्ञान नहीं है । सीधा-सादा सा अर्थ है-अपने आपे को कैसे

सही रखा जाए, यह प्रशिक्षण देने की विधा । जब आप अपने आपको सही कर लेते हैं तो यकीन रखिए कि आपकी सभी समस्याओं का हल स्वत: हो जाता है । फिर एक भी समस्या ऐसी नहीं है जो ठीक न हो सके । आपकी सेहत खराब रहती है न । चलिए अध्यात्म का मर्म समझिए व देखिए आप स्वस्थ होते हैं कि नहीं । बीमारियों से हमने एक बार पूछा–क्यों बहनजी ! आप मारी–मारी फिरती हैं, चाहे जिस पर हमला कर देती हैं, चाहे जिसको बीमार कर देती हैं । ये क्या बात है ? बीमारियों ने कहा–जो हमें बुलाता है, हम उसके पास जाते हैं ? मनुष्य अपने असंयम द्वारा हमें हमेशा आवाज देता रहता है, बुलाता रहता है तो हम उसी के साथ बनी रहती हैं । आपने देखा, सुना ? बीमारी कभी कबूतर के पास नहीं जाती, बंदर के पास नहीं जाती सिर्फ आपके पास आती है । क्यों ? क्योंकि आप बुलाते हैं । आप दैवी प्रेकोपों को बुलाएंगे तो वे आएंगे व आप सौभाग्यों को बुलाएंगे तो वे आएंगे । आप कहेंगे नहीं, हम बीमारियों को नहीं बुलाते, दैवी प्रकोपों–दुर्योगों को नहीं बुलाते तो ऐसा ही होगा । पर काम तो वही करते हैं जिससे बीमारी को आना चाहिए व आपके पास सतत बैठे रहना चाहिए । आप अपनी जीभ पर लगाम लगाइए, इंद्रियों पर नियंत्रण कीजिए, टाइम टेबल को ठीक कीजिए, तब देखिए कि क्या होता है, आपको कौन बीमार करता है ?

गाँधी जी तीस साल की उम्र के थे । आँतें सूख गई थीं । रोज एनीमा से दस्त कराते थे । उनने लिखा है कि जब वे दक्षिण अफ्रीका में थे तो सोचते थे कि यही कोई पाँच बरस और जिएंगे । एनीमा सेट कोई उठा ले गया व जंगल में फँस गए तो बेमौत मारे जाएंगे । जिंदगी का अब कोई ठिकाना नहीं है । लेकिन ऐसा नहीं हुआ । गाँधी जी ने अपने आपको ठीक कर लिया, सुधार लिया । अपना आहार ठीक कर लिया तो आँतें भी उसी क्रम से ठीक होती चली गईं । ८० वर्ष की उम्र में वे मरे । मरने से पहले वे कहते थे अभी हम १२० साल तक जिएंगे । मेरा ख्याल है कि वे जरूर जिए होते यदि गोली का शिकार नहीं होते । जब गाँधी जी की आँतें उन्हें क्षमा कर सकती हैं शरीर उन पर दया कर सकता है तो आपके साथ यह क्यों नहीं हो सकता ? शर्त एक ही है कि आप अपनी जीभ को छुट्टल सांड़ की तरीके से न छोड़कर उस पर काबू करना सीखें । जीभ ऐसी, जिसने आपकी सेहत को खा लिया, आपके खून को खा लिया, माँस को खा लिया । कौन जिम्मेदार हैं–जीवाणु, वातावरण । नहीं, आप स्वयं व आपकी यह जीभ । यदि आप इसे काबू में

कर सकें तो मैं बीमारियों की ओर से मुख्तारनामा लिखने को तैयार हूँ कि आपको कभी बीमारी नहीं होने वाली ।

ऐसे कई नमूने मेरे सामने हैं, जिसमें लोगों ने नेचर के कायदों का पालन करके अपनी बीमारी को दूर भगा दिया । चंदगीराम भरी जवानी में तपेदिक के मरीज हो गए थे । कटोरा भर खून रोज कफ के साथ निकलता था । हर डाक्टर ने कह दिया था कि उसके बचने की कोई उम्मीद नहीं है । एक सज्जन आए व बोले, आप अगर मौत को पसंद करते हों तो उस राह चलिए व यदि जिंदगी पसंद हो तो मेरे बताए मार्ग पर चलिए । जिंदगी का रास्ता क्या ? अपने ऊपर संयम, जीभ पर संयम । आहार का संयम, विहार का संमय । शरीर से श्रम कीजिए व वर्जिश कीजिए । प्राणों का सागर चारों तरफ भरा पड़ा है, खींचिए । सादा भोजन कीजिए व सीमा में करिए । फिर देखिए, क्या होता है ? देखते-देखते टी०बी० का रोगी वह व्यक्ति पहलवान चंदगीराम बन गया ।

आप में से हर व्यक्ति पहलवान बन सकता है, अपनी कमजोरियाँ ठीक कर सकता है, अपनी सेहत ठीक कर सकता है, अपनी परिस्थितियाँ अपने अनुकूल बना सकता है, तनाव भरी इस दुनिया में भी प्रसन्नतापूर्वक रह सकता है । पर क्या करें मित्रो ! आप दूसरों को, उसकी कमियों को तो खूब देखते हैं पर अपनी कमियों-गलतियों, असंयमों को कम देखते हैं । अपने आप पर नियंत्रण बिठाने का आपका कोई मन नहीं है । इसीलिए मैं आपको कभी अध्यात्मवादी नहीं कह सकता । मात्र दीन-दुर्बल आदतों का गुलाम भर कह सकता हूँ ।

मित्रो ! मैं आपको इस नवरात्र अनुष्ठान के बारे में बताते हुए मूलभूत सिद्धांतों की समीक्षा कर रहा था । यहाँ हमने आपको दबोचा है, क्यों ? क्योंकि आप अपने सोचने के तरीके से लेकर रहन-सहन, आहार-विहार के तरीकों को जब तक इस गलत प्रकार से अख्तियार किए रहेंगे, सुधार और हेर-फेर नहीं करेंगे तब तक आपकी एक भी समस्या हल नहीं होने वाली । नहीं गुरुजी ! आप तो वरदान-आशीर्वाद देते हैं । सिद्ध पुरुष हैं । हाँ । हम वरदान भी देते हैं व आशीर्वाद भी । लोगों को चमत्कार भी दिखा देते हैं, यह बात भी सही है । पर हम देते उन्हीं को हैं जो अपनी सहायता स्वयं करते हैं, पहले अपने आपको ठीक करने के लिए एक कदम आगे बढ़ाते हैं । चमत्कार तो सिरदर्द के लिए एस्पीरिन की दवा की तरह है । आप ठीक हो

जाते हैं ? नहीं, आप तब तक ठीक नहीं हो सकते, जब तक पेट ठीक नहीं करेंगे । टाइमली रिलीफ हम देते हैं पर ताकत तो ठीक होने की अंदर से उभारनी पड़ेगी । खून हम बाहर का आपको इसलिए लगाते हैं ताकि आपका अपना सिस्टम काम करना आरंभ कर दे । वरदान-चमत्कार किसी को परावलंबी बनाने के लिए नहीं, उसे सहारा देने के लिए ताकि वह अपने पैरों पर खड़ा हो सके ।

नवरात्र अनुष्ठान में यही अध्यात्म के मूलभूत सिद्धांत मैंने आपको समझाने का प्रयास किया कि आप अपने पैरों पर खड़ा होना सीखिए । अपने चिंतन और व्यवहार को सही ढंग से रखना सीखिए । आपकी अब तक की जिंदगी वहमों में बीत गई । अब उनसे मुक्ति पाना सीखिए । अपने आपको दबोचना सीखिए यह नवरात्र अनुष्ठान का तपश्चर्या वाला हिस्सा है, जिससे हमने आपको अपने आप पर नियंत्रण करना सिखाया । यह बताया कि कम खाने से शरीर का कोई नुकसान नहीं बल्कि लाभ ही होता है । इसलिए आपको आदतें बदलकर उपवास करना सिखाया, अस्वाद व्रत समझाया । आध्यात्मिक प्रगति के रास्ते का/यह पहला कदम है ।

आहार संयम के बाद हमने आपको कहा था कि आपको विचारों पर संयम रखना आना चाहिए । आपको ब्रह्मचर्य से रहना चाहिए । गायत्री माता का फोटो आपने रखा था अपने सामने व उसी की आरती रोज करते रहे । क्यों ? कभी सोचा आपने ! मूर्ति क्यों रखी है, सोचा आपने ? बताइए इस चित्र व मूर्ति को देखकर कि इसकी उम्र कितनी होनी चाहिए ? आपने देखा कि वह बीस साल की जवान युवती जैसी है । अस्सी साल की बुढ़िया तो नहीं है ? नहीं गुरुजी, वह तो उठती उम्र की जवान षोडषी दीखती हैं । आपका ख्याल ठीक है । यह हमने जान-बूझकर बनाई है । गायत्री माता की असली उम्र तो न जाने कितनी है ? जब हम अपने गुरुजी की उम्र सात सौ साल बताते हैं तो सोच सकते हैं कि गायत्री माता की उम्र क्या व कितनी होगी । उस उम्र की आप कल्पना भी नहीं कर सकते । सृष्टि जितनी पुरानी है, उससे भी कहीं अधिक आयु की यह गायत्री माता है । फिर १६ साल की यह सुंदर नयन नक्शों वाली युवती क्यों बनाई ! अरे ! हमने आपको विचार करना सिखाया कि युवा नारी के बारे में आपको पवित्र दृष्टि रखते हुए यौन शुचिता का अभ्यास करना चाहिए । आप बेहूदे हैं । नारी को बाहर के तरीके से देखते हैं । नारी में आपको माता, बहन, बेटी नहीं दिखाई पड़ती । आपको

तो सब वेश्या ही वेश्या दिखाई पड़ती हैं । हम आपकी दृष्टि बदलता चाहते हैं । कामुकता प्रधान चिंतन से आपको निकालकर एक नई दृष्टि देना चाहते हैं । यही मानसिक ब्रह्मचर्य है । आपको इसका, मर्यादा का पालन करना चाहिए, यह हमने आपको सिखाया ।

आप कहेंगे गुरुजी हम तो ब्रह्मचारी हैं । एक बार जेल चले गए थे, मारपीट हो गई थी तो हम ढाई वर्ष पत्नी से दूर जेल में रहे । हाँ साहब आप तो पक्के ब्रह्मचारी हो गए । अखंड ब्रह्मचर्य से भारी तेजस्वी आँखों में आशीर्वाद-वरदान की क्षमता आप में आ गई । पागल हैं ना आप । ढेरों आदमी बीमार होते हैं, नपुंसक हो जाते हैं, सब ब्रह्मचारी होते हैं । काहे का ब्रह्मचारी । मित्रो ! ब्रह्मचर्य चिंतन की शैली है । आपके विचारों का प्रतीक है, जो आपके जीवन में एक अंग बन गए हैं । जो संस्कार आपके जन्म-जन्मांतरों से चले आ रहे हैं, उनका एक रूप आपकी कुदृष्टि व विचारों की झलकी के रूप में देखने को मिलता है । किसी जमाने में आप ८४ लाख योनियों में एक कुत्ते भी थे क्या ? हाँ गुरुजी जरूर रहे होंगे । बढ़ते-बढ़ते तभी तो अब आदमी बने हैं । जब कुत्ते रहे होंगे तब आपके सामने माँ-बहन का कोई रिश्ता था ? नहीं साहब हमारी माँ एक बार हमारे सामने आ गई । कुआर का महीना था । माँ और औरत में हम फर्क नहीं कर सके व उससे हमने बच्चे पैदा कर दिए । उस योनि में हमें न बेटी का ख्याल था, न बहन का, न माँ का । बिरादरी तो बिरादरी है । उसमें भला क्या फर्क करना । आप अभी करते हैं क्योंकि आप आदमी हैं । समाज की मर्यादाओं का एक नकाब आपके ऊपर पड़ा हुआ है । यदि यह नकाब ऊपर उठा दिया जाए, आपको नंगा करके देखा जाए तो वस्तुतः आप अभी भी उस बिरादरी में हैं, जिसका मैं जिक्र कर रहा था । बार बार नाम लूँगा तो आपको बुरा लगेगा । लेकिन हैं कि नहीं, छाती पर हाथ रखकर देखिए ।

मित्रो ! हम ये कह रहे थे कि आप गलत सोचने का तरीका अपना बदल लें । रहन-सहन के तरीके बदल लें । जो साधन सामग्री आप के पास है, रुपया-पैसा, चाँदी, जमीन है, अक्ल है, इनका सदुपयोग करना आप सीख लें । आपके कमाने का क्या तरीका है ? मुझे नहीं मालूम । पर आप एक बात का जबाव दीजिए कि आप इन्हें खर्च कैसे करते हैं ? किस आदमी ने कैसे कमाया यह हिसाब मैं नहीं करता । मैं तो अध्यात्म की दृष्टि से विचार करता हूँ कि किस आदमी ने कैसे खर्च किया ? जो कमाया वह खर्च कहाँ हुआ ?

मुझे खर्च का ब्यौरा दीजिए । बस ! अगर आप खर्च अपव्यय में करते हैं गलत कामों में करते हैं, फिजूलखर्ची करते हैं तो मैं आध्यात्मिक दृष्टि से आपको बेईमान कहूँगा । आप कहेंगे, हमारी कमाई है । हाँ आपकी ही कमाई है, पर आप खर्च करते हैं । यह बताइए आपका धन, आपकी अक्ल, आपके साधन, श्रम किन कामों में खर्च होते हैं, इनका ब्यौरा लाइए, उसकी फाइल पेश कीजिए हमारे सामने । आपने बेटे को खैरात में बाँट दिया, ऐय्याशी में उड़ा दिया, जेवर बनवाने में खर्च कर दिया तो हम आपको अध्यात्मवादी कैसे कहें ? खर्च के बारे में भगवान का बड़ा सख्त नियंत्रण है ।

आदमी को हम अध्यात्म का अंकुश लगाते हुए ईश्वरचंद्र विद्यासागर जैसा आदमी जीने को कहते हैं । आपको ५०० रुपये तनख्वाह मिलती है । लेकिन आप उसे औसत नागरिक के नाते खर्च कीजिए । विद्यसागर की तरह ५० रुपयों में अपनी गृहस्थी का गुजारा करें व ४५० रुपयों में अन्यों के लिए, समाज के लिए, दु:खी-अभावग्रस्तों के लिए सुरक्षित करिए । उनके साढ़े चार सौ रुपयों से हजारों विद्यार्थी निहाल हो गए । जो फीस नहीं दे सकते थे, जो कापी नहीं खरीद सकते थे, जिनके पास मिट्टी का तेल नहीं था उनके लिए सारी व्यवस्था विद्यासागर ने अपने यहाँ कर रखी थी । इसे क्या कहते हैं-यह अध्यात्म है । अध्यात्मवादी आप कब होंगे, मैं यह नहीं जानता किंतु जिस दिन अध्यात्मवादी बनने का सिलसिला शुरू हो जाएगा, तब फिर मैं आपको भगवान की शपथ देकर, अपने अनुभव की साक्षी देकर विश्वास दिलाऊँगा कि अध्यात्म के बराबर नगद फल देने वाली चमत्कारी विद्या कोई नहीं हो सकती । लाटरी लगाने, जेब काटने से भी ज्यादा फायदेमंद दूरदर्शिता भरा रास्ता है अध्यात्म का । यह आप समझ गए तो आपका मानसिक कायाकल्प, आध्यात्मिक भावकल्प हो जाएगा व नवरात्र साधना सफल मानी जाएगी ।

इस बीच हमने आप से नित्य अग्निहोत्र करने को कहा, जप का एक अंश अग्निहोत्र कीजिए । आप अग्निहोत्र को एक कर्मकांड मान बैठे हैं । अग्निहोत्र यज्ञ विज्ञान का नाम है । यह एक परंपरा ही नहीं, इसका साइंटिफिक बेस भी है । यज्ञ कहते हैं कुर्बानी को, सेवा को । भूदान यज्ञ, नेत्रदान यज्ञ, सफाई यज्ञ, ज्ञानयज्ञ हजारों तरह के यज्ञ हैं । इन सबका एक ही अर्थ होता है लोक हितार्थाय आहुति देना । यज्ञ कीजिए, पूर्णाहुति दीजिए, पर जन कल्याण का ध्यान रखिए । संस्कृति की रक्षा के लिए, देश और मानवी आदर्शों को जीवंत रखने के लिए अपने पसीने की आहुति दीजिए अपनी ज्ञान

की आहुति दीजिए, उस चीज की भी आहुति दीजिए जिसे आपने दाबकर रखा है अपने बेटे के लिए । मित्रो ! अगर आप ऐय्याशी, फिजूलखर्ची, विलासिता की कुर्बानी देने की हिम्मत दिखा सकें तो यज्ञ सफल है । तब आप असली अध्यात्मवादी होंगे । जिस दिन आप ऐसे बन जाएंगे, तब आप देखेंगे असली चमत्कार । उस दिन आप देखेंगे असली भगवान । तब आपको सुदामा के तरीके से आप के चरणों को धोता हुआ, शबरी के तरीके से आपके दरवाजे पर झूठे बेर खाता हुआ और राजा बलि के तरीके से आपके दरवाजे पर साढ़े तीन गज जमीन माँगता हुआ, गोपियों के दरवाजे पर छाछ माँगता हुआ आपको भगवान दिखाई पड़ेगा ।

आइए ! भगवान ने आपको बुलाया है । जेब खाली कीजिए । बीज के तरीके से गलिए और दरख्त की तरह फलिए । मैंने यही जीवन भर सीखा व आपको भी सिखाना चाहता हूँ । आपको यदि यह समझ में आ गया तो मैं पूरे मन से आशीर्वाद देता हूँ कि जो भी नवरात्र अनुष्ठान के, गायत्री साधना के चमत्कार आपने सुने हैं वह आपके जीवन में फलित हो जाएँ । आप जिस मकसद से आए थे, वह पूरा हो व आप जब भी अनुष्ठान करें समूचा लाभ उठा सकें, इसलिए आपको कुछ बातें मैंने बताईं । भगवान करे आपको यह समझ में आए व आप लाभान्वित हों । हमारी बात समाप्त । ॐ शांतिः शांतिः शांतिः ।

(११ अप्रैल १९८१)

कैसे हो आध्यात्मिक कायाकल्प ?

(भाग-१)

(कल्प साधना सत्र १९८१ के महत्वपूर्ण उद्‌बोधन)

गायत्री मंत्र साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि
धियो यो नः प्रचोदयात् ।

कल्प साधना के लिए आप सभी यहाँ शांतिकुंज आए हैं । कल्प आखिर है क्या ? जिसके लिए हमने आपको यहाँ बुलाया है । कल्प का अर्थ होता है-परिवर्तन । आपको बदलने का हमारा मन है । आप यदि अभी तक दुःखी जीवन जीते रहे हैं तो सुखी जीवन जिएं । आप बीमार जीवन जीते रहे हैं तो स्वस्थ जीवन जिएं । आप यदि गुत्थियों से उलझा हुआ जीवन जीते रहे हैं तो

अब हँसता-हँसाता जीवन जिएं । यदि घिनौना, कमजोर और उपेक्षित जीवन जीते रहे हैं तो अब ऐसा शानदार जीवन जिएं कि जिसको देखकर आपका भी जी बाग-बाग हो जाए और जो कोई बाहर इसे देख पाए, उसकी भी खुशी का ठिकाना न रहे । ऐसा ही आपके जीवन में कायाकल्प करने का हमारा मन था । आपने हमारे विचारों को पढ़ा होगा और उसी से प्रभावित होकर यहाँ आए हैं । आइए अब विचार करें कि यह कैसे संभव होगा ? इसके लिए क्या करना पड़ेगा ? इन सारे प्रश्नों पर गंभीरता से हम और आप विचार करें ।

आमतौर से कल्प साधना के बारे में यह भ्रम फैला हुआ है कि कल्प माने बूढ़े से जवान हो जाना, पर यह एक भ्रांति है । बूढ़े को जवान होना संभव नहीं है क्योंकि यह प्रकृति के नियमों के विरुद्ध है । प्रकृति के नियमों को कोई बदल नहीं सकता । सूर्य पूर्व से निकलता है और पश्चिम में डूबता है । ऐसा हो सकता है कि सूर्य पश्चिम से निकले और पूर्व में डूबा करे । भगवान ने प्रकृति के नियमों को ऐसा बना दिया है कि वे अपने स्थान पर यथावत रहेंगे और जब वे बने थे तब से और जब तक सृष्टि रहेगी, तब तक बने रहेंगे । इसलिए बूढ़े आदमी का जवान होना नामुमकिन है । पुराणों में कथाएं तो हैं, पर मालूम नहीं वे कहाँ तक ठीक हैं । आपने च्यवन ऋषि की बात सुनी होगी जो बूढ़े थे और जवान हो गए थे । आपने राजा ययाति की कहानी भी सुनी होगी कि बेटे की जवानी लेकर वह बूढ़े से जवान हो गए थे । लोगों ने कोशिशें तो की हैं, यूरोप में भी बहुत प्रयत्न हुए हैं-वृद्धों को जवान बनाने के लिए । पर सफलता नहीं मिली । स्टालिन रूस का अधिनायक था । उसको बंदर की ग्रंथियाँ काट-काट कर लगाईं और यह कोशिश की गई कि वह फिर से जवान हो जाए, पर ऐसा नहीं हो सका । प्रकृति से लड़ाई लड़ना नामुमकिन है । किसी को यह आशा नहीं करनी चाहिए कि हमारा बूढ़ा शरीर जवान बन जाएगा, पर हाँ यह आशा हम-आप में से हर व्यक्ति कर सकता है कि कमजोरी और बीमारी जो हमने-आपने बुलाकर रखी है, उसको इन्कार कर दें और यह कह दें कि हम आपको अपने यहाँ रखने की स्थिति में नहीं हैं, कृपा करके आप चली जाइए । इनको हम भगा सकते हैं, क्योंकि ये प्राकृतिक नहीं हैं ।

जीवधारी पैदा होते हैं और मरते भी हैं, पर न कोई बीमार रहता है और न कोई कमजोर रहता है । जब कमजोरी आती है तो मौत के मुँह में चले जाते हैं । भला कमजोर जिंदगी जीना कौन पसंद करेगा और ऐसी जिंदगी कौन पसंद करेगा जो बीमारियों से घिरी हुई हो । कमजोरी और बीमारियों से घिरा

हुआ होना–यह प्रकृति के विरुद्ध है । इसको आप और हम हटा सकते हैं । शरीर के बारे में यहीं तक मुमकिन है और इससे आगे कुछ नहीं हो सकता । शरीर के कायाकल्प से अगर आप का मतलब हो और इसी ख्याल से अगर आप यहाँ आए हों तो कृपा करके यह बात नोट कर लीजिए शरीर के बारे में कि यह जो आपकी उमर है, वह आगे ही बढ़ेगी, पीछे की ओर घटेगी नहीं । जवान को तो बच्चा केसे बना पाएंगे हम ? बच्चे को माँ के पेट में तो कैसे ढकेल पाएंगे ? संभव नहीं है । आपकी उमर तो जरूर बढ़ेगी और आपके शरीर पर जो प्रभाव पड़ेगा, वह सब पड़ना ही चाहिए । लेकिन आपका स्तर बदल जाएगा । आकृति तो ज्यों की त्यों रहेगी, पर प्रकृति बदल जाएगी । प्रकृति को बदलना मुमकिन है । यदि आपकी प्रकृति बदल जाएगी तो परिस्थितियाँ भी बदल जाएंगी । जैसा कि आप सभी जानते हैं कि मन:स्थिति का ही नाम परिस्थिति है । मन:स्थिति अगर आदमी बदल ले तो परिस्थितियों के बदलने में कोई शक नहीं है । बस यही कायाकल्प है । इसी को हम कराना चाहते हैं ।

आपके भीतर वाला माद्दा यदि बदल जाए तो आपके बाहर वाला जरूर बदल जाएगा । मन:स्थिति में हेर-फेर कर लें तो उसके अनुसार परिस्थितियाँ अपने आप बदल जाएंगी । इसलिए कल्प साधना से आपको जो यहाँ अर्थ लेना चाहिए, वह यह लेना चाहिए कि यहाँ जो आपसे कराया जाने वाला है या आपको जो करना है, या हम जो आपसे कराने के लिए दबाव डालेंगे तो सिर्फ इस बात का दबाव डालेंगे कि आपका भीतर वाला हिस्सा–जिसका अर्थ होता है मन, बुद्धि और चित्त, जिसका अर्थ होता है जीवात्मा, जिसका अर्थ होता है आपका दृष्टिकोण, चिंतन और चरित्र–बदल जाए । अगर इसे हम बदल दें तो आप विश्वास रखिए कि आपका जीवन, पिछले दिनों जैसा भी कुछ रहा है, भविष्य में वैसा रह ही नहीं सकता । आपने इतिहास पढ़ा होगा और आपको उन भक्तों के नाम याद होंगे जो पहले सामान्य स्थिति में गए-बीते थे, लेकिन जब उन्होंने मन, स्तर और दृष्टिकोण बदल दिया तो कितना कमाल हो गया । उनकी जिंदगी कैसी शानदार हो गई । अगर उन्होंने भीतर वाले हिस्से को अर्थात दृष्टिकोण को बदला न होता तो बाहर वाली परिस्थितियाँ बिल्कुल मामूली आदमी के तरीके की रही होतीं ।

इस संदर्भ में, मैं आपके सामने कुछ ऐसे आदमियों के नाम रखना चाहता हूँ कि परिवर्तन कैसे होते हैं । शंकराचार्य को आप जानते हैं न ।

शंकराचार्य एक मामूली घर के लड़के थे । उनकी माता यह उम्मीद करती थी कि पढ़ाने के बाद में लड़के की शादी-ब्याह कर देंगे । बाल-बच्चे होंगे, नाती-पोते खिलाएंगे, लेकिन शंकर ने अपना दृष्टिकोण बदल लिया और माँ से इन्कार कर दिया । उन्होंने अपने भावी लक्ष्य और भावी जीवन का एक स्वरूप बना लिया । यह स्वरूप उनका अपना बनाया हुआ था । यह दृष्टिकोण उन्होंने स्वयं बनाया था । कार्य पद्धति उन्होंने स्वयं बनाई । बाद में सहायता दूसरों ने भी की । शुरूआत तो उन्होंने ही किया । शंकराचार्य फिर क्या हुए ? वे शंकर भगवान के अवतार माने जाते हैं । अगर आदि शंकराचार्य ने अपने दृष्टिकोण में हेर-फेर न किया होता तो तब फिर वही होता जो उनकी माँ चाहती थीं । वे एक मामूली पंडित-पुरोहित होते, जन्म-पत्रियाँ बनाते फिरते, पूजा-पाठ कराते फिरते, बाल-बच्चे होते और गए-बीते स्तर के होते । पर जब दृष्टिकोण उन्होंने बदल दिया तो आदि शंकराचार्य हो गए ।

हर आदमी को यह अधिकार मिला हुआ है कि वह चाहे जैसा बन जाए । भगवान ने हर आदमी को इस लायक बनाया है कि वह चाहे तो अपने आपको बदल दे । विवेकानंद की बात आपको मालूम है न । वे एक मामूली से विद्यार्थी थे । खास प्रतिभावानों में उनकी शुमार नहीं होती थी । घर की परिस्थितियाँ भी ऐसी थीं । पिताजी के मरने के बाद घर-गृहस्थी का वजन भी उन पर आ गया था । लेकिन यह सब होते हुए भी उन्होंने यह निश्चय किया कि अपने सोचने के तरीके, अपने दृष्टिकोण और अपने जीवन का लक्ष्य तथा उद्देश्य बदल देंगे । यही उन्होंने किया भी । जब इस बात का फैसला उन्होंने कर लिया तो रामकृष्ण परमहंस के साथ उनकी संगति हो गई । तो क्या रामकृष्ण परमहंस ने उनकी सहायता की ? नहीं, ऐसा मत कहिए । रामकृष्ण परमहंस के लिए सहायता करना मुमकिन रहा होता, तो हजारों आदमी उनके पास आया करते थे और उनसे दीक्षा लेते थे । हजारों आदमी उनके शिष्य कहलाते थे, पर एक भी तो नहीं हुआ । केवल एक आदमी हुआ-विवेकानंद । तो क्या रामकृष्ण की कृपा एक पर ही थी ? नहीं, असलियत यह नहीं है । उनकी सब पर कृपा बरसती थी पर उन्होंने अपने को बदला नहीं, जबकि विवेकानंद ने अपने आपको भीतर से बदल लिया । बदले हुए आदमी की कौन सहायता नहीं करेगा ? आप जिस दिशा में भी आगे बढ़ना चाहते हैं, उसमें सहायता करने वालों की दुनिया में कुछ कमी है क्या ? विवेकानंद की भी सहायता हुई ।

और किसकी सहायता हुई ? सदन का नाम सुना है आपने कि वह कैसा आदमी था । कसाई का धंधा करता था, जानवर काटता था । पवित्र शालिग्राम पत्थर के बदले माँस तौल-तौल कर बेचता था । बेचता ईमानदारी से था । हर आदमी की दृष्टि में उसकी कीमत दो कौड़ी की थी । लेकिन जब उसने आपको बदल लिया, ईश्वरीय सत्ता से तादात्म्य बिठा लिया तो भगवान के 'भक्तों' में सदन कसाई मूर्धन्य हो गए । मन:स्थिति बदल जाने के बाद में परिस्थितियाँ क्यों नहीं बदलेंगी ? पहले जिससे लोग नफरत करते थे, उसी को सब प्रणाम करने लगे । मस्तक झुकाने लगे और न जाने क्या-क्या करने लगे । बाल्मीकि का नाम आपने सुना है न, पहले उसकी कैसी जिंदगी थी । पहले वे घटिया वाली, खराब वाली जिंदगी जी रहे थे । आदमी उससे भयभीत रहता था । हर आदमी का उस पर धिक्कार बरसता था, लेकिन जब उन्होंने अपने आपको बदल लिया तब वह संत बाल्मीकि हो गए, ऋषि बाल्मीकि हो गए । उनका जीवन इतना शानदार हो गया कि भगवान राम को अपनी धर्मपत्नी सीता की हिफाजत के लिए, उनकी गार्जियनशिप के लिए और कोई संत न दिखाई पड़ा । बाल्मीकि ही सीताजी द्वारा सुसंतति उत्पादन हेतु सबसे बड़े संत दिखाई पड़े । उनके आश्रम में भगवान राम ने अपनी पत्नी और बच्चों को सहर्ष रहने दिया ताकि उनका पालन-पोषण, संस्कार और शिक्षण ठीक ढंग से हो सके । वही बाल्मीकि जिनका पूर्व का जीवन दस्यु का था, उनका कायाकल्प हो गया । वे संत, ऋषि, देव पुरुष बन गए । वही कायाकल्प करने के लिए आप लोग यहाँ आए हैं । भीतर वाले को बदल दीजिए, फिर देखिए परिस्थितियाँ बदलती हैं कि नहीं ।

हमने आपके सामने बाल्मीकि का उदारहण पेश किया । अभी मेरा मन कुछ और उदाहरण पेश करने का है । आम्रपाली का नाम सुना होगा आपने । वह एक वेश्या थी जिसको हर आदमी ऐसे समझता था कि हम क्या कहें आपसे । उसने कितने आदमियों की जिंदगी खराब की थी । लेकिन जब उसने अपने आपको बदल दिया, तब फिर आम्रपाली आम्रपाली नहीं रही, वेश्या नहीं रही, वह भगवान बुद्ध की बेटी हो गई । सारे के सारे एशिया के अधिकांश देशों में वह घूमी । महिला संगठन की दृष्टि से उसने न जाने क्या से क्या कर डाला । कैसे हो गया यह सब ? उसने अपने आपको बदल दिया और उसका कायाकल्प हो गया । कायाकल्प कैसे होगा ? यही मैं आपको बताने वाला हूँ, पर पहले आपको यह जान ही लेना चाहिए कि कायाकल्प

भीतर से होता है । बाहरी शरीर के कायाकल्प से कोई मतलब नहीं है । आंतरिक कायाकल्प की विधा प्राचीन काल में भी रही है और अभी भी है तथा आगे भी रहेगी । इसी के लिए हमने आपको बुलाया है ।

ध्रुव का नाम सुना होगा आपने, वह बिलकुल एक सामान्य दर्जे के राजकुमार थे । राजाओं के ढेरों बच्चे होते हैं । एक को गोद में लिया और एक को गोद से उतार दिया । जरा सी परिवार की एक घटना । उससे ध्रुव ने अपने आपको बदल लिया । उन्होंने कहा–राजकुमार रहना नहीं है और यदि रहना ही होगा तो भगवान के राजकुमार क्यों नहीं रहेंगे । बस, भगवान का राजकुमार बनने का फैसला कर लिया उसने । दृढ़ निश्चयी की सहायता करने वाले कम हैं क्या ? नारद जी आ गए और उनने उसकी सहायता की । नारद जी बाकी बच्चों, ध्रुव के भाई-बहनों के पास क्यों नहीं गए ? उनने क्यों नहीं कहा ? नहीं, नारद जी उनसे कह नहीं सकते थे, क्योंकि जो आदमी अपना निश्चय स्वयं करता है उसी की सहायता दूसरे करते हैं । आपने वह कहावत सुनी होगी–'ईश्वर उन्हीं की सहायता करता है जो अपनी सहायता आप करते हैं ।' यह बात बिल्कुल सोलह आने सच है । प्रह्लाद का नाम जानते हैं न, अगर वह अपने दैत्य बाप के कहने पर चला होता और पुरानी परंपरा पर चला होता तो सिवाय दैत्य के क्या हो सकता था ? बाप-दादे जो काम करते थे, वही काम प्रह्लाद भी करता । परंतु प्रह्लाद ने अपने आपको बदल दिया । इसी तरह गुरु नानक का नाम भी आपने सुना होगा । गुरु नानक के पिताजी मामूली सा व्यापार करते थे । वे चाहते थे कि उनका लड़का भी व्यापार करे । व्यापार के लिए एक बार पैसा भी दिया जिसे उन्होंने परमार्थ में खर्च कर डाला । बाप के कहने पर वे चले नहीं, उनकी बातें मानने से इन्कार कर दिया । मित्रों ने, पड़ोसियों ने भी कहा होगा, पर एक का भी कहना उन्होंने नहीं माना । अपने ईमान और भगवान का कहना मानने वाले नानक का क्या हो गया ? देखा है न आपने कि सारे संसार में कितनी इज्जत है उनकी । सिक्ख धर्म में उन्हें भगवान मानते हैं । वे महान बन गए, पर अगर बाप की मर्जी पर चले होते तो पुराने ढर्रे पर ही गाड़ी लुढ़कती रही होती और वे बिल्कुल मामूली से आदमी होते और एक बनिए की दुकान कर रहे होते । ढेरों बच्चे पैदा करके मामूली आदमी के तरीके से जिंदगी बसर कर रहे होते । पर ऐसा नहीं हुआ । नानक का कायाकल्प हो गया । नानक संत हो गए, ऋषि हो गए, भगवान हो गए, अवतार हो गए ।

शिवाजी की भी यही कहानी है । उनके पिताजी मिलिट्री में नौकरी करते थे । वे जैसे मामूली घर-गृहस्थी के बच्चे होते हैं, उसी तरह थे । यदि ढर्रे का जीवन जिया होता और उस ढर्रे से इन्कार न किया होता तथा अपने लिए कोई नया निर्धारण न किया होता या निश्चय न किया होता तो क्या आप विचार कर सकते हैं कि शिवाजी वैसे ही रहे होते जैसे कि हम उन्हें छत्रपति शिवाजी कहते हैं । यह कैसे हुआ ? कायाकल्प हो गया । वह शिवाजी जो माता के पेट में से पैदा हुआ था, घर-गृहस्थी में गुजारा करता था, उसकी तुलना में महापुरुष शिवाजी की रूपरेखा बिल्कुल अलग है । इसी तरह चंद्रगुप्त का नाम आपने सुना होगा । चाणक्य ने उसके अंदर की कसक को देखा और उसे पढ़ लिया । उसकी पात्रता को देखा और उसके भीतर हो रहे मनःस्थिति के बदलाव को देखा । चाणक्य ने उसे क्या से क्या बना दिया । गाँधी जी परिस्थिति से ऐसे ही थे क्या ? उनके पिताजी एक छोटी स्टेट के दीवान थे । वह अपने लड़के को वकील बनाना चाहते थे । गाँधी जी यदि उनके अनुसार चले होते तो एक मामूली वकील रहे होते । सफल या असफल-यह बात दूसरी है । पर सिवाय वकील के और कुछ नहीं हो सकते थे । लेकिन जब उन्होंने यह निश्चय किया कि हमको कुछ बनना है और जिंदगी का बड़ा उद्देश्य पूरा करना है, तो वे फिर महात्मा गाँधी हो गए, अवतार हो गए, बापू हो गए और युग प्रवर्तक हो गए । लाखों आदमियों को दिशा देने वाले हो गए । आखिर यह हुआ कैसे ? भगवान ने कर दिया क्या ? नहीं ! तो फिर भाग्य ने किया क्या ? नहीं ! तो फिर किसी आदमी ने किया होगा । नहीं ! किसी ने भी नहीं किया । उन्होंने स्वयं अपना कायाकल्प कर लिया था । सहायता जरूर औरों ने की । सहायता का तो दुनिया में द्वार खुला है । बुरे लोगों के लिए भी सहायता का द्वार खुला है और अच्छे लोगों के लिए भी खुला है । गाँधी जी के बाबत यही हुआ । बुद्ध के बारे में भी यही बात लागू होती है । बुद्ध भगवान क्या थे ? एक मामूली राजा के लड़के थे । छोटी उम्र में विवाह-शादी कर दी गई थी । लेकिन जब उन्होंने यह निश्चय किया कि हमें बड़प्पन की दिशा में चलना है, कुछ महान कार्य करने हैं, तो बुद्ध का कायाकल्प हो गया और वे भगवान बुद्ध हो गए ।

उपरोक्त पुराने उदाहरण मैंने इसलिए दिए हैं कि आप विचार कर सकें कि हमारा बदलना संभव है । चलिए आपका यह ख्याल हो शायद कि हम तो मामूली आदमी हैं । हमारी घिनौनी और गंदी जिंदगी रही है । जिसके

कारण हम नहीं बदल पाएंगे और जिस ढर्रे पर हम चल रहे हैं, जिस कोल्हू में हम पिल रहे हैं, उसी में हम पिलते रहेंगे तो यह आपकी मर्जी के ऊपर है, अन्यथा मामूली और घिनौने आदमी तो और भी आसानी से बदल सकते हैं । यह आपकी मर्जी के ऊपर है कि आप चाहें तो इस तरीके से भी रह सकते हैं जैसे कि अभी रह रहे हैं । लेकिन अगर आपका मन हो कि हमको बदल जाना चाहिए तो सूरदास का उदाहरण आपके सामने है । सूरदास कैसे आदमी थे ? आप जानते हैं न । बिल्वमंगल का नाम सुना है न आपने । कैसी घिनौनी और कामुक जिंदगी थी उसकी । पर जब कायाकल्प हुआ तो अंधा होने के बाद में भगवान उन्हें अपनी लाठी पकड़ा कर ले जाते थे । तुलसीदास की भी पिछली जिंदगी ऐसी थी कि कामुकता से पीड़ित होकर उन्होंने मुर्दे पर सवार होकर नदी पार की थी । साँप की पूँछ पकड़कर छत पर चढ़ गए और अपनी धर्मपत्नी के पास पहुँचे थे । धर्मपत्नी ने यह कहा था कि जितना प्यार आप हमसे करते हैं, यदि उतना ही प्यार आप भगवान से करें, तो क्या से क्या हो सकता है ? यह बात उनके मन में लग गई और लगने के बाद में उन्होंने अपने आपको बदल दिया । बदला हुआ जीवन तुलसीदास का आप जानते हैं न । रामायण को बनाने वाले उस तुलसीदास को आप जानते हैं जिनके बारे में प्रसिद्ध है कि 'तुलसीदास चंदन घिसें, तिलक देत रघुवीर ।'

भगवान राम तुलसीदास को चंदन लगाते हैं और श्रीकृष्ण भगवान सूरदास को लाठी पकड़ाकर साथ-साथ घूमते हैं । ऐसा हो सकता है क्या ? हाँ हो सकता है और आपके लिए भी हो सकता है, यकीन रखिए । यकीन दिलाने के लिए ही हमने आपको यहाँ बुलाया है कि आप चाहें तो जरूर कर सकते हैं । यह कैसे होगा ? इसमें दो आदमियों के सहयोग की जरूरत पड़ती है, अकेले आप नहीं कर पाएंगे । लेकिन कोई बाहर का आदमी अकेला आपकी सहायता करना चाहे तो वह भी मुमकिन नहीं है । आप प्रयत्न कीजिए हम आपकी सहायता करेंगे । मरीज को दवा खानी होती है और परहेज करना होता है । चिकित्सा करने वाला दूसरा आदमी होता है । हम आपकी चिकित्सा कर सकते हैं, लेकिन परहेज तो आपको ही करना पड़ेगा । दवा तो आपको ही खानी पड़ेगी । आपने देखा होगा कि अंडा किस तरीके से फूटता है । मुर्गी के पेट में से अंडा निकलता है । मुर्गी की दया न हो तो अंडा कहाँ से आए । जन्म लेने से पहले अंडे के भीतर रहने वाले बच्चे को मेहनत करनी पड़ती है और अपनी ताकत के हिसाब से अंडे को भीतर से तोड़ना पड़ता है ।

कोई और तोड़ने नहीं आता । आपने देखा होगा कि जब बच्चा बाहर आता है तो अंडे के भीतर बैठे उस चूजे को मेहनत करनी पड़ती है । अपनी ताकत से वह अंडे में दरार डालता है और फूट कर बाहर निकल पड़ता है । यह मेहनत उसकी अपनी है । अंडे को जन्म मुर्गी देती है, छाती से लगाकर पालती भी है, सेती भी है । यह सब काम मुर्गी का है, लेकिन उस अंडे को तो चूजे को ही तोड़ना पड़ता है । भ्रूण तो माता ने बनाया है । पेट में रहे हुए गर्भ को खुराक माता ने दी है । दूध माता ने ही पिलाया है, लेकिन पेट में से निकलने की ताकत, मेहनत तो पेट में रहने वाले बच्चे को ही करनी पड़ती है । अगर पेट में रहने वाला बच्चा इन्कार कर दे कि हम तो बाहर नहीं निकलते, धक्का-मुक्की नहीं करते, तब फिर 'डिलिवरी' नहीं हो सकती । बाहर निकलने के लिए पूरी की पूरी जिम्मेदारी उस बच्चे के ऊपर है जो पेट में बैठा हुआ है । प्रसव तो माता ही करती है, दर्द तो माता को ही होता है, पर जब तक बच्चे की ताकत, हुकूमत काम नहीं करती, उसके पहले या पीछे उसे जन्म नहीं दे सकती ।

आपको अंडे के तरीके से अपना दायरा तोड़ना पड़ेगा, बच्चे के तरीके से बाहर तो निकलना पड़ेगा । आपको जो करना है, यही करना है कि आपके ऊपर जो केंचुली लगी हुई है, यदि आप उसे उतार देंगे तो आप साँप के तरीके से तोड़ते हुए चले जाएंगे । केंचुली लगा हुआ साँप कहाँ भाग पाता है । लोग पत्थर फेंकते रहते हैं, पर वह वैसे ही बैठा रहता है । केंचुली उतार दी तो न जाने कहाँ से कहाँ जा पहुँचता है । आप अपने पुराने कुसंस्कारों की केंचुली उतार दीजिए और नए रास्ते पर चलिए । पिंजरे से आप बाहर निकलें, पिंजरे से बाहर आपको ही निकलना है । हथकड़ियाँ और बेड़ियाँ तोड़ने के लिए मशक्कत करेंगे तो हम जरूर सहायता करेंगे । आप यकीन रखिए । सहायता करने के लिए ही तो हम बुलाते हैं आपको । हम आपको सहायता का यकीन दिलाते हैं, लेकिन अगर आप यह ख्याल करते हों कि केवल हमारी सहायता से आपकी समस्याएं हल हो जाएंगी, तो यह मुमकिन नहीं है । आप और हम मिलजुल कर कार्य करें । आप हमारा कहना मानें और हम आपके लिए मदद करें । अंधे और पंगे के तरीके से हम लोग मिलजुल कर नदी पार कर लें । तब परिस्थितियाँ भी ऐसी बदल जाएंगी कि मजा आ जाएगा ।

कायाकल्प से हमारा मतलब यही था कि आपके लिए हम सहायता करेंगे कि आप बदल जाएं । आप पर हम दबाव डालेंगे कि जिस तरह की जिंदगी आप जीते रहे हैं, वह मुनासिब नहीं है । आपका जो स्वरूप अब तक

का रहा है, वह आपके लिए मुनासिब स्वरूप नहीं है । हम आप पर दबाव डालने वाले हैं कि आप इस स्वरूप को आगे चलाने से इन्कार कर दें और एक काम करें कि ताकत लगाएं, कोशिश करें, जुर्रत करें, साहस इकट्ठा करें कि हमें अपनी जिंदगी को बदलना है । फिर आप देखिए हम आपकी पूरी-पूरी मदद करेंगे । विवेकानंद की सहायता रामकृष्ण परमहंस ने की थी । हम परमहंस तो नहीं हैं, पर आप यकीन रखिए कि आपकी सहायता हम उतनी ही कर सकते हैं और श्रेष्ठ व्यक्ति बना सकते हैं । आप तैयार हो जाइए । अगर आप तैयार हैं तो आप यकीन रखिए कि आपका जीवन बदल जाएगा और ऐसा शानदार जीवन बन जाएगा कि आप स्वयं तो अपने आप में आश्चर्य करेंगे ही, साथ ही जो कोई भी आपको यहाँ से जाने के बाद देखेगा, वह भी आश्चर्य करेगा । अगर आपको यह दावत स्वीकार हो तो फिर आप तैयार हो जाइए, हिम्मत कीजिए, उसके लिए संघर्ष कीजिए और अनुशासन पालने के लिए तैयार हो जाइए । फिर देखिए आपका भविष्य कैसे शानदार बनता है । कायाकल्प से हमारा उद्देश्य यही था और आपको भी कायाकल्प का यही उद्देश्य समझना चाहिए और अपनी तैयारी के लिए जो मुनासिब हो, वह करने के लिए कमर कसकर खड़े होना चाहिए ।

ॐ शांतिः ।

कैसे हो आध्यात्मिक कायाकल्प ?

(भाग–२)

(कल्प साधना सत्र १९८१ के महत्त्वपूर्ण उद्‌बोधन)

गायत्री मंत्र साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि
धियो यो नः प्रचोदयात् ।

मित्रो, कल्प साधना के संबंध में कल थोड़ी सी जानकारी दी थी कि यह कल्प आखिर है क्या ? यह भी बताया था कि कल्प माने है–परिवर्तन । पर यह परिवर्तन क्या होगा ? कौन करेगा ? कैसे संभव होगा ? आप कुछ सहयोग करेंगे और हम आपकी सहायता करेंगे । कल हमने कहा था कि आपको अपने भीतर के दृष्टिकोण को बदल देना चाहिए । क्रिया भी इसमें सहायक है । इसके लिए आपसे जप करा रहे हैं, अनुष्ठान करा रहे हैं, ध्यान करा रहे हैं । भोजन के बारे में आहार की भी साधना करा रहे हैं । ये क्रियाएं

हैं । इन क्रियाओं का मतलब सिर्फ इतना है कि आप अपने भीतर वाले दृष्टिकोण, चिंतन, चरित्र, स्वभाव, रुचि और आकांक्षाओं को बदल दें । अगर आपने यह अनुमान लगा लिया हो कि केवल क्रिया करने से जादूगरी के तरीके से आपको कहीं आसमान से कोई सिद्धियाँ टपकेंगी, तो आप इस ख्याल को निकाल दीजिए । करना आपको ही पड़ेगा । आपके किए बिना कोई रास्ता नहीं है । आप अगर चुपचाप बैठकर के गुरुजी के आशीर्वाद, सीधे गायत्री माता के आशीर्वाद से बदलना चाहते हों और अपनी परिस्थितियों को सुधारना चाहते हों और स्वयं कष्ट उठाने से इन्कार करते हों तो ख्याल रखिए आपको सफलता मिलने वाली नहीं है । एक महीने का समय भी आपका बेकार चला जाएगा । अच्छा हो आप वास्तविकता को पहले समझ लें, फिर कदम बढ़ाएं ।

कल आपको यह बताया था कि किस तरीके से लोगों ने अपने आपको बदल लिया और मन:स्थिति बदलने के बाद में परिस्थितियाँ किस तरीके से बदल गईं । कायाकल्प का स्वरूप यही है । फिर कायाकल्प में करना क्या पड़ता है ? चलिए इसके लिए एक उदाहरण मैं आपको सुनाऊँगा । वह उदाहरण महामना मालवीय जी का है । महामना मालवीय जी ने एक कायाकल्प किया था । वे भी यही सोचते थे कि शरीर का कायाकल्प होगा । हम कह चुके हैं कि शरीर का कायाकल्प संभव नहीं है, लेकिन मन का कायाकल्प करने के लिए भी प्रक्रिया वही इस्तेमाल करनी पड़ती है जो शरीर के कायाकल्प के लिए कभी की जाती रही होगी । महामना मालवीय जी का कायाकल्प कैसे हुआ था ? मथुरा जिले में कोसी नाम की एक जगह है । उसके पास जंगल में एक महात्मा रहते थे–तपसी बाबा उनका नाम था । उन्होंने मालवीय जी से संपर्क स्थापित किया और कहा कि हम आपका कायाकल्प करा देंगे, आपके बुढ़ापे को जवानी में बदल देंगे । यह प्रक्रिया जिस तरीके से इस्तेमाल की गई, वह आपके लिए बहुत ध्यान देने लायक है और आपके मानसिक कायाकल्प में वह प्रक्रिया जरूर सहायता कर सकती है ।

क्या हुआ था उनका ? उनके तीन काम हुए थे । मालवीय जी को सबसे पहले पंचकर्म करने पड़े थे । पंचकर्म किसे कहते हैं ? पंचकर्म कहते हैं शरीर के संशोधन को । इसमें स्नेहन, स्वेदन, वमन, विरेचन और वस्ति आदि पंचकर्मों के द्वारा शरीर का शोधन किया जाता है । पंचकर्मों में वमन, विरेचन द्वारा आमाशय में जितना भी मल और जहर भरा पड़ा था उसे निकाल

दिया । आँतों में जितना भी जहर भरा पड़ा था उसे उलटी और दस्त कराके बाहर निकाल दिया । यह दो कृत्य हो गए । तीन और रह जाते हैं, जिनमें स्वेदन कहते हैं–पसीना निकलने को अर्थात भाप देकर पसीना निकालना । पसीना इसलिए निकाला गया कि उनके शरीर में जहाँ कहीं भी कोई विषाणु भरे होंगे या संचित मल भरा होगा, उसको निकालने का प्रयत्न किया गया । इसके बाद उन्हें बार-बार छींक दी गई । जुकाम के कीटाणु अथवा मस्तिष्क में जो मल भरे पड़े थे, उनको निकाला गया । इस तरीके से सारे के सारे मलों का संशोधन किया गया । इस तरीके से कल्प का पहला कृत्य, पहला अध्याय मलों का संशोधन है । जिनको भी पूरा न सही अधूरा ही शारीरिक कायाकल्प करना होगा तो पहले मलों का निष्कासन करना पड़ेगा । दूसरा, मालवीय जी को यह करना पड़ा कि चलीस दिन एक झोंपड़ी के भीतर कैद रहना पड़ा । चारों ओर से झोंपड़ी बंद थी, न सूरज की रोशनी जाती थी, न हवा जाती थी, न धूप जाती थी । बस उसके भीतर एकांत कोठरी में चालीस दिन उनको काटने पड़े । उसी में नहाते थे, पूजा-पाठ करते थे । जो कुछ खाना खाते रहे होंगे, वह भी उसी में भेज दिया जाता था । शौचादि क्रिया भी उसी में करते थे । बहरहाल उसमें से निकलना नहीं होता था । टहलना होता तो उसी में टहलते । ठीक इसी तरीके से चालीस दिन उन्होंने काटे ।

अध्यात्म नंबर दो में मैं आपको यह समझाने वाला हूँ कि इन तीनों क्रियाओं का क्या उद्देश्य है और ये तीनों क्रियाएं मनःक्षेत्र का कायाकल्प करने के लिए भी किस तरीके से लागू हो सकती हैं ? दो बातें हो गईं–एक हुआ उनका मल संशोधन और दूसरा हुआ एकांत सेवन । तीसरा एक और पक्ष यह था कि उनको विशेष पदार्थ खिलाए गए । क्या खिलाए गए ? ऐसे पदार्थ खिलाए गए जिससे कि उनके शरीर में नए कोषाणु बने, नया जीवन आए । उनमें गिलोय जैसी टॉनिक टाइप की कुछ चीजें ऐसी थीं जिन्हें एक फ्लास्क में बंद करके रखते थे और सात दिन बाद जब वह तैयार हो जाती थी तो पीस कर उन्हें पिलाते थे जिससे कि कायाकल्प में पुरानी खराबियाँ निकल जाएं और नयी अच्छाइयाँ शुरू हो जाएं । यही कृत्य चालीस दिन तक चलता रहा । चालीस दिन के बाद क्या लाभ हुआ ? ज्यादा तो मुझे नहीं मालूम, पर इतने लाभ तो मालवीय जी ने स्वयं छापे थे कि मेरी स्मरण शक्ति ठीक हो गई है और सफेद बाल काले हो गए हैं । ऐसे कई लाभ उनको हुए थे । ये लाभ कब तक टिके थे, इस बारे में मुझे कुछ नहीं कहना क्योंकि मैंने शारीरिक

कायाकल्प की बाबत कुछ कहा भी नहीं है और कुछ ऐसा कराने की स्थिति में भी मैं नहीं हूँ, लेकिन मानसिक कायाकल्प में भी इन्हीं तीनों सिद्धांतों को बराबर आपको लागू करना पड़ेगा । इससे कम में कुछ काम चलने वाला नहीं है । एक काम आपको यह करना पड़ेगा कि आपके भीतर जो भी संचित मल, आवरण और विक्षेप हैं, जो भी कषाय और कल्मष भरे पड़े हैं, उनकी ओर गौर करना पड़ेगा । न केवल गौर करना पड़ेगा, वरन इन्हें निकालना भी पड़ेगा, जद्दोजेहद करनी पड़ेगी, लड़ना पड़ेगा ।

आपका पिछला जीवन कैसे कुसंस्कारों से भरा पड़ा है और उन कुसंस्कारों को दूर करने के लिए आपको क्या करना चाहिए और यह कैसे संभव है ? हमारी प्रायश्चित पद्धति में बताया जाता है कि आदमी की आध्यात्मिक उन्नति में सबसे बड़ी रुकावट उसके पुराने किए हुए कर्म हैं । पुराने दुष्कर्म पत्थर की तरह से रास्ते में खड़े हो जाते हैं और एक कदम भी आगे बढ़ने नहीं देते, बार-बार रोक देते हैं । क्योंकि उसका भविष्य बुरा होता है, उसको दंड मिलने हैं, इसलिए अच्छे काम की ओर से मन उचाट देते हैं । इसलिए पहला काम हर साधक को अपने आपकी धुलाई के रूप में करना पड़ता है । रंगने से पहले धुलाई करनी पड़ती है । धुलाई अगर नहीं की जाए तो कपड़ा रंगा नहीं जाएगा । इसलिए पहला काम यह करना पड़ता है । कल्प साधना में जो आप आए हैं तो यह कार्यपद्धति आपको समझनी होगी । आपके ऊपर दबाव डाला जाएगा और आप में उत्साह पैदा किया जाएगा कि आपके अंदर पिछले स्वभाव, पिछली गंदी आदतें और पिछली क्रियापद्धति जो जम गई है, उसको आप हटा दीजिए । उसको निकालिए, उसको छोड़िए । उनके विरुद्ध बगावत कीजिए । उनको अस्वीकार कर दीजिए, उनका असहयोग कीजिए और उनका दबाव मानने से इन्कार कर दीजिए । आपको कायाकल्प में यह करने का पहला काम है । आप यह न करेंगे तो कल्प साधना, जिसके रंगीन सपने हमने दिखाए हैं और यह बताया है कि आपका जीवन दैवी जीवन होकर रहेगा और आप अच्छे शानदार आदमी होकर रहेंगे, पूरा हो सकना संभव नहीं है । यह एक काम तो आपको करना ही चाहिए । अगर आप यह नहीं करेंगे और पुराने घिनौने जीवन के ढर्रे पर ही चलते रहेंगे तो फिर हम क्या कर पाएंगे । फिर आपकी पूजा-उपासना क्या कर लेगी ? आपको जप और अनुष्ठान चमत्कार कैसे दिखा पाएंगे ? जादू, चमत्कार जैसा अध्यात्म नहीं है । अध्यात्म तो मानसिक पुरुषार्थ को कहते हैं । मानसिक

पुरुषार्थ का यह एक काम तो आपको करना ही पड़ेगा ।

दूसरा काम एक और आपको यहाँ करना पड़ेगा । उसका अर्थ है–जैसे मालवीय जी को चालीस दिन तक एक कोठरी में एकांत सेवन करना पड़ा था, आपको भी यहाँ चालीस दिन तो नहीं, पर एक महीने भर तक एकांत सेवन करना चाहिए । यह खास बात है । आपको निवास करने के लिए हमने एक कोठरी खासतौर से इसलिए दी है कि आप यह मान कर चलें कि आप एकाकी हैं । आप अकेले रह रहे हैं । इस दुनिया में आप अकेले हैं । अकेले ही आप आए थे और अकेले ही आपको जाना है, चलना है । किसी रास्ते पर हों तो भी आपको अकेले ही चलना है । वही एकांत सेवन है । इसी को कुटी प्रवेश कहते हैं । इसी को गुफा प्रवेश कहते हैं । प्राचीन काल के संत–महात्मा गुफा में घुस जाते थे, कोठरियों में रहते थे, एकांत सेवन करते थे, क्यों ? क्योंकि उनके बाहर का, चारों ओर का जंजाल, जिसने उनको बुरी तरह से चक्रव्यूह में फँसे हुए अभिमन्यु के तरीके से जकड़ लिया है, उसमें से पार हो सकें । उससे अपने आपको अलग अनुभव कर सकें । अपनी समस्याओं का समाधान करने के लिए आपको एकांत चाहिए । एकांत अगर आपको नहीं मिलेगा तो आप विचार तक नहीं कर पाएंगे कि क्या करें ? हमको क्या करना है ? पुरानी चीजों से कैसे आपको छुटकारा पाना है और नई चीजों को कैसे अपनाना है । इन दोनों के लिए एकांत सेवन आपके लिए आवश्यक है । एक महीने का यह एकांत सेवन आपके लिए बहुत महत्वपूर्ण है । आपको रोका गया है कि आप जगह–जगह मत जाइए, घूमिए मत । तीर्थ यात्रा के बहाने यहाँ–वहाँ मटरगश्ती मत कीजिए, यहाँ–वहाँ चक्कर मत काटिए, कहीं मत जाइए । ऋषीकेश मत जाइए । एक महीने भर आपको एक ही जगह रहना है ।

आपको ऐसे रहना चाहिए जैसे कि माता के गर्भ में बच्चा रहता है । कल्पना कीजिए कि आप जिस कोठरी में अथवा गायत्री नगर–शांतिकुंज जिसमें आप निवास करते हैं, यह माताजी का गर्भ है और आप माताजी के गर्भ में पल रहे हैं । आपका नया जन्म हो रहा है । आप अपना कायाकल्प करा रहे हैं । पेट में जो भ्रूण रहता हे, वह चुपचाप बैठा रहता है । गड़बड़ नहीं फैलाता है । जो माता देती रहती है, उसी से अपना गुजारा करता रहता है । माता जिस हैसियत में रखती है, उसी में रहता है । आपको भी इसी हैसियत में रहना चाहिए । आपको यह अनुभव करना चाहिए कि आप यहाँ शांतिकुंज में निवास करते हैं, गायत्री नगर में निवास करते हैं । यह क्या है ? गुरु जी का

बर्तन पकाने का आँवा है । कुम्हार को आप जानते हैं, वह बर्तन बनाता है और बनाने के बाद में कच्चे बर्तनों को पकाता है । इस आँवे में से खिलौने भी निकलते हैं और न जाने क्या-क्या निकलते हैं । आप चाहें तो यह मान सकते हैं कि गुरुजी ने यह आँवा लगाया हुआ है । कहाँ है आँवा ? इस कोठरी में जिसमें कि आप रहते हैं । शांतिकुंज को आप आँवा मानिए । इस आँवे में आपको कैद कर दिया गया है और आपको पकाया जा रहा है । अगर आप एक महीने तक पकते रहेंगे, गड़बड़ नहीं फैलाएंगे, तो मजा आ जाएगा । आप अपने चित्त को इधर-उधर मत ले जाइए । घर वालों को याद मत कीजिए, बाहर वालों की समस्या पर ध्यान मत दीजिए । मन को इधर-उधर भागने मत दीजिए, शरीर को यहाँ-वहाँ भटकने मत दीजिए । यहाँ-वहाँ घूमते रहेंगे तो बताइए फिर काम कैसे बनेगा । कोई बच्चा माँ के पेट में दंगल मचाए कि मम्मी मैं तो अभी नौ महीने पेट में नहीं रह सकता, जरा छुट्टी दे दीजिए मैं बाजार में से घूमकर आऊँ । तब आप समझ सकते हैं कि बच्चे का क्या हाल होगा । इसी तरह से अगर कुम्हार के बर्तन चुपचाप बैठे न रहें और यह कहें कि साहब हम शाम को आ जाया करेंगे पर दिन में तो बाजार में घूमा करेंगे और रात को आँवे में घुस जाया करेंगे । आप ही बताइए, तब बर्तन पकेंगे क्या ? सब बिगड़ जाएगा । इसलिए आप बाहर की चिंता न कीजिए और न मन को बाहर भागने दीजिए ।

तो क्या काम करें ? यही मैं बताने वाला था कि अगर आप तीसरा वाला काम पूरा कर लेते हैं तो समझना चाहिए कि आपके कल्प साधना का उद्देश्य पूरा हो गया और जिस लक्ष्य पर पहुँचने की आप इच्छा करते थे, अथवा जिस लक्ष्य पर हम आपको पहुँचाना चाहते थे, वह निश्चित रूप से सफल हो जाएगा । एक काम और कीजिए कि जिस तरह से मालवीय जी से जो तीसरा काम टॉनिक सेवन का कराया गया था, आपको भी टॉनिक सेवन करना चाहिए । टॉनिक सेवन से क्या मतलब है ? टॉनिक सेवन से मतलब है कि जिन विचारों का आप में अभाव रहा है, उन विचारों को फिर से सेवन करना शुरू कीजिए । टॉनिक तो आपको मिला ही नहीं । इस संदर्भ में आप तो कुपोषण के शिकार रहे हैं अथवा विकृत भोजन करते रहे हैं । इसलिए आपका सारे का सारा मानसिक स्वास्थ्य गड़बड़ा गया है । तब क्या करें ? तब आपको भविष्य में ऐसी विचारधारा के साथ, ऐसे लोगों के साथ, ऐसे लक्ष्य के साथ, ऐसी महान सत्ता के साथ अपने आपको संपर्क में रखना है जो

आपको महान बनाने में समर्थ है ? जो आपको सहारा दे सकती है, ऊँचा उठा सकती है । आप उसके संपर्क में आइए । इस बीच आप भगवान से संपर्क मिलाने की कोशिश कीजिए और लोगों से अपने आपको पीछे हटाइए । थोड़े दिनों के लिए यह मान कर चलिए कि आप और आप का भगवान दो ही हैं । फिर लक्ष्य की प्राप्ति आसान हो जाएगी ।

भगवान किसे कहते हैं ? भगवान सद्‌गुणों के, सत्प्रयासों के, आदर्शों के समुच्चय का नाम है । एक भगवान तो वह है जो सारे विश्व को संभालता है, जिसको हम नियामक सत्ता कह सकते हैं, नियमन-नियंत्रण कह सकते हैं । एक भगवान वह है जो विश्वव्यापी है । विश्वव्यापी भगवान के लिए तो आप उसका कायदा पालन कीजिए और फायदा उठाइए । कायदे को तोड़ेंगे तो मार खाएंगे । वह भगवान तो आदमी के लिए न्याय और नियमन के अलावा दूसरा कुछ करता भी नहीं है । लेकिन जो हमारी व्यक्तिगत सहायता कर सकता है, वह हमारी 'सुपरकांशसनेस' है, हमारी अंतरात्मा है । अंतरात्मा को ही परमात्मा कहते हैं । गुण, कर्म, स्वभाव की विशेषता का नाम परमात्मा है । उसी को सुपरकांशसनेस कहते हैं । आप उसके साथ में अपने आपको जोड़ दीजिए । अभी तक आपका संबंध कुसंस्कारों के साथ, घिनौनेपन के साथ रहा है । घटिया लोगों के साथ रहा है । चारों ओर जो वातावरण छाया हुआ है, वह आपको गिरावट के अलावा और क्या नसीहत देगा । आपने जो स्वभाव सीखा है वह घिनौने जीवन के अलावा क्या सिखा सकता है । आप चारों तरफ से नर-पशुओं से घिरे हैं । आप थोड़े दिनों के लिए इस दायरे से बाहर हो जाइए और बाहर होकर के ऐसे लोगों के साथ रिश्ता बनाइए जिनके समुदाय में जाकर के आपका ऊँचा उठना संभव है । ऋषियों के साथ संबंध बनाइए, संतों के साथ संबंध बनाइए, देवताओं के साथ संबंध बनाइए, भगवान के साथ संबंध मिलाइए ।

ये सब हैं क्या ? बिल्कुल हैं और आपके साथ हैं, आप देख नहीं पा रहे हैं । यहाँ जिस कोठरी में आप रहते हैं, जिस वातावरण में रहते हैं, उसमें चारों ओर संत छाया हुआ है, ऋषि छाया हुआ है और साथ में आदर्श छाए हुए हैं । दृष्टिकोण छाए हुए हैं, प्रेरणाएं छाई हुई हैं और आपको ऊँचा उठाने के लिए जो दिशाधाराएं आवश्यक थीं, छाई हुई हैं । आप इनके साथ अपना संबंध मिलाइए । आप पीछे मुड़ करके मत देखिए, आगे की तरफ विचार कीजिए । आप महानता के साथ में जुड़ जाइए, आदर्शों के साथ में जुड़ जाइए । एक

महीने तक तो आपको यही करना है, अपने आपको साधना में लगाए रखना है, चिंतन-मनन करना है । इसी बीच में आपको जप और अनुष्ठान करना है, योगाभ्यास करना है और अपने आपका परिशोधन करना है । तो क्या हम अकेले कर लेंगे ? नहीं, आप अकेले कहाँ हैं । पीठ पीछे हम जो हैं । हम आपकी जरूर सहायता करेंगे । इम्तहान में पास तो बच्चे ही होते हैं, पढ़ना तो उन्हीं को पड़ता है, स्कूल तो वही जाया करते हैं, पर क्या आप समझते हैं कि बच्चे जब स्कूल जाते हैं तो अपने ही बलबूते पर पास हो जाते हैं ? माता उनके खाने-पीने का प्रबंध करती है, पिता उनकी फीस का इंतजाम करते हैं, मास्टर उनको पढ़ाने में सहायता करते हैं । तीनों ओर की सहायता मिलती है तब कहीं वह हो पाता है कि उनकी पढ़ने की मेहनत और पुरुषार्थ सफल हो जाए । हम आपके लिए सब तीनों इंतजाम कर रहे हैं । माता आपको खुराक देने के लिए तैयार है । आपको ऊँचा उठाने के लिए पिता का जो कर्तव्य था, उसको पूर्ण करने के लिए हम तैयार हैं । गुरु का हम और हमारे गुरु, वह भी इस वातावरण में, जिसमें आप निवास करते हैं, आपकी सहायता के लिए हम तीनों तैयार हैं ।

गुरु के रूप में वह सत्ता जिसके आधार पर शांतिकुंज बनाया गया है और जिसकी आज्ञा से ये कल्प साधना के शिविर लगाए गए हैं, ऐसी परम सत्ता आपको गुरु के तरीके से मार्गदर्शन करने के लिए तैयार है और सहर्ष यहाँ विद्यमान है । आप लोग उसका फायदा उठाइए, वे आपकी सहायता करेंगे । हमको चाहें तो आप वही मान सकते हैं, अभिभावक मान सकते हैं । हमारे पास जो कुछ तप होगा, पुण्य होगा, ज्ञान होग, चरित्र होगा, दबाव होगा, तो आप यकीन रखिए कि हम न केवल आप पर दबाव डालेंगे, सिखावेंगे, वरन उसका एक हिस्सा भी देंगे । बाप भी तो अपने बच्चे को शिक्षा ही थोड़े देता है, सहायता भी देता है । हमारी शिक्षा भी आपको मिलने वाली है । माता जी का भी आपको स्नेह मिलने वाला है, प्यार-दुलार भी मिलने वाला है और अनुदान भी मिलने वाला है । तीन तरफ से आपके ऊपर सौभाग्य की वर्षा होने वाली है । आप कैसे भाग्यवान हैं । आप माता जी का स्नेह यहाँ पा रहे हैं, पिता का अनुशासन और उनका सहयोग प्राप्त कर रहे हैं । आप कैसे भाग्यवान हैं जो एक ऐसे महान गुरु से जो न केवल आपको, वरन आप जैसे लाखों व्यक्तियों को, न केवल लाखों व्यक्तियों को, बल्कि सारे जमाने को और सारे जमाने की प्रवृत्तियों को मागदर्शन करने में समर्थ है और जो इस

लायक हैं कि सारे जमाने को पलट कर रख देगा । आपको तीनों का सहयोग मिलता रहता है, आपके भाग्य की सराहना किए बिना हम रह नहीं सकते । आपके लिए कल्प की संभावनाएं बिल्कुल सुनिश्चित हैं । आपका भूतकाल जैसे था, वह यहाँ का यहीं रह जाए, आपका पुराना वाला केंचुल यहीं रह जाए और आप जाएं तो ऐसे नए आदमी होकर जाएं कि मजा आ जाए ।

अभी तक आप जिस पिंजड़े में कैद रहे हैं, उसकी तीलियों को काटने का हमारा मन है । आप भी थोड़ा प्रयत्न कीजिए, थोड़ा हम प्रयत्न करेंगे । अपने पंखों को पैने कीजिए, ताकि जैसे ही पिंजड़े की तीलियाँ कटें आप इसमें से भागना शुरू कर दें । तीलियाँ हम काट देते हैं, पंखों को आप पैना कीजिए । अगर आप अपने पंखों को पैना नहीं करेंगे, सिकोड़ कर रखेंगे तो हम तीलियाँ काट भी दें तो भी आप पिंजड़े में वहीं बैठे रहेंगे । पंख तो आपको ही उड़ाने हैं, हम उड़ेंगे थोड़े ही । हम तो तीलियाँ काटेंगे । आप हमारे सहयोग का फायदा उठाइए । यहाँ की परिस्थितियों का फायदा उठाइए । यहाँ के मार्गदर्शन का फायदा उठाइए और अपने भाग्य तथा भविष्य को शानदार बनाने के लिए कमर कसकर तैयार हो जाइए ।

आप गुफा में रहिए, एकांत सेवी रहिए, हृदय की गुफा में घुस जाइए । अंतर्मुखी होकर रहिए, बाहर की बातों में विचार मत कीजिए । केवल अपनी ही समस्या पर विचार कीजिए, अपने भविष्य के बारे में विचार कीजिए, अपने भूतकाल पर विचार कीजिए और अपने भविष्य का निर्धारण करने के लिए वह काम कीजिए जिनकी कि आपको जरूरत है । हमारे सहयोग को आप ग्रहण कीजिए जिनकी कि आपको जरूरत है । हमारे सहयोग को आप ग्रहण कीजिए, उसे हजम कीजिए । हम आपको थाली में भोजन परोस कर देते हैं, आप खाइए उसको और उसे पचा जाइए । खाना आपका काम है, पचाना आपका काम है । भोजन ही तो हम दे पाएंगे, आपके बदले हम पचा थोड़े ही देंगे । खाइए आप, परोसते हम हैं । दोनों का सहयोग भगवान करे कितना शानदार हो और आपके उज्ज्वल भविष्य करने में इस शिविर का कितना बड़ा योगदान हो । आप यह देख पाएंगे और यह संभव है जैसी कि हम आशा करते थे और आपको आशा दिलाते थे । थोड़ा सा उत्साह दिखाइए, थोड़ा सा मनोबल बढ़ाइए, फिर देखिए आपको यह कल्प साधना सत्र कितना शानदार और कितना आपके भविष्य को उज्ज्वल करने में सहायक सिद्ध होता है ।

ॐ शांतिः शांतिः ।

कैसे हो आध्यात्मिक कायाकल्प ?

(भाग–३)

(कल्प साधना सत्र १९८१ के महत्वपूर्ण उद्‌बोधन)

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि
धियो यो नः प्रचोदयात् ।

दो दिनों से आप यह सुन रहे हैं कि कायाकल्प क्या है ? कल्प के लिए आपको क्या करना पड़ेगा ? कल्प के लिए दूसरे भी आपकी सहायता करेंगे, पर आप यह मानकर चलिए कि आपको भी कुछ करना पड़ेगा । अगर आप कुछ नहीं करेंगे, केवल पूजा ही करते रहेंगे, भीतर वाले हिस्से को ठीक नहीं करेंगे, केवल कर्मकांड तक ही सीमित रह जाएंगे तो उद्देश्य कैसे पूरा होगा ? यह कल्प कोई शारीरिक थोड़े ही है जो क्रियाओं भर से पूरा हो जाएगा । यह आंतरिक कायाकल्प है, इसके लिए आपको अपनी मनःस्थिति को, अपने चिंतन को, अपनी विचारणाओं को, आस्थाओं को, दृष्टिकोण को भी बदलना पड़ेगा । यदि यह कर सकें तो समझिए कि बाहर की सहायता भी आपको जरूर मिलकर रहेगी ।

आमतौर से लोग यह समझते हैं कि देवताओं की खुशामद करके और उनसे कुछ प्राप्त करके हम अपना फायदा उठा लेंगे । अध्यात्म इसी का नाम है । पर लोगों का यह ख्याल गलत है । देवताओं का अनुग्रह मिलता तो है, यह मैं नहीं कहता कि नहीं मिलता लेकिन बिना शर्त नहीं मिलता । कुपात्रों को भी नहीं मिलता । पात्रता पहले साबित करनी पड़ती है, इसके बाद में ही कहीं ऐसा होता है कि देवता कोई सहायता कर सकें और किसी भक्त या साधक को लाभ पहुँचाने में मददगार बन सकें । आपको भी यही विचार करके चलना चाहिए । आपको देवानुग्रह की आशा तो करनी चाहिए, गुरुजी के आशीर्वाद की आशा तो करनी चाहिए, गायत्री माता की कृपा की आशा तो करनी चाहिए, लेकिन उस आशा के साथ में जो एक शर्त जुड़ी है, उसे भूल नहीं जाना चाहिए । वह शर्त यह है कि आप अगर अपनी पात्रता साबित करेंगे तो देवता आपकी सहायता जरूर करेंगे और यदि आप अपनी पात्रता साबित नहीं कर सकते तो फिर यह विश्वास रखिए कि आपको निराश ही होना पड़ेगा । देवता से किसी ऐसी कृपा की आशा मत कीजिए जो कि कुपात्रों को

भी मिल सकती है । देवता बड़े होशियार होते हैं, मंत्र भी बहुत होशियार होते हैं । आप कर्मकांड करें, यह अच्छी बात है, लेकिन कर्मकांडों को देखकर देवता थोड़े ही प्रसन्न होते हैं । वे तो कर्मकांडों के पीछे छिपी हुई साधक की भावनाओं को देखते हैं और अगर भावनाएं सही हैं तो निश्चित रूप से वही फल देते हैं जैसा कि आपने सुना है ।

इस संदर्भ में आप एक उदाहरण पर ध्यान दीजिए । बादलों को आप देखते हैं न, वे कितनी कृपा करते हैं । बादलों के बराबर उदार देवता कौन सा हो सकता है ? वह बिना कीमत पानी बरसाता है और चाहे जितना बरसाता है वह समुद्र से लाता है और प्यासी जमीन को पानी पूरा करने के लिए कितना पानी बरसाता है । लेकिन आपको ध्यान है क्या कि उस पानी से कौन लाभ उठा पाता है ? आप यह बताइए कि उससे हर कोई फायदा उठा लेता है क्या ? हर कोई फायदा नहीं उठा सकता । बादलों से हर जगह हरियाली हो जाती है, लेकिन जो चट्टानें हैं, उन चट्टानों पर एक तिनकाा भी पैदा नहीं होता । आप नदी में पड़े हुए पत्थरों को जरा देखिए न । नदी के पानी से किनारे गीले हो जाते हैं, जमीन गीली हो जाती है, सब जगह गीले हो जाते हैं, पर जो चट्टान-पत्थर का टुकड़ा नदी के बीच में सैकड़ों वर्षों से पड़ा हुआ है, जरा उसे तोड़-फोड़ कर देखिए । नदी का उस पर कोई अनुग्रह नहीं दीख पड़ेगा, क्योंकि वह पत्थर है । बादलों के अनुग्रह से भी उसे कोई लाभ नहीं हो सका, क्योंकि वह चट्टान है । जब कि आप देखते हैं कि बादलों के पानी से भूमि में हरियाली पैदा हो जाती है, पर चट्टान में क्यों नहीं पैदा होती । छात्रवृत्ति के बारे में आप जानते हैं कि वह फर्स्ट डिवीजन में पास होने वाले छात्रों को सरकार की ओर से दी जाती है । थर्ड डिवीजन में पास होने वाले को दी जाती है क्या ? फेल होने वाले को मिलती है क्या ? नहीं । साहब, हम पर दया कीजिए, उदारता कीजिए, यह मत कहिए । इस दुनिया में दया का, उदारता का कोई खास महत्व नहीं है ।

दुनिया में सर्वत्र पात्रता का महत्व है, उसी की परख की जाती है । आपने देखा होगा कि किसी खूबसूरत लड़की को, कन्या को बहुत से पड़ोसी, आवारा लड़के यह माँग सकते हैं कि आप अपनी लड़की हमारे हवाले कर दीजिए और हमसे शादी कर दीजिए । इस संबंध में आपका क्या ख्याल है कि कोई अपनी जवान लड़की को, जो पढ़ी-लिखी भी है, सुंदर-सुयोग्य भी है, किसी माँगने वाले के सुपुर्द कर देगा क्या ? नहीं करेगा ।

यद्यपि बेचारा प्यासा फिर रहा है कि कोई अच्छा जमाई मिल जाए तो हम पैसे भी देंगे, कपड़ा भी देंगे, खुशामद भी करेंगे, बारात भी आएगी । वह कितना तलाश करता फिरता है । क्यों साहब, तलाश क्यों करते हैं आप जमाता को, जबकि आपके पड़ोस में ही पचास जमाता हैं और इसके लिए तैयार हैं कि हम भी आपके जमाई बनेंगे । हमको भी आप अपनी लड़की दे दीजिए, फिर बेटी का बाप क्यों नहीं देता ? क्यों लड़ने-झगड़ने के लिए आमादा हो जाता है ? क्यों अच्छे लड़के के पास जाता है, खुशामद करता है, पैसा भी देता है, मिन्नतें भी करता है । ऐसा क्यों होता है ? क्या बता सकते हैं आप ? सिर्फ एक ही वजह है कि वह जमाता इस लायक है, उसमें इतनी पात्रता है कि वह उस लड़की का गुजारा कर सके, भरण-पोषण कर सके, उस लड़की की ठीक देखभाल कर सके । इसलिए लड़की का बाप ऐसे जमाता को तलाश करता है जो कि इसके योग्य हो । ठीक बिल्कुल ठीक यही बात समझिए कि देवताओं के अनुग्रह हर एक के हिस्से में नहीं आ सकते । गुरुओं के अनुग्रह हर एक के हिस्से में नहीं आ सकते । रामकृष्ण परमहंस ने विवेकानंद को अनुग्रह दिया था । माँगने वाले तो हजारों आदमी उनके पास आते थे और अपनी छोटी-मोटी जरूरतें पूरा करा करके भाग खड़े होते थे । लेकिन वह जो देना चाहते थे वह केवल उनने विवेकानंद को ही दिया, क्योंकि उसके अंदर पात्रता का अंश पाया इसलिए अपनी आध्यात्मिक संपदा उन्हीं के सुपुर्द कर दी । माता समझती है कि बच्चे को कितना दूध चाहिए, वह उसी के अनुरूप उसे देती है । माता उसकी पात्रता को समझती है ।

बादल कहाँ बरसते हैं ? वहाँ बरसते हैं जहाँ कि घनी हरियाली होती है । बादल वहाँ बरसने से इन्कार कर देते हैं जहाँ पेड़ नहीं होते । रेगिस्तानों में पानी कहाँ बरसता है ? पेड़ अपनी चुंबक शक्ति से बादलों को बरसने के लिए मजबूर कर देते हैं । यही कारण है कि जहाँ पेड़ नहीं होते हैं वहाँ कम पानी बरसता है । लीबिया में कुछ दिन पहले ऐसा ही हुआ था । पेड़ काट डाले गए और उसका परिणाम यह हुआ कि पानी बरसना बंद हो गया और सूखा पड़ गया । जब फिर से पेड़ लगाए गए तब बादलों ने बरसात की, मतलब यह है कि बादल पेड़ों के चुंबकत्व से खिंचते चले आते हैं । खदानें कैसे बनती हैं, आप जानते हैं क्या ? खदानों में कहीं थोड़ा सा लोहा, थोड़ा पीतल, चाँदी, सोना बगैरह होता है और वे अपने चुंबकत्व से दूर-दूर फैले हुए अपने सजातीय कणों को अपनी ओर घसीटते रहते हैं और बड़ी खदानें

बनती-बढ़ती रहती हैं । यदि इस साल सौ टन लोहा है तो अगले वर्ष दो सौ टन हो जाएगा, उससे अगले साल तीन सौ टन हो जाएगा । क्योंकि वह खदान जो है चारों ओर से खींचती रहती है और जमा करती रहती है । ठीक यही बात देवताओं की कृपा के बारे में है । उनकी कृपा को घसीटा जा सकता है, बुलाया जा सकता है । देवता अपने आप देंगे ? नहीं ! अपने आप कौन दे देगा ? आप अपने पैसे किसी को दे देंगे क्या ? नहीं ! बैंक वाला चाहे किसी को रुपये दे देगा क्या ? नहीं ! क्यों ? क्योंकि बैंक वाला उधार देने से पहले हजार बार यह तलाश करता है कि जिस आदमी को दिया जाने वाला है, वह उस पैसे का ठीक इस्तेमाल करेगा कि नहीं करेगा । बैंक का पैसा वापस मिलेगा कि नहीं मिलेगा । यह विश्वास न हो तो कोई देने को तैयार ही नहीं हो सकता । आपने देखा है न समुद्र को, समुद्र के पास कितनी सारी नदियाँ अपना सामान लेकर भागती हैं और उससे कहती हैं कि यह सब हमारा पानी लीजिए । क्यों लीजिए ? क्योंकि वे समझती हैं कि हमारे पानी को जमा करने की शक्ति इसमें है और हम जब अपने पानी को जमा करती हैं तो वह एक मुनासिब जगह पर जमा ही नहीं हो जाएगा, हमें वापस मिलता भी रहेगा, वाष्पीभूत बादलों से वर्षा के रूप में ।

नदियों के तरीके से दैवी शक्तियाँ भी देती तो हैं, पर हर एक को नहीं दे सकतीं । आप यह भूल मत जाइए कि जो कोई माँगेगा, देवता उसी को दे देंगे जो नारियल चढ़ा देगा उसी को दे देंगे । ग्यारह सौ जप कर देगा तो उसी को दे देंगे, पाठ कर देगा उसी को दे देंगे । इस तरह बरगलाने और फुसलाने से आप देवता के अनुग्रह नहीं प्राप्त कर सकते । कपड़े के तरीके से, कलेवर के तरीके से क्रियाएं आवश्यक तो हैं । क्रियाएं आवश्यक तो हैं चाकू की तरीके से, लेकिन सामान तो हो आपके पास । चाकू से कैसे काटेंगे कर्म को ? इसलिए केवल क्रियाएं बहुत थोड़ा सा ही काम करती हैं । जो कर्मकांड आप करते हैं, जप करते हैं और क्रिया करते हैं, यह हैं तो महत्वपूर्ण और जरूरी भी, लेकिन आप यह ख्याल मत कीजिए कि केवल जप करने से या अन्न कम खाने से आप कोई लंबे-चौड़े फायदे उठा सकेंगे । आपको अपनी मनःस्थिति को जरूर बदलना पड़ेगा । फूल जब खिलता है तब आपने देखा होगा कि उसके ऊपर कितने भौंरे आकर बैठ जाते हैं । कितनी तितलियाँ और शहद की मधुमक्खियों के गुच्छे मँड़राने लगते हैं । कब आते हैं ? जब फूल खिलता है तब । फूल के तरीके से अगर आप अपने जीवन को खिला सकते

हों, अपनी पात्रता को विकसित कर सकते हों, अपनी मनःस्थिति में हेर-फेर कर सकते हों तो आपको हम यकीन दिला सकते हैं कि देवताओं के अनुग्रह आपको जरूर मिलेंगे जो आप यहाँ प्राप्त करने आए हैं । आपको गुरुओं के आशीर्वाद, हमारे आशीर्वाद मिलेंगे और दूसरे गुरु भी आपके पास आएंगे और आपकी आवश्यकता को जरूर पूरी कर देंगे ।

पात्रता की परख हर जगह होती है । आप इस ख्याल में मत रहिए, मिन्नतें मत माँगिए, नाक मत रगड़िए, झोली मत फैलाइए और यह उम्मीदें मत कीजिए कि कोई आदमी या देवता आपकी पात्रता को देखे बिना केवल आपकी क्रिया-कृत्यों से ही प्रसन्न हो करके आपको निहाल कर जाएगा । ऐसा हो नहीं सकता । आपको इतिहास मालूम है न । शिवाजी को 'भवानी' नाम की एक तलवार मिली थी । क्यों मिली थी ? इसलिए मिली थी कि उसने अपनी पात्रता स्थापित की थी । उनके गुरु ने सिंहनी का दूध दुहने के लिए परीक्षा ली थी और कहा था आप जाइए सिंहनी का दूध लाइए । देखा गया कि वह इतना निष्ठावान है कि अपने कर्तव्य के लिए अपने प्राण भी दे सकता है तो भवानी से उन्होंने प्रार्थना की कि आप ऐसी तलवार दीजिए जो कि अजेय हो-अक्षय हो । अर्जुन को गांडीव कहाँ से मिला था ? इंद्र देवता ने दिया था । अर्जुन को ही क्यों दिया, औरों को क्यों नहीं दिया । इंद्र ने अर्जुन को देने से पहले इम्तहान लिया था कि इतनी कीमती चीज विश्वस्त आदमी को, प्रामाणिक आदमी को ही दी जाए, हर एक को नहीं दी जाए । आपको याद होगा कि जब अर्जुन वहाँ गए थे तो उनका इम्तहान लेने के लिए इंद्रलोक की सबसे खूबसूरत युवती उर्वशी को भेजा गया था । वह ऐसे हाव-भाव करने लगी और उससे शादी की बात कहने लगी । अर्जुन ने कहा-"आप तो हमारी माँ के बराबर हैं और हम आपके चरणों की धूल अपने सिर पर रखते हैं । आप यह समझ लीजिए कि हम ही आपकी संतान हैं ।" इस जबाव से प्रसन्न होकर इंद्र ने यह समझ लिया कि यह व्यक्ति इस लायक है कि इसको गांडीव दे देना चाहिए । इंद्र को जब यह विश्वास हो गया था कि अर्जुन गांडीव के लायक है तो उन्होंने उसे प्रसन्नतापूर्वक दे दिया था ।

आपको बापा जलाराम की कहानी मालूम है न । भगवान उनके यहाँ आए थे और उनको एक झोली दे गए थे जिसमें से अक्षय अन्न के भंडार निकलते थे । यह वरदान भगवान ने दिया था जो अभी भी है । आप यदि गुजरात के वीरपुर नामक गाँव में कभी पहुँचें तो आपको एक सिद्ध पुरुष

जलाराम बापा का एक स्थान मिलेगा । वहाँ अन्न की एक झोली अभी भी टँगी हुई है जो भगवान ने उन्हें दी थी । जलाराम बापा की इच्छा थी कि हमारे दरवाजे पर से कोई भी खाली हाथ न जाने पाए । भगवान ने उनकी इच्छा पूरी की । उन्हीं की क्यों पूरी की, औरों की क्यों नहीं की ? इच्छाएं, मनोकामनाएं तो सभी करते हैं, पर उनकी इच्छा पूरी क्यों नहीं करते भगवान ? क्योंकि जलाराम बापा इम्तहान में पास हो गए थे । उन्होंने दो प्रतिज्ञाएं की थीं कि जलाराम मेहनत-मजूरी करेंगे और खेती में से अनाज उगाएंगे और उनकी पत्नी ने प्रतिज्ञा की थी कि पेट भरने के बाद में जो कुछ भी अनाज हमारे पास बचेगा, उसे दुखियारों को, संतों को खिलाते रहेंगे । उनकी स्त्री खाना पकाती रहती थी सारा दिन और बापा जलाराम खेती-बाड़ी करते रहते थे । वह अनाज पैदा करते थे और उनकी धर्मपत्नी खिलाती रहती थीं । इसी बीच पेट भरने के लिए जो मिल गया उसी से गुजारा कर लिया, बस । संत की यह निशानियाँ हैं कि उसका चरित्र ऊँचा होना चाहिए । भक्त का चरित्र ऊँचा न हुआ तब ? तब सभी कथा-कीर्तन, भजन-पूजन, जप-तप, अनुष्ठान बेकार हैं । नहीं साहब, हम तो अखंड कीर्तन करते हैं, जागरण करते हैं, जप-तप करते हैं । आप यह सब करते हैं तो आपको मुबारक, लेकिन पहले आप सिर्फ एक जबाव दीजिए कि आप अपनी पात्रता को विकसित करते हैं कि नहीं ? भगवान सिर्फ दो ही बातें देखते रहते हैं और वे आपकी मानसिक पवित्रता और अपनी पूजा तो अपने मन को धोने का एक तरीका है ।

मित्रो, भगवान को बरगलाया नहीं जा सकता, उसे फुसलाया नहीं जा सकता । भगवान के साथ में ब्लैकमेलिंग नहीं की जा सकती । भगवान के साथ में जुड़ने का एक ही सीधा रास्ता है कि अपनी पात्रता साबित करें भगीरथ के तरीके से । भगीरथ गंगा जी को माँगने गए थे । उन्हें पानी की जरूरत थी अपनी फसल के लिए और अपने बाप-दादाओं का उद्धार करने के लिए भी, साथ में इससे भी बड़ी जरूरत थी कि सारे संसार को पानी मिलना चाहिए । भगीरथ निःस्वार्थ थे, उनने तप किया । यदि यह कारण रहा होता कि भगीरथ गंगाजी को अपने पास बुलाएंगे, पानी को स्टोर करेंगे, हर आदमी से पैसा वसूल करेंगे और गंगाजी से अपना उल्लू सीधा करेंगे तो आप विश्वास रखिए तब गंगाजी कभी भी भगीरथ के चंगुल में फँसने के लिए तैयार न हुई होतीं । उनने कारण की खोज की और उस आदमी की नीयत को जाना । नीयत का अर्थ है पात्रता, चिंतन का अर्थ है पात्रता, चरित्र का अर्थ है

पात्रता । पात्रता, आपको विकसित करनी ही चाहिए । देवताओं के अनुग्रह में कोई कमी नहीं है, यदि कमी है तो आपमें पात्रता की । गंगा हिमालय से जब निकल कर चलीं और बोलीं कि अब हम लोगों की प्यास बुझाएंगी, पशु-पक्षियों की प्यास बुझाएंगी, खेती में हरियाली पैदा करेंगी, अब हिमालय में रहने और आपकी गोदी में ठहरने का हमारा जरा भी मन नहीं है, तब हिमालय ने बहुतेरा समझाया कि आप तो यहीं रहिए यहाँ क्या कष्ट है आपको ? गंगा ने कहा—नहीं, कष्ट का सवाल नहीं है, पर अब हमारी आत्मा नहीं मानती है । हमारी आत्मा कहती है कि हमको अपने को श्रेष्ठ कामों में खपा देना चाहिए, लगा देना चाहिए । बस, चल पड़ीं गंगा । लोगों ने यह भी कहा कि आप सूख जाएंगी, खाली हो जाएंगी और आप दिवालिया हो जाएंगी । लेकिन गंगा ने कहा—तो दिवालिया होने में क्या कोई हर्ज है ? जिंदगी एक अच्छे काम में लग जाए तो कोई हर्ज है क्या ? जब वह चल पड़ीं तो हिमालय ने देखा कि ऐसी शानदार छोकरी, ऐसा शानदार उसका मन, ऐसी शानदार उसकी भावना, इसको कमी नहीं पड़ने देना चाहिए । हिमालय ने उसको यकीन दिलाया कि बेटी ! तुम बराबर बहती रहना, तुम्हारे जलस्रोत को सूखने का कभी भी मौका नहीं आएगा । हमारी बर्फ बराबर गलती रहेगी और तुम्हारा पेट और तुम्हारी जरूरतों को पूरा करती रहेगी । लाखों वर्ष हो गए गंगा को बहते हुए, पर कभी कुछ कमी पड़ी क्या ? कमी नहीं पड़ी । देवताओं के अनुग्रह पाने के यही तरीके हैं ।

आप देवताओं का अनुग्रह पाने के लिए कल्प साधना कर रहे हैं । आपको विश्वास होगा कि गायत्री माता का हम जाप करेंगे तो गायत्री माता अनुग्रह करेंगी । जरूर अनुग्रह करेंगी । गायत्री माता का स्वभाव ही है कि वह जरूर सहायता करती हैं । यह भी आपको विश्वास होगा कि गुरुदेव आशीर्वाद देंगे, अपने पुण्य का एक अंश देंगे । बिल्कुल यकीन रखिए, हमने जिंदगी भर अपने पुण्य के अंश बाँटे हैं । हमें बाँटने में बड़ी खुशी होती है और लोगों को खाने में खुशी होती है, पर हमको खिलाने में खुशी होती है । हमारे ऊपर एक और शक्ति छाई हुई है जिसकी वजह से ब्रह्मवर्चस बना है और यह शांतिकुंज बना है । जिसकी प्रेरणा से यह कल्प साधना शिविर लगाए हैं और जिनकी इच्छा से आपको यहाँ बुलाया गया है । वह आपको खाली हाथ जाने देंगे क्या ? नहीं, यह तीनों शक्तियाँ ऐसी हैं जो बराबर आपकी सहायता करने के लिए आमादा हैं और सच्चे मन से चाहती हैं कि

आपको कुछ दें । गाय सच्चे मन से चाहती है कि हम अपने बच्चे को अपना सारा का सारा दूध पिला दें । जो भी कुछ वह खाती है और जितना दूध बनता है वह चाहती है कि हम अपने बच्चे को पूरा का पूरा दूध पिला दें । लेकिन बच्चा तो उसका होना चाहिए । बच्चा किसी और का हुआ तब ? कुत्ते, बिल्ली का बच्चा हुआ तब ? गधी का बच्चा हुआ तब ? तो क्यों पिलाएगी गाय । वह गाय का ही बच्चा होना चाहिए । आपको संत का बच्चा होना चाहिए । आपको ऋषियों का बच्चा होना चाहिए । आपको अध्यात्म का बच्चा होना चाहिए अर्थात आपका चिंतन, चरित्र और आपका व्यक्तित्व ऐसा होना चाहिए जिससे कि देवता हमेशा आपकी सहायता करते हुए चले जाएं । इससे कम में बात बनेगी नहीं । इसके लिए आपको त्याग करना ही चाहिए । आपको अपनी बुराइयाँ छोड़नी ही चाहिए, आपको उदार होना ही चाहिए और आपको अपने दृष्टिकोण में महानता साबित करनी ही चाहिए ।

मित्रो, भगवान को हम क्या कहें, वह देता तो बहुत है, लेकिन वह उस परीक्षा के बिना कहाँ देता है । आपको सुदामा जी का किस्सा याद होगा कि वह एक बार श्रीकृष्ण भगवान से कुछ माँगने के लिए गए थे और सुदामा जी के माँगने से पहले ही श्रीकृष्ण ने उनकी यह परीक्षा ले ली थी कि यह हमको भी कुछ दे पाएंगे कि नहीं । उनकी पोटली में चावल रखा हुआ था, जिसे देखते ही कृष्ण भगवान ने कहा–पहले चावल की पोटली हमारे हवाले कर दीजिए, फिर बाद में करना बात । आप अपनी पोटली नहीं खाली कर सकते, तो हम क्यों आपके लिए खाली करेंगे ? हम क्यों आपको सहायता देंगे ? उन्होंने चावल की पोटली को उनके हाथों से छीन लिया और छीनने के बाद में उसको अपने पास रखा । बस वही चावल बढ़ते हुए चले गए और उन्हीं चावलों के बदले सुदामा जी को वह धन मिल गया जिसके बारे में आपने सुना होगा कि द्वारका जी से सारा धन सुदामा जी के पास चला गया था । वे चावल भगवान के खेत में बोए गए थे । यदि वह चावल लेकर सुदामा जी द्वारका नहीं गए होते, तब उनको खाली हाथ आना पड़ता । आप देंगे नहीं तो ले कहाँ से जाएंगे ? इसलिए पहले देने की बात पर विचार कीजिए, परिशोधन की बात सोचिए, पवित्रता की बात सोचिए । अपने व्यक्तित्व को ऊँचा उठाने की बात सोचिए । इतना अगर आप सोच सकते हों, तो फिर आप देखना किस कदर आपको भगवान की सहायता मिलती है ? आपके मंत्र कैसे चमत्कारी सिद्ध होते हैं ? आपको व्रत और अनुष्ठान से कितना ज्यादा

फायदा मिलता है ? भगवान तो ऐसे ही हैं जो सबको निहाल कर देते हैं । उनने द्रौपदी को निहाल कर दिया था । आपको ध्यान है कि नहीं, भगवान ने द्रौपदी को कितना वस्त्र दिया था ? लेकिन अगर आप माँगे तो क्या आपको मिलेगा ? नहीं देंगे । तो फिर ऐसा पक्षपात क्यों ? मित्रो, एक ही बात है कि द्रौपदी ने यह साबित कर दिया था कि उसको मिलने का हक है । आप भी साबित करिए कि आपको भी मिलने का हक है । आपने द्रौपदी के जीवन की वह घटना सुनी होगी कि जब एक बार वह जमुना स्नान कर रहीं थीं, तो पास में ही एक महात्मा जी स्नान कर रहे थे । उनके पास एक लंगौटी नहाने की थी और एक पहनने की । हवा का एक झोंका आया और एक लंगोटी बह गई । जिसको पहने थे वह फट गई । द्रौपदी ने देखा कि महात्मा जी की एक लंगोटी बह गई और दूसरी फट गई है और वह शर्म के मारे शरीर को छिपाकर झाड़ी के पीछे बैठ गए हैं । द्रौपदी का मन पिघल गया कि उनकी सहायता करनी चाहिए । उन्होंने अपनी साड़ी के दो टुकड़े किए और आधा टुकड़ा महात्मा जी को दे दिया और कहा–आप इससे अपने लिए दो लंगोटियाँ बना लीजिए । आपकी भी लज्जा ढक जाएगी और आधी साड़ी से हमारा भी काम चल जाएगा ।

यह क्या थी ? द्रौपदी की उदारता थी जो उनके कपड़े के साथ में जुड़ी थी । कपड़े की कीमत क्या हो सकती है ? कपड़ा तो जरा सी कीमत का था, लेकिन जब भगवान के भंडार में चला गया तो लाखों गुना हो गया । भगवान ने देखा कि जो आदमी उदार है, उसके लिए उदार होना चाहिए । जो आदमी दयालु है, उसके लिए दयालु होना चाहिए । जो आदमी चरित्रवान है उसके लिए चरित्रवान होना चाहिए । जब दुःशासन उसे नंगी कर रहा था तो भगवान ने द्रौपदी के लिए कितना सारा कपड़ा भेजा था, कितनी सारी सहायता की थी, यह आपने भी पढ़ा-सुना होगा । आपसे मुझे यही कहना था कि आप यहाँ देवता का अनुग्रह प्राप्त करने के लिए आए हैं और अगर आपको अनुदान पाने की इच्छा है तो आपकी यह इच्छा मुनासिब है, सही है । आप किसी गलतफहमी में नहीं हैं, किसी अंधविश्वास में जकड़े हुए नहीं हैं । प्राचीन काल के असंख्य इतिहास ऐसे हैं, जिसमें देवताओं ने सहायता की है, अनुग्रह किए हैं । आपको जरूर सहायता मिलेगी, पर एक शर्त को भूलिएगा मत । अगर आप उस शर्त को भुला देंगे तो आप घाटे में रहेंगे, आप निराश होंगे । फिर आप गाली देंगे और सोचेंगे कि मंत्र मिथ्या होते हैं, देवता मिथ्या

होते हैं । क्यों मिथ्या होते हैं ? अगर आपने अपनी पात्रता का विकास नहीं किया तब । चिंतन, चरित्र, व्यवहार को उत्कृष्ट और उदार नहीं बनाया, तब आप घाटे में रहेंगे । इसके लिए ही हम आपको यह अनुष्ठान करा रहे हैं ताकि आपका चिंतन बदले, व्यक्तित्व परिष्कृत हो और आपके भीतर का कायाकल्प हो जाए, तभी देवता आपकी सहायता करेंगे । आप अपने भीतर को बदलने की कोशिश कीजिए । अपना चिंतन बदलिए, अपना चरित्र बदलिए, अपने जीवन का ढाँचा और ढर्रा बदलिए । फिर देखिए आपकी बदली हुई परिस्थितियों में जो देवता नाखुश थे, मुँह मोड़े हुए थे, किस तरह आपके गुलाम हो जाते हैं, कैसी आपकी सहायता करते हैं ? कैसे आपको छाती से लगाते हैं ? कैसे आपको निहाल करते हैं ? यही अनुभव हमारे जीवन का भी है और इससे आपको भी लाभ उठाना चाहिए । आप अपने आपको खाली कीजिए और निहाल होकर जाइए । बस इतना ही कहना था मुझे आप से ।

ॐ शांतिः ।

शक्ति भंडार से स्वयं को जोड़ कर तो देखें

(गुरु पूर्णिमा की पूर्ववेला में शांतिकुंज परिसर में
१९७७ को दिया गया उद्‌बोधन)

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि
धियो यो नः प्रचोदयात् ।

मनुष्य की सामान्य शक्ति सीमित है । प्रत्येक प्राणी को भगवान ने इतना ही सामान दिया है कि वह अपने जीवन का गुजारा कर ले । कीड़ों-मकोड़ों और पशु-पक्षियों को सिर्फ इतना ही ज्ञान, साधन, शक्ति और इंद्रियाँ मिली हैं ताकि वे अपना पेट भर लें ओर प्रकृति की इच्छा पूरी करने के लिए अपनी औलाद पैदा करते रहें । इससे ज्यादा कुछ उनके पास है नहीं, लेकिन आपके पास है । अगर आपको इससे कुछ ज्यादा जानना और प्राप्त करना है, तो आपको वहाँ जाना पड़ेगा जहाँ शक्तियों के भंडार भरे पड़े हैं । एक जगह ऐसी भी है जहाँ बहुत शक्ति भरी पड़ी है, जहाँ संपत्तियों का कोई ठिकाना नहीं । जहाँ समृद्धि की अनंतशक्ति है । सारे विश्व का मालिक कौन है ? भगवान ।

यह उसी का तो सामान है जिससे उन्होंने दुनिया को बना दिया । यहाँ जो कुछ भी वैभव आप देखते हैं, वह भगवान के भंडार का एक छोटा सा चमत्कार है । पृथ्वी के अलावा और भी लोक हैं । उन सबमें भी भागवान का भंडार भरा पड़ा हुआ है । बड़ा संपत्तिवान है भगवान । आपको यदि संपत्तियों की, सफलताओं की, विभूतियों की जरूरत है, तो अपना पुरुषार्थ इस काम में खर्च करिए कि उस भगवान के साथ में अपना रिश्ता बना लीजिए । उसके साथ जुड़ने में अगर आप समर्थ हो सके तो यह सबसे बड़ा पुरुषार्थ होगा । आप भगवान के साथ में अपना रिश्ता बना लें तो मजा आ जाए ।

मालदार आदमी से रिश्ता बना लेने पर क्या हो सकता है ? लालबहादुर शास्त्री का नाम सुना है आपने, वे बिल्कुल एक छोटे से आदमी थे । लेकिन पंडित नेहरू के साथ में उन्होंने अपने घनिष्ट संबंध बना लिए जिसकी वजह से वे एम०पी० हो गए । उनकी सहायता से वे यू०पी० के मिनिस्टर भी हो गए और फिर मरने के पश्चात उनके उत्तराधिकारी भी हो गए । बहुत शानदार थे लालबहादुर शास्त्री, यह उनके अपने पुरुषार्थ का उतना फल नहीं था, जितना कि नेहरू जी के सहयोग का । उनकी निगाह में उनकी इज्जत जम गई थी । उन्होंने देख लिया था कि यह आदमी बड़ा उपयोगी है, उसकी सहायता करनी चाहिए । उसकी सहायता करने से उनने भी लाभ उठाया, इसलिए पंडित नेहरू ने उनकी भरपूर सहायता की । ठीक यही बात हर जगह लागू होती है । भगवान एक सर्वशक्तिमान सत्ता है । उसके साथ अगर आप अपना संबंध जोड़ लें तब आपकी मालदारी का कोई ठिकाना न रहेगा । तब आप इतने संपन्न हो जाएंगे कि मैं आपसे क्या-क्या कहूँ । आप बापा जलाराम के तरीके से संपन्न हो सकते हैं, आप सुदामा के तरीके से मालदार भी हो सकते हैं, विभीषण और सुग्रीव के तरीके से मुसीबतों से बचकर के फिर से अपना खोया हुआ राजपाट पा सकते हैं । नरसी मेहता के तरीके से हुंडी भी आप पर बरस सकती है । यहाँ कुछ कमी है क्या ? यहाँ कोई कमी नहीं है । इसलिए यहाँ जो आपको बुलाया गया है उसका एक कारण यह भी है कि आप से कहा जाए कि आप भगवान से रिश्ता जोड़ लें । आप जो पूजा करते हैं, उपासना करते हैं, भजन करते हैं, उसका मतलब यह है कि आप इन उपायों के माध्यम से अपना रिश्ता भगवान से जोड़ लें । एक गरीब घर की लड़की की यदि किसी मालदार पति के साथ में शादी हो जाए तो वह दूसरे ही दिन से उसकी मालकिन हो जाती है, क्योंकि उसने उससे रिश्ता मिला लिया ।

रिश्ता मिलाने के लिए क्या करना पड़ता है ? बस यही तो मुझे आपसे कहना था । रिश्ता मिलाने में आप ख्याल करते हैं कि रिश्वत देनी पड़ती है, चापलूसी करनी पड़ती है, पर इस ख्याल को आप हटा दीजिए । रिश्वत देकर के भगवान को आप मित्र बना सकते हैं, उसका अनुग्रह प्राप्त कर सकते हैं । ऐसा मत कहिए । साथ ही आप यह विचार मत कीजिए कि जीभ की नोक से कुछ मीठी बातें, कुछ चापलूसी की बातें और स्तोत्र पाठ करने के बाद में भगवान को आप अपना बना सकते हैं । भगवान की साझेदारी पर आप यकीन कीजिए और यह समझिए कि भगवान आपकी जुबान को नहीं, आपकी नीयत को देखता है, दृष्टिकोण को देखता है, चरित्र को देखता है, चिंतन को देखता है और आपकी भावनाओं को देखता है । अगर आप इस क्षेत्र में सूने हैं तो आपके कर्मकांड कोई बहुत ज्यादा कारगर नहीं हो सकते । आप देखते हैं न कि कितने पंडित लोग हैं जो तरह-तरह के विधि-विधान और कर्मकांड जानते हैं, पर सब खाली हाथ रहते हैं । आपने देखा है न कि साधु-महात्मा तरह-तरह के जाप करते हैं, पूजा-पाठ करते हैं, स्नान-ध्यान करते हैं, तीर्थ यात्रा करते हैं, लेकिन उनकी नियति, भावना और दृष्टिकोण अगर ऊँचा न हुआ, व्यक्तित्व ऊँचा न हुआ, अंतःकरण ऊँचा न हुआ, तब उनका लाल-पीले कपड़े पहन लेना, तरह-तरह के आडंबर बना लेना और तरह-तरह के क्रियाकृत्य कर लेना बिल्कुल बेकार चला जाता है और सामान्य स्तर के नागरिकों से भी गई बीती जिंदगी जीते हैं ।

भगवान की कृपा कहाँ मिलती है ? भगवान को प्राप्त करने का जो असली रहस्य है, उसे आपको जानना ही चाहिए । क्या करना होगा ? आपको भगवान के साथ जुड़ जाना होगा । जुड़ जाने को ही उपासना कहते हैं । उपासना का मतलब ही है जुड़ जाना, पास बैठना । किस तरह से जुड़ जाएं । मैं आपको कुछ थोड़े से उदाहरण बताऊँगा । जुड़ना किसे कहते हैं ? आपने आग में लकड़ी को गिरते हुए देखा है न । उस लकड़ी की क्या कीमत है-दो कौड़ी की, जिसे आप पैर के नीचे फेंक दीजिए तो क्या, या तोड़कर फेंक दीजिए तो क्या, इधर से उधर करते रहिए । उसकी कोई कीमत नहीं हो सकती, पर आग के साथ में यदि उसको मिला दिया जाय तो आप देखेंगे कि थोड़ी ही देर में लकड़ी गरम होने लगती है और आग हो जाती है । तब आप उसे छू भी नहीं सकते और जो गुण अग्नि देवता के हैं वही गुण उस नाचीज लकड़ी में भी आ जाते हैं । ठीक यही तरीका व्यक्ति को, जीवात्मा को

परमात्मा के साथ मिलाने का है । क्या करें ? नजदीक तो आइए आप । नजदीक आने का बस एक ही तरीका है–अपने आपको सौंप देना, होम देना । भगवान की इच्छा पर चलना । लकड़ी अपने आपको सौंप देती है और होम देती है । आग जब उसको जलाती है तो जलने में वह रजामंद हो जाती है । उसी के साथ जब वह घुल गई तो वह उसी का रूप हो जाती है । हमारी और आपकी नियति यह हो कि हम भगवान के साथ में घुल जाएंगे । घुलने का मतलब है सौंप देंगे । उनको अपने में नहीं मिला लेंगे, अपनी मर्जी के ऊपर नहीं चलाएंगे, वरन हम अपने को उनकी मर्जी के मुताबिक चलाएंगे । इसी का नाम समर्पण है । इसी का नाम विलय और विसर्जन है । इसी का नाम शरणागति है । बहुत से नाम इसको दिए गए हैं । उपासना का तत्वज्ञान इसी पर टिका हुआ है कि आप भगवान के अनुयायी होते हैं कि नहीं, उसका अनुशासन मानते हैं कि नहीं । आप भगवान की इच्छानुसार चलते हैं कि नहीं, उसके बताए हुए इशारे एवं संकेत पर चलते हैं कि नहीं । उपासना के साथ जुड़ा हुआ एकमात्र यही प्रश्न है और कोई दूसरा नहीं ।

यह ख्याल ठीक नहीं है कि आप अपनी मनमर्जी पर चला सकते हैं और चालएंगे । भगवान आपकी मर्जी पर क्योंकर चलने लगे ? भगवान के अपने कुछ नीति-नियम हैं, मर्यादा और कायदे हैं । आपकी खुशामद की वजह से आपकी मनोकामना पूरी करने के लिए भगवान अपने नीति-नियम को छोड़ देंगे, मर्यादा और कायदे-कानून को छोड़ देंगे और अपने आपको पक्षपाती होने का इल्जाम लगवाएंगे, कलंक लेंगे क्या ? नहीं, ऐसा भगवान कर नहीं सकेंगे । अगर आपके मन में यह ख्याल हो कि मित्रतों और खुशामदों से भगवान को कहीं नजदीक ला सकते हैं और उपासना कर सकते हैं तो आप यह ख्याल छोड़ दीजिए । तब क्या करना पड़ेगा कि आप अपने आपको भगवान को सौंप दीजिए । अपने आपको उनके हाथ की कठपुतली बना लीजिए, फिर देखिए भगवान क्या से क्या करवाते हैं । पानी दूध में मिल जाता है और उसकी हैसियत दूध के बराबर हो जाती है । छोटी सी नाचीज बूँद समुद्र में गिरती है और अपनी हस्ती को उसी में विसर्जित कर देती है और समुद्र की कीमत की हो जाती है । छोटी सी बूँद की हैसियत समुद्र के बराबर हो जाती है । दो कौड़ी का गंदा, कीचड़ से भरा हुआ नाला जब नदी में शामिल हो जाता है, तब वह नदी बन जाता है । उसका पानी नदी की तरह से पूजा जाता है । गंगा में गिरे हुए नाले का गंदा जल भी गंगाजल कहलाता

है । यह कैसे हो गया ? नाले ने अपने आपको समर्पित कर दिया । किसको ? नदी को । यदि समर्पित न करता तब ? तब आपकी मन:स्थिति का होता और गंगा जी से कहता–आप नाला बन जाइए और हमारी मर्जी पूरी कीजिए । हमारे साथ-साथ रहिए । पर ऐसा हो नहीं सकता । भगवान को आप अपने जैसा नहीं बना सकते । अपनी मर्जियाँ पूरी कराने के लिए उन्हें मजबूर नहीं कर सकते । आपको ही उनके पीछे चलना पड़ेगा ।

मित्रो, पारस के बारे में आप लोगों ने सुना होगा कि पारस को छूकर लोहा सोना हो जाता है, बदल जाता है । यदि लोहा वैसा ही रहे और पारस से कहे कि आप लोहा बन जाइए, तो यह संभव नहीं । पारस लोहा नहीं बन सकता । लोहे को ही बदलना पड़ेगा । चंदन के पास उगे हुए पौधे चंदन की सी खुशबू देते हैं और चंदन बन जाते हैं । पर आप तो यह चाहते हैं कि चंदन को ही हम जैसा बनना चाहिए । चंदन आप जैसा नहीं बन सकता । छोटी झाड़ियों को ही चंदन जैसा खुशबूदार बनना चाहिए । चंदन बदबूदार झाड़ी नहीं बन सकता । भगवान पर दबाव मत डालिए । तब क्या करना पड़ेगा ? आप उसके साथ में घुल जाइए, लिपट जाइए । बेल देखी है न आपने, वह पेड़ के साथ में लिपट जाती है और जितना ऊँचा पेड़ है, उतनी ऊँची होती चली जाती है । यदि बेल अपनी मनमर्जी से फैलती तो सिर्फ जमीन पर फैल सकती थी, और ऊँचा उठना मुमकिन नहीं था । परंतु इतनी ऊँची कैसे हो गई ? क्योंकि वह पेड़ से गुथ गई, लिपट गई । आप भी भगवान से गुथ जाइए, लिपट जाइए, फिर देखिए कि आपकी ऊँचाई भी पेड़ पर लिपटी हुई बेल के बराबर होती है कि नहीं । भगवान बहुत ऊँचा है, आप उसके साथ जुड़कर के देखिए, उसके अनुशासन को पालिए । उसकी इच्छा के साथ चलिए, फिर आप देखिए कि भगवान के बराबर बन जाते हैं कि नहीं । पतंग अपने आपको बच्चे के हाथ में सौंप देती है । बच्चे के हाथ में उस बँधी हुई डोरी का एक सिरा होता है जिसे वह झटका देता रहता है और पतंग आसमान में जा पहुँचती है । पतंग अपनी डोरी को बच्चे के सुपुर्द न करे तब, उसे जमीन पर पड़ा रहना पड़ेगा ।

आप अपने जीवन की बागडोर और जीवन का आधार भगवान के हाथ में न सौंपे, उसकी मर्जी के अनुसार न चलें तो आप पतंग की तरीके से आसमान पर उड़ने की अपेक्षा मत कीजिए । आपने दर्पण देखा है न, उसके सामने जो चीज आती है वह दर्पण में वैसे ही दिखाई पड़ने लगती है । आपके

जीवन में चारों ओर से दोष-दुर्गुण एवं कल्मष छाए हुए हैं, इसलिए आपका दर्पण भी, मानसिक स्तर भी, वैसा ही बन गया है । लेकिन अगर आप भगवान को सामने रखें, उसके नजदीक जाएं तो आप देखेंगे कि आपके जीवन में भी भगबान की आभा, भगवान की शक्ति उसी तरीके से बन जाती है जैसे कि दर्पण के सामने खड़े हुए आदमी की बन जाती है । वंशी अपने आपको पोली कर देती है और खाली कर देती है । पोली और खाली कर देने के बाद में फिर बजाने वाले के पास जा पहुँचती है और उससे कहती है कि आप बजाइए, जो आप कहेंगे वहीं मैं गाऊँगी । बजाने वाला फूँक मारता जाता है और वह बजती जाती है । भगवान को फूँक मारने दीजिए, और आप बजने के लिए तैयार हो जाइए ।

कठपुतली को आपने देखा होगा । उसके धागे बाजीगर के हाथ में लगे होते हैं । बाजीगर इशारे करता जाता है, और कठपुतली बिना कुछ कहे नाचना शुरू कर देती है । दुनिया को दिखाई पड़ता है कि कठपुतली का नाच कितना शानदार हुआ । पर वस्तुतः यह कठपुतली का नाच नहीं वरन बाजीगर का कमाल है । कठपुतली ने तो अपने शरीर के हिस्सों में धागे बँधवाए और उनको बाजीगर के हाथ में सौंप दिया, सपर्मण कर दिया । बस, यही आपको भी करना पड़ेगा । कठपुतली के तरीके से अगर आप बाजीगर के हाथ में अपनी जिंदगी की नाव सौंप सकते हों, अपनी इच्छाएं और आकांक्षाएं सौंप सकते हों, तो फिर देखिए कि कैसा मजा आ जाता है । आप उस जेनरेटर से संबद्ध हो जाइए जिसके साथ में जुड़ने के बाद ही बल्ब जलता है । पंखे तभी चलते हैं जब उनका संबंध बिजलीघर से जुड़ जाता है । अगर आप सुनेंगे नहीं, जुड़ेंगे नहीं, तब आप रखे रहिए, आपकी कीमत ढाई रुपये है । आप प्रकाश नहीं दे सकते । आपकी हैसियत है तो ठीक है, वह आपको मुबारक, लेकिन अगर आप अनंत शक्ति के साथ न जुड़े तो सब बेकार है । अनंत शक्ति के साथ अगर आप जुड़ेंगे तो फिर देखेंगे कि कितना कमाल कर सकते हैं । इसलिए आदमी की सबसे बड़ी समझदारी यह है कि अपने आपको भगवान के साथ में जोड़ लें । उसकी शक्तियों के साथ में अपनी सत्ता को मिला दें । यह काम जरा भी कठिन नहीं है, वरन बहुत सरल है । नल आपने देखा है न, जब वह टंकी के साथ जुड़ जाता है जिसमें पानी भरा हुआ है तो उसको बराबर पानी मिलता रहता है । अपने आप में अकेला नल कुछ भी तो नहीं है, लेकिन जब टंकी के साथ में रिश्ता मिला लिया तो उसकी

कीमत बढ़ गई । उस नल से अब आपको बराबर पानी मिलता रहेगा ।

वक्त छोटा हो तो क्या, नाचीज हो तो क्या, यदि आपने सच्चे मन से भगवान के साथ अपने आपको जोड़कर रखा है, तो भगवान की जो संपदा है, जो विभूतियाँ हैं, वह भक्त की अपनी हो जाती हैं और बराबर उसको मिलती चली जाती हैं । इसके लिए क्या करना पड़ेगा ? अपने आपको सौंपना पड़ेगा । और क्या करना पड़ेगा ? भगवान को बहकाना, फुसलाना और अपनी मर्जी पर चलाना बंद करना पड़ेगा । आपको ही उसका कहना मानना पड़ेगा, आपको ही समर्पण करना पड़ेगा । बीज अपने आप को ही बनाना पड़ेगा । भगवान के खेत में अपने आपको बोइए, फिर देखिए कैसी फसल आती है । मक्का का एक दाना खेत में बो देते हैं और उसका पौधा खड़ा हो जाता है, भुट्टे आ जाते हैं और एक-एक भुट्टे में हजार-हजार दाने होते हैं । इस तरह एक बीज के हजारों दाने हो जाते हैं । आप अपने आपको भगवान के खेत में बोइए, गलिए, फिर देखिए आपकी स्थिति कहाँ से कहाँ पहुँच जाती है । गलने का मन है नहीं, हिम्मत है नहीं, तो फिर काम कैसे चलेगा । आप गलने की हिम्मत नहीं करेंगे, बीज को जिंदगी भर अपनी पोटली में रखे रहेंगे और यह अपेक्षा करते रहेंगे कि जमीन हमारे खेत लहलहा दे और हमको नहीं गलना पड़े, ऐसा कहीं हुआ है क्या ? ऐसा नहीं होगा । आपको गलना पड़ेगा । अगर आप नहीं गलेंगे तब आप भगवान से क्या उम्मीद करेंगे ?

आपने सुना है न कि भगवान की आदत कुछ ऐसी है कि माँगते रहते हैं । पहले हाथ पसारते हैं, बाद में कुछ देने की बात कहते हैं । उनके हाथ पर आप कुछ रख नहीं सकते तो फिर आप क्या पाएंगे ? चावलों से, धूपबत्ती से आप भगवान को खरीद नहीं सकेंगे । आप आरती करके पा नहीं सकेंगे । जीभ की नोक से स्तोत्र पाठ करके या छोटे-बड़े कर्मकांड करके भगवान के अनुग्रहों के आप अधिकारी नहीं हो पाएंगे । तो फिर क्या करना पड़ेगा ? आपको अपना दृष्टिकोण, चिंतन और चरित्र, भावना और लक्ष्य सब का सब भगवान के साथ में जोड़ना पड़ेगा । जिस दिन आप यह करने को तैयार हो जाएंगे तो उस दिन आप देखिएगा क्या-क्या होता है । भगवान की मर्जी तो पूरी करिए फिर देखिए आपको कुछ मिलता है या नहीं । भगवान नीयत देखते हैं । अभी मैंने सुदामा का नाम लिया था । सुदामा ने अपनी पोटली दे दी थी, बाद में भगवान ने उन्हें जो दिया वह आप जानते हैं । जिसके पास भी भगवान जाते हैं, माँगते जाते हैं, देते हुए नहीं । शबरी के पास भगवान गए थे

तो कोई सोना-चाँदी या हीरे-मोती लेकर नहीं गए थे । वे माँगते हुए गए थे कि अरे हम बहुत भूखे हैं कुछ खाना खिलाइए । शबरी के पास जूठे बेर थे, जो कुछ भी था भगवान के सुपुर्द कर दिया । गोपियों के पास भी गए थे । गोपियों से भगवान प्यार करते थे और उनसे यही पूछते थे-लाइए आप कुछ दीजिए । कुछ नहीं तो छाछ ही माँगते थे । कर्ण से भी माँगने गए थे, बलि से भी माँगने गए थे । हर जगह भगवान माँगते ही चले आते हैं । भगवान कहीं भी जाते हैं तो मनुष्य की पात्रता को परखने के लिए, उसकी महानता को विकसित करने के लिए एक ही दबाव डालते हैं कि आपके पास क्या है, उसे सुपुर्द कीजिए । भगवान की आदत को आप जानेंगे नहीं तो मुश्किल पड़ेगा और अपने आप को सौंपने के लिए आमादा न होंगे तो आप भगवान को अपना नहीं बना सकेंगे ।

भगवान की भक्ति किसे कहते हैं ? समर्पण को, पर आपने तो उसे कठपुतली के तरीके से चलाने और भक्ति से उचित और अनुचित जो कुछ भी फायदे होते हों, उठा लेने को मान लिया है । आप अपनी भक्ति की इस परिभाषा को बदल दीजिए । भक्ति कैसी होती है ? इसकी एक कहानी सुनाता हूँ आपको । लैला-मजनू की कहानी सुनी है न आपने, न सुनी हो तो सुनिए । एक मजनू था जो लैला को प्यार करता था और चाहता था कि उससे शादी हो जाए । लेकिन उसका बाप तैयार नहीं था । उसने कहा-हम भिखारी के साथ अपनी बेटी की शादी नहीं करेंगे । तब लैला ने सोचा-चलो मैं ही अपनी मर्जी से शादी कर लेती हूँ, लेकिन पहले देखूँ तो सही कि ऐसे ही अपनी खुदगर्जी के लिए, मतलब के लिए ही मुझे अपने शिकंजे में कसना चाहता है, या वास्तव में मुझे प्यार करता है । प्यार करने का अर्थ होता है-देना । सो उसने सोचा चलो उसकी परीक्षा लेनी चाहिए । उसने अपनी एक बाँदी को भेजा । उसने मजनू से कहा कि लैला बहुत बीमार है, तो वह बहुत दुःखी हुआ । बाँदी ने कहा-दुःखी होने से क्या फायदा । कर सकते हो तो कुछ मदद कीजिए । अगर प्यार करते हैं तो कुछ कीजिए न । तो उसने कहा-क्या दूँ ? बाँदी ने कहा कि डाक्टरों ने कहा है कि लैला की नसों में खून चढ़ाया जाएगा । तो क्या आप अपना खून देंगे जिससे लैला की जान बचाई जा सके । मजनू फौरन तैयार हो गया और चाँदी का जो कटोरा बाँदी लाई थी उसे अपने खून से लबालब भर दिया और बोला-बाँदी जल्दी आना अभी मेरे शरीर में जितना भी रक्त है मैं सब उसके सुपुर्द कर दूँगा । मैं उसे

मुहब्बत करता हूँ और मुहब्बत का अर्थ होता है–देना । इसलिए मैं तो देने ही देने वाला हूँ । बाँदी रक्त का कटोरा लेकर चली गई । शेष नकली मजनुओं को भगा दिया गया । लैला ने अपने बाप से कहा कि जो मुझसे इतनी मुहब्बत करता है और जो मुहब्बत की कीमत को समझता है उसके साथ तो मैं रहूँगी ही । लैला की मजनू के साथ शादी हुई थी । आपकी भी शादी भगवान के साथ हो सकती है, आप जरूर भगवान के साथ शादी कर सकते हैं ।

इसके लिए करना क्या चाहिए ? एक ही बात करनी चाहिए–भगवान की मर्जी पर चलने के लिए आमादा हो जाइए । जो कुछ आप चाहते हैं, वह आप कीजिए । आप चाहते हैं ठीक है, लेकिन जो आप चाहते हैं उससे पहले भगवान ने बहुत कुछ दे दिया है । उसने आपको इन्सान की ऐसी बेहतरीन और समर्थ जिंदगी दी है कि इसके आधार पर आप अपनी मनमर्जी पूरी कर सकते हैं । मनमर्जी के लिए कोई कमी नहीं है । आपके हाथ कितने बड़े हैं, अक्ल कितनी बड़ी है, आपके आँखें और जुबान कितनी शानदार है । आप अपनी दैनिक जरूरतों की, जिनकी भगवान से अपेक्षा करते हैं, उनके लिए अपेक्षा मत कीजिए । आप जो पुरुषार्थ से कमाते हैं उसमें संतोष कर सकते हैं अथवा कम में काम चला सकते हैं । आप अपनी हवस और अपनी ख्वाहिशें, तमन्नाएं और इच्छाएं अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने के लिए क्या भगवान को दबोचेंगे ? भगवान को मजबूर करेंगे क्या ? क्या वह कर्तव्य की बात को छोड़ दें और आपके लिए पक्षपात करने लगें और कर्मफल की महत्ता का परित्याग कर दें ? आप ऐसा मत कीजिए, भगवान को न्यायाधीश रहने दीजिए । आप भगवान को बेइज्जत मत कीजिए । आप अपनी मर्जी के लिए उनको पक्षपाती मत बनाइए । ऐसा वे करेंगे भी नहीं । आप बनाना चाहें तो भी वे नहीं करेंगे ।

इसलिए तरीका सिर्फ एक ही है कि आप उस शक्ति के भंडार के साथ में अपने आपको मिला लीजिए, जोड़ लीजिए । मिलाने और जोड़ने का तरीका वही है अर्थात आपको उनकी मर्जी पर चलना पड़ेगा । आप अपनी मर्जियाँ खत्म कीजिए, अपनी आकांक्षाएं खत्म कीजिए, अपनी इच्छाएं खत्म कीजिए । आप उन्हीं के हो जाइए और उन्हीं के साथ रहिए । जब आप भगवान के साथ हो जाते हैं तो वे आपके हो जाते हैं । आप उनके हो जाइए और अपना बना लीजिए । राजा हरिश्चंद्र बिके थे एक बार, डोमराजा खरीद ले गया था उन्हें । भगवान भी चौराहे पर बिकने के लिए खड़े हैं । वे आवाज

लगाते हैं कि हम बिकने के लिए खड़े हैं कि हमको खरीद लिया जाए । जो हमको खरीद लेगा, उसी की सेवा करेंगे, उसी के साथ-साथ रहेंगे । आप चाहें तो उनको खरीद सकते हैं । क्या कीमत है ? आप अपने आपको उनके हाथों बेच दीजिए और उन्हें अपने हाथों खरीद लीजिए । स्त्री अपने हाथों अपने आपको अपने पति के हाथों सौंप देती है, अपने आपको बेच देती है और इसकी कीमत पर पति को खरीद लेती है । बस यही मित्रता का रास्ता है, यही भगवान की भक्ति का रास्ता है । आपको अपने जीवन में हेर-फेर करना ही पड़ेगा और करना ही चाहिए । आप अपने घिनौने चिंतन को बदल दीजिए, छोटे दृष्टिकोण को बदल दीजिए । लोभ और लालच से बाज आइए और भगवान की सुंदर दुनिया को ऊँचा बनाने के लिए, शानदार बनाने के लिए, उनके राजकुमार के तरीके से उनकी संपदा को, उनकी सृष्टि को ऊँचा और अच्छा बनाने के लिए कमर कसकर खड़े हो जाइए । आप समर्पित हो जाइए, शरणागति में आइए, विलय कीजिए, विसर्जन कीजिए, फिर देखिए आप क्या पाते हैं ? बीज के तरीके से गल जाइए और पेड़ के तरीके से उगने की तैयारी कीजिए । आप त्याग नहीं करेंगे तो पा कैसे लेंगे । जो त्याग करना है उसमें जप करना ही काफी नहीं है, जरूरी तो हैं, पर काफी नहीं । भगवान को चावल चढ़ा देना, धूपबत्ती उतार देना, आरती उतारना जरूरी तो है, पर काफी नहीं है । ज्यादा करने के लिए आप अपना कलेजा चौड़ा कीजिए और तैयारी कीजिए । आज मुझे यही निवेदन करना था, आप सब लोगों से ।

ॐ शांतिः ।

गुरुतत्त्व की गरिमा एवं महिमा

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ बोलिए,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि
धियो यो नः प्रचोदयात् ।

देवियो एवं सज्जनो,

इस संसार में कुल मिलाकर तीन शक्तियाँ हैं, तीन सिद्धियाँ हैं । इन्हीं पर हमारा सारा जीवन व्यापार चल रहा है । लाभ सुख जो भी हम प्राप्त करते हैं इन्हीं तीन शक्तियों के आधार पर हमें मिलते हैं । पहली शक्ति है श्रम की शक्ति, शरीर के भीतर की शक्ति भगवान की दी हुई । इससे हमें धन व यश मिलता है । जमीन पहले भी थी, अभी भी है । यह मनुष्य का श्रम है । जब

वह लगा तो वह सोना, धातुएं, अनाज उगलने लगी । जितना भी सफलताओं का इतिहास है, वह आदमी के श्रम की उपलब्धियों का इतिहास है । यही सांसारिक उन्नति का इतिहास है ।

जमीन कभी ब्रह्माजी ने बनाई होगी तो ऐसी ही बनाई होगी जैसा कि चंद्रमा है । यहाँ गड्ढा, वहाँ खड्डा, सब ओर यही । श्रम ने धरती को समतल बना दिया । नदियाँ चारों ओर उत्पात मचा देती थीं । जलप्लावन से प्रलय सी आ जाती थी । रास्ते बंद हो जाते थे । ब्याह-शादियाँ भी बंद हो जाती थीं, उन चार महीनों में जिन्हें चतुर्मास कहा जाता है सुना होगा आपने नाम । आदमी जहाँ थे, वहीं कैद हो जाते थे । यह आदमी का श्रम है, आदमी की मशक्कत है कि आदमी ने पुल बनाए, नाव बनाई, बाँध बनाए । अब वह बंधन नहीं रहा । सारी मानव जाति श्रम पर टिकी है आदमी का श्रम, जिसकी हम अवज्ञा करते हैं । दौलत हमेशा आदमी के पसीने से निकली है । आपको संपदा के लिए कहीं गिड़गिड़ाने, नाक रगड़ने की जरूरत नहीं है । एक ही देवता है-श्रम का देवता । वही देवता आपको दौलत दिला सकता है । उसी की आपको आराधना-उपासना करना चाहिए ।

माना कि आपके बाप ने कमाकर रख दिया है, पर बिना श्रम के उसकी रखवाली नहीं हो सकती । श्रम कमाता भी है, दौलत की रखवाली भी कर सकता है । हम श्रम का महत्व समझ सकें उसे नियोजित कर सकें तो हम निहाल हो सकते हैं । मात्र संपत्तिवान-समृद्ध ही नहीं हम अन्यान्य दौलत के भी अधिकारी हो सकते हैं । सेहत मजबूती श्रम से ही आती है । शिक्षा, कला-कौशल, शालीनता, लोक व्यवहार में पारंगतता श्रम से ही प्राप्त होती है । बेईमानी से चालाकी से आदमी दौलत की छीन-झपट मात्र कर सकता है, पर उसे कमा नहीं सकता । आप यदि फसल बोना चाह रहे हैं तो बीज बोइए । यदि चालाकी करें, बीज खा जाएं तो कुछ नहीं होने वाला । हर आदमी को ईमानदारी से श्रम किए जाने की, मशक्कत की कीमत समझाइए । संपदा अभीष्ट हो, विनिमय करना चाहते हों तो कहिए श्रमरूपी पूँजी अपने पास रखें । उसका सही नियोजन करिए । यह है दौलत नंबर एक ।

दूसरे नंबर की दौलत है हमारी ज्ञान की, विचार करने की शक्ति । हमें जो प्रसन्नता मिलती है इसी ज्ञान की शक्ति से मिलती है । खुशी दिमागी बैलेंस से प्राप्त होती है । यह बाहर से नहीं आती, भीतर से प्राप्त होती है । जब

हमारा मस्तिष्क संतुलित होता है तो हर परिस्थिति में हमें चारों ओर प्रसन्नता ही प्रसन्नता दिखाई देती है । घने बादल दिखाई देते हैं तो एक सोच सकता है कि कैसे काले मेघ आ रहे हैं । अब बरसेंगे । दूसरा सोचने वाला कह सकता है कि कितनी सुंदर मेघमालाएं चली आ रही हैं । यह है प्रकृति का सौंदर्य ।

हम गंगोत्री जा रहे थे । चारों ओर सुनसान डरावना जंगल था । जरा सी पत्तों की सरसराहट हो तो लगे कि साँप है । हवा चले, वृक्षों के बीच सीटी सी बजे तो लगे कि भूत है । अच्छे-खासे मजबूत आदमी के नीरव एकाकी बियाबान में होश उड़ जाएं । पर हमने उस सुनसान में भी प्रसन्नता का स्रोत ढूँढ़ लिया । 'सुनसान के सहचर' हमारी लिखी किताब आपने पढ़ी हो तो आपको पता लगेगा कि हर लम्हे को जिया जा सकता है, प्रकृति के साथ एकात्मता रखी जा सकती है । अब हम बार-बार याद करते हैं उस स्थान की जहाँ हमारे गुरु ने हमें पहले बुलाया था । अब तो हम कहीं जा भी नहीं पाते पर प्रकृति के सान्निध्य में अवश्य रहते हैं । हमारे कमरे में आप चले जाइए । आपको सारी नेचर की, प्रकृति के भिन्न-भिन्न रूपों की तस्वीरें वहाँ लगी मिलेंगी । बादलों में, झील में, वृक्षों के झुरमुटों में, झरनों में से खुशी छलकती दिखाई देती है । वहाँ कोई देवी-देवता नहीं है, मात्र प्रकृति के भिन्न-भिन्न रूपों की तस्वीरें हैं । हमें उन्हीं को देखकर अंदर से बेइंतिहा खुशी मिलती है ।

जीवन का आनंद सदैव भीतर से आता है । यदि हमारे सोचने का तरीका सही हो तो बाहर जो भी क्रिया-कलाप चल रहे हों, उन सभी में हमको खुशी ही खुशी बिखरी दिखाई पड़ेगी । बच्चों को देखकर, धर्मपत्नी को देखकर अंदर से आनंद आता है । सड़क पर चल रहे क्रिया-कलापों को देखकर आप आनंद लेना सीख लें यदि आपको सही विचारणा की शक्ति मिल जाए । स्वर्ग आप चाहते हैं तो स्वर्ग के लिए मरने की जरूरत नहीं है, मैं आपको दिला सकता हूँ । स्वर्ग दृष्टिकोण में निहित है । इन आँखों से देखा जाता है । देखने को 'दर्शन' कहते हैं । दर्शन अर्थात दृष्टि । दर्शन अर्थात फिलॉसफी । जब हम किसी बात की गहराई में प्रवेश करते हैं, बारीकी मालूम करने का प्रयास करते हैं तब इसे दृष्टि कहते हैं । यही दर्शन है । किसी बात को गहराई से समझने का माद्दा आ गया अर्थात दर्शन वाली दृष्टि विकसित हो गई । आपने किताब देखी, पढ़ी पर उसमें क्या देखा ? उसका

दर्शन आपको समझ में आया या नहीं । सही अर्थों में तभी आपने दृष्टि डाली, यह माना जाएगा ।

दृष्टिकोण विकसित होते ही ऐसा आनंद, ऐसी मस्ती आती है कि देखते ही बनता है । दाराशिकोह मस्ती में डूबते चले गए । जेबुन्निसा ने पूछा– "अब्बाजान ! आपको क्या हुआ है आज । आप तो पहले कभी शराब नहीं पीते थे । फिर यह मस्ती कैसी ?" बोले–"बेटी ! आज मैं हिंदुओं के उपनिषद् पढ़कर आया हूँ । जमीन पर पैर नहीं पड़ रहे हैं । जीवन का असली आनंद उनमें भरा पड़ा है । बस यह मस्ती उसी की है ।"

यह है असली आनंद । मस्ती, खुशी, स्वर्ग हमारे भीतर से आते हैं । स्वर्ग सोचने का एक तरीका है । किताब में क्या है ? वह तो काला अक्षर भर है । हर चीज की गहराई में प्रवेश करने पर जो आनंद-खुशी मिलती है, वह सोचने के तरीके पर निर्भर है । इसी तरह बंधन-मुक्ति भी हमारे चिंतन में निहित है । हमें हमारे चिंतन ने बाँध कर रखा है । हम भगवान के बेटे हैं । हमारे संस्कार हमें कैसे बाँध सकते हैं । सारा शिकंजा चिंतन का है । इससे मुक्ति मिलते ही सही अर्थों में आदमी बंधन मुक्त हो जाता है । हमारी नाभि में खुशी रूपी कस्तूरी छिपी पड़ी है । ढूँढ़ते हम चारों ओर हैं । हर दिशा से वह आती लगती है पर होती अंदर है ।

यदि आपको सुख-शांति मुस्कराहट चाहिए तो दृष्टिकोण बदलिए । खुशी सब ओर बाँट दीजिए । माँ को दीजिए, पत्नी को दीजिए, मित्रों को दीजिए । राजा कर्ण प्रतिदिन सवा मन सोना दान करता था । आपकी परिस्थितियाँ नहीं हैं देने की किंतु आप सोने से भी कीमती आदमी की खुशी बाँट सकते हैं । आप जानते नहीं हैं, आज आदमी खुशी के लिए तरस रहा है । जिंदगी की लाश इतनी भारी हो गई है कि वजन ढोते-ढोते आदमी की कमर टूट गई है । वह खुशी ढूँढ़ने के लिए सिनेमा, क्लब, रेस्टॉरेंट, कैबरे डांस सब जगह जाता है पर वह कहीं मिलती नहीं । खुशी दृष्टिकोण है, जिसे मैं ज्ञान की संपदा कहता हूँ । जीवन की समस्याओं को समझकर अन्यान्य लोगों से जो डीलिंग की जाती है वह ज्ञान की देन है । वही व्यक्ति ज्ञानवान होता है जिसे खुशी तलाशना व बाँटना आता है । ज्ञान पढ़ने-लिखने को नहीं कहते । वह तो कौशल है । ज्ञान अर्थात नजरिया, दृष्टिकोण, व्यवहारिक बुद्धि ।

मैंने आपको दो शक्तियों के बारे में बताया । पहली श्रम की शक्ति जो

आपको दौलत, कीर्ति, यश देती है । दूसरी विचारणा की शक्ति जो आपको प्रसन्नता व सही दृष्टिकोण देती है । तीसरी शक्ति रूहानी है । वह है आदमी का व्यक्तित्व । व्यक्ति का वजन । कुछ आदमी रुई के होते हैं व कुछ भारी । जिनकी हैसियत वजनदार व्यक्तित्व की होती है, वे जमाने को हिलाकर रख देते हैं । कीमत इनकी करोड़ों की होती है । वजनदार आदमी यदि हिंदुस्तान की तवारीख से काट दें तो इसका बेड़ा गर्क हो जाए । जिसके लिए हम फूले फिरते हैं, वह वजनदार आदमियों का इतिहास है । वजनदारों में बुद्ध को शामिल कीजिए । वे पढ़े-लिखे थे कि नहीं किंतु वजनदार थे । हजारों सम्राटों ने, दौलतमंदों ने थैलियाँ खाली कर दीं । बुद्ध ने जो माँगा वह उनने दिया । हरिश्चंद्र, सप्तर्षि, व्यास, दधीचि, शंकराचार्य, गाँधी, विवेकानंद के नाम हमारी कौम के वजनदारों में शामिल कीजिए । इन्हीं पर हिंदुस्तान की हिस्ट्री टिकी हुई है । यदि इन्हें खरीदा जा सका होता तो बेशुमार पैसा मिला होता ।

आदमी की कीमत है उसका व्यक्तित्व । ऐसे व्यक्ति दुनिया की फिजां को बदलते हैं, देवताओं को अनुदान बरसाने के लिए मजबूर करते हैं । पेड़ अपनी आकर्षण शक्ति से बादलों को खींचते व बरसने के लिए मजबूर करते हैं । वजनदार आदमी अपने व्यक्तित्व की मैग्नेट की शक्ति से देव शक्तियों को खींचते हैं । यदि आप भी दैवी अनुदान चाहते हों तो अपने व्यक्तित्व को वजनदार बनाना होगा । दैवी शक्तियाँ सारे ब्रह्मांड में छिपी पड़ी हैं । सिद्धियाँ जो आदमी को देवता, महामानव, ऋषि बनाती हैं, सब यहीं हमारे आसपास हैं । कभी इस धरती पर तैंतीस कोटि देवता बसते थे । सभी व्यक्तित्ववान थे । व्यक्तित्व एक बेशकीमती दौलत है, यह तथ्य आप समझिए । व्यक्तित्व सम्मान दिलाता है, सहयोग प्राप्त कराता है । गाँधी को मिला क्योंकि उनके पास वजनदार व्यक्तित्व था ।

व्यक्तित्व श्रद्धा से बनता है । श्रद्धा अर्थात सिद्धांतों व आदर्शों के प्रति अटूट व अगाध विश्वास । आदमी आदर्शों के तई मजबूत हो जाता है तो व्यक्तित्व ऐसा वजनदार बन जाता है कि देवता तक नियंत्रण में आ जाते हैं । विवेकानंद ने रामकृष्ण परमहंस की शक्ति पाई क्योंकि स्वयं को वजनदार वे बना सके । भिखारी को दस पैसे मिलते हैं । कीमत चुकाने वाले को, वजनदार व्यक्तित्व वाले को सिद्ध पुरुष का आशीर्वाद मिलता है ।

यदि आप किसी आशीर्वाद की कामना से, देवी-देवता की सिद्धि की कामना से यहाँ आए हैं तो मैं आपसे कहता हूँ कि आप अपने व्यक्तित्व को

विकसित कीजिए ताकि आप निहाल हो सकें । दैवी कृपा मात्र इसी आधार पर मिल सकती है और इसके लिए माध्यम है श्रद्धा । श्रद्धा मिट्टी से गुरु बना लेती है । पत्थर से देवता बना देती है । एकलव्य के द्रोणाचार्य मिट्टी की मूर्ति के रूप में उसे तीरंदाजी सिखाते थे । रामकृष्ण की काली भक्त के हाथों भोजन करती थी । उसी काली के समक्ष जाते ही विवेकानंद नौकरी-पैसा भूलकर शक्ति-भक्ति माँगने लगे थे । आप चाहे मूर्ति किसी से भी खरीद लें । मूर्ति बनाने वाला खुद अभी तक गरीब है । पर मूर्ति में प्राण श्रद्धा से आते हैं । हम देवता का अपमान नहीं कर रहे । हमने खुद पाँच गायत्री माताओं की मूर्ति स्थापित की हैं, पर पत्थर में से हमने भगवान पैदा किया है श्रद्धा से । मीरा का गिरधर गोपाल चमत्कारी था । विषधर सर्पों की माला, जहर का प्याला उसी ने पी लिया व भक्त को बचा लिया । मूर्ति में चमत्कार आदमी की श्रद्धा से आता है । श्रद्धा ही आदमी के अंदर से भगवान पैदा करती है ।

श्रद्धा का आरोपण करने के लिए ही यह गुरु पूर्णिमा का त्यौहार है । श्रद्धा से हमारे व्यक्तित्व का सही मायने में उदय होता है । मैं अंधश्रद्धा की बात नहीं करता । उसने तो देश को नष्ट कर दिया । श्रद्धा अर्थात आदर्शों के प्रति निष्ठा । जितने भी ऋषि संत हुए हैं उनमें श्रेष्ठता के प्रति अटूट निष्ठा देखी जा सकती है । जो कुछ भी आप हमारे अंदर देखते हैं, श्रद्धा का ही चमत्कार है । आज से ५५ वर्ष पूर्व हमारे गुरु की सत्ता हमारे पूजाकक्ष में आई । हमने सिर झुकाया व कहा कि आप हुक्म दीजिए, हम पालन करेंगे । अनुशासन व श्रद्धा-गुरु पूर्णिमा इन दोनों का त्यौहार है । अनुशासन-आदर्शों के प्रति । यह कहना कि जो आप कहेंगे वही करेंगे । श्रद्धा अर्थात प्रत्यक्ष नुकसान दीखते हुए भी आस्था, विश्वास, आदर्शों को न खोना । श्रद्धा से ही सिद्धि आती है । हमें अपने आप पर घमंड नहीं है पर विनम्रतापूर्वक कहते हैं कि यह देवशक्तियों के प्रति हमारी गहन श्रद्धा का ही चमत्कार है जिसके बलबूते हमने किसी को खाली हाथ नहीं जाने दिया । गायत्री माता श्रद्धा में से निकलीं । श्रद्धा में मुसीबतें झेलनी पड़ती हैं व सिद्धांतों का संरक्षण करना पड़ता है । हमारे गुरु ने कहा-संयम करो, कई दिक्कतें आएंगी पर उनका सामना करो । हमने चौबीस वर्ष तक तप किया । जायके को मारा । हम जौ की रोटी खाते । हमारी माँ बड़ी दुःखी होतीं । हमारी तपस्या की अवधि में उनने भी हमारी वजह से कभी मिठाई का टुकड़ा तक न चखा । हमारे गायत्री मंत्र में चमत्कार इसी तप से आया ।

आप चाहते हैं कि आपको कुछ मिले। तो वजन उठाइए । हम आपको मुफ्त देना नहीं चाहते । क्योंकि इससे आपका अहित होगा । वह हम चाहते नहीं । आप हमारा कहना मानें तो हम देने को तैयार हैं । गुरु-शिष्य की परीक्षा एक ही कि अनुशासन मानते हैं हम आपके शिष्य । ऐसा कहें व मानें । समर्थ ने अपने शिष्य की परीक्षा ली थी व सिंहनी का दूध लाने को कहा था । अपनी आँख की तकलीफ का बहाना करके । सिंहनी कहाँ थी ? वह तो हिप्नोटिज्म से एक सिंहनी खड़ी कर दी थी । शिवाजी का संकल्प था दृढ़ । वे ले आए सिंहनी का दूध व अक्षय तलवार का उपहार गुरु से पा सके । राजा दिलीप की गायों को जब माया के सिंह ने पकड़ लिया तो उनने स्वयं को सौंप दिया । इस स्तर का समर्पण हो तो ही गुरु की शक्ति-दैवी अनुदान मिलते हैं । यह आस्थाओं का इम्तिहान है जो हर गुरु ने अपने शिष्य का लिया है ।

श्रद्धा अर्थात सिद्धांतों का, भावनाओं का आरोपण ! कहा गया है-'भावे न विद्यतो देव तस्मात् भावो हि कारणम्' भावना का आरोपण करते ही भगवान प्रकट हो जाते हैं । भगवान अर्थात सिद्धि । हर आशीर्वाद, सिद्धि का आधार, फीस एक ही है-श्रद्धा । उसे विकसित करने के लिए अभ्यास हेतु गुरु पूर्णिमा पर्व । गुरुतत्व के प्रति श्रद्धा का अभ्यास आज के दिन किया जाता है । गुरु अंतरात्मा की उस आवाज का नाम है जो भगवान की गवर्नर है हमारी सत्ता उसी को समर्पित है । वही हमारी सद्गुरु है । गुरु को ब्रह्मा कहा गया है अर्थात हमारी सुपर कांशसनेस हमारा अतिमानस । अच्छा काम करते ही यह हमें शाबाशी देता है । गलत काम करते ही धिक्कारता है । गुरु ही ब्रह्मा है, विष्णु है, महेश है । गुरु अर्थात भगवान का प्रतिनिधि । गुरु को जाग्रत-जीवंत करने के लिए एक खिलौना बनाकर श्रद्धा का आरोपण हम जिस पर भी करते हैं, वही गुरु बन जाता है । इसमें दोनों बातें हैं । मानवी कमजोरियाँ भी हो सकती हैं । उनको न देखकर हम अच्छाइयों के प्रति श्रद्धा विकसित करें । आप हमें मानते हैं तो हमारा चित्र देखते ही श्रेष्ठतम पर विश्वास करने का अभ्यास करें । यह एक व्यायाम है, रिहर्सल है । इसी के आधार पर हम अपने अंदर का सुपर चेतन जगाते हैं । प्रतीक की आवश्यकता इसी कारण पड़ती है ।

हमारी अटूट श्रद्धा की प्रतिक्रिया लौट कर हमारे पास ही आ जाती है । एक शिष्य गुरु के चरणों की धोवन को श्रद्धापूर्वक दुःखी-कष्ट पीड़ितों को

देता था । सब ठीक हो जाते थे । पर जब गुरु ने उसी धोवन का चमत्कार जान कर अपने पैरों को जल से धोकर वह जल औरों को दिया तो कुछ भी न हुआ । दोनों जल एक ही हैं, पर एक में श्रद्धा का चमत्कार है । उसी कारण वह अमृत बन गया । जबकि दूसरा मात्र धोवन का जल रह गया है । श्रद्धा आध्यात्मिक जीवन का प्राण है, रीढ़ है । देवपूजन आपको सफलता की कामना से करना हो तो श्रद्धा विकसित करके कीजिए । साधनाएं मात्र क्रिया हैं यदि उनमें श्रद्धा का समन्वय नहीं है । आदमी की जो भी कुछ आध्यात्मिक उपलब्धियाँ हैं, वे श्रद्धा पर टिकी हैं । आपकी अपने प्रति यदि श्रेष्ठ मान्यता है, आपकी श्रद्धा वैसी है तो असल में वही हैं आप । यदि इससे उल्टा है तो वैसे ही बन जाएंगे आप । गुरु पूर्णिमा श्रद्धा के विकास का त्यौहार है । हमारे गुरु ने अनुशासन की कसौटी पर कसकर हमें परखा है तब दिया है । हमारे जीवन की हर उपलब्धि उसी अनुशासन की देन है । वेदों के अनुवाद से लेकर ब्रह्मवर्चस के निर्माण तथा चार हजार शक्तिपीठों को खड़ा करने का काम एक ही बलबूते हुआ । गुरु ने कहा–कर । हमने कहा–'करिष्ये वचनं तब' । गुरु श्रीकृष्ण के द्वारा गीता सुनाए जाने पर शिष्य अर्जुन ने यही कहा कि सारी गीता सुन ली । अब जो आप कहेंगे, वही करूँगा ।

आज गुरु पूर्णिमा का त्यौहार है । हम आपको बता रहे हैं कि भगवान का नया अवतार होने जा रहा है । आप की परिस्थितियों के अनुरूप यह अवतार है । जब–जब दुष्टता बढ़ती है तब–तब देश काल की परिस्थितियों के अनुरूप भगवान अवतार के रूप में जन्म लेते हैं । आज आस्थाओं में, जन–जन के मन–मन में असुर घुस गया है । इसे विचारों की विकृति कह सकते हैं । एक किश्त आज के अवतार की आज से २५०० वर्ष पूर्व बुद्ध के रूप में, विचारशीलता के रूप में आई थी । वही प्रज्ञा की, विवेक की, विचारों की अब पुनः आई है । वह है गायत्री मंत्र ऋतंभरा प्रज्ञा के रूप में । यह अवतार जो आ रहा है विचारों के संशोधन के रूप में दिमागों में ही नहीं, आस्थाओं में भी हलचलें पैदा करेगा । विचार क्रांति के रूप में जो आ रही है वह युगशक्ति गायत्री है । यह गायत्री हिंदुस्तान मात्र की नहीं सारे विश्व की है । नए विश्व की माइक्रोफिल्म इसमें छिपी पड़ी है । गायत्री मंत्र विश्व मंत्र है । व्यक्ति का अंतस व बहिरंग बदलने वाले बीज इस मंत्र के अंदर छिपे पड़े हैं । यदि आपको यह बात समझ में आ गई तो आप हमारे साथ नवयुग का स्वागत करने में जुट जाएंगे । हम अपने लिए एक ही नाम बताते हैं–मुर्गा । मुर्गा वह

जो प्रभात के आगमन का उद्घोष करता है । गायत्री ने हमें फिर मुर्गा बना दिया है । आइए जोर से उद्घोष करें कि नव प्रभात आ रहा है, नया युग आ रहा है, युग शक्ति का अवतरण हो रहा है । कुकुडूकूँ.....। यह तो मुर्गा करता है । हम नए युग की अगवानी करें ।

हम गायत्री की फिलॉसफी व युग के देवता विज्ञान की बात आपको बताते आए हैं । यह ब्रह्म विद्या घर-घर पहुँचे, इसमें आप सबका सहयोग चाहते हैं । जैसे सेतुबंध के लिए, गोवर्धन के लिए, अवतारों को सहयोग मिला हम भी चाहते हैं कि आप भी इस प्रवाह में सम्मिलित हो जाएं । आपको भी बाद में लगेगा कि हम भी समय पर जुड़ गए होते तो अच्छा रहता । युग शक्ति का उदय एवं अवतरण हो रहा है । आप इस अवतरण में एक हाथ भर लगा दें । आपकी भी गणना युगांतरकारी पुरुषों में होने लगेगी । आप समय दीजिए, पैसा दीजिए । यह सोचकर नहीं कि हमारा काम रुकेगा । आप अपनी श्रद्धा को परिपक्व करने के लिए जो भी कर सकें वह करिए । हमें देने से, हमें गुरुदीक्षा से मतलब है । घर-घर जन-जन तक गायत्री का सद्ज्ञान पहुँचाने का काम करना । दवा तो हमारे पास है आस्थाओं में छाई विषाक्तता की । आप मात्र सुई बन जाइए । आज की गुरु पूर्णिमा के दिन संपूर्ण समर्पण की युग देवता के काम के लिए खपने की मैं आपसे अपेक्षा रखता हूँ । आशा है आप मेरी इच्छा पूरी करेंगे ।

अंत में यह कामना करते हैं कि जिस श्रद्धा ने हमारा कल्याण किया वह आपका भी कल्याण करे ताकि आप महान बनने के अधिकारी हो सकें । आप सबका कल्याण हो, सब स्वस्थ हों, सबका समर्पण भाव बढ़ता रहे । 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः, सर्वे भद्राणि पश्यन्तु माकश्चिद् दुख माप्नुवात् ।'

ॐ शांतिः शांतिः शांतिः ।

(२० जुलाई १९७८)

महायज्ञों का स्वरूप व उद्देश्य

(आज स्थान-स्थान पर भारत व विश्व में अश्वमेध यज्ञ हो रहे हैं । भारत वर्ष में ज्ञानयज्ञों व अश्वमेध यज्ञों की परंपरा रही है । यह क्यों व किसलिए होते थे, इसकी जानकारी देने वाला एक सामयिक उद्‌बोधन परम पूज्य गुरुदेव द्वारा २९ सितंबर १९७८ को शांतिकुंज प्रांगण में उपस्थित शिविरार्थी समुदाय के समक्ष दिया गया था । वही प्रस्तुत है ।)

गायत्री मंत्र साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि
धियो यो नः प्रचोदयात् ।

मनुष्य के सामने अनेक समस्याएं हैं । आइए विचार विनिमय करने के पश्चात उनका समाधान करें । प्राचीन काल से यही तरीका रहा है । तब सरकारें भी अपना काम करती थीं, पर समाज सरकारों पर आश्रित नहीं था । सरकार का अपना एक दायरा है छोटा सा, कि चोर-उचक्कों को पकड़ना चाहिए । देश की सुरक्षा के लिए अगर खतरा पैदा हो तो सामना करना चाहिए और जो टैक्स वसूल होता है, उसे प्रजा की उन्नति में खर्च करना चाहिए । बस यही दायरा है सरकार का, इससे ज्यादा नहीं । मनुष्यों के विचारों पर, भावनाओं पर सरकार का कोई असर नहीं होता । पैसे का असर होता है, पैसा आपको देना पड़ेगा, लेकिन अगर यह कहा जाए कि आप ब्रह्मचर्य से रहिए, तो कहेंगे कि नहीं । आप हमें पकड़ कर गिरफ्तार कर लीजिए, फेमिली प्लानिंग तो आप जबरदस्ती भी कर सकते हैं, पर ब्रह्मचर्य आपके कहने से नहीं हो सकता । आप कौन होते हैं कहने वाले ? विचारों के ऊपर, भावनाओं के ऊपर सरकार का कोई नियंत्रण नहीं होता । तब इन पर किसका नियंत्रण होता है-समाज का नियंत्रण होता है, विचारशीलों का नियंत्रण होता है । विचार तैयार करना, समाज की परंपराओं को तैयार करना और उनको दिशा देना विचारशीलों का काम है ।

हमारी समाज व्यवस्था ऐसी है कि उसमें बार-बार विकृतियाँ खड़ी हो जाती हैं और बार-बार उनका समाधान ढूँढ़ने की आवश्यकता पड़ती है । इसलिए बार-बार हम विचारशील लोगों को एकत्र होना पड़ता है । प्रचीन काल में विचारशीलों के एकत्रित होने की पद्धति, विचार विनिमय की पद्धति, समस्याओं के समाधान करने की पद्धति का नाम था-यज्ञ । दो तरह के यज्ञ

होते थे । प्राचीन काल के यज्ञों का जब हम इतिहास देखते हैं तो दो तरह के बड़े यज्ञों का वर्णन मिलता है । एक इतिहास मिलता है राजसूय यज्ञों का । राजसूय यज्ञ कैसे होते थे ? जैसा युधिष्ठिर ने किया था । अश्वमेध कैसे होते थे ? जैसा कि रामचंद्र जी के जमाने में हुआ था । अश्वमेध का घोड़ा छोड़ करके उन्होंने उसके द्वारा विचारशीलों को निमंत्रण भेजा था और यह कहा था कि आप लोग एक स्थान पर एकत्र हों-संघबद्ध हों । एक दूसरे का कहना मानें, मिल-जुल कर चलें । राजसूय यज्ञ इसी प्रकार राजनीतिक दिग्विजय के लिए होते थे । इस तरह के बड़े-बड़े यज्ञ होते थे, जहाँ सब लोग जमा होते थे और राजनीतिक समस्याओं के ऊपर, सांस्कृतिक समस्याओं के ऊपर, आर्थिक समस्याओं के ऊपर, सुरक्षात्मक समस्याओं के ऊपर विचार विनिमय होते थे और जो फैसले होते थे, वे सर्वमान्य होते थे । इनमें सामूहिक हवन भी होता था । तब प्रत्येक आदमी के दैनिक जीवन के क्रिया-कृत्य में भी हवन होता था, पर सामूहिक यज्ञों में ऐसा नहीं होता था कि दस-ग्यारह हजार आदमी आ गए और कहने लगें कि लाइए १०-११ हजार हवन कुंड खोदिए । १० हजार चौके चलाइए । १० हजार चिमटे और तवे लाइए । जब एक स्थल पर खाना पक सकता है, मिल-जुल कर सामूहिक दावत खाई जा सकती है तो एक ही स्थल पर हवन क्यों नहीं हो सकता ? सामूहिक हवन कैसे हो सकता है ? ऐसे ही जैसे हम आप एक सौ कुंडीय यज्ञों के बड़े आयोजनों में करते हैं । लोग पारी-पारी से आते-जाते हैं । उनसे यही कहा जाता है कि अपनी पारी से आते जाइए, परिक्रमा एक साथ लगाते जाइए और जयकारा एक साथ बोलते जाइए, सामूहिकता का मजा भी आएगा और सुविधा व्यवस्था भी रहेगी । राजसूय यज्ञ, अश्वमेध यज्ञ सामूहिक होते थे, जिनमें हवन मुख्य होता है ।

उस जमाने में हवन किए बिना कोई रोटी भी नहीं खाता था । अग्निहोत्र हमारा स्वाभाविक दैनिक कृत्य है । जिस प्रकार स्नान, भजन, भोजन दैनिक कृत्य हैं, उसी प्रकार गायत्री उपासना और यज्ञ हमारा आध्यात्मिक नित्य कर्म है और होना ही चाहिए । बड़े यज्ञ कभी-कभी होते थे । उनमें बड़ी समस्याओं का समाधान करने के लिए, राजनीतिक समस्याओं का समाधान करने के लिए बड़ी जन-गोष्ठियाँ होती थीं । इनमें राजनीतिज्ञ, समाज विज्ञानी तथा समाज पर अधिकार-प्रभाव रखने वाले श्रेष्ठजन जमा होते थे और सामाजिक समस्याओं, आर्थिक समस्याओं एवं अन्यान्य समस्याओं का

मिल-जुल कर समाधान खोजते थे । इसमें सरकार का कोई हस्तक्षेप नहीं होता था, वरन उसे कहा जाता था कि आपको ऐसा मानना चाहिए और कानून बनाना चाहिए । इसीलिए प्राचीन काल में राजनीतिक क्षेत्र के लोग राष्ट्रीय समागम के नाम पर जगह-जगह जमा होते थे और स्थानीय समस्याओं तथा सामाजिक समस्याओं के समाधान किए जाते थे । बीच-बीच में कभी-कभी राजनीतिक असेंबलियों की, धार्मिक असेंबलियों की अलग-अलग मीटिंग होती थी । इसका एक और पक्ष था जिसका नाम था-वाजपेय यज्ञ । वाजपेय यज्ञों में मोक्ष की भावनात्मक और चिंतन-परक, नैतिक, आध्यात्मिक जो भी समस्याएं होती थीं, उनका समाधान करने के लिए वे लोग एकत्र होते थे जिन्हें हम धार्मिक कह सकते हैं । उनके भी आयोजन होते थे । उन आयोजनों का ही नाम था वाजपेय यज्ञ ।

प्राचीन काल के इतिहास में इन दो प्रकार के विशिष्ट यज्ञों की परंपरा दिखाई पड़ती है-वाजपेय यज्ञ और राजसूय यज्ञ की परंपरा । वाजपेय यज्ञों का अपने आप में महत्वपूर्ण योगदान रहा है क्योंकि मनुष्य को वास्तव में सामाजिक समस्याएं मालूम पड़ती ही नहीं हैं । कारण हर समस्या आदमी की मानसिक और भावनात्मक समस्या है । मानसिक और भावनात्मक क्षेत्र में विकृतियाँ आ जाने की वजह से सामाजिक क्षेत्र में, राजनीतिक क्षेत्र में, आर्थिक क्षेत्र में, पारिवारिक क्षेत्र में, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में विकृतियाँ पैदा होती हैं । इसकी जड़ें मनुष्य के भीतर होती हैं । इसलिए वे व्यक्ति जो आदमी के चिंतन से संबद्ध होते थे, आध्यात्मिक समस्याओं से संबद्ध होते थे, एक स्थान पर जमा होते थे और विचार विनिमय करने के लिए जमा होते थे । उसका ही नाम था-वाजपेय यज्ञ । वाजपेय यज्ञों की असेंबलियाँ स्थायी होती थीं । कुंभ के मेले भी उसी में शुमार थे । कुंभ के मेले में धार्मिक लोग आते थे । वे एक स्थान पर बैठने न पाएं, परिभ्रमण करते रहें, उसके लिए नियम और मर्यादाएं निर्धारित थीं । असेंबलियाँ कुंभ मेलों के नाम पर घूमती-फिरती रहती थीं । ढाई-तीन वर्ष बाद नासिक जाइए, उज्जैन जाइए, हरिद्वार जाइए, इलाहाबाद जाइए । यह हिंदुस्तान का मुख्य भाग है-हिंदी भाषी प्रांत । इसमें विचारशील लोग इसी तरह से घूमते रहते थे । यह क्या थे ? वाजपेय यज्ञ थे । इसमें विचारशील लोग एकत्रित होते थे । इनमें हवन भी होते थे, सत्संग-कथाएं भी होती थीं, पर मुख्यत: इनमें विचार विनिमय होता था-सामाजिक समस्याओं के ऊपर ।

आप लोग जो इस महापुरश्चरण में, वाजपेय यज्ञ में सम्मिलित हुए हैं, उसके सामाजिक रूप को मैं बताना चाहता हूँ । आध्यात्मिक स्वरूप की ओर मैं कल इशारा कर चुका हूँ । अब मैं इस ओर इशारा करने वाला हूँ कि आज के समय की कितनी ज्यादा समस्याएं हैं । आर्थिक समस्या, दहेज की समस्या, शराब-खोरी की, नशेबाजी की समस्या, चोरी और अपराधों की समस्या, भाषायी समस्या, अन्यान्य समस्याएं, वैयक्तिक और सामाजिक समस्याएं जैसी कितनी ही समस्याएं आज देश के सामने हैं । उनकी जड़ एक ही है-मनुष्य के अंतरंग की गंदगी । नाली में जब कीचड़ सड़नी शुरू होती है तो चहुँ ओर गंदगी फैल जाती है । यही स्थिति आज मानवी मस्तिष्क में छाई हुई विकृतियों की है । हमारी बात, हमारे समाधान प्रज्ञा की निशानियाँ हैं जो समय से पहले की चीज मालूम पड़ती हैं, पर हैं वस्तुतः अपने समय की । युग ऋषि हमेशा अवतरित होते रहे हैं और सामयिक समस्याओं के समाधान प्रस्तुत करते रहे हैं । प्राचीन काल के समाधान आज की स्थिति में लागू नहीं हो सकते । आज की परिस्थिति में काम के नहीं हो सकते । हर समय की, हर युग की परिस्थितियों के अनुरूप कानून तो बनाए नहीं जा सकते । लेकिन इतना अवश्य है कि आप सारी स्मृतियाँ, सारे धर्मग्रंथ ढूँढ़ डालिए, उनमें न दहेज के खिलाफ लिखा गया और न समर्थन में लिखा गया । इस संदर्भ में कोई श्लोक नहीं मिलेगा । कारण प्राचीन काल में जब दहेज प्रथा थी ही नहीं तो उसका विरोध और खंडन कैसे होता ? इसलिए उनमें लिखा ही नहीं । यह तो आज की आधुनिक काल की समस्याएं हैं जिनका समाधान करने के लिए हम कहते रहते हैं ।

वाजपेय यज्ञ की, प्राचीन महापुरश्चरणों की प्रक्रिया के सामाजिक पहलू को अभी मैं आपको बता रहा था । अब मैं उसके नैतिक पहलू को बताता हूँ । नैतिक पहलू वह है, जिसमें आदमी के भीतर ईमानदारी रहनी चाहिए । क्योंकि जिस हवा में हम सांस लेते हैं वह सामूहिक संपदा है । इसमें हम श्वास लेते हैं और नौ सुराखों में से गंदगी बाहर फेंकते हैं जो सामूहिक संपदा को गंदा करती है । इसलिए सामूहिक संपदा को जो हमने खराब किया है, उसे हमें ही सही करना होगा । यह हमारी नैतिक जिम्मेदारी है, कर्तव्य है कि जिस सामूहिक वायुमंडल को हमने गंदा किया है, उस वातावरण का संशोधन करने के लिए, परिष्कार करने के लिए हम आगे आएं । यह सामाजिक न्याय है, मर्यादा है कि जो हमने समाज से लिया है, उसे वापस दें । इस वृत्ति का

विकास करने के लिए हमको यज्ञीय परंपराओं पर विचार करना चाहिए । यज्ञ परंपरा को यदि हम जिंदा करना चाहते हैं तो उसके लिए प्रशिक्षण होना भी जरूरी है । एक प्रशिक्षण हम यह देना चाहते है कि हर आदमी को रोटी खाते समय यह विचार करना चाहिए कि हमने कमाया जरूर है, पर इसमें हक दूसरों का भी है, अकेले का ही नहीं है । आपने कमाया है, पर आप खा नहीं सकते । साढ़े छः सौ रुपये आपको मिलते हैं, बेशक, पर आप उसे खाइए मत, क्योंकि इसमें दूसरे लोगों का भी हिस्सा है । कौन-कौन का हिस्सा है ? आपके हिसाब से आपकी बीवी का हिस्सा है, आपके बच्चों का हिस्सा है, आपकी माँ का हिसा है, भाई का हिस्सा है, बहन का हिस्सा है, सारे कुटुंब के लोगों का हिस्सा है । आप बाँटकर खाइए । नहीं साहब ! हम तो अपने हाथ से कमाते हैं और खा सकते हैं । आप खा तो सकते हैं, पर यह अनैतिक है, इम्मोरल है । इसलिए हमें बाँटकर खाना चाहिए । आम लोगों का यही ख्याल है कि जब हमने कमाया है तो हमें ही खाना चाहिए और अधिक से अधिक अपने कुटुंबियों को खिलाना चाहिए ।

अब हमको क्या करना चाहिए ? बेटे, हम इंसान हैं और इंसानी विचारधारा को कायम रखने के लिए हर आदमी को यह बताना चाहिए कि आपके भोजन में कई हिस्सेदार हैं, हकदार हैं । उन हकदारों में आपका बच्चा भी शामिल है और पड़ोसी भी, आगंतुक भी । आपने बच्चे को भूखा रखा है और वह दुबला हो गया है तो यह गुनाह है । आप बच्चे को दूध नहीं देंगे तो उसमें इतनी ताकत कहाँ से आएगी कि वह आपकी जेब में से पैसे छीन सके । इस तरीके से आदमी के ऊपर अनेक जिम्मेदारियाँ हैं-नैतिक जिम्मेदारियाँ हैं, सामाजिक जिम्मेदारियाँ हैं । आपने उस कथा को सुना होगा जिसमें नेवला सुनहरा हो गया था । इसे हमने कई बार सुनाया है । कृष्ण भगवान ने एक बड़ा यज्ञ कराया था । उसी यज्ञ में नेवला गया था । नेवले ने क्या कहा था ? एक ब्राह्मण भूखा था । वह इतना अनाज इकट्ठा करके लाया था कि उसमें एक-एक रोटी का इंतजाम किया जा सके । स्त्री, पुरुष, बच्चा व कन्या-चारों ने चार रोटियाँ बनाकर अपनी थाली में रखनी चाही, तभी उस सद्ग्रहस्थ ने कहा-खबरदार, कोई खाना मत । हमसे भी ज्यादा दुखियारा अगर है तो उसका हमसे भी पहला और ज्यादा हक है । इसलिए पहला हक चुकाए बिना हम नहीं खा सकते और वह ब्राह्मण छत पर खड़ा होकर चिल्लाने लगा कि हम एक सप्ताह से भूखे थे, पर यदि हमसे भी ज्यादा कोई भूखा हो

तो इस रोटी पर उसका हक है । महाभारत की इस कथा के मुताबिक तभी एक चांडाल आया और उसने कहा–हमने एक महीने से कुछ खाया नहीं है, इसलिए हमारा हक ज्यादा है । कमाई आपकी है, पर हक हमारा है, इसलिए आप हमको दे दें । जैसे ही चांडाल नजदीक आया ब्राह्मण ने अपनी एक रोटी उसे दे दी, दूसरी उसकी पत्नी ने, तीसरी बच्चे ने और चौथी रोटी उसकी कन्या ने दे दी । चारों की चार रोटियाँ खाने के बाद चांडाल ने जिस स्थान पर कुल्ला किया था, उसी स्थान पर नेवले ने लोट लगाई थी और वह सोने का हो गया था । पूरा नहीं, आंशिक । शेष कहानी बाद की महायज्ञ की है जो कभी आगे आपको बताएंगे ।

मित्रो ! अभी मैं यह कह रहा था कि आप हर एक आदमी को यह समझाना कि अपने में इंसानियत पैदा कीजिए । आप हवन करते हैं ठीक है, पर पहले समस्याओं का समाधान कीजिए । अभी पंडित लोग हवन करते और कराते हैं इसलिए कि मालदार हो जाएं । बत्ती जलाते हैं, हवन करते हैं, पूजा-उपासना करते हैं, केवल देवी-देवताओं को बरगलाने के लिए । बरगलाना हम इसलिए कहते हैं क्योंकि देवी-देवताओं को अपनी ओर आकर्षित करने का सीधा तरीका है आपकी भलमनसाहत और आपकी ईमानदारी । यही वह मैग्नेट है जिसके आकर्षण की वजह से देवता खिंचते हुए चले आते हैं । यही सही तरीका है, यही प्रोसीजर है और वास्तविकता है । यह एक सचाई है कि आप इतने सच्चे, ईमानदार और सही आदमी हों कि देवी-देवता आपसे मुहब्बत करते हों और आपकी सहायता करते हुए आपके ऊपर फूल बरसाते हुए चले आते हों । यही 'प्रोसीजर' सही है और वह 'प्रोसीजर' जो आप इस्तेमाल करते हैं, गलत है । बरगलाना-बहकाने को कहते हैं । बरगलाना भी ऐसा कि जो कोई गलत काम करने के लिए तैयार न होता हो तो उसे इस तरीके से पट्टी पढ़ावें कि वह रजामंद हो जाए । जीभ की नोक से लपालपी करने और पूजा-पत्री के छोटे-मोटे टंट-घंट करने के बाद में देवी-देवताओं को जो आप बरगलाते हैं, वह बंद कीजिए । देवताओं के साथ मखौलबाजी करना शोभा नहीं देता । देवताओं की आदत के बारे में मैं जानता हूँ । वे जलती हुई आग और बिजली के तरीके से हैं । यदि उनके साथ मखौलबाजी शुरू की तो वे ऐसा चाँटा मारेंगे कि किस्मत ही बदल जाएगी ।

बेटे, हम हवन कराते हैं, पर देवताओं को बरगलाने के लिए नहीं कराते । हमारा मकसद है कि इंसान के भीतर का जो देवता सो गया है, रूठ

गया है, मूर्च्छित पड़ा हुआ है, उसको हम जगा दें । इसके लिए हम अगले दिनों एक आंदोलन शुरू करना चाहते हैं–बलिवैश्व यज्ञ का । हमने बहुत दिनों पहले बताया था कि आप लोग गायत्री मंत्र की एक माला या तीन माला रोज किया कीजिए, गायत्री चालीसा का पाठ किया कीजिए, मंत्र लेखन किया कीजिए । अब वही प्रक्रिया हम जन-जन से कराना चाहते हैं कि हर आदमी को बलिवैश्व करना ही चाहिए । इसे नित्य कर्म में सम्मिलित करना ही चाहिए । लोगों को नित्य कर्म का पता ही नहीं । ये यह भी नहीं जानते कि 'संध्या' किसे कहते हैं । हर मुसलमान जानता है कि नमाज किसे कहते हैं, पर आपको संध्या का अर्थ ही नहीं मालूम कि यह कैसे और किस टाइम की जाती है । महादेव बाबा पर पानी चढ़ा आते हैं और यह पता नहीं कि संध्या क्या है ? इसलिए बलिवैश्व न मालूम हो तो कोई अचंभे की बात नहीं । गायत्री माता के तरीके से यज्ञ पिता भी हमारे पूजा करने के लायक हैं । उसका प्रतीक बलिवैश्व है । हर दिन भोजन करने से पहले उनको पाँच ग्रास–अपने चौके में जो बना है, उसमें से निकाल कर उसमें हवन करना पड़ता है । इससे क्या फायदा होता है । इससे यह फायदा होता है कि यह बात हमारे ध्यान में आती है कि रोटी खाने से पहले देवता का हक है । देवता भी आपके हिस्सेदार हैं । देना, देकर खाना देवत्व की निशानी है । इस यज्ञीय परंपरा का विस्तार होना ही चाहिए ।

यज्ञीय परंपरा का विस्तार आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है । सामाजिक परिस्थितियों को भी ठीक करना चाहिए, लेकिन वातावरण का संशोधन और भी अधिक आवश्यक है । वातावरण की ओर लोगों का ध्यान नहीं गया है । यह भी अपने आप में एक कीमती चीज है । यज्ञ का शारीरिक सेहत, मानसिक सेहत और आत्मिक सेहत पर प्रभावकारी असर तो होता ही है, वातावरण का संशोधन भी होता है । हमने ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान की आधारशिला इसी 'परपज' के लिए रखी है । इसमें रिसर्च के लिए हमको बड़े-बड़े साधन और बड़ी-बड़ी वस्तुओं की जरूरत पड़ेगी । एक से एक बड़ी कीमती चीजों का हमने इंतजाम किया है । आदमी के दिमाग को परखने वाली, दिमाग का पता लगाने वाली मशीनें, दिमाग की क्या परिस्थिति है, दिमाग की हलचलों का फोटो लेने वाली मशीनें जैसे–ई०ई०जी० मशीन, हार्ट की एक-एक हरकत को जानने वाली मशीनें, हवा का प्रेशर परखने वाली मशीनें, पेड़-पौधों पर पड़ने वाले असर को मापने वाली मशीनें, वायरस और

वैक्टीरिया के प्रभावों को जानने वाली मशीनें, जो कितनी मँहगी हैं, ब्रह्मवर्चस में लगाई गई हैं । तो आप कैसे करेंगे ? बेटे, हम कर लेंगे, हमारे गुरु का प्लान है, तू तो केवल सुन भर ले । आज की सामयिक समस्याओं में, व्यक्ति के नैतिक, बौद्धिक और सामाजिक जीवन में घुसी हुई विकृतियों का निवारण मुख्य है । ऐसे-ऐसे असंख्य कारण हैं जिसकी वजह से हमने यज्ञों का आयोजन किया है और महाकाल की इच्छानुसार इसका विस्तार भी हो रहा है । आप देखते नहीं किस तेजी के साथ इसका विस्तार बढ़ता हुआ चला जा रहा है । पहले हमारे २५ कुंडीय २५ यज्ञ थे, पर अब यह मालूम पड़ता है कि इसके लिए प्रत्येक प्रांत कुश्ती लड़ रहा है कि यह यज्ञ तो हमको मिलना ही चाहिए । गुजरात के लोग कहते हैं कि हम आपके बड़े बेटे हैं, यह यज्ञ आप हमको दीजिए । इसी तरह अन्यान्य प्रांतों के लोग भी अपने-अपने यहाँ यज्ञ कराने के लिए संकल्पित दिखाई देते हैं ।

मित्रो ! यह विशिष्ट समय है । इसमें ऊँचे कर्म और ऊँचे विचार-इन दोनों को मिलाकर के लोगों को नए ढाँचे में ढाला जाएगा और समाज को नए ढाँचे में ढाला जाएगा । यह सतयुग की वापसी का समय और संभावनाएं हैं । ऐसे विशिष्ट समय में जबकि हमारे सामने कई तरह के प्रश्न उपस्थित हो रहे हैं, तब हमने इस समय महापुरश्चरण को प्रारंभ किया है । आप में से प्रत्येक आदमी को महापुरश्चरण में भाग लेना चाहिए और उसके उत्तरदायित्व को निभाना चाहिए । यह आपका इम्तहान है, परख है आपकी । भगवान कई बार आदमी की परख करते हैं, परखते रहते हैं और देखते हैं कि आप में शौर्य, साहस, भक्ति और आत्मज्ञान का कुछ माद्दा है या नहीं ? आप किस तरह के आदमी हैं ?

गुरुजी ! आपके यज्ञ पूरे हो जाएंगे ? हाँ बेटे, यज्ञ पूरे हो जाएंगे । कैसे पूरे होंगे ? देख, मथुरा में हमने एक हजार कुंड का यज्ञ किया था और उसमें चार लाख आदमी आए थे और पाँच दिन ठहरे थे । पाँच दिन में ४० लाख आदमियों को भोजन कराया, ५० लाख रुपए खर्च हुए थे-४० लाख भोजन में और १० लाख अन्यान्य व्यवस्थाओं में । कहाँ से आता था ? बस यही नहीं बता सकता आपको कि कहाँ से आया था, लेकिन हम आपको यह बताते हैं कि यह जो आयोजन है, यह जो इतनी बड़ी व्यवस्था है-यह प्रज्ञावतार की व्यवस्था है और यह फैलती हुई चली जाएगी । आप लोग भाग्यवान हैं कि जिन लोगों ने आगे आ करके यह संकल्प अपने जिम्मे लिए हैं । जिनने अपने

जिम्मे लिए हैं, वे क्या पूरे हो जाएंगे ? हाँ पूरे हो जाएंगे । यदि आपका शौर्य, साहस और पराक्रम घटिया दर्जे का होगा, तभी यज्ञ असफल होगा और आपकी योग्यता की घोषणा करने की जरूरत नहीं पड़ेगी । तब आपको अयोग्य ठहराना पड़ेगा । यज्ञ तो हमारे पूरे हो जाएंगे, कोई भी चिंता मत करना, लेकिन आपको यहाँ से जाना है तो अपने पुरुषार्थ और पराक्रम की तैयारियाँ करके जाना चाहिए । यह काम बड़ा है और श्रेय भी आपको खूब मिलेगा । आप समय पर जाग गए, यह बहुत अच्छी बात है । समय पर न जागते तो काम तो हो जाता, पर आपको जो श्रेय मिल रहा था, वह नहीं मिल सकता था । स्वतंत्रता आंदोलन में जिनको तीन-तीन महीने की सजा हो गई, उनको अब ३०० रुपए पेंशन मिलती है और वे स्वतंत्रता सेनानी का ताम्रपत्र लिए फिरते हैं । यह वक्त भी ऐसा है कि अगर आप नहीं चूकते हैं तो अच्छा है । अगर आप इस समय को पहचान लें, समय की प्रधानता को देख लें, भगवान की इच्छा और भगवान की महानता को समझ लें तो ज्यादा अच्छा है । फिर आपका भी नंबर उसी तरीके से आ जाता है जैसे कि हम बार-बार गिलहरी को और जटायु गिद्ध को याद करते रहते हैं । गिद्ध और गिलहरी ने समय को पहचान लिया था । उनने अपनी जुर्रत दिखाई, हिम्मत दिखाई कि किस समय पर क्या करना चाहिए । उनमें हिम्मत थी, हौसला था, भावना थी और वे अजर-अमर हो गए । गिलहरी वाला वक्त, गिद्ध वाला वक्त, जेल जाने वाला वक्त फिर से आ गया है । आज आप चाहें तो प्रज्ञावतार का हाथ बँटा सकते हैं । आप चाहें तो युग परिवर्तन की बेला में आगे वाली पंक्ति में, चलने वाली सेना में अपना नाम लिखा सकते हैं ।

तो क्या यह यज्ञ आगे फैलेगा ? हाँ यह यज्ञ आगे बहुत फैलेगा और गायत्री माता सुनिश्चित रूप से विश्वव्यापी बनेंगी, आप देख लेना । हम तो रहेंगे नहीं और आप भी शायद न रहें, पर आपकी औलाद जरूर रहेगी । आप देखना सारे विश्व का जो यह नवीनीकरण हो रहा है उस नवीनीकरण में गायत्री की फिलॉसफी और यज्ञ की कार्य पद्धति की मुख्य भूमिका रहेगी । आदमी का व्यवहार कैसा होगा-यह प्रेरणा हमको यज्ञ से मिलेगी और मनुष्य का चिंतन कैसा होगा, व्यक्ति का, समाज का, राष्ट्र का और विश्व का चिंतन कैसा होगा ? यह सारी की सारी प्रेरणाएं गायत्री के उस बीज मंत्र से मिलेंगी जो चिरपुरातन और चिरनवीन है । चिर-पुरातन और चिर-नवीन का ऐसा संयोग कदाचित ही कहीं मिलेगा । नवीनतम युग और प्राचीनतम संस्कृति-

दोनों का समन्वय करने के लिए हम बहुत महत्वपूर्ण प्रयत्न कर रहे हैं । आप उसमें सम्मिलित हो रहे हैं, यह अधिक खुशी की बात है ।

अब क्या करना चाहिए ? अब आप एक काम करना कि पहले वाले यज्ञों और इन यज्ञों में क्या मौलिक फर्क है, यह समझ कर जाना । इसी के लिए आपको यहाँ बुलाया है । पहले वाले यज्ञों में पैसा प्रमुख था । पैसा हमको दे दीजिए और जो भी आप कहेंगे हम लाकर के आपको दे देंगे । आप चाहें १०० कुंडीय यज्ञ करा लें, चाहे हजार कुंडीय-सब व्यवस्था घर बैठे हो जाएगी । लेकिन इन यज्ञों में पैसा नहीं जन शक्ति मुख्य है । जन शक्ति का वह अंश जो धर्म-श्रद्धा से जुड़ा हुआ है । उसका संग्रह करना बहुत बड़ा काम है । इसके लिए हम यहाँ से कलावा बाँध कर आपको भेज देंगे और आप अपने घर जाकर हमारी 'टीम' के साथ काम करना । हमें कमेटी नहीं, टीम चाहिए । खिलाड़ियों की एक टीम होती है जो जीने-मरने और हँसने-खेलने में एक साथ रहती है । दस आदमियों की एक टीम हम यहाँ से भेज देंगे, आप उसके साथ काम करना । आपका काम सफल हो जाएगा । सफल न होगा तो हम सफल कर देंगे । सफलता-असफलता की आप चिंता मत करना । आपको जो हमने काम सौंपे हैं उसे एकनिष्ठ हो करके, एकभाव से तत्पर हो करके करें । इसमें परीक्षा आपकी सफलता की नहीं वरन इस बात की है कि आपने कितनी मेहनत की, भाग-दौड़ करने में कितना समय लगाया । अगर आप यह काम कर सकेंगे, जो अत्यधिक महत्वपूर्ण आयोजन, जिसको हम 'वाजपेय यज्ञ' कहते हैं, नवयुग के आगमन की पुनीत बेला का शुभ आयोजन कहते हैं, प्रभात कालीन नवयुग आने की आरती कहते हैं, धर्मानुष्ठान कहते हैं, आप धन्य हो जाएंगे । यह इतना महत्वपूर्ण कार्य है जो देखने-सुनने में छोटा मालूम पड़ता है । गाँधी जी के नमक सत्याग्रह का लोग मखौल उड़ाते थे कि नमक बना करके स्वराज्य ले लेंगे । नमक से स्वराज्य आता है कहीं ? आज हम देखते हैं कि नमक सत्याग्रह कैसे सफल हुआ ।

२५ कुंडीय यज्ञों का आयोजन भी गायत्री महापुरश्चरण की शृंखला मिला करके मालूम पड़ता है कि यह कोई साधारण कृत्य है, धर्मानुष्ठान है, पूजा-पाठ है । देखने में इसका रूप जो भी हो, इसकी संभावना बहुत बड़ी है । इसके आधार पर मनुष्य के तीनों शरीरों के स्वास्थ्य संवर्द्धन का, मनुष्य समाज को नए ढंग से शिक्षित करने का, शालीन बनाने का विश्वव्यापी आंदोलन का यह हमारा शुभारंभ है । आप यह मानकर चलना कि विश्व का

नया निर्माण करने के लिए हमारा यह अनुष्ठान उसी तरह का आयोजन है जिसमें कि मनुष्य के उज्ज्वल भविष्य के निर्माण के लिए जो दैवी शक्तियाँ काम कर रही हैं जिसके शुभारंभ और श्रीगणेश के दिन यह हमारा गायत्री महापुरश्चरण संपन्न होता है । इसमें सहयोग देने के लिए, इस अवसर का लाभ उठाने के लिए आप लोग हमारे साथ आइए । गोवर्धन उठाया जा रहा है आप उसमें हिस्सा बँटाने के लिए अपनी लाठी लेकर खड़े हो जाइए । हमें प्रसन्नता है कि आप जरूर लाठी लेकर खड़े होंगे और गोवर्धन उठाने में सहायता करेंगे । सेतु बाँधा जा रहा है, हमें खुशी है कि आप लोग भी अपने पत्थर और लकड़ी लेकर के इसमें सहयोग देने के लिए आ गए । आपका यह सहयोग जितना सराहनीय है, उतना ही मानव जाति के नए निर्माण में सहायक सिद्ध होगा । यह आपका सौभाग्य है जो आप लोगों को यहाँ खींच करके ले आया । यह सौभाग्य आप लोगों को बहुत कुछ प्रदान करे, ऐसी परब्रह्म परमात्मा से प्रार्थना है ।

ॐ शांतिः । *(२९ सितंबर १९७८)*

दुर्गति और सद्गति का कारण, हम स्वयं

गायत्री मंत्र साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि
धियो यो नः प्रचोदयात् ।

साथियो ! अध्यात्म ही क्यों ?

स्रष्टा ने मनुष्य जीवन विशेष उद्देश्य के लिए बनाया है और विशेष उपहार के रूप में दिया है । भगवान ने अपने कार्य में, अपने विश्व उद्यान में सहायता करने के लिए, इसको सुरम्य और समुन्नत बनाने के लिए मनुष्य को अपने सहायक के रूप में पैदा किया । उसको जो अनेक विशेषताएं दी हैं, वह एक अमानत के रूप में, एक धरोहर के रूप में दी हैं, ताकि इसका ठीक तरीके से उपयोग करके वह अपने व्यक्तिगत जीवन में सरलतापूर्वक सारा काम चला सके और निर्वाह कर सके । उसके पास जो समय बचे, शक्तियाँ बचें, उससे विश्व उद्यान को समुन्नत बनाने के लिए प्रयत्न करना उसके लिए संभव बन सके । इस दृष्टि से मनुष्य शरीर बनाया, शौक-मौज के लिए नहीं बनाया । शौक-मौज के लिए अगर मनुष्य शरीर बनाया होता तो फिर यह

बहुत भारी पक्षपात गिना जाता। अन्य प्राणियों को जो सुविधाएं नहीं मिलीं, वह मनुष्य को ही क्यों दी गईं? इसका एकमात्र उत्तर यही है कि जिस तरह विशेष तरीके से एक खजांची के पास खजाना जमा कर दिया जाता है, मिनिस्टर के पास विशेष अधिकार केंद्रित कर दिए जाते हैं, उसी प्रकार भगवान ने मनुष्य को विशेष अधिकार दिए हैं, ताकि वह इस विश्व उद्यान को सुंदर, समुन्नत, सुविकसित बनाने के लिए भगवान के कार्य में मदद करे। हममें से प्रत्येक का कर्तव्य है कि उस परम पुनीत उत्तरदायित्व को समझें जो भगवान ने हमारे ऊपर सौंपा है।

यह हमारा बड़ा सौभाग्य है कि भगवान की इच्छा पूरी करने के साथ-साथ में, उपहार के रूप में, अपने जीवन का लक्ष्य भी प्राप्त कर सकते हैं। पूर्णता का लक्ष्य इस तरीके से प्राप्त कर सकते हैं कि हम भगवान की इच्छाओं को पूरा करें और अपने गुण, कर्म, स्वभाव का विकास करें। इनका विकास करने से ही यह संभव है कि हमारी आत्मा विकसित हो और आत्मा विकसित होते हुए परमात्मा के स्तर तक पहुँचने में समर्थ हो सकें। इसलिए हमको स्रष्टा की इच्छा पूरी करने के लिए कटिबद्ध होना चाहिए। ऐसा यदि हम कर सकें तो हमें अध्यात्मवादी कहा जाएगा। अध्यात्म का सारे का सारा शिक्षण इसी उद्देश्य के लिए है कि व्यक्ति अपने कर्तव्यों को समझे और उत्तरदायित्वों को समझे। कर्तव्य और उत्तरदायित्वों को समझते हुए अपनी गतिविधियों का निर्धारण इस तरीके से करे जिसमें व्यक्ति चरित्रनिष्ठ बनता हो, शालीन बनता हो और समाज में सुव्यवस्था पैदा करने में सहायक बनता हो। यही है जीवन का उद्देश्य।

आश्चर्य इस बात का है कि मनुष्य के पास जहाँ इतनी बुद्धि और सुविधा-साधन दिए दिए गए वहाँ उसको हँसी-खुशी का जीवन जीना चाहिए था, हल्का-फुल्का जीवन जीना चाहिए था। इतनी सुविधा उसके पास रहनी चाहिए थी कि अपना गुजारा बहुत कम में करने के बाद, सुख-सुविधा करने के बाद में सारा समय हँसी-खुशी के साथ भगवान के कामों में लगा सकने में समर्थ रहा होता। ऐसा ही जीवन निर्माण हमारे लिए हुआ है, लेकिन अचंभा इस बात का है कि हममें से अधिकांश आदमी कठिनाइयों में फँसे हुए हैं। अधिकतर आदमी आपत्तियों में रोते और खीझते हुए देखे जाते हैं तो वे आगे कैसे बढ़ेंगे? जब आपत्तियाँ ही रास्ता रोके खड़ी हैं, कठिनाइयाँ ही पग-पग पर हैरान कर रही हैं तो आगे वाली बात कैसे बन सकती है। अब यह

देखना चाहिए कि आखिर हुआ क्या ? कैसे ऐसी स्थिति आ गई ? जब भगवान ने हमको इतने साधन दिए थे कि उन साधनों से हम अपना उद्देश्य पूरा कर सकते थे, पर उन्हें पूरा करना तो दूर उल्टे कठिनाइयों में ही जकड़े रह गए, मुसीबतों में ही फँसे रह गए । बात कैसे बनेगी ? आइए हम लोग इस पर विचार करें ।

जब हम विचार करते हैं, तब मालूम पड़ता है कि हमारे भीतर, हमारे चिंतन में और हमारे क्रिया-कलापों में कहीं भूल पड़ जाती है । इस भूल का ही परिणाम है कि हमारी मन:स्थिति दुर्बल होने से, विकृत होने से हमारे बहिरंग जीवन में सारी की सारी परिस्थितियाँ विकृत होती चली जाती हैं और हम अभावों, कष्टों और संकटों से ग्रसित होते चले जाते हैं । अगर हम अपने दृष्टिकोण को परिष्कृत कर सकें, अपनी गतिविधियों को सही कर सकें, अपने क्रिया-कलापों में हेर-फेर कर लें, तब वे सारी समस्याएं जो मनुष्य जाति को खाए जा रही हैं, जिनसे आदमी को हर वक्त बेचैन रहना पड़ता है, हर समय कष्ट से घिरा रहना पड़ता है, जिससे पार पाने के लिए वह हर किसी के सामने पल्ला पसारता और नाक रगड़ता है कि आप हमारी सहायता कीजिए, तब किसी की भी सहायता प्राप्त न करनी पड़े । अध्यात्म की शिक्षा यही है कि अपने भीतर हम देखें, अपने आपको समझें, अपने आपको जानें, अपनी गलतियों के बारे में गौर करें और अपनी गतिविधियों को ठीक करने के लिए प्रयत्न करें । अगर हमने ऐसा प्रयत्न प्रारंभ कर दिया तो समझना चाहिए कि सच्चे अर्थों में हम अध्यात्मवादी हुए ।

कीचड़ जहाँ कहीं भी सड़ती है वहाँ दुर्गंध फैल जाती हैं, रेंगने वाले कीड़े जहाँ-तहाँ घूमना शुरू हो जाते हैं, मक्खी-मच्छर पैदा हो जाते हैं । इनमें से प्रत्येक विकृति को हम दूर करना चाहें तो कठिन है, लेकिन यदि कीचड़ की गंदगी को साफ कर दिया जाए तो वह सब विकृतियाँ दूर हो जाएंगी जिनसे हम परेशान थे । यही बात हमारे जीवन में भी लागू होती हैं । हँसता-हँसाता, खिलता-खिलाता जीवन हमारा होना चाहिए था । हमको प्रसन्न और प्रफुल्लित रहना चाहिए था । हमारी शक्ति ऐसी होनी चाहिए थी कि अपनी हल्की जिंदगी को स्वयं पार कर लें और अपने कंधे पर बिठाकर दूसरों को पार लगा दें, लेकिन ऐसा बन नहीं पड़ता । इसका कारण यह है कि हमारे जीवन में जो अशुद्धियाँ छाई हुई हैं, उनसे हमारा मानसिक रक्त दूषित हो गया । जिस प्रकार रक्त के दूषित हो जाने पर फोड़े-फुंसियों का निकलना स्वाभाविक है, उसी

प्रकार जीवन में असंख्य विकृतियों के आ जाने से असंख्य चिंताओं, हैरानियों, परेशानियों का निकलना संभव है। इसको दूर करने के लिए उन स्रोतों को बंद करना पड़ेगा जहाँ से ये फूटती हैं। शरीर की बीमारियों को ही लें तो शरीर की मशीन इतनी अच्छे तरीके से बनाई गई है कि इसको प्राकृतिक नियमों के अनुरूप अगर ठीक तरीके से चलाया जा सके तो न इसमें कमजोरी आने की कोई गुंजायश है और न बीमार पड़ने की।

प्रकृति में हम दृष्टि डाल कर देखते हैं तो सृष्टि का कोई प्राणी बीमार नहीं मालूम पड़ता। बुढ़ापा तो सबको आता है, मरना भी सबको पड़ता है, पर बीमारी नाम की कोई चीज किसी भी योनि में दिखाई नहीं पड़ती। कहीं भी किसी को रोता-कराहता बीमारी से नहीं पाया जाता, केवल एक अभागा प्राणी मनुष्य ही है जो बार-बार बीमार पड़ता रहता है। इसका कारण क्या है? इसका एक ही कारण है कि हमने आहार-बिहार के संबंध में असंयम बरतना शुरू कर दिया। जीभ हमारी बेकाबू रही। जो चीज नहीं खानी चाहिए थी, वह हम खाते रहे। जितनी तादाद में नहीं खाना चाहिए उससे ज्यादा तादाद में खाई। फलस्वरूप हमारा पेट खराब हुआ। पेट खराब होने, उसमें सड़न होने की वजह से असंख्य बीमारियाँ खड़ी हो गईं। अगर हम इसको ठीक करना चाहते हों तो दवाइयों से न तो रोग ठीक हो सकते हैं और न टॉनिक खाने से, औषधियों से हमारी कमजोरी दूर हो सकती है। कमजोरी दूर करने के लिए, बीमारियों को दूर करने के लिए चाहे अब, चाहे अब से एक हजार वर्ष बाद, अंततः एक ही उपाय काम में लेना पड़ेगा कि हम संयम बरतना सीखें। इंद्रियों का निग्रह करना सीखें। समय का नियंत्रण करना सीखें। आलस्य और प्रमाद से अपनी शक्तियों का जो क्षरण होता रहता है, उसकी रोकथाम करना सीखें। अगर हमने यह सब सीख लिया तो हमारे स्वास्थ्य की गारंटी। फिर हम दीर्घजीवी बनेंगे और निरोग रह सकेंगे, भले ही हमें सस्ते मूल्य का भोजन ही क्यों न मिलता हो, गरीबी में ही निवास क्यों न करना पड़ता हो। फिर हमें किसी चिकित्सक के पास जाने की जरूरत नहीं पड़ेगी, अगर हम संयम रूपी चिकित्सक की सहायता लेनी शुरू करें तब। यह आध्यात्मिकता की शिक्षा है कि हम भीतर देखें ओर बीमारियों की जड़ काट कर दूर करें। असंयम को हटाएं और सुंदर स्वास्थ्य पाएं।

मानवीय मस्तिष्क की ओर हम देखते हैं तो मालूम पड़ता है कि इतनी बढ़िया मशीन, इतना सुंदर कंप्यूटर कदाचित ही दुनिया में कहीं पाया जाता

हो। मानवीय मस्तिष्क में स्वर्ग के सारे तत्व भरे पड़े हैं। दृष्टिकोण आदमी का अच्छा हो तो हर जगह सौंदर्य, हर जगह प्रसन्नता, हर जगह सद्‌गुण, सहयोग बिखरा हुआ दिखाई पड़ेगा। सृष्टि में जहाँ कहीं भी मनुष्य अपनी दृष्टि पसार कर देखेगा तो मालूम पड़ेगा कि इसमें सर्वत्र सद्‌भावनाएँ भरी पड़ी हैं। लेकिन हम देखते हैं कि इस मस्तिष्क के द्वारा जिस तरह का चिंतन करना चाहिए था, जो काम करना चाहिए था, उसको तोड़-मरोड़ करके ऐसे बना दिया गया है कि शुद्ध चिंतन करने की अपेक्षा अशुद्ध चिंतन में ही सदा उलझा रहता है। ईर्ष्याएं, डाह, चिंताएं, निराशाएं, भय, आशंकाएं आदि जिनके कोई वास्तविक कारण नहीं होते हमारे ऊपर छाई रहती हैं और जीवन को नरक रूप में बनाए रखती हैं। अगर वास्तविक कारण हों भी तो आदमी उसको स्वाभाविक एवं सामान्य समझ करके हँसी-खेल में भी टाल सकता है, लेकिन प्राय: वह राई भर की बात को पहाड़ के बराबर बनाकर के रात-दिन उद्विग्न बना रहता है। अगर मस्तिष्क को ठीक रखा जा सके तो हम इसी मस्तिष्क द्वारा भौतिक और आध्यात्मिक उन्नति के लिए न जाने कितने द्वार खोल सकते हैं। यदि वह न बन पड़े तो कम से कम इतना तो कर ही सकते हैं कि चारों ओर जो भय, आशंकाएं, निराशाएं दिखाई पड़ती हैं, उनसे तो दूर बचे ही रह सकते हैं।

दरिद्रता पैसे की कमी का नाम नहीं है, वरन मनुष्य की आंतरिक कृपणता का नाम दरिद्रता है। रंगीन चश्मा पहन रखा है हमने और उसी से देखते हैं जिससे हर जगह वही रंग दिखाई पड़ता है। पीलिया के मरीज को हर चीज पीली दिखाई पड़ती है। ठीक इसी तरीके से विकृत दृष्टिकोण होने पर हमें हर जगह नरक दिखाई पड़ता है, द्वेष दिखाई पड़ता है, दुश्मन दिखाई पड़ते हैं, आशंकाएं और भय दिखाई पड़ते हैं। झाड़ी में से भूत और रस्सी मे से साँप निकलने वाली बात आप सबने सुनी होगी। ये आशंकाए केवल हमारे विकृत मस्तिष्क के चिह्न हैं जो अगर ठीक न हुए तो दिक्कत पड़ेगी। इन्हें हमें दूर करना होगा। जहाँ मन की इच्छानुकूल परिस्थितियों के होने की बात है, वहाँ उससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण बात यह है कि हम अपने मस्तिष्क के चिंतन करने के तरीके को सुधार लें। चिंतन करने का तरीका अगर संभाला-सुधारा जा सके तो सामान्य परिस्थितियों में भी हँसी-खुशी से भरी जिंदगी हम काट सकते हैं। संत इमर्सन कहते थे कि हमें नरक में भेज दीजिए, हम वहीं अपने लिए स्वर्ग बना लेंगे। बात सही है। शालीनता का

दृष्टिकोण रखने वाले, ऊँचे दृष्टिकोण रखने वाले, वास्तविकता को समझने वाले इस दुनिया में हर समय हँसते-हँसाते हुए पाए जा सकते हैं ।

तीसरा क्षेत्र परिवार संस्था का है जो कितना अस्त-व्यस्त दिखाई पड़ता है । जिस परिवार में हम रहते हैं, भगवान ने उसका गठन स्वर्गीय आनंद के लिए किया है, लेकिन उसके लाभों से हम वंचित रह जाते हैं । एक बाड़े में जिस तरीके से बहुत सी भेड़ें रहती हैं, एक जेलखाने में जैसे बहुत से कैदी रहते हैं, उसी तरीके से हम अपने कुटुंबों के बीच में निर्वाह करते रहते हैं । कहने को तो संबंधी कहे जाते हैं, रिश्तेदार भी कहे जाते हैं, पर जैसा स्नेह सौजन्य, सद्भाव, सेवा, सहकारिता इत्यादि का वातावरण होना चाहिए था, कुटुंबों में कहीं दिखाई नहीं पड़ता । इसका कारण यह है कि कुटुंबों को बनाने और उनकी देखभाल करने वाले यह भूल जाते हैं कि उनके पारिवारिक उत्तरदायित्व क्या हैं ? पारिवारिक उत्तरदायित्वों को लोगों ने यह समझ रखा है कि हम अपने कुटुंबियों को प्रसन्न बनाने के लिए उनकी इच्छानुकूल चलें । उनके लिए धन-दौलत, सामान इकट्ठा करें जिससे कि वे प्रसन्न रह सकें । यह सब करने से कुछ लाभ नहीं होता, वरन इससे मनुष्यों की आदतें खराब होती चली जाती हैं । घर के वातावरण में विलासिता की, हरामखोरी की दुष्प्रवृत्तियाँ पैदा होती हैं और उसके दुष्परिणाम दुर्व्यसनों के रूप में और दूसरी बुराइयों के रूप में देखने को मिलते हैं ।

जरूरत इस बात की है कि हम अपने पारिवारिक उत्तरदायित्वों को समझें और अपने को भावनात्मक तथा मानसिक संपदाएं दें । हम अपने को श्रमशील बनने की आदत सिखाएं । स्वच्छता की, व्यवस्था की आदत सिखाएं । नियमितता का, समय का पालन करना सिखाएं । भाषण में मधुरता और शिष्टाचार का समावेश करना सिखाएं । यह बातें तभी सिखाई जा सकती हैं जब हम स्वयं अपने आपको उस ढाँचे में ढाल लें । अपने आपको अच्छे ढाँचे में ढालकर के हम अपने समीपवर्ती लोगों को अपेक्षाकृत अच्छा शिक्षण दे सकते हैं । परिवारों में अगर हम अपने आप को उदारहण रूप में प्रस्तुत कर सकें तो यही हमारे घर और कुटुंब नर-रत्नों की खदान बन सकते हैं और उनमें से एक से एक बढ़िया हीरक, एक से एक बढ़िया आदमी निकल सकते हैं । भूत-पलीतों के रहने लायक खंडहर जिस तरीके से होते हैं, प्रायः हमारे परिवारों की स्थितियाँ वही हैं । न उनमें शांति है, न चैन । घर में जाते तो हैं, पर भाग खड़े होने का मन करता है । यह पारिवारिक जीवन में आनंद के

अभाव के कारण है और उस अभाव का कारण है–हमारा विकृत दृष्टिकोण । दृष्टिकोण को अगर हम सुधार पाएं तो घर का रहने वाला प्रत्येक व्यक्ति बड़ा आनंददायक मिले । उनके साथ सहकारिता का जीवन जीते हुए सद्भावना के आधार पर हम अपने घरों में स्वर्गीय आनंद लेने में समर्थ हो सकते हैं ।

जहाँ कहीं भी हम देखते हैं, प्रत्येक क्षेत्र में मुसीबतें ही दिखाई पड़ती हैं । आर्थिक कठिनाइयों से आज हर आदमी दुःखी पाया जाता है । सोचा जाता है कि यदि कुछ बाहरी आमदनी हो जाए तो शायद आर्थिक कठिनाइयाँ दूर हो जाएँ । लेकिन यह बात एक सीमा तक ही सही है, सौ फीसदी नहीं । अगर हम ज्यादा आमदनी नहीं भी बढ़ा सकते हों तो भी ऐसे उपाय हैं कि हम आर्थिक तंगी से बच सकते हैं । जितनी अपनी आमदनी है उसके हिसाब से बजट बनाकर चलें तो यह पूरी तरह से संभव है कि हम ठीक तरीके से जीवनयापन कर लें । जीवन तो बहुत तरीके से जिया जा सकता है । कोई जरूरी नहीं कि कोई बहुत खर्चीला जीवन ही जिएं । दुनिया में ऐसे बहुत से आदमी हैं जो कम से कम में गुजारा कर लेते हैं ? क्या हमारे लिए यह संभव नहीं है ? अगर हम खर्च से कम आमदनी करते हैं तो कम खर्च में गुजारा करें और आर्थिक कठिनाई जैसी मुसीबतों से सहज ही छुटकारा पाएं । हम अपनी योग्यता बढ़ाएं, श्रम करने की सामर्थ्य बढ़ाएं । योग्यता बढ़ाने से, श्रम ज्यादा करने से पैसा ज्यादा मिलता है । आलस्य और प्रमाद जिन लोगों पर छाया रहता है, दरिद्रता स्थायी रूप से उनके पास बनी रहेगी । शारीरिक दरिद्रता आलस्य के रूप में और मानसिक दरिद्रता प्रमाद के रूप में जिन लोगों के पास है, कितना ही धन होने पर भी वे गरीबों जैसा, दरिद्रों जैसा जीवन ही जिएंगे ।

सामाजिक जीवन में हम देखते हैं कि किस तरीके से चारों ओर विकृतियाँ फैली हुई हैं, आपाधापी और खींचतान मची हुई है । समाज में रहकर मनुष्य को कितना उन्नतिशील और प्रसन्न रहना चाहिए था, पर यही समाज विकृतियों–विषमताओं के कारण नरक बना हुआ है । जाति–पाँति के नाम पर किस तरीके से आदमी एक दूसरे से अलग होते जाते हैं । लिंग भेद के नाम पर, स्त्री–पुरुषों के नाम पर पचास फीसदी जनता को अपने मानवोचित अधिकारों से किस तरीके से वंचित किया जाता है । विवाह–शादियों पर खर्च होने वाली धनराशि किस तरीके से हमें गरीब और बेईमान बनाती है । दहेज एवं मृत्युभोज के नाम पर कितना पैसा खर्च होता है । भिक्षा

व्यवसाय में लाखों की तादाद में आदमी कैसे अपने समय को खराब करते और अपनी दीनता का परिचय देते हैं। कुरीतियाँ, बेईमानियाँ, उद्दंडताएं धूर्तताएं चारों ओर फैली पड़ी हैं। किस तरह से इनका उन्मूलन संभव है? इनको कानून बनाकर पुलिस के द्वारा भी दूर नहीं किया जा सकता। यदि इनको कभी दूर किया जा सकेगा तो आध्यात्मिकता के सिद्धांतों को आदमी के भीतर जमा करके ही दूर किया जा सकेगा। आदमी की धर्मधारणा यदि जीवंत की जा सके, तो समाज में असंख्य प्रकार की विकृतियाँ जो संघर्ष पैदा करती हैं, विग्रह पैदा करती हैं, द्वेष, कलह और मनोमालिन्य पैदा करती हैं, इन सबसे पिंड छुड़ाया जा सकता है। अगर आदमी अध्यात्मवादी दृष्टिकोण लेकर चले और समाज में आध्यत्मिकता की मान्यताओं की स्थापनी की जा सके, तो इन समस्त विकृतियों का उन्मूलन सहज संभव है।

हम देखते हैं कि व्यक्तिगत जीवन के जितने भी पहलू हैं, पक्ष हैं, वे सभी असंगत एवं विकृत हैं। इसका कारण आध्यात्मिक दृष्टि की कमी है। उसी से परिस्थितियाँ विकृत होती हैं। सामूहिक रूप से सामाजिक जीवन में भी यही बातें ज्यों की त्यों घुमा-फिरा कर दिखाई पड़ती हैं। हम राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्रों पर निगाहें डालते हैं तो दिखाई पड़ता है कि युद्ध की विभीषिकाएं अपना मुह बाए खड़ी हैं। अगर हम युद्ध के द्वारा एक दूसरे को परास्त करके विजय प्राप्त करने की बात को दिमाग में से निकाल दें और इस बात को स्वीकार लें कि न्याय के आधार पर जो कुछ उचित होगा, हम उसी को स्वीकार करेंगे, तब फिर निश्चित है कि युद्धों की समाप्ति हो जाएगी और इस मद के लिए संसार भर में जो पैसा लग चुका है या लग रहा है या लगने जा रहा है उसे रोका जा सकेगा और बचे हुए धन एवं जनशक्ति को जनकल्याण में लगाया जा सकेगा। युद्धों में लगने वाली विपुल संपदा को यदि सिंचाई, स्वास्थ्य एवं शिक्षा व्यवस्था जैसे कामों में लगाया जा सके तो दुनिया में कितनी खुशहाली आ जाए, कितनी निश्चिंतता हो जाए। अगर युद्ध के सिद्धांत को मन में से निकाल दिया जाए और न्याय के सिद्धांत को स्वीकार कर लिया जाए तो आदमी भय और आशंका से सहज ही छुटकारा पा सकता है।

किसी भी क्षेत्र में हम विचार करते हैं तो एक ही बात मालूम पड़ती है कि मनुष्य की भौतिक अथवा आध्यात्मिक समस्याओं के समाधान और किसी तरीके से नहीं हो सकते। ईश्वर प्राप्ति के लिए बहुत सारे जप,

अनुष्ठान, दान, पुण्य किए जाते हैं, किंतु यह भुला दिया जाता है कि अपने दृष्टिकोण एवं चरित्र को उच्चस्तरीय बना लेने पर ही अपने मन के स्वच्छ दर्पण में भगवान दिखाई पड़ेंगे । लोग अपने को साफ नहीं करते, मन को धोने की कोशिश नहीं करते और भगवान को, देवी-देवताओं को प्रसन्न करने और बुलाने की कोशिश करते हैं । अपने भीतर का आकर्षण और चुंबकत्व न हुआ तो हम भगवान को कैसे पा सकेंगे ? स्वर्ग-मुक्ति कैसे पा सकेंगे ? सद्गति और शांति कैसे पा सकेंगे ?

व्यक्तिगत जीवन की तरह ही हम देखते हैं कि इस दुनिया को सुंदर और समुन्नत बनाने के लिए क्या किया जाए ? इसके लिए यों तो असंख्य योजनाएं बनती हैं जिसमें भौतिक सुविधाओं के संवर्द्धन का ध्यान रखा जाता है । यदि इन अनेक योजनाओं को बनाने के साथ-साथ इस बात का भी ध्यान रखा जा सके कि व्यक्ति, समाज और राष्ट्र की परंपराओं में समता के सिद्धांत, एकता के सिद्धांत, शुचिता के सिद्धांतों को समाविष्ट करें, तब फिर दुनिया में कोई कमी नहीं रह सकेगी । फिर जितने साधन आज हैं, उसी से बड़े मजे से हम गुजारा कर सकेंगे । संसार में अगर एकता की दिशा में हम चलने लगें तो न जाने कितनी प्रसन्नतादायक परिस्थितियाँ पैदा हो जाएं । अगर दुनिया की भाषा एक हो जाए, अपनी अपनी अलग-अलग भाषाओं के लिए लड़ाई-झगड़ा करना हम लोग बंद कर दें, तब फिर एक भाषा से ज्ञान की वृद्धि में कितनी सहायता मिल सकती है । संस्कृति अगर हम सबकी एक हो तब आदमी अलग-अलग धर्म के नाम पर आपस में टक्कर क्यों मारे ? अगर दुनिया में एक राष्ट्र हो और सारे के सारे देश उसी के प्रांत मान लिए जाएं तो राष्ट्रों के बीच कलह कैसे पैदा हो ? समता के सिद्धांत को यदि सभी मान लें तो जाति के नाम पर, लिंग के नाम पर, अर्थ विषमता के नाम पर जो चारों ओर हाहाकार मचा हुआ है, उसका ठहरना कैसे संभव हो सकेगा ? नरक हमारे भीतर है और स्वर्ग हमारे भीतर है । दानव हमारे भीतर है और देव हमारे भीतर है । देव को जगाया-उभारा जा सके तो इसी धरती पर हम स्वर्ग के दर्शन कर सकते हैं । यही है वह अध्यात्म जिसके द्वारा मनुष्य के सामने उपस्थित असंख्य समस्याओं का समाधान सन्निहित है । मेरी बात समाप्त ।

ॐ शांतिः शांतिः शांतिः । *(८ सितंबर १९८०)*

सुसंस्कारी बनाए, कैसी हो वह शिक्षा ?

(शांतिकुंज के गायत्री विद्यापीठ गुरुकुल के शुभारंभ के अवसर पर
एक जून १९८० को परमपूज्य गुरुदेव द्वारा दिए गए
उद्घाटन-उद्बोधन के महत्वपूर्ण अंश)

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ बोलिए ।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि
धियो यो नः प्रचोदयात् ।

देवियो एवं भाइयो ! आज हम एक बहुत छोटी सी शुरूआत कर रहे हैं, जो बाहर से देखने में कोई खास महत्व की मालूम नहीं होती । सरकारी स्कूल खुलते हैं, बहुत से कालेज खुलते रहते हैं और शिक्षा के लिए जगह-जगह सरकारी, गैर सरकारी प्रयत्न चलते रहते हैं । ऐसी दशा में हम जिस कार्य का उद्घाटन कर रहे हैं, उसका यों प्रत्यक्ष कोई महत्व मालूम नहीं पड़ता । लगभग ३५ से ४० बच्चों तथा २० से ३० लड़कियों, महिलाओं की शिक्षा से हम यह एक छोटी सी शुरूआत कर रहे हैं । नन्हा सा आरंभ है लेकिन आप सब जरा बारीकी से देखें तो यह मालूम पड़ेगा कि यह कोई बड़ा काम किया जा रहा है ।

बीज बोते समय आपने देखा होगा कि नन्हा सा बीज खेत में डाल देते हैं, जरा-सी पौध लगा देते हैं तो प्रारंभ लगता तो छोटा सा ही है किंतु जब हरी भरी फसल खड़ी होती है तो ढेरों अनाज पैदा होता दिखाई देता है । आपने मक्के का, धान का, गन्ने का पौधा लगते देखा है । काम जरा सा होता है किंतु परिणति बड़ी । बगीचा लगाते समय गुल्लियाँ बोई जाती हैं लेकिन जब हरा-भरा बगीचा उगकर सामने आता है तो छोटा सा काम जो किसी दिन प्रारंभ किया गया था, बड़ा परिणाम लेकर आता दिखाई देता है । हमने अपनी जिंदगी में हमेशा ऐसे ही काम किए हैं । ऊँचे लक्ष्यों के लिए, ऊँचे उद्देश्यों के लिए छोटी शुरूआत की है व परिणाम विराट परिमाण में सामने आया है । यहाँ जो शुभारंभ कर रहे हैं, वह बाहर के स्कूलों की तुलना में कोई खास महत्व का नहीं लगता किंतु वास्तव में महत्व रखता है, यह मैं आपको स्मरण दिलाना चाहता हूँ ।

स्वामी श्रद्धानंद के मन में एक बात आई कि छोटी उमर के बच्चे ही वह आधार हैं, जिन पर संस्कारों का आरोपण किया जा सकता है । कच्ची लकड़ी

को मोड़ा जा सकता है । पक्की लकड़ी को मोड़ना मुश्किल है, तोड़ना आसान है । छोटी उमर में यदि ध्यान दिया जाए तो बच्चों को महापुरुष बनाया जा सकता है । रामचंद्रजी और लक्ष्मण जी को विश्वामित्र जी छोटी उमर में ले गए थे और उनको बला-अतिबला विद्या सिखाकर महामानव बना दिया था । ऋषि संदीपन के आश्रम में श्रीकृष्ण भी छोटी उमर में ही गए थे व महामानव बनकर आए थे । लव एवं कुश का शिक्षण बाल्मीकि के आश्रम में तब हुआ था जब वे बालक थे । छोटी उमर का बड़ा महत्व है । बड़ी उम्र होने पर आते तो शायद इतना बड़ा परिणाम न निकलता । जितना ज्यादा ऊँचे स्तर का शिक्षण छोटी उम्र में सिखाया जा सकता है, बड़े होने पर उतना संभव नहीं है । स्वामी श्रद्धानंद ने यही प्रयास किया । एक छोटा सा स्वयं का मकान था, उसे बेच दिया । मकान की कीमत मिली-हजार पाँच हजार रुपया । आज से लगभग अस्सी वर्ष पुरानी बात मैं कह रहा हूँ । घर बेचने के बाद हरिद्वार में गंगा के पार कांगड़ी गाँव में गुरुकुल के नाम पर छोटे-छोटे झोंपड़े बनाए और दस विद्यार्थियों से अपनी संस्था की शुरुआत की । जिनने भी देखा, सबने मखौल उड़ाया । दस बच्चों का भी कोई स्कूल होता है । स्कूलों की तो बड़ी शानदार इमारतें होती हैं । देहरादून, मंसूरी में पब्लिक स्कूलों का ठाट-बाट तो देखिए । उसके मुकाबले फूस की झोंपड़ियों का भला क्या मूल्य ? किंतु सिद्धांतों के प्रति अडिग श्रद्धानंद ऊँचे लक्ष्य को लेकर काम करते गए । गंगा में आई बाढ़ भी उनके उद्देश्य को डिगा नहीं सकी । एक शानदार संस्था के रूप में गुरुकुल कांगड़ी उभर कर आई । उसमें से बड़े शानदार आदमी निकले । इंद्रसेन विद्यावाचस्पति, सत्यदेव विद्यालंकार, रामगोपाल विद्यार्थी ऐसे कुछ गिने-चुने किंतु तपे हुए आदमी जो उन दिनों इस गुरुकुल ने निकाले, किसी दूसरे स्कूल से नहीं निकले ।

हमारे प्रत्येक काम को आप देखें तो आपको लगेगा कि वह प्रारंभ में भले ही छोटा हो किंतु ऊँचे उद्देश्यों को लेकर आरंभ हुआ व बड़े परिणाम तक पहुँचा । एक छोटा सा छापाखाना खोला था हमने आज से चालीस-बयालीस साल पहले । जिसने देखा, हँसते-हँसते लोट-पोट हो गया । साढ़े तीन सौ रुपये की हाथ से चलने वाली मशीन से कोई जमाने को बदलने वाली पत्रिका भी छप सकती है क्या ? सबने कहा क्यों पैसा नष्ट करते हो ? कुल एक हजार का छापाखाना । काम करने वाले तीन आदमी । हाथ से बना कागज । दीखने में छोटा सा छापाखाना पर हमारा मकसद बड़ा था, उद्देश्य

बड़ा था तो परिणाम जो निकलकर सामने आए वे कैसे शानदार थे । छोटी मशीन में दुनिया को हिला देने वाला, ऊँचे मकसद व उद्देश्यों वाला साहित्य छपता था जबकि बड़ी-बड़ी मशीनों में आपको क्या-क्या बताएं, ऐसे गंदे उपन्यास व गंदी किताबें छपती हैं । किंतु हमारे छोटे से प्रेस ने दुनिया को झकझोर दिया । जिसके पीछे मकसद काम करते हैं, उद्देश्य काम करते हैं तो क्रिया-कलाप छोटे हों या बड़े फलते व फूलते हैं ।

एक और उदाहरण आपको दूँ । राजस्थान की वनस्थली नाम की एक जगह पर एक अध्यापक ने छोटा सा बालिका विद्यालय खोला । हीरालाल शास्त्री नाम के गाँव के उस छोटे से अध्यापक ने अपना सब कुछ न्यौछावर कर दिया तो वहाँ अब क्या है ? करोड़ों रुपये की इमारत बनी है । लड़कियाँ हवाई जहाज चलाना सीखती हैं, सही अर्थों में आत्मनिर्भर बन नारी को जगाने की विधा में निष्णात् होती हैं । न जाने क्या क्या वहाँ पढ़ती हैं । यह सब इसलिए हुआ कि इस सबके पीछे ऊँचा उद्देश्य था । हमारा भी आज गुरुकुल आरंभ करने के पीछे ऐसा ही उद्देश्य है । जब यह साथ होता है तो जनता, इंसान व भगवान सब सहायता करने आ जाते हैं । और उदाहरण सुनेंगे आप ?

इटावा जिले का एक अंग्रेज इंस्पेक्टर । नाम था ह्यूम । उसने गाँव-गाँव जाकर आदमी एकत्र किए । हिंदुस्तान में युवाओं की, जनता की एक समिति होनी चाहिए । उद्देश्य था पीछे तो पचास साठ आदमी इकट्ठे हुए और कांग्रेस का जन्म हो गया । तिलक, नेहरू, शास्त्री, सुभाषचंद्र बोस सब उसी की देन हैं । छोटे संगठन के पीछे ऊँचे उद्देश्य हों, ऊँचा मकसद हो तो वे दुनिया में सफल होते हैं । जिनके मकसद घटिया होते हैं तो वे बड़े काम करने वाले भी निंदा के पात्र बनते हैं व उन पर लानत बरसती है ।

हम एक छोटी सी पाठशला शुरू करके एक शानदार शुरुआत करते हैं आज कि हम शिक्षा के साथ-साथ संस्कृति विद्या भी पढ़ाना चाहते हैं । हजारों रुपये एक बच्चे के ऊपर प्रतिदिन खर्च हों, ऐसे विद्यालय आज भी देहरादून, मंसूरी में हैं । आप जाइए देख आइए पर यह भी देखिए कि वहाँ संस्कृति है क्या ? संस्कृति किसे कहते हैं ? संस्कृति वह जिसे ग्रहण करने के बाद आदमी इंसान बन जाता है । इंसान के बाद महामानव फिर भगवान बन जाता है । किंतु आज की शिक्षा, वह तो संस्कृतिविहीन है । आज के अनपढ़ आदमी की तुलना में पढ़े-लिखे को देखकर मुझे डर लगता है । एक बिना पढ़े-लिखे से निश्चिंतता रहती है कि इसमें बदमाशी या चालाकी नहीं

हो सकती । होगी तो एक सीमा के अंदर ही । अंदर भलमनसाहत है अभी । यदि इसे थोड़ा पढ़ा-लिखा कर जीवन जीना सिखा दिया जाए तो आदमी बन सकता है । किंतु पढ़ा-लिखा ? वह तो दिमाग की खिड़की बंद किए बैठा है, हद दर्जे का बदमाश है व अहंकारी है । संस्कृति यही करती है कि आदमी को सही ढंग से आदमी बनकर जीना सिखाती है । कौन सिखाए संस्कृति को ? सरकार कर सकती है ? नहीं, सरकार का संस्कृति से, विद्या से कोई ताल्लुक नहीं । सरकार का सभ्यता से, एटीकेट से, लिबास-पोशाक से तो ताल्लुक हो सकता है पर संस्कृति से नहीं । संस्कृति का मंत्रालय या विद्यालय, विश्वविद्यालय सरकार के पास हो सकता है पर उसमें संस्कृति व विद्या नाम की कोई चीजें नहीं हैं, मात्र नाम ही नाम है ।

संस्कृति का शिक्षा में समावेश हर कोई नहीं कर सकता । केवल ऋषि ही कर सकते हैं । प्राचीन काल में शिक्षा के क्षेत्र में हर कोई हाथ नहीं डालता था । आप मकान बनाइए, उद्योग खड़ा कीजिए, खेती-बाड़ी कीजिए, राज कीजिए पर एक काम मत करिए । वह है शिक्षा से जुड़ी संस्कृति का शिक्षण जिसे मिला जुलाकर 'विद्या' कहते हैं । हर कोई विद्या नहीं दे सकता । आज तो हर कोई विद्यालय खोले बैठा है, उसका मालिक बना हुआ है पर प्राचीन काल में यह कार्य विशुद्धतः ऋषियों के जिम्मे था व वे इसे बखूबी निभाते थे । संस्कृति तो वही सिखा पाएगा, जिसके पास हो संस्कृति । मास्टरों के पास कहाँ है संस्कृति ? मास्टरों व मजूरों में आज कोई अंतर है ? मास्टर कहते हैं गुरू को और गुरू वे होते हैं जो शिष्य को अनगढ़ता के अँधेरे से निकाल कर सुगढ़ता का प्रकाश भरा रास्ता दिखाते हैं । मात्र जानकारी नहीं देते । वे आत्मीयता का पोषण देते हैं, संवेदना देते हैं । इसी को संस्कृति या विद्या कहते हैं ।

हम प्रायमरी स्कूल में पढ़े थे गाँव के । उस जमाने में, आज से साठ साल पहले दो रुपये की छात्रवृत्ति हर प्रतिभावान बच्चे को मिलती थी । हमारे गाँव आँवलखेड़ा के स्कूल में एक तिहाई विद्यार्थी सारे आगरा जिले के वजीफे हड़प ले जाते थे । किस कारण ? क्योंकि वहाँ गुरूजी थे, मास्टर साहब नहीं । हमारे गुरूजी ने स्कूल को गुरुकुल बना दिया था । बच्चे स्कूल में ही सोते थे । सबेरे उठाकर वे माँ की तरह कुल्ला कराते, नहलाते व फिर पढ़ाते । नींद आती तो धमकाते नहीं थे । कहते अच्छा सो जा, पर जल्दी उठ जाना, देर तक मत सोना । न केवल हम बल्कि जितने विद्यार्थी उस स्कूल में

उस जमाने में पढ़े तीन साल तक बराबर सारे जिले की छात्रवृत्तियाँ लेकर आए । हर वर्ष बीस-तीस बच्चे छात्रवृत्ति लेकर आते रहे क्योंकि वह नौकरी के लिए नहीं, संस्कृति के लिए शिक्षण देते थे । हर माँ-बाप को प्रसन्नता थी कि मास्टर साहब के पास बच्चा जितना ज्यादा रह जाएगा, उतना ही अच्छा है । सबेरे जल्दी उठेगा, नहाएगा, साफ रहेगा, आदमी बनेगा । पढ़ा-लिखा बने चाहे नहीं, पर विनम्र बनेगा ।

ऐसी गुरुकुल पद्धति मित्रो समाप्त हो गई । हमें अब क्वालिटी के सहयोगी मिले हैं तो हम इसे आरंभ करते हैं । सारे गायत्री परिवार के चौबीस लाख परिवारों के बच्चों को पढ़ाने की हैसियत तो हमारी नहीं है पर हम एक 'मॉडल' खड़ा करना चाहते हैं कि बच्चों का शिक्षण कैसा होना चाहिए ? राम और लक्ष्मण को विश्वामित्र माँगकर लाए थे । हम भी गायत्री परिवार के विशाल परिकर के सदस्यों से उनके बच्चों को माँगेंगे कि हम इन्हें नवयुग के लिए तैयार करना चाहते हैं । आप हमें दीजिए । हम दो सौ बच्चों को अगले वर्ष से किंडरगार्टन से लेकर दसवीं कक्षा तक की शिक्षा देने का कार्य करेंगे पर इसकी विशेषता इसका सरकारी पाठ्यक्रम नहीं वरन वह होगी जो प्राचीन काल के गुरुकुलों में थी-संस्कृति, शिष्टाचार, जीवन जीने की कला, आत्मावलंबन, स्वावलंबन । यह एक बीजारोपण मात्र है, पर इसकी परिणति आप आने वाले बीस-तीस वर्षों में देखेंगे, जब यह विश्वविद्यालय का रूप ले लेगा ।

हम यहाँ चौबीस घंटे का शिक्षण देंगे । जिसमें खेलना-कूदना भी शामिल है, व्यायाम करना भी, हँसी-मजाक भी तथा भयमुक्त होकर जीना भी । और क्या करेंगे आप इस विद्यालय में ? हम यहाँ परिवार निर्माण की शिक्षा आरंभ करने वाले हैं ताकि कुटुंब व्यवस्था ठीक हो सके । व्यक्ति को अच्छा बनाने के लिए कुटुंब को अच्छा बनाना होगा । आज के परिवार यह काम नहीं कर सकते । वे रात को खाना खाते हैं, रेडियो सुनते हैं, टीवी देखते हैं व सो जाते हैं । सुबह तब उठते हैं, जब बच्चे स्कूल चले जाते हैं । परिवारों को बनाने के लिए हमें नारियों को शिक्षण देना होगा । वे ही बच्चों में संस्कारों का आरोपण कर पाएंगी । नारियों के शिक्षण के बिना गुरुकुल में बच्चों का शिक्षण अधूरा है । मात्र बच्चों का गुरुकुल एक भवन तक सीमित नहीं, यह समग्र परिवार शिक्षण का आरंण्यक गायत्री तीर्थ के रूप में हमने इसीलिए बनाया है ।

आज नारी जाति की व उनके कारण परिवारों की जो दुर्गति है, उसे देखकर हमें दुःख होता है । बच्चियाँ पढ़ती हैं, बी०ए० करती हैं, एम०ए० करती हैं । यह पढ़ाई किस काम आती है । नौकरियाँ कहाँ रखी हैं । सबसे बड़ी बात है कुटुंब की संस्था का संचालन । कुटुंब एक समाज है, राज्य है, एक दुनिया है, जिसमें से महापुरुष निकाले जा सकते हैं । व्यक्ति को क्या से क्या बनाया जा सकता है । शादी और परिवार का कोई ताल्लुक नहीं है । पेट से बच्चा पैदा होता है, वही परिवार कहलाता है, यह सही नहीं है । शादी करने से ही परिवार बनता है, यह जरूरी नहीं है । परिवार है सहयोग-सहकार का नाम । हिल-मिल कर रहने की भावना का नाम गायत्री परिवार है, युग निर्माण परिवार है । परिवार की भावना यदि बन सके तो समाज बन सकता है । समाज की ढलाई का कारखाना है परिवार । इसमें ढलता है सुसंस्कारी व्यक्ति जो उसकी इकाई है । सुख और शांति की दृष्टि से परिवार की महत्ता है, जिसके संचालन के लिए महिलाओं की जरूरत है । महिलाओं का, नारी जाति का शिक्षण आवश्यक है । परिवार निर्माण के लिए ऐसा कहीं कोई स्कूल नहीं है । वह हमने यहाँ गुरुकुल के रूप में बनाया है ।

बच्चों की समस्याएं समझकर उनका समाधान करने, उन्हें ही नहीं परिवार के हर सदस्य को ढाल देने की कला भगवान ने जितनी नारी को दी है, उतनी और किसी को नहीं । पुरुषों के हाथों में धमकाने की कला दी है व नारी को जो कला दी है, उसे मोहब्बत कहते हैं, संवेदना कहते हैं, करुणा कहते हैं । मर्दों के पास ताकत तो है, समर्थता तो है पर मोहब्बत नहीं है । उन्हें बनाने-बढ़ाने के लिए, ढालने के लिए नारी को ही आगे बढ़ाना होगा । हम आप से, कार्यकर्ताओं की बेटियों से, धर्मपत्नियों से, देवकन्याओं से, जो यहाँ माताजी की गोदी में रहकर पलीं, उन सबसे इस स्कूल की परिवार निर्माण की प्रयोगशाला की शुरुआत करते हैं । गायत्री परिवार के लोगों से कहते हैं कि अपनी पत्नियाँ हमें सौंपिए । हम उन्हें संस्कारवान बनाएंगे । संस्कार किसी के पास नहीं हैं । सास के पास हैं ? सास तो उससे भी ज्यादा फूहड़ है । अपनी बेटी बहू को कहाँ से देगी वह संस्कार । इसीलिए समय की आवश्यकता को देखते हुए हम संस्कारों के शिक्षण के द्वारा एक गुरुकुल आरंभ करते हैं विद्या, संस्कृति व ज्ञान द्वारा नयी पीढ़ी को बनाने के लिए ।

हमारी तो इच्छा थी कि स्कूली पाठ्यक्रम भी इस शिक्षा से निकाल देते पर क्या करें ? मजबूरी है । बच्चे, उनके अभिभावक कहेंगे कि हमें नौकरी के

लायक भी नहीं बनने दिया। हम तो उन्हें जीवन जीने की कला, बड़ा आदमी, महामानव बनने की विधा सिखाना चाहते हैं पर समय को देखते हुए विद्यालयीन सरकारी पाठ्यक्रय भी साथ जोड़ दिया है। मैट्रिक तक तो सरकारी शिक्षण पद्धति से पढ़ाएंगे पर साथ में जीवन की दिशा का निर्धारण करना, अपना भविष्य स्वयं कैसे बनाया जाए, इस विधा का शिक्षण करेंगे। संस्कारवान बनाएंगे। सामान्य जानकारी मिले, वहाँ तक तो हम बर्दास्त करते हैं पर कालेजों की पढ़ाई का जब प्रश्न आएगा तब हम अपना बनाएंगे। भारतीय संस्कृति का शिक्षण करने वाला एक विश्वविद्यालय स्तर का तंत्र हम खड़ा करेंगे। कब करेंगे? आप देखिएगा। हम हों न हों पर बीज बो रहे हैं। हमारे उत्तराधिकारी आने वाले दस-पंद्रह वर्षों में यह समग्र तंत्र तैयार कर देगें। आपको इस संबंध में आशावादी होना चाहिए।

आज हमें आई० ए० एस० की नहीं समाज को सुधारने वाले लोकसेवियों की जरूरत है। समाज को शानदार मनुष्यों की जरूरत है। स्वस्थ चिंतन करने वाले युवा रक्त की जरूरत है। इसलिए स्कूलों की, कालेजों की शिक्षण पद्धति में व्यापक क्रांति पैदा करने के लिए यहीं से वातावरण बनाते हैं। न जाने इनमें से कौन गाँधी है, नेहरु है, सुभाष बोस है, खुदीराम है। प्रत्येक के अंदर की मौलिक क्षमता को निखारने का प्रयास करेंगे। चार घंटों की सरकारी पढ़ाई व बीस घंटों की हमारी संस्कारों वाली पढ़ाई।

उज्ज्वल भविष्य के लिए जरूरी हैं संस्कारवान बच्चे और सुसंस्कारी, संवेदनशील, स्वावलंबी, शिक्षित नारी शक्ति। इन्ही दो को बढ़ाएंगे हम। इस दिशा में हमारे कदम छोटे भले ही हों लेकिन परिणाम शानदार होंगे आप देखना अगले दिनों सारी शक्तिपीठों में यही शिक्षण वृहत रूप में चलने लगेगा व देखते-देखते विद्या विस्तार की क्रांति होती चली जाएगी। अब अंत में एक अनुरोध उनसे जो इस काम के लिए समय देंगे। उन बुढ्डों को जिनने घर वालों की नाक में दम कर रखा है, रिटायर हो चुके हैं, ढेर सारा समय है पर समाज के नाम पर समय माँगते हैं तो ठेंगा दिखाते हैं। हम यहाँ बुलाते हैं ताकि उनका लोक-परलोक दोनों सुधार सकें। उन्हें हमें पहले पढ़ाना पड़ेगा ताकि वे शिक्षक बन सकें। वानप्रस्थ स्तर के रिटायर्ड सेवाभावी व्यक्ति चाहिए हमें। यदि ऐसे व्यक्ति युवा वर्ग में से मिल सकें तो फिर बात ही क्या है। घर में एक ही कमाने वाला है, उसे भी हम नहीं बुलाते पर यह जरूर कहते हैं कि साल

में वह एक बार नौ दिन का अनुष्ठान यहाँ आकर करे । अपने घर की महिलाओं व बच्चों का शिक्षण यहाँ देव परिवार में आकर करवाएं । यह गुरुकुल एक समग्र, सर्वांगपूर्ण प्रयोगशाला है जिसमें हम नररत्नों को ढालेंगे, जिनसे व्यक्ति, परिवार व समाज बनेगा । हमें मौका दीजिए ताकि हम नया समाज बना सकें, नया जमाना ला सकें । इन बच्चों व महिलाओं का अब विद्यारंभ संस्कार होगा । हम अपनी बात समाप्त करते हैं ।

ॐ शांतिः ।

मनुज देवता बने, बने यह धरती स्वर्ग समान

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ बोलिए ।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि
धियो यो नः प्रचोदयात् ।

देवियो और भाइयो ! देवताओं के अनुग्रह की बात आप सबने सुनी होगी । देवता नाम ही इसलिए रखा गया है कि वे दिया करते हैं । प्राप्त करने की इच्छा से कितने ही लोग उनकी पूजा करते हैं, उपासना करते हैं, भजन करते हैं कि देवता हमको कुछ देकर जाएंगे । क्या यह बात सही है या गलत है, आइए इस पर विचार करें ।

देवता देते तो हैं, इसमें कोई शक नहीं है । अगर वे देते न होते तो उनका नाम देवता न रखा गया होता । देवता का अर्थ ही होता है-देने वाला । देने वाले से अगर माँगने वाला कुछ माँगता है तो कोई बेजा बात नहीं है । पर विचार करना पड़ेगा कि आखिर देवता देते क्या चीज हैं ? देवता वही चीज देते हैं जो उनके पास है । जिसके पास जो चीज होगी, वही तो दे पाएगा । देवता के पास सिर्फ एक चीज है और उसका नाम है-देवत्व । देवत्व कहते हैं-गुण, कर्म और स्वभाव-तीनों की अच्छाई को, श्रेष्ठता को । इतना देने के बाद में देवता निश्चिंत हो जाते हैं, निवृत्त हो जाते हैं और कहते हैं कि जो हम आपको दे सकते थे हमने वह दे दिया । अब आपका काम है कि जो चीज हमने दी है उसको जहाँ भी आप मुनासिब समझें, वहाँ इस्तेमाल करें उसी किस्म की सफलता पाएं ।

दुनिया में सफलता एक चीज के बदले में मिलती है और वह है-आदमी का उत्कृष्ट व्यक्तित्व । इससे कम में कोई चीज नहीं मिल

सकती । अगर कहीं से किसी ने घटिया व्यक्तित्व की कीमत पर किसी तरीके से अपने सिक्के को भुनाए बिना, अपनी योग्यता का सबूत दिए बिना, परिश्रम के बिना, गुणों के अभाव में, कोई चीज प्राप्त कर ली है तो वह उसके पास ठहरेगी नहीं । शरीर में हजम करने की ताकत न हो तो जो खुराक आपने खाई है वह आपको हैरान करेगी, परेशान करेगी । इसी तरह संपत्तियों को, सुविधाओं को हजम करने के लिए गुणों का माद्दा नहीं होगा तो वे आपको तंग करेंगी, परेशान करेंगी । अगर गुण नहीं है तो जैसे-जैसे दौलत बढ़ती जाएगी वैसे-वैसे आपके अंदर दोष-दुर्गुण बढ़ते जाएंगे, व्यसन बढ़ते जाएंगे, अहंकार बढ़ता जाएगा और आपकी जिंदगी को तबाह कर देगा ।

देवता क्या देते हैं ? देवता हजम करने की ताकत देते हैं । जो दुनियाबी दौलत या जिन चीजों को आप माँगते हैं जो आपको खुशी का बायस मालूम पड़ती हैं, उन सारी चीजों को हजम करने के लिए विशेषता होनी चाहिए । इसी का नाम है-देवत्व । देवत्व अगर प्राप्त हो जाता है तो फिर आप दुनिया की हर चीज से, थोड़ी से थोड़ी चीजों से लेकर फायदा उठा सकते हैं । अगर वे न भी हों तो भी काम चल सकता है । ज्यादा चीजें हो जाएं तो भी अच्छा है, यदि न हो जाएं तो भी कोई हर्ज नहीं है । लेकिन अगर आप इस बात के लिए उतावले हैं कि जैसे भी हम पिछड़े हैं वैसे ही बने रहें, तो फिर कुछ कहना संभव नहीं है । मनुष्य के शरीर में ताकत होनी चाहिए, अक्ल होनी चाहिए पर उस पर समझदारी का नियंत्रण भी होना चाहिए । समझदारी का नियंत्रण न होने से आग में घी डालने, ईंधन डालने के तरीके से वह सिर्फ दुनिया में मुसीबतें ही पैदा करेगी । देवता किसी को दौलत देने की गलती नहीं कर सकते । अगर देते हैं तो इसका मतलब है कि तबाही कर रहे हैं । इंसान को अगर भगवान कुछ देते हैं तो विशेषताएं देते हैं, नई उमंगें देते हैं । इंसानियत उस चीज का नाम है जिसमें आदमी का चिंतन, दृष्टिकोण, महत्वाकांक्षाएं और गतिविधियाँ ऊँचे स्तर की हो जाती हैं । इंसानियत एक बड़ी चीज है ।

मनोकामनाएं पूरी करना खराब बात नहीं है, पर शर्त एक ही है कि यह किस काम के लिए, किस चीज के लिए माँगी गई है ? अगर सांसारिकता के लिए माँगी गई हैं तो उससे पहले यह जानना जरूरी है कि उस दौलत को हजम कैसे कर सकते हैं । उसे खर्च कैसे कर सकते हैं ? मनुष्य भूल कर सकता है, पर देवता भूल नहीं कर सकते । देवता आपको चीजें नहीं दे सकते

जैसा कि मेरा अपना ख्याल है । देवताओं के संपर्क में आने वाले को भौतिक वस्तुएं नहीं मिली । क्या मिला है ? आदमी को गुण मिले हैं । देवत्व मिला है । सद्गुणों के आधार पर आदमी को विकास करने का मौका मिला है । गुणों के विकसित होने के पश्चात उन्होंने वह काम किए हैं जिन्हें सामान्य मनुष्य सामान्य बुद्धि से काम करते हुए नहीं कर सकता । देवत्व के विकसित होने पर कोई भी उन्नति के शिखर पर जा पहुँच सकता है चाहे वह सांसारिक हो अथवा आध्यात्मिक । संसार और अध्यात्म में कोई फर्क नहीं पड़ता । गुणों के इस्तेमाल करने का तरीका भर है । गुण अपने आप में शक्ति के पुंज हैं, कर्म अपने आप में शक्ति के पुंज हैं और स्वभाव अपने आप में शक्ति के पुंज हैं इन्हें कहाँ इस्तेमाल करना चाहते हैं यह आपकी इच्छा की बात है ।

सफलता साहसिकता के आधार पर मिलती है । यह एक आध्यात्मिक गुण है । इसी आधार पर योगी को भी सफलता मिलती है, तांत्रिक को भी और महापुरुष को भी । हर एक को इसी साहसिकता के आधार पर सफलता मिलती है । वह डाकू ही क्यों न हो । आप योगी हैं तो अपनी हिम्मत के सहारे फायदा उठाएंगे । नेता हैं, महापुरुष हैं तो भी इसी आधार पर सफलता पाएंगे । यह एक दैवी गुण है । इसे आप अपनी इच्छा के अनुसार इस्तेमाल कर सकते हैं, यह आप पर निर्भर है । इंसान के भीतर जो विशेषता है वह गुणों की विशेषता है । देवता अगर किसी आदमी को देंगे तो गुणों की विशेषता देंगे, गुणों की संपदा देंगे । गायत्री माता, जिनकी आप उपासना करते हैं, अनुष्ठान करते हैं, अगर कभी कुछ देंगी तो गुणों की विशेषता देंगी । गुणों से क्या हो जाएगा ? गुणों से ही होता है सब कुछ । भौतिक अथवा आध्यात्मिक जहाँ कहीं भी आदमी को उन्नति मिली है, केवल गुणों के आधार पर मिली है । श्रेष्ठ गुण न हों तो न भौतिक उन्नति मिलने वाली है, न आध्यात्मिक उन्नति मिलने वाली है ।

आदमी जितना समझदार है, नासमझ उससे भी ज्यादा है । यह भ्रांति न जाने क्यों आध्यात्मिक क्षेत्र में घुस पड़ी है कि देवता मनोकामना पूरी करते हैं, पैसा देते हैं, दौलत देते हैं, बेटा देते हैं, नौकरी देते हैं । इस एक भ्रांति ने इतना ज्यादा व्यापक नुकसान पहुँचाया है कि आध्यात्मिकता का जितना बड़ा लाभ, जितना बड़ा उपयोग था, संभावनाएं थीं, उससे जो सुख होना संभव था, उस सारी की सारी संभावना को इसने तबाह कर दिया । देवता आदमी को एक ही चीज देंगे और उनने एक ही चीज हर एक को दी है, प्राचीन काल के

इतिहास में और भविष्य में भी । देवता अगर जिंदा रहेंगे, भक्ति अगर जिंदा रहेगी, उपासना-क्रम यदि जिंदा रहेगा तो एक ही चीज मिलेगी और वह है-देवत्व के गुण । देवत्व के गुण अगर आ जाएं तब आप जितनी सफलताएं चाहते हैं, उससे हजारों-लाखों गुनी सफलताएं आपके पास आ जाएंगी ।

आप क्या चाहते हैं ? आपको देवत्व के स्थान पर तीन-चार सौ रुपये की नौकरी दिलवा दें । कोई देवता, संत या आशीर्वाद या कोई मंत्र तो वह नाचीज हो सकती है । लेकिन अगर देवता देवत्व प्रदान करते हैं, तो वह नौकरी आपके लिए इतनी कीमत की करवा देंगे कि आप निहाल हो जाएंगे । विवेकानंद रामकृष्ण परमहंस के पास नौकरी माँगने गए थे, पर मिला क्या-देवत्व, भक्ति, शक्ति और शांति । यह क्या चीज थे-गुण । मनुष्य के ऊपर कभी संत कृपा करते हैं । संतों ने कभी किसी को दिया है तो उनने एक ही चीज दी है-अंतरंग में उमंग । एक ऐसी उचंग जो आदमी को घसीट कर सिद्धांतों की ओर ले जाती है । जब आदमी के ऊपर सिद्धांतों का नशा छाता है, तब उसका मैग्नेट, उसका आकर्षण, उसकी वाणी, उसकी प्रामाणिकता इस कदर सही हो जाती है कि हर आदमी खिंचता हुआ चला आता है और हर कोई सहयोग करता है । विवेकानंद को सम्मान और सहयोग दोनों मिला । यह किसने दी थी-काली ने । काली अगर किसी को कुछ देगी तो यही चीज देगी । अगर दुनिया में दुबारा कोई रामकृष्ण जिंदा होंगे या पैदा होंगे, तो इसी प्रकार का आशीर्वाद देंगे जिससे आदमी के व्यक्तित्व विकसित होते चले जाएं । व्यक्तित्व अगर विकसित होगा तो जिसको आप चाहते हैं वह सहयोग बरसेगा । सहयोग माँगा नहीं जाता-बरसता है । आदमी फेंकता जाता है और सहयोग बरसता जाता है । देवत्व जब आता है तब सहयोग बरसता है । बाबा साहब आम्टे का उदाहरण आपके सामने है जिन्होंने कुष्ठ रोगियों के लिए, अपंगों के लिए अपना सर्वस्व लगा दिया । यह क्या है ? सिद्धांत है, आदर्श है और वरदान है । इससे कम में न किसी को वरदान मिला है और न इससे ज्यादा में किसी को मिलेगा । भीख माँगने से न किसी को मिली है और न भविष्य में किसी को मिलेगी ।

देवता एक काम करते रहते हैं । क्या करते हैं ? फूल बरसाते हैं । रामायण में कोई पचास जगह किस्से आते हैं जब देवताओं ने फूल बरसाया । फूल क्या बरसाते हैं-सहयोग बरसाते हैं । फूल किसे कहते हैं ? सहयोग को कहते हैं । कौन बरसता है ? देवत्व जो इस दुनिया में अभी जिंदा है । देवत्व

ही इस दुनिया में जिंदा था और जिंदा ही रहने वाला है । देवत्व मरेगा नहीं । यदि हैवान या शैतान नहीं मर सका तो भगवान क्यों मरेगा ? इंसान इंसान को देखकर आकर्षित होता है और भगवान भगवान को देखकर । देवता देवता को देखकर आकर्षित होता है और श्रेष्ठता को देखकर सहयोग आकर्षित होता है । पहले भी यही होता रहा था, अभी भी होता है और आगे भी होता रहेगा ।

यहाँ मैं देवता की प्रशंसा कर रहा हूँ । देवता कैसे होते हैं ? देवता ऐसे होते हैं जो आदमी के ईमान में घुसे रहते हैं और उसके भीतर से एक ऐसी हूक, एक ऐसी उमंग और एक ऐसी तड़पन पैदा करते हैं जो सारे के सारे जाल-जंजालों को मकड़ी के जाले की तरीके से तोड़ती हुई सिद्धांतों की ओर, आदर्शों की ओर बढ़ने के लिए आदमी को मजबूर कर देती हैं । इसे कहते हैं देवता का वरदान । इससे कम में देवता का वरदान नहीं हो सकता । आदमी के भीतर जब गुणों की, कर्मों की, स्वभाव की विशेषताएं पैदा हो जाती हैं तो विश्वास रखिए तब उसकी उन्नति के दरवाजे खुल जाते हैं । गुणों के हिसाब से दुनिया के इतिहास में जितने भी आदमी आज तक विकसित हुए हैं, किसी भी क्षेत्र में सफल हुए हैं, और जिनके सम्मान हुए हैं, वे प्रत्येक व्यक्ति गुणों के आधार पर बढ़े हैं । देवता का वरदान गुण और चिंतन की उत्कृष्टता है । संसार के महापुरुषों में से हर एक सफल व्यक्ति का इतिहास यही रहा है । सभी छोटे-छोटे खानदानों में पैदा हुए थे । छोटे-छोटे घरों में, परिस्थितियों में पैदा हुए थे, लेकिन उन्नति के ऊँचे से ऊँचे शिखर पर ऊँचे से ऊँचे स्थान पर जरूर पहुँचते चले गए । कौन जा पहुँचे ? लालबहादुर शास्त्री को लीजिए जिनके ऊपर देवता का अनुग्रह था । देवता के अनुग्रह की परख क्या है कि वे अनुग्रह करते हैं या नहीं ? एक ही अनुग्रह की पहचान है-जिम्मेदारी और समझदारी का होना, भक्त और भगवान के बीच में यही सिलसिला चला है । इंसान के यहाँ और भगवान के यहाँ एक ही तरीका है ।

पूजा क्यों करते हैं ? पूजा का मतलब एक ही है और वह है-इंसानी गुणों का विकास, इंसानी कर्म का विकास, इंसानी स्वभाव का विकास । आपने जो समझ रखा है कि पूजा के आधार पर यह मिलेगा, वह मिलेगा, यह सारी गलतफहमी इसीलिए हुई है । पूजा के आधार पर वस्तुतः दयानतदारी मिलती है, शराफत मिलती है, ईमानदारी मिलती है । आदमी को ऊँचा दृष्टिकोण मिलता है । अगर आपने गलत पूजा की होगी तब आप भटक रहे होंगे । पूजा आपको इस एक ही तरीके से करनी चाहिए कि जो पूजा के लाभ

आज तक इतिहास में मनुष्यों को मिले हैं, हमको भी मिलने चाहिए । हमारे गुणों का विकास, कर्म का विकास, चरित्र का विकास और भावनाओं का विकास होना चाहिए । देवत्व इसी का नाम है । देवत्व अगर आपके पास आएगा तो आपके पास सफलताएं आवेंगी । हिंदुस्तान के इतिहास पर दृष्टि डालिए, उसके पन्ने पर जो बेहतरीन आदमी दिखाई पड़ते हैं वे अपनी योग्यता के आधार पर नहीं अपनी विशेषता के आधार पर महान बने हैं । महामना मालवीय जी का उदाहरण सुना है आपने, कैसे शानदार व्यक्ति थे वे । उन पर देवताओं का अनुग्रह बरसा था और छोटे से आदमी से वे महान हो गए ।

मित्रो ! भगवान जब प्रसन्न होते हैं तो वह चीज नहीं देते जो आप माँगते हैं । फिर क्या चीज देते हैं ? वह चीज देते हैं जिससे आदमी अपने बलबूते पर खड़ा हो जाता है और चारों ओर से उनको सफलताएं मिलती हुई चली जाती हैं । सारे के सारे महापुरुषों को आप देखते चले जाइए, कोई भी आदमी दुनिया के परदे पर आज तक ऐसा नहीं हुआ है जिसको दैवी सहयोग न मिला हो, जिसको जनता का सहयोग न मिला हो, जिसको भगवान का सहयोग न मिला हो । ऐसे एक भी आदमी का नाम आप बतलाइए जिसके अंदर से विशेषताएं पैदा न हुई हों जिनसे आप दूर रहना चाहते हैं । जिनसे आप बचना चाहते हैं । जिनके प्रति आपका कोई लगाव नहीं है । वे चीजें जिनको हम आदर्शवाद कहते हैं, सिद्धांतवाद कहते हैं, दुनिया के हिस्से का हर आदमी जिसको श्रेय भी मिला हो, धन भी मिला हो । जहाँ आदमी को श्रेय मिलेगा वहीं उसे वैभव भी मिले बिना रहेगा नहीं । संत गरीब नहीं होते । वे उदार होते हैं और जो पाते हैं खाते नहीं दूसरों को खिला देते हैं । देवत्व इसी को कहते हैं ।

आदमी के भीतर का माद्दा जब विकसित होता है तो बाहरी दौलत उसके नजदीक बढ़ती चली जाती है । उदाहरण क्या बताऊँ–प्रत्येक महापुरुष का यही उदाहरण है । प्रत्येक ईश्वर भक्त का, प्रत्येक सिद्धांतवादी का यही उदाहरण है । उन्हीं को मैं देवभक्त कहता हूँ । देवोपासक उन्हीं को मैं कहता हूँ । उन्हीं की देवभक्ति को मैं सार्थक मानता हूँ जो अपने गुणों के आकर्षण के आधार पर देवता को अपने आकर्षण में खींच सकने में समर्थ हुए । आपकी भाषा में कहूँ तो देवता जब प्रसन्न होते हैं तो आदमी को देवत्व के गुण देते हैं, देवत्व के कर्म देते हैं, देवत्व का चिंतन देते हैं और देवत्व का स्वभाव देते हैं । यह मैंने आपकी भाषा में कहा है । हमारी परिभाषा इससे

अलग है । मैं यह कह सकता हूँ कि आदमी अपने देवत्व के गुणों के आधार पर देवता को मजबूर करता है, देवता पर दबाव डालता है, उसे विवश करता है और यह कहता है कि आपको हमारी सहायता करनी चाहिए और सहायता करनी पड़ेगी । भक्त इतना मजबूत होता है जो भगवान के ऊपर दबाव डालता है और कहता है कि हमारा ड्यू है । आप हमारी सहायता क्यों नहीं करते ? वह भगवान से लड़ने को आमादा हो जाता है कि आपको हमारी सहायता करनी चाहिए ।

कामना करने वाले कभी भक्त नहीं हो सकते । भक्त शब्द के साथ में भगवान की इच्छाएं पूरी करने की बात जुड़ी रहती है । कामनापूर्ति आपकी नहीं भगवान की । भक्त की रक्षा करने का भगवान व्रत लिए हैं-'योग क्षेमं वहाम्यहम्' । यह सही है भगवान ने योग क्षेम को पूरा करने का व्रत लिया हुआ है, पर हविस पूरी करने का जिम्मा नहीं लिया । आपका योग और क्षेम अर्थात आपकी शारीरिक आवश्यकताएं और मानसिक आवश्यकताएं पूरी करना उनकी जिम्मेदारी है । आपकी बौद्धिक-मानसिक आवश्यकताएं पूरी करना भगवान की जिम्मेदारी है, पर आपकी हविस पूरी नहीं हो सकती । हविसों के लिए, तृष्णाओं के लिए भागिए मत । यह भगवान की शान में, भक्त की शान में, भजन की शान में गुस्ताखी है-सबकी शान में गुस्ताखी है । भक्त और भगवान का सिलसिला इसी तरह से चलता रहा है और इसी तरीके से चलता रहेगा । भक्त माँगते नहीं दिया करते हैं । भगवान कोई इंसान नहीं हैं, उसे तो हमने बना लिया है । भगवान वास्तव में सिद्धांतों का नाम है, आदर्शों का नाम है, श्रेष्ठताओं के समुच्चय का नाम है । सिद्धांतों के प्रति, आदर्शों के प्रति आदमी के जो त्याग और बलिदान हैं, वस्तुतः यही भगवान की भक्ति है । देवत्व इसी का नाम है ।

प्रामाणिकता आदमी की इतनी बड़ी दौलत है कि जनता का उस पर सहयोग बरसता है, स्नेह बरसता है, समर्थन बरसता है । जहाँ स्नेह समर्थन और सहयोग बरसता है, वहाँ आदमी के पास किसी चीज की कमी नहीं रह सकती । बुद्ध की प्रामाणिकता के लिए, सद्भावना के लिए, उदारता के लिए लोगों ने उनके ऊपर पैसे बखेर दिए । गाँधी जी की प्रामाणिकता और सद्भावना, श्रेष्ठ कामों के लिए उनकी लगन, उदारता लोकहित के तईं थी । व्यक्तिगत जीवन में श्रेष्ठता और प्रामाणिकता को लेकर चलने के बाद में वे भक्तों की श्रेणी में सम्मिलित होते चले गए । सारे समाज ने उनको सहयोग

दिया, दान दिया और उनकी आज्ञा का पालन किया । लाखों लोग उनके कहने पर जेल चले गए, लाखों लोगों ने अपने सीने पर गोलियाँ खाईं । क्या यह हो सकता है ? हाँ ! शर्त एक ही है कि आप प्रकाश की ओर चलें, छाया आपके पीछे-पीछे चलेगी । आप तो छाया के पीछे-पीछे भागते हैं, छाया ही आप पर हावी हो गई है । छाया का अर्थ है माया । आप प्रकाश की ओर चलिए, भगवान की ओर चलिए, सिद्धांतों की ओर चलिए । आदर्श और सिद्धांत-इन्हीं का नाम हनुमान है, इन्हीं का नाम भगवान है ।

मित्रो, जो हविस आपके ऊपर हावी हो गई है उससे पीछे हटिए, तृष्णाओं से पीछे हटिए और उपासना के उस स्तर पर पहुँचने की कोशिश कीजिए जहाँ कि आपके भीतर से, व्यक्तित्व में से श्रेष्ठता का विकास होता है । भक्ति यही है । अगर आपके भीतर से श्रेष्ठता का विकास हुआ हो, मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि आपको जनता का वरदान मिलेगा, आपको अपनी आत्मा का वरदान मिलेगा, भगवान का वरदान मिलेगा । चारों ओर से इतने वरदान मिलेंगे कि जिसको पा करके आप निहाल हो जाएंगे । भक्ति का यही इतिहास है, भक्त का यही इतिहास है । भगवान के अनुग्रह का, गायत्री माता के अनुग्रह का यही इतिहास है, यही इतिहास था और यही इतिहास रहेगा । अगर इस रहस्य को, सार को आप समझ लें, तो आपका यहाँ आना सार्थक हो जाए । आपका गायत्री अनुष्ठान सार्थक हो जाए, अगर आप इस सिद्धांत को समझकर जाएं कि हमको सद्गुणों के विकास करने के लिए तपश्चर्या कराई जा रही है और अगर हमारी यह तपश्चर्या सही साबित हुई तो भगवान हमको यहाँ से बिदा करते समय गुण, कर्म और स्वभाव की विशेषता देंगे और हमको चरित्रवान व्यक्ति के तरीके से विकसित करेंगे । चरित्रवान व्यक्ति जब विकसित होता है तब उदार हो जाता है, परमार्थ-परायण हो जाता है, लोकसेवी हो जाता है, जनहितकारी हो जाता है और वह अपनी क्षुद्र स्वार्थ, संकीर्णताओं को कम करके लोकहित में, परमार्थ हित में अपने स्वार्थ को देखना शुरू कर देता है । आपकी अगर ऐसी मनःस्थिति हो जाए तो मैं कहूँगा कि आपने सच्ची उपासना की और भगवान का सच्चा वरदान पाया ।

आप सच्चा वरदान पा करके निहाल हो सकते हैं जिससे कि आज तक के सारे के सारे भक्त निहाल होते रहे हैं । मैंने इसी रास्ते पर चलने की कोशिश की और अपने जीवन में प्रत्यक्ष रूप से भगवान के वरदानों को देखा और पाया । मैं चाहता था कि आप लोग जो इस शिविर में आए हैं जो वसंत

के निकट जा पहुँचा है यह प्रेरणा लेकर जाएं कि हम पर भगवान कृपा करें कि हमको श्रेष्ठता के लिए, आदर्शों के लिए कुछ त्याग और बलिदान करने की, चरित्र को श्रेष्ठ और उज्ज्वल बनाने के लिए प्रेरणा भीतर से मिले और बाहर से मिले । अगर ऐसी कुछ प्रेरणा आपको मिले तो उसके फलस्वरूप आप जो कुछ भी प्राप्त करेंगे, वह इतना शानदार होगा कि जिससे आप निहाल हो जाएं, आपका देश निहाल हो जाए, गायत्री माता निहाल हो जाएं, हम निहाल हो जाएं और यह शिविर निहाल हो जाए अगर आप इस तरह की कुछ प्राप्ति और उपलब्धि कर सकें । आज की बात समाप्त ।

ॐ शांतिः । *(३१ जनवरी १९७९)*

ब्रह्मवर्चस कैसे जगाती है गायत्री ?

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि
धियो यो नः प्रचोदयात् ।

देवियो, भाइयो ! गुरु द्रोणाचार्य ने जब पांडवों को विद्याध्यन कराया, तो प्राचीन परंपरा के अनुरूप उन्होंने वही मंत्र पढ़ाए जो ब्राह्मण ग्रंथों में लिखे हुए हैं । शतपथ ब्राह्मण में विद्यार्थी को अक्षर ज्ञान से भी पहले जो पाठ पढ़ाया जाता है, वह है-'सत्यंवद् धर्मम् चर, स्वाध्याया मा प्रमदितव्यम् ।' यह ऋचाएं अक्षर ज्ञान से भी पहले याद कराई जाती हैं जिससे आदमी को मालूम पड़ जाए कि विद्या का उद्देश्य क्या है ? ज्ञान का उद्देश्य क्या है ? पढ़ने का उद्देश्य क्या है ? उद्देश्य पहले बताया जाता है और उसका प्रयोग पीछे पढ़ाया जाता है । क, ख, ग पीछे पढ़ाया जाता है, पहले यह बताया जाता है कि यह किस काम के लिए है । द्रोणाचार्य ने पाँचों पांडवों को प्राचीन परंपरा के अनुरूप वही पाठ पढ़ाए-'सत्यंवद् धर्मम् चर, स्वाध्याया मा प्रमदितव्यम् ।' चारों पांडवों ने तो वे सारे के सारे पाठ याद कर लिए, लेकिन सबसे बड़े भाई युधिष्ठिर वह पाठ याद न कर सके । उन्होंने कहा-गुरुदेव ! पाठ थोड़ा जटिल है । 'सत्यंवद' कहिए तो मैं सुना देता हूँ, लेकिन अध्यात्म में कोई ज्ञान ऐसा नहीं है जो केवल जवान की नोक से कहा जाए और कान के छेदों से सुना जाए और जो परिणाम उसके बताए गए हैं उन्हें पूरा करने में समर्थ हो सके । जीभ का नहीं यह अध्यात्म का विषय है । आपने जो पाठ मुझे पढ़ाया उसके

लिए मैंने कोशिश की कि वह मेरे जीवन में प्रयोग होता हुआ चला जाए और मेरी जीवात्मा इसको धारण कर ले तो बात बने । महाराज युधिष्ठिर सारे जीवन भर इसी पाठ को याद करते रहे । उसमें भी एक बार गलती हो गई थी और 'नरो वा कुंजरोवा'–हाथी है या अश्वस्थामा आदमी यह पता नहीं चला, ऐसा कहकर उन्होंने गलती कर ही डाली ।

मित्रो, अध्यात्म में जो शिक्षण हम प्राप्त करते हैं उसको जीवन में उतारना पड़ता है । इससे कम में कोई बात बनती नहीं, गाड़ी आगे बढ़ती नहीं । उच्चारण हमारे लिए आवश्यक तो है, पर काफी नहीं है । राम नाम या गायत्री मंत्र तो सभी याद कर लेते हैं । केन्या (पूर्वी अफ्रीका) का हमारा लड़का यहाँ बैठा हुआ है । उसके यहाँ कांगो का एक तोता है जो ऐसा बढ़िया गायत्री मंत्र बोलता है कि उसकी और मनुष्य की आवाज में कोई फर्क ही नहीं मालूम पड़ता । पर क्या इतने से सुग्गे को गायत्री माता सिद्ध हो गई ? क्या वह आशीर्वाद दे सकता है ? नहीं, क्योंकि उसे मात्र अक्षर याद हैं । अक्षर याद कर लेने भर से अध्यात्म का कोई उद्देश्य पूरा नहीं होता, जैसा कि आम लोगों का ख्याल है । आम लोगों को मुद्दतों से इसी तरह बहकाया जाता रहा है कि अक्षर याद कीजिए, अक्षरों का उच्चारण कीजिए और स्वर्गलोक को चले जाइए । राम नाम लीजिए, राम का नाम सुनिए और सीधे राम लोक को चले जाइए । पर ऐसा होता नहीं है । शुरुआत हम राम नाम से करें, ठीक है । नाम तो लेना ही पड़ता है । नाम नहीं लेंगे तो बात कैसे बनेगी ? जिस तक पहुँचना है उसका नाम तो लेना ही पड़ेगा । स्टेशन का नाम बताए बिना तो उसका टिकट भी नहीं मिलता । वस्तु का नाम बताए बिना दुकानदार से कहते रहिए कि अमुक चीज, यह चीज, वह चीज दे दीजिए तो वह भी कहेगा कि भाग यहाँ से । नाम की पहले जरूरत है क्योंकि नाम हमको दिशा बताता है । लेकिन अगर नाम के उच्चारण तक ही सीमित रहा गया तो समझना चाहिए कि जिस तरीके से सुग्गा राम नाम और गायत्री मंत्र बोलता रहता है, पर लाभ कुछ नहीं पाता, उसी तरह उससे कम या अधिक लाभ आपको भी नहीं मिलेगा ।

नाम उच्चारण आवश्यक है, पर इससे आगे उसे हमारी अंतरात्मा में इस गहराई तक समा जाना चाहिए कि वह हमारे व्यवहार में उतरने लगे । इस संदर्भ में प्रह्लाद की घटना मुझे याद हो आई । प्रह्लाद को उसके मास्टर ने सबसे पहले पट्टी पूजन कराया और राम नाम पट्टी पर लिखकर कहा–पहले रामनाम लिख, पीछे क, ख, ग भी बताएंगे । वह रोज राम नाम लिखने लगा ।

पहले दिन, दूसरे दिन, तीसरे दिन, चौथे दिन भी राम नाम । मास्टर ने कहा–अब राम नाम लिखना बंद करो और गिनती लिखो । उसने कहा–नहीं साहब, अभी तो हम राम नाम ही पढ़ेंगे, क्योंकि यह पाठ अभी पक्का नहीं हो पाया और वह राम नाम ही पट्टी पर लिखकर लाता रहा । पिता से शिकायत की गई । उन्होंने कहा–बच्चे ! आगे वाली पढ़ाई पढ़नी चाहिए । उसने कहा–नहीं, जहाँ तक ज्ञान का संबंध है, वहाँ तक एक पढ़ाई पक्की कर लेनी चाहिए तब आगे पढ़ना चाहिए । प्रह्लाद सारी जिंदगी भर उसी पढ़ाई में लगे रहे और उसे पक्की करते रहे । बार-बार गायत्री मंत्र याद करने की बात कहते हैं और अभी २४ हजार का जप करा रहे हैं । आप यह पूछ सकते हैं, उसे चाहे हम एक बार जप कर लें या २४ हजार बार । फिर आप बार-बार क्यों कराते हैं ? उससे क्या फायदा ? गायत्री मंत्र याद भी हो गया और उसका अर्थ भी हम समझ गए कि हे भगवान हमारी बुद्धि को शुद्ध-पवित्र बना दीजिए । आप यही रेपिटिशन बार-बार क्यों कराते हैं ? किस काम के लिए कराते हैं ? आपको यह सवाल करना चाहिए और इसका जबाव मालूम करना चाहिए ।

साथियों 'रेपिटिशन' इसलिए कराते हैं कि हमारा मस्तिष्क बड़ा भुलक्कड़ है । ऐसा भुलक्कड़ है कि इससे ज्यादा भुलक्कड़ इस दुनिया में कोई होगा क्या ? जहाँ तक भौतिक जीवन का सवाल है, वहाँ तक हम और आप बिल्कुल सही हैं, कभी भुलक्कड़ नहीं हो सकते । इस मामले में हमारा दिमाग बहुत चालाक है, लेकिन इस मामले में वह इतना वाहियात है कि हम अपने जीवन लक्ष्य को अनायास ही भूल जाते हैं । हम कौन हैं ? हमारा लक्ष्य क्या है ? हमारा कर्तव्य क्या है ? हमारे जीवन का स्वरूप क्या है ? हमको मालूम नहीं है । मूल चीज को हम एकदम भूल जाते हैं । बाहर की सब चीजें हमको याद रहती हैं कि दुकान में कितना नफा होगा, किसका लेना है, किसका देना है आदि बातें हमको ऐसे याद रहती हैं कि कभी भी उसमें भूल नहीं पड़ती । लेकिन जहाँ तक अपनी जीवात्मा का सवाल है, परमात्मा का सवाल है, इसमें भूल पर भूल होती चली जाती है । इसलिए इस भुलक्कड़पन को दूर करने के लिए हम बार-बार आपसे गायत्री मंत्र का जप कराते हैं, ताकि आपकी जीवात्मा में वह घुल जाए और आपकी स्मरण में, अंतःचेतना में उसको प्रवेश करने का मौका मिल जाए । ग्रामोफोन के रिकार्ड के तरीके से हमारी जीभ की नोक कई तरह से अक्षरों का, मंत्रों का उच्चारण कर लेती है, पर हमारे जीवन में वे समाविष्ट नहीं हो पाते, प्रवेश नहीं कर पाते । फलतः हमको बार-

बार याद करना पड़ता है। उच्चस्तरीय सिद्धांतों को जीवन में प्रवेश कराने के लिए, अंत:चेतना में नए संस्कार जमाने के लिए बहुत मेहनत करनी पड़ती है। जिस तरह इम्तहान की तैयारी के लिए उसे बार-बार याद करना पड़ता है, उसी प्रकार हम आपको गायत्री मंत्र के जप के रूप में बार-बार 'रेपिटिशन' कराते हैं। ताकि आपकी याददाश्त में से जो बेशकीमती चीज भूल गई उस गँवाई हुई चीज को आप तलाश कर पाएँ।

भगवान रामचंद्र की सीता जी को रावण चुरा ले गया। रामचंद्रजी ने पहाड़ों से, नदियों से, तालाबों से, पेड़ों से, हवा से-हर एक से पूछताछ की कि कहीं सीता आपने देखी है। सीता के बिना राम बिल्कुल निर्जीव से हो गए थे। उनकी जीवात्मा निकल गई थी। वे हारे-थके हुओं के तरीके से वन-वन में घूम रहे थे और सीता-सीता पुकारते थे। हम भी पुकारते हैं अपनी जीवात्मा को, जिसको कि हमने गँवा दिया है, खो दिया है। साँप के फन में से और हाथी के सिर में से मणि निकल जाती है तो वह बेकार हो जाता है। साँप और हाथी के सिर में यह मणि होती है कि नहीं, यह तो मुझे नहीं मालूम, लेकिन मैं जानता हूँ कि मनुष्य के भीतर एक मणि अवश्य होती है जिसको गवाँ देने के बाद आदमी निष्प्राण हो जाता है, निस्तेज, निर्जीव, छूँछ हो जाता है और व्यथाओं, कष्टों, चिंताओं से घिर जाता है। सारे जीवन पर निराशा के बादल छा जाते हैं। वह मणि है हमारी जीवात्मा, जिसको हमने गँवा दिया। अब तो लोहार की मरी हुई धौंकनी के तरीके से सांस भर चलती है। आज आदमी मरे हुए के बराबर है। मनुष्य जीवन के साथ जो श्रेष्ठताएँ, उमंग, उत्साह और उल्लास जुड़े हुए होते हैं जिन्हें कि आदमी अमृत के तरीके से बिखेरता रहता है, वह चेहरे पर कहीं दिखाई नहीं देती। ऐसे खीजे हुए बेचैन एवं चिंतित आदमी को मैं मरे हुए में शुमार करता हूँ। सीताजी के चले जाने के बाद रामचंद्र जी चिंतित-दु:खी हो गए थे और अपने उत्साह, आनंद, अपनी खुशी को सीता के नाम से पुकारते थे। हम भी आपसे निवेदन करते हैं कि आप अपनी सीता को पुकारिए, आत्मा को पुकारिए, जिसका नाम हमने गायत्री माता रख दिया है। गायत्री माता को पुकारने के लिए गायत्री मंत्र का जप करने के लिए हमने कहा है।

गायत्री माता क्या हो सकती है? गायत्री माता बेटे, आपकी जीवात्मा हो सकती है और वह उच्चस्तरीय जीवात्मा जब आपके अंत:करण में प्रवेश करती है तो आपको आनंद और उल्लास से भर देती है और देवता बना देती

है। वह गायत्री माता, जो बीस साल पहले आपको एक छवि के रूप में सुपुर्द की थी, जिसको आप चंदन, धूपबत्ती चढ़ाते थे, प्रणाम करते थे, माला घुमाते थे, बहुत पुरानी बात है। जब आप छोटे वाले बालक थे, तब हमने बताया था कि गायत्री माता हंस पर सवारी करती है और हाथ में पुस्तक, पुष्प, कमंडलु लिए रहती है। पर आज मैं ज्ञान की बात कहता हूँ। जिस गायत्री माता का हम जप कराते हैं, उपासना और अनुष्ठान कराते हैं, उसकी फिलॉसफी, उसका तत्वज्ञान, उसका सार, प्रकाश और मूल बताना चाहते हैं। मैं समझता हूँ कि अब आप इस लायक हो गए हैं कि खुले दिल से, खुले मन से आपको हम असलियत समझा सकते हैं कि आखिर गायत्री माता क्या हो सकती है जिसका हमें जप करना चाहिए और जप करने का उद्देश्य क्या हो सकता है जिसके लिए हम आपको बार-बार कहते हैं। जो सिद्धियों की, चमत्कारों की देवी है, जो शांति की, वरदान की देवी है, जो ऐसी देवी है जिसको प्राप्त करने के बाद में और कुछ प्राप्त करना बाकी नहीं रह जाता। वह गायत्री मंत्र जो गुरु वशिष्ठ के पास था, जो विश्वामित्र के पास था जिन्होंने अपना सारा राजपाट छोड़कर जंगल में तप करने के बाद गायत्री माता का साक्षात्कार किया था और जिसने कहा था-धिक्बलं क्षत्रिय बलं ब्रह्म तेजो बलं बलम्। मैं आपको उसी गायत्री मंत्र को बताना चाहता हूँ जो आपको निहाल कर सकता है, धन्य कर सकता है और आपको चमत्कारी बना सकता है, महामानव बना सकता है, देवता बना सकता है और भगवान बना सकता है।

वह गायत्री मंत्र जो 'मह्यम दत्वा व्रजतब्रह्मलोकम्' प्रदान करता है, ब्रह्मतेजस और ब्रह्मवर्चस प्रदान करता है। वह गायत्री माता का प्राण है जिसका हमने कलेवर-शक्ल बना करके रखा है, अन्यथा जो निराकार शक्तियाँ हैं वे देखी और दिखाई नहीं जा सकतीं। उनकी शक्लें नहीं होती हैं। ठंडी, गर्मी, प्रेम, मुहब्बत, क्रोध जैसी संवेदनाओं की शक्ल नहीं हो सकती। भगवान की केवल संवेदनाएं, विचारणाएं, प्रेरणाएं, निष्ठाएं, आस्थाएं और अनुभूतियाँ हो सकती हैं। उनकी कोई शक्ल नहीं हो सकती। शक्ल हमारी कल्पना है। कल्पना इसलिए है कि हमको निष्ठा तक पहुँचने के लिए रास्ता मिल जाए। जिस तरह इंजैक्शन की सुई शरीर के भीतर रक्त में दवा पहुँचा देती है, उसी प्रकार शक्लों के माध्यम से हमारा मस्तिष्क किसी चीज को पकड़ सकता है। शक्ल के बिना, नाम और रूप के बिना हमारी स्मरण शक्ति और दिमाग की बनावट काम नहीं कर सकती और हम उन संवेदनाओं

को पकड़ नहीं सकते। इस संवेदना को, निष्ठा और आस्था को पकड़ने के लिए हमने शक्लों की, मूर्तियों की कल्पना की है।

गायत्री माता क्या हो सकती है? अब मैं उसके शक्ल की व्याख्या करूँगा। गायत्री माता बेटे, एक जवान स्त्री का नाम है जैसे कि हमने फोटो में छापा है और मंदिर में स्थापित किया है। जवान स्त्री इसलिए कि उसके प्रति तेरे भीतर मातृ बुद्धि पैदा हो, आँखों में शुद्ध पवित्रता का भाव पैदा हो, क्योंकि मनुष्य की भावना और ईमान दो बातों में सबसे ज्यादा गंदा हो जाता है। एक धन को देखकर, दूसरा जवान स्त्री को देखकर। एक पैसे को देखकर आदमी भ्रष्ट हो जाता है। दूसरे विपरीत सैक्स की जवानी देखकर न जाने कैसा शैतान दिमाग में आ जाता है कि आदमी सब कुछ भूल जाता है, यहाँ तक कि अपने कर्तव्यों को भी भूल जाता है। कामिनी और कांचन-दोनों को देख करके जो अपने ईमान को सही रख सकता है, उसे कह सकते हैं कि यह आदमी बहादुर है, शूरवीर है। इसके पास वह शक्ति है जिसका नाम-ब्रह्मवर्चस है। जिसके पास ब्रह्मवर्चस है वह भगवान को भी मजबूर कर सकता है कि आप आइए जमीन पर और हमारे सामने खड़े होइए। भगवान को इसके आधार पर हम खड़ा कर सकते हैं। भगवान को इसके सामने नत होना पड़ता है। मित्रो, ब्रह्मवर्चस और ब्रह्मतेजस वह शक्ति है जो भगवान को अपना भक्त बना लेने के लिए मजबूर कर देती है। यह ब्रह्मतेजस आता कहाँ से है? चरित्र में से आता है। पूजा चरित्र के लिए है। पूजा से भगवान नहीं मिल सकते। पूजा हमारा माध्यम है, लक्ष्य नहीं। पूजा के माध्यम से हम अपनी चरित्रनिष्ठा, विचारशीलता और आंतरिक उदारता का विकास करते हैं। उपासना इसी के लिए की जाती है।

मित्रो, ब्रह्मवर्चस प्राप्त करने के लिए हमको वह साहसिकता जगानी पड़ेगी जो कि अध्यात्म का मूल उद्देश्य है। उसी के लिए सारे का सारा क्रिया कलेवर खड़ा किया गया है; जिसमें सत्संग भी आता है, रामायण पाठ, गीता पाठ, गायत्री जप, देवदर्शन, तीर्थयात्रा आती है। ये सब के सब साधन हैं और साध्य है अपनी अंतरात्मा का परिष्कार। अंतरात्मा का परिष्कार जिस हिसाब से, जिस अनुपात से होता हुआ चला जाता है, उसी हिसाब से भगवान और उनकी शक्तियाँ मनुष्य के नजदीक आती हुई चली जाती हैं। अध्यात्म इसी के लिए बनाया गया था। उसका मूल उद्देश्य आदमी को श्रेष्ठ मनुष्य बनाना है, क्रमशः जीवात्मा से महात्मा, महात्मा से देवात्मा और देवात्मा से परमात्मा

बनाना है । इन तीन सीढ़ियों को पार करते हुए चलना है । इसी मूल उद्देश्य को पूरा करने के लिए सारे के सारे धर्मशास्त्र बनाए गए, योगाभ्यास बनाए गए, तपश्चर्याएं बनाई गईं । साधना विज्ञान बनाए गए और सारे का सारा अध्यात्म का इतना बड़ा कलेवर बनाया गया । आपको इसके उद्देश्यों को, पूजा उपासना के उद्देश्यों को समझना चाहिए ।

ब्रह्मवर्चस पैदा करने वाली गायत्री माता की छवि हमको यह बात बताती है कि हमारी आँखों में दिव्य तत्व का प्रवेश होना चाहिए । हमारी आँखों में जो चीज जैसी है, उसी तरह की देखने का माद्दा पैदा होना चाहिए । नारी क्या हो सकती है ? नारी हमारी माँ हो सकती है, बेटी हो सकती है, बहिन हो सकती है और उससे भी ऊँचा एक और स्थान है, उसको धर्मपत्नी कह सकते हैं । पत्नी नहीं धर्मपत्नी, जो हमारी सह अंगनी, सहधर्मिणी है और समाज को श्रेष्ठ नागरिक देने के उद्देश्य से है । दोनों हाथों से जिस तरीके से नाव को चलाते हैं, उसी तरीके से स्त्री-पुरुष दोनों मिल करके जीवन की नौका को खेने के लिए और उसे पार करने के लिए खड़े हो जाते हैं । स्त्री हमारी सहधर्मिणी है, इसलिए वह देवी है और पूजा करने योग्य है । अगर यह वृत्ति अपने भीतर बसाई और बनाई जा सके तो हमारे मस्तिष्क की दिव्य सत्ता का अस्सी फीसदी बिखराव में जो नष्ट होता हुआ चला जाता है उसे बचाया, रोका जा सकता है और अपनी आँखों में वह तेजस पैदा किया जा सकता है जिसके आधार पर हम भगवान को भी मजबूर कर सकते हैं और भौतिक लोगों को भी प्रभावित कर सकते हैं । अगर अपनी आँखों के द्वारा जो बिजली नष्ट होती रहती है उसको रोक पाएं तब मैं आपसे कहता हूँ कि आपकी और हमारी आँखों में गांधारी के तरीके से वह तेजस पैदा हो सकता है कि हम अपने बच्चों को अगर यह आशीर्वाद दें कि तेरा शरीर लोहे का हो जाएगा तो लोहे का बन सकता है और अपनी आँखों में वह ब्रह्मतेजस पैदा किया जा सकता है जो गाँधी जी की आँखों में था । ३२ वर्ष की उम्र में उन्होंने अपनी स्त्री को 'बा' कहना शुरू कर दिया था, इससे उनकी आँखों में वह ब्रह्मतेजस पैदा हुआ कि ब्रिटेन के प्रधानमंत्री चर्चिल को अपने वायसराय को यों लिखना पड़ा कि आप गाँधी जी से आँख मत मिलाना, उसकी आँखों में हिप्नॉटिक पावर है । जिसको भी देख लेता है, उसी को वह प्रभावित कर लेता है, उसी को मैस्मराइज कर देता है और अपने चंगुल में फँसा लेता है । आप में से हर आदमी की आँखों में वह मैग्नेट पैदा हो सकता है जिससे आप अपने लोगों

को, पड़ोसियों को और हर आदमी को प्रभावित कर सकते हैं, अगर आप अपनी आँखों की शक्ति का बिखराव रोक पाएं तब ।

मित्रो, गायत्री माता हंस के ऊपर सवारी करती हैं । हंस से मतलब उस प्रतीक से है जो हमारे भीतर एक वृत्ति पैदा करती है, संकल्प पैदा करती है कि जो आदमी हंस है गायत्री माता उसके ऊपर सवारी करेंगी । हंस गायत्री माता का प्रतीक है जो जवान स्त्री के प्रति, भिन्न सैक्स के प्रति दिव्यता का, पवित्रता का भाव पैदा करता है । हंस वह आदमी जो मोती खाए, जिसके ऊपर दाग-धब्बे न हों । जो दूध और पानी को अलग करना जानता हो अर्थात जिसके रोम-रोम में इंसाफ भरा हुआ पड़ा हो । हंस मोती खाता है अर्थात जो विवेकवान हैं वे मोती खाते हैं अर्थात न्याय की कमाई खाते हैं, ईमानदारी की कमाई खाते हैं और शुद्ध चीजें खाते हैं । वह आदमी हंस हैं जो दूध और पानी में फर्क करते रहते हैं अर्थात जो चीज सामने आती है उसमें से यह फर्क करते हैं कि उचित क्या है और अनुचित क्या है ? यह कसौटी है खरे-खोटे की पहचान की । पुराने जमाने में जब सोने-चाँदी के सिक्के चलते थे, तब उनके ऊपर कसौटी लगाई जाती थी कि कौन सिक्का खरा है और कौन खोटा । आपके पास जो भी घटना आए, परिस्थिति आए, व्यक्ति या विचार आए, प्रत्येक के ऊपर कसौटी लगाइए और देखिए कि इसमें क्या उचित है और क्या अनुचित है । कौन नाराज होता है और कौन खुश होता है-यह देखना आप बंद कीजिए । यह दुनिया ऐसे पागलों की दुनिया है कि अगर आपने यह विचार करना शुरू कर दिया कि हमारे हितैषी किस बात में प्रसन्न होंगे तो फिर आप कोई सही काम नहीं कर सकते । सही काम करना है तो फिर आपको यह बात उठाकर ताक पर रखनी पड़ेगी कि कौन नाराज होगा, कौन नहीं । अगर आपको भगवान को प्रसन्न करना है और अपने ईमान को प्रसन्न करना है, जीवात्मा को प्रसन्न करना है तो लोगों की नाराजगी और प्रसन्नता की बाबत विचार करना एकदम बंद कर देना पड़ेगा । हमको भगवान की प्रसन्नता की जरूरत है, लोगों की प्रसन्नता की नहीं । आपको सर्टिफिकेट लेना है तो अपनी जीवात्मा का लीजिए और किसी का मत लीजिए ।

मित्रो, वह गायत्री मंत्र जिसका हम आपको जप कराते है, जिस गायत्री माता की उपासना कराते हैं, वह सिर्फ उस आदमी के गले में माला पहना सकती है जो सत्यवान है । सत्यवान और सावित्री की कथा आपने सुनी होगी कि उसने सत्यवान का वरण किया था और कहा था कि हमने अपनी मनमर्जी

से ब्याह किया है । यह सावित्री और गायत्री एक ही शक्ति का नाम है । गायत्री और सावित्री वरण कर सकती है । वरदान दे सकती है । कहना मान सकती है । उत्तर है-हाँ । नंदा नाई के बदले में पैर दबाने भगवान गए थे और गायत्री माता भी आपको दूध पिलाने के लिए और आपके पैर दबाने के लिए आ सकती हैं, आपका वरण कर सकती हैं, पर शर्त एक ही है कि आपको सत्यवान होना चाहिए । जो सत्यवान नहीं है, जिन्होंने अपना सारा जीवन झूठवान बना करके रखा है, जिसके व्यवहार में झूठ, विचारों में झूठ, नियम में झूठ, रोम-रोम में झूठ भरा पड़ा है, उसका यदि ख्याल हो कि गायत्री मंत्र बोलने के बाद में किसी ऐसी शक्ति को गुलाम बना सकता है जो उसके मनमर्जी के मुताबिक जो भी मनोकामना होगी, उसको पूरा कर दिया करेगी, तो मेरे हिसाब से यह ख्याल गलत है । दुनिया में ऐसी कोई देवी नहीं है जो किसी पूजा-पत्री करने वाले को निहाल इसलिए कर दिया करे कि उसने इतना जप किया, धूपबत्ती जलाई या इतना हवन कर दिया है । हवन, धूपबत्ती और जप की संख्या के नाम पर प्रसन्न होकर आदमी की मनोकामना को पूरी कर दिया करे, ऐसी देवी दुनिया में नहीं है ।

गायत्री क्या हो सकती है ? उसका वाहन हंस क्या हो सकता है ? उसका सार और आधार समझाने की हमने भी कोशिश की है कि गायत्री उपासना से आपकी आँखों के अंदर दिव्यता, पवित्रता आनी चाहिए जिससे आपको प्रत्येक के भीतर देवत्व दिखता हुआ चला जाए । कांचन और कामिनी के प्रति अपना दृष्टिकोण साफ करके देखें, ताकि आपकी आँखों में अर्जुन और शिवाजी की तरीके से वह तेज आ जाए । अर्जुन को गांडीव मिला था, आँखों का संयम कर लेने से और उर्वशी के प्रति अपनी मातृ बुद्धि रखने की वजह से और छत्रपति शिवाजी को देवी से तलवार मिली थी । तलवार और गांडीव देवी-देवता देते हैं या नहीं, लेकिन वे साहसिकता के रूप में, आदर्शवादिता के रूप में, चरित्रनिष्ठा के रूप में अवतरित अवश्य होते हैं और उसमें हजार हाथी के बराबर बल हो जाता है । अगर गांडीव में तथा शिवाजी की तलवार में हजार हाथी के बराबर ताकत रही होगी तो मैं इसको अचंभा नहीं मानता, सब सही है । अंतरात्मा की महानता में कितना बल होता है, आपसे मैं कैसे कह सकता हूँ । आपने तो देखा भी नहीं है । अगर आप अध्यात्म की छाया में खड़े हुए होते तो आपको मालूम पड़ता कि गाँधी, बुद्ध, ईसा और विवेकानंद में कितनी बड़ी ताकत थी, और संतों में कितनी बड़ी

ताकत थी । अध्यात्म को आप समझते तक तो हैं नहीं । बार-बार वही माला, वही धूपबत्ती तक अपने आपको सीमित किए हुए हैं फिर आपको किस तरीके से आध्यात्मिक लाभ हो सकता है ? गायत्री माता, जिसकी हम आपको उपासना कराते हैं, अनुष्ठान कराते हैं, उसकी भक्ति के अगर आप इच्छुक हैं तो यहाँ से जाने से पूर्व कम से कम उसका सही स्वरूप अपनी अंतरात्मा में अवश्य निर्धारित कर लीजिए । इससे आपका फायदा तो होगा ही, साथ ही अध्यात्म के ऊपर जो एक कलंक आ गया है कि इसका कोई माहात्म्य नहीं है, कोई फल नहीं है, वह दूर हो जाएगा । प्राचीन काल में केवल सात ऋषि थे और उन सात ऋषियों की वजह से सारी दुनिया में अध्यात्म जिंदा था । अगर दुनिया में सात आदमी भी अध्यात्मवादी रह जाएं तो भी अध्यात्म जिंदा रहेगा । वही आदमी अध्यात्म के स्वरूप को जिंदा रखेंगे और उनकी वजह से ढेरों आदमी आ जाएंगे ।

बेटे, हमने अपनी जिंदगी में सही अध्यात्म को समझने की और जीवन में उतारने की कोशिश की और ढेरों आदमी आ गए । हम से एक लाख आदमी वे बँधे हुए हैं जो अखण्ड-ज्योति पढ़ते हैं । अखण्ड-ज्योति कौन-कौन पढ़ता है, अपने से बँधने का यह मैंने मानदंड रखा है । इससे एक लाख आदमी बँधे हुए हैं और एक लाख के सहारे, जो उनके स्त्री-बच्चे, पड़ोसी हैं सब मिलाकर ५० लाख हो जाते हैं । एक सही अध्यात्मवादी ५० लाख आदमियों को प्रकाश देने में समर्थ है । हम लोगों को यह यकीन दिलाने, विश्वास दिलाने में समर्थ हैं कि गायत्री मंत्र में कुछ जान है और लोगों ने देखा कि आचार्य जी गायत्री मंत्र का जप करते हैं, इस मंत्र में कोई शक्ति होती है । बस इसी एक वजह से इतने लोग इकट्ठा हो रहे हैं और अभी जब तक मैं जिंदा हूँ मैं समझता हूँ कि सारी दुनिया भर में करोड़ों आदमियों को गायत्री मंत्र का उपासक बनाकर जाऊँगा क्योंकि मैं एक सही अध्यात्मवादी आदमी हूँ और लोगों को यह मालूम है कि उपासना और उपासना का फल इनके पास है । इसलिए एक आदमी काफी है और सबके सब नास्तिक हो जाएं तो इससे कोई बनता-बिगड़ता नहीं है । उस एक आदमी की वजह से ही ढेरों आदमी अध्यात्मवादी बन जाएंगे । इसलिए मैं चाहता था कि अध्यात्म का, गायत्री माता का असली स्वरूप आप समझ करके जाएं, तब काम चले । तब फायदा हो । तब उद्देश्य की पूर्ति हो । तब फिर आपको भी आनंद आए, कुछ हमको भी आनंद आए । भगवान को आनंद आए, गायत्री माता को आनंद आए । फिर

सबकी शिकायतें दूर हो जाएंगी । आपके पास वास्तविकता आ जाएगी और आपको जप करने के आधार और कारण मालूम पड़ते हुए चले जाएंगे ।

हम आपको जो बार-बार जप कराते हैं, उसके कई प्वाइंट हैं । पहला प्वाइंट मैंने आपको शिक्षक-छात्र का पढ़ने-पढ़ाने का बताया है । दूसरा-व्यायामशला का । व्यायामशाला में आप जाइए और पहलवान जी से पूछिए-क्यों साहब, क्या हो रहा है ? आप कितने दंड बैठक करते हैं ? उत्तर मिलेगा २००-३०० बैठक करते हैं । यह क्या है ? 'रेपिटिशन' जिसे बार-बार करना पड़ता है । मिलिट्री वाले लेफ्ट-राइट और कवायद के रूप में रोज रियाज करते रहते हैं । संगीत को जानने वाले रोज अपना रियाज करते रहते हैं । रियाज हाथ से गया कि संगीत हाथ से गया । स्नान करने और दाँत माँजने में हम रोज रेपिटिशन करते हैं । बर्तन साफ करते हैं तब, कपड़े साफ करते हैं तब-यह सब रेपिटिशन है । मन के ऊपर जो मलिनताएं छाई हुई हैं, उसे धोने के लिए राम नाम के माध्यम से, बार-बार जप करने के माध्यम से रेपिटिशन करना पड़ता है । हम बार-बार भगवान को पुकारते हैं । गज और ग्राह की लड़ाई में गज की एक टांग ग्राह के मुँह में चली गई थी और ग्राह उसे घसीटता हुआ चला जा रहा था । जब गज ने देखा कि हमारा कोई ठिकाना नहीं है, बचाव की कोई सूरत नहीं है, तो उसने आवाज लगाई और भगवान को १००८ बार पुकारा । गजराज के एक हजार आठ बार पुकारने पर भगवान दौड़े हुए चले आए । बेटे, एक टांग मुँह में पकड़कर घसीट ले गया था, कौन ? ग्राह, किसकी ? गज की और आप लोगों की तो सारी की सारी टांगों को पकड़ कर यह मगर घसीटे ले जा रहा है । एक काम, दूसरा क्रोध, तीसरा लोभ, चौथा मत्सर, पाँचवाँ अहंकार, छठा मोह-ये छः ग्राह कहाँ-कहाँ चिपके हैं-गर्दन पर, हाथ पर, पैर पर और पूँछ पर । ये सभी मुँह से पकड़ कर घसीटे ले जा रहे हैं । इसलिए हम भगवान को पुकारते हैं कि हे भगवान ! आप कहाँ हैं ? आइए । हमारी जीवात्मा आप कहाँ हैं ? आइए । हमारे जीवन लक्ष्य, हमारे उद्देश्य, हमारे जीवन की महानता आप कहाँ हैं ? हे हमारे आदर्श आप कहाँ हैं ? आप आइए और हमको ले करके चलिए । बेटे, इसी के लिए हम जप कराते हैं आपसे ।

जप का मोटा उद्देश्य तो मैं कितनी बार आपको समझाता रहा हूँ । गायत्री मंत्र का टाइप राइटर से उदाहरण देता रहा हूँ । मंत्र का हमारी जीभ से उच्चारण होता है । इससे शक्ति केंद्र खुल जाते हैं । बार-बार एक लयबद्ध और

क्रमबद्ध शब्दों के उच्चारण करने से एक गति पैदा होती है-शब्द की गति । लोहे के पुल के ऊपर फौजी कदम से कदम मिलाकर चलते हैं तो क्रमबद्ध एक लय उत्पन्न होती है जिससे पुल के गिरने का जोखिम पैदा हो जाता है । इसलिए उन्हें कदम से कदम मिलाकर पुल पर चलने से मना कर दिया जाता है । इसी तरह एक लयबद्ध, क्रमबद्ध, दिशाबद्ध ढंग से उच्चारण किया हुआ शब्द इतना शक्तिशाली हो जाता है जिसे समझाना मेरे लिए मुश्किल है । लेकिन साइंस के साथ मैं आपको समझा सकता हूँ कि बार-बार एक ही शब्द को एक ही गति से, एक ही चक्र को घुमा देने से 'सेंट्रीफ्यूगल फोर्स' पैदा हो जाती है । श्रेष्ठ शब्दों के गुंथन और बार-बार उनके उच्चारण के माध्यम से हमारे भीतर सेंट्रीफ्यूगल फोर्स पैदा हो जाती है । इसके अतिरिक्त बार-बार एक ही शब्दोच्चारण का एक साइकोलॉजिकल प्वाइंट भी है । पैरासाइकोलॉजी एवं मेटाफिजिक्स के हिसाब से हमारी चेतना चार हिस्सों में बँटी हुई है जिसे प्रशिक्षित करने के लिए चार आधार और स्तर हैं । पहला वाला स्तर जिसको हम 'लर्निंग' कहते हैं । यह दिमाग का वह स्तर है जो केवल एक बात को समझा देने से जानकारी मिल जाती है, जैसे आपको बता दिया कि ऋषिकेश यहाँ से २२ मील दूर है । इसकी जानकारी आपको हो गई । दूसरी परत वह है जिसे हम 'रिटेंशन' कहते हैं अर्थात प्रस्तुत जानकारी को स्वभाव का अंग बना लेना । जिस बात को हम निरंतर करते रहते हैं, बहुत दिनों बाद वह हमारे स्वभाव में शामिल हो जाती है, आदत में शामिल हो जाती है । यह 'रिटेंशन' कहलाता है । एक और परत है, जिसमें बहुत सी चीजें दबी हुई पड़ी रहती हैं और बड़ी मुश्किल से ही कभी-कभी याद आ जाती हैं । चेतना की इस परत में बहुत सारी चीजें दबी हुई पड़ी होती हैं जिन्हें हम भूल गए हैं । भूली हुई उन चीजों के ऊपर जब हम जोर देते हैं, उन पर प्रकाश फेंकते हैं तो वे स्मृतियाँ उठ कर खड़ी हो जाती हैं, जाग जाती हैं जिसे 'रीकाल' कहते हैं । आखरी परत है-'रीकॉग्रीशन' । 'रीकॉग्रीशन' उसे कहते हैं जिसमें कि मान्यताएं, आस्थाएं, निष्ठाएं और विश्वास जम जाते हैं । एक के बाद एक परत मिलती हुई चली जाती है । जप के द्वारा, उपासना के द्वारा अपनी जीवात्मा को उस स्थिति पर ले जाना पड़ता है जिसमें कि 'रीकॉग्रीशन' की स्थिति पैदा हो जाती है ।

'सीयराम मय सब जग जानी' यह वाक्य हमने हजार बार पढ़ा और हजार बार सुना है, लेकिन हमारे भीतर न राम के प्रति भावना पैदा होती है

और न सिद्धा के प्रति भावना पैदा होती है । हर आदमी हमें शिकार मालूम पड़ता है, हर मर्द शिकार मालूम पड़ता है, हर औरत शिकार मालूम पड़ती है । जबान से हम कहते हैं तो क्या बना ? रीकॉग्नीशन नहीं हो सका । मान्यताएं, निष्ठाएं परिपक्व नहीं हो सकीं । निष्ठाओं को परिपक्व करने के लिए बराबर रस्सी से जिस तरीके से पत्थर के ऊपर निशान बनाने के लिए रगड़ करनी पड़ती है, उसी तरीके से जप के द्वारा, उपासना के द्वारा बार-बार रगड़ बना करके अपनी अंतःचेतना के ऊपर निष्ठाएं जमानी पड़ती हैं । इसीलिए हम आपको जप कराते हैं इस तथ्य को आप लोग ध्यान रखना । आप जप करने का स्वरूप समझिए, कारण समझिए । किस कारण से जप कराते हैं, वह वजह समझिए । अगर आप समझ जाएंगे तो ठीक है, फिर आपको जप करना हो तो करना और न करना हो तो मत करना, पर कम से कम आपकी मान्यता तो सही होनी चाहिए । मान्यताएं सही हो जाएं, जानकारी सही हो जाए तो ठीक है । तब आप समझना कि पचास फीसदी मंजिल पार कर ली । आगे आपकी मर्जी । आज की बात समाप्त ।

ॐ शांतिः शांतिः शांतिः । (५ अक्टूबर १९७६)

ध्यान योग का व्यावहारिक क्रिया पक्ष

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरिण्यं भर्गो देवस्य धीमहि
धियो यो नः प्रचोदयात् ।

साधना स्वर्ण जयंती वर्ष में हम आपको गायत्री उपासना के साथ-साथ विशेष रूप से जो शिक्षण देते हैं वह ध्यान का शिक्षण है । उपासनाएं दो हैं- नाम और रूप की उपासनाएं । नाम और रूप के बिना उपासना हो नहीं सकती । यह दो यूनिवर्सल उपासनाएं हैं । किसी भी मजहब में चले जाइए, व्यक्ति नाम जरूर ले रहा होगा । मुसलमान तसबीह पर नाम ले रहा होगा । ईसाई पादरियों को आप माला जपते हुए देखेंगे । आर्य समाजी प्रकाश का ध्यान कर रहे होंगे । अन्य अमुक तरह का ध्यान कर रहे होंगे । नाद योग वाले कान में आने वाली आवाजों का ध्यान कर रहे होंगे । बहरहाल ध्यान जरूर करना पड़ता है । ध्यान के बिना गति किसी की नहीं है । इसीलिए हमने कहा है कि जप के साथ-साथ आप ध्यान किया कीजिए । स्थूल ध्यान

मूर्ति पूजा के माध्यम से होता है, तस्वीरों के माध्यम से होता है, क्योंकि मनुष्य का मानसिक विकास इतना नहीं हो पाया है कि वह बिना किसी फोटोग्राफ के, बिना किसी मूर्ति के किसी चीज का ध्यान कर सके । लेकिन जब वह विषय पक्का हो जाता है तब फिर मूर्ति की कोई खास जरूरत नहीं रह जाती । तब हम अपने भीतर बैठे हुए भगवान का साक्षात्कार कर सकते हैं । उसका ध्यान कर सकते हैं ।

ध्यान का क्या मतलब है ? ध्यान का मतलब है कि हमारे जीवन के दो पक्ष हैं । एक पक्ष वह है जो बाहर फैला हुआ पड़ा है । हमारे कानों के सूराख बाहर को हैं और हमारी आँखों के सूराख बाहर को हैं । हम बाहर की चीजों को देख सकते हैं और बाहर कौन बैठा हुआ है, कौन जा रहा है, यह भी बता सकते हैं । बाहर की चीजें हमको दिखाई पड़ती हैं, किंतु भीतर की चीजें हमको बिल्कुल दिखाई नहीं पड़तीं । तो क्या भीतर कोई चीज नहीं है ? बेटे, असल में जो कुछ भी चीज है वह भीतर ही है, बाहर नहीं । बाहर केवल दिखाई पड़ती है, पर असल में हर चीज भीतर है । जिंदगी कहाँ है ? जिंदगी बाहर नहीं हमारे भीतर है और बुद्धि, जिसकी वजह से हम रुपया कमाते हैं, सम्मान कराते हैं, वह बाहर नहीं हमारे भीतर है जिसकी वजह से हम हर चीज कमा सकते हैं । भीतर हमें दिखाई नहीं पड़ता और हम कहते हैं कि हे भगवान, यह आपने क्या मखौल कर दिया मनुष्य के साथ कि बाहर की चीजों की जानकारी दे दी, पर भीतर की चीजों की नहीं दी । भीतर जो चीजें संपत्तियाँ, विभूतियाँ, देवत्व और महानता दबी हुई पड़ी हैं वह हमको दिखाई नहीं पड़तीं । हमको अपना बेटा दिखाई पड़ता है, संपत्ति दिखाई पड़ती है, यह और वह दिखाई पड़ता है, पर हमको अपना भविष्य नहीं दिखाई पड़ता, आत्मा दिखाई नहीं पड़ती, परमात्मा दिखाई नहीं पड़ता । यहाँ तक कि हमारे भीतर वाले कल-पुर्जे तक दिखाई नहीं पड़ते । आँखें तक दिखाई नहीं पड़तीं । भीतर की तो बात कौन कहे, बाहर की भी दिखाई नहीं पड़ती । अच्छा बताइए आप की नाक कैसी है ? भवें कैसी हैं ? पलकें कैसी हैं ? जब आपको बाहर की चीजें ही नहीं दिखतीं, केवल इधर-उधर की चीजें ही दिखाई देती हैं, तो फिर भीतर की कैसी दिखेंगी ? इसीलिए गरेबान में मुँह डाल करके जब हम भीतर तलाश करते हैं तो उसको ध्यान कहते हैं । अपने भीतर झांकने का नाम ही ध्यान है ।

ध्यान किसका किया जाता है ? स्वयं का या भगवान का ? बेटे, स्वयं

तो क्या और भगवान तो क्या दोनों एक ही हैं । स्वयं का विकसित रूप ही भगवान है । हमारा विकसित रूप जो है-'शिवोऽहं' 'सच्चिदानंदोऽहं' 'तत्वमसि' 'अयंमात्माब्रह्म' 'प्रज्ञानंब्रह्म' है । वेदांत के यह सारे के सारे महावाक्य यह बताते हैं कि हमारा परिष्कृत रूप भगवान है । हमारा भगवान हमारा परिष्कृत रूप ही है । डायमंड क्या है ? डायमंड और कोयले में कोई खास फर्क नहीं है । एकाध इसके एलीमेंट्स और एकाध इसके भीतर के जो जर्रे हैं, उनमें फर्क पड़ता है, अन्यथा हीरा और कोयला एक ही है । आत्मा और परमात्मा एक है । यह थोड़ा सा सीमाबद्ध है तो वह असीम है । यह अणु है और वह विभु है । यह मायाग्रस्त है तो वह मुक्त है । बस इतना ही फर्क है । अगर हम अपने आपको साफ कर लें तो हम उसको प्राप्त कर सकते हैं । इसलिए हम प्रकाश का ध्यान करते हैं, भीतर वाले का ध्यान करते हैं, अपने लक्ष्य का ध्यान करते हैं, जीवन का ध्यान करते हैं । तो गुरुजी आपने इसीलिए सूरज का ध्यान बता दिया है ? हाँ बेटे, वह तो हमने प्रतीक बता दिया है । उसकी चमक देखकर अगर आप यह अंदाजा लगाते हों कि हमारे ध्यान में चमक आ जाती है या नहीं आती अथवा आपके ध्यान में गायत्री माता आ जाती हैं या नहीं आती हैं, तो उससे बनता-बिगड़ता नहीं है । उससे केवल यह बात साबित होती है कि आपके दिमाग की परिपक्व अवस्था आई कि नहीं । प्रकाश से मेरा मतलब वह नहीं है जो आप समझते हैं । प्रकाश को अध्यात्म में जिस अर्थ में लिया गया है, उस अर्थ से मेरा मतलब है । प्रकाश 'डिवाइन लाइट' 'लेटेंट लाइट' या ज्ञान के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है । यह चमक के अर्थ में प्रयुक्त नहीं हुआ है । चमक का अर्थ ज्ञान नहीं है । जिस प्रकाश के लिए हमने कहा है वह है जिसके लिए भगवान से हमने प्रार्थना की है-'तमसो मा ज्योतिर्गमय' । हे भगवान ! हमको अंधकार की ओर नहीं प्रकाश की ओर ले चलिए । अध्यात्म में प्रकाश शब्द कहीं भी प्रयुक्त हुआ है वहाँ ज्ञान के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है ।

ध्यान के लिए जो हमने यह बताया कि आप प्रकाश का ध्यान किया कीजिए, तो कहाँ-कहाँ प्रकाश का ध्यान किया करें ? अभी स्वर्ण जयंती साधना वर्ष में हमने आपको तीन जगह ध्यान करने के लिए कहा है । एक आप मस्तिष्क में ध्यान किया कीजिए । दूसरा अंतरात्मा में हृदय स्थान पर और तीसरा नाभि स्थान पर ध्यान किया कीजिए । हमारे तीन शरीर हैं और तीनों शरीरों के ये तीन केंद्र हैं । इन तीनों के भीतर प्रकाश चमकना चाहिए ।

प्रकाश हमारे तीनों शरीरों के भीतर प्रविष्ट होना चाहिए । इसका क्या अर्थ है ? इसका अर्थ यह है कि प्रकाश जब हमारी नसों में आए, नाड़ियों में आए, शरीर में आए तो नाभि में होकर आए । नाभि में से होकर इसलिए कि माता और बच्चे का जो संबंध सूत्र है वह नाभि से जुड़ा होता है । इसलिए स्थूल शरीर का केंद्र नाभि को माना गया है । जिस प्रकार माता के शरीर में से उसका तत्त्व नाभि से होकर हमारे शरीर में आता था और दोनों का संबंध जुड़ा हुआ था, उसी प्रकार भगवान का प्रकाश नाभि में से होकर हमारे शरीर के भीतर आता है । जब वह प्रकाश आएगा तब आपकी हड्डियाँ चमकेंगी, रक्त चमकेगा, मांस चमकेगा । चमकने से मेरा मकसद यह है कि तब आपके भीतर कर्मनिष्ठा, स्फूर्ति, साहसिकता, श्रम के प्रति प्यार, कर्मों के प्रति प्यार, कर्मयोग के प्रति प्यार, कर्तव्य परायणता के प्रति प्यार उभरेगा । यह कर्मयोग है । कर्मयोग शरीर का योग है । प्रकाश का ध्यान करने वाला कभी ठाली बैठ नहीं सकता । वह सतत सत्कर्मरत ही रहेगा ।

तीन योग हैं–कर्मयोग, ज्ञानयोग और भक्तियोग । प्रकाश के माध्यम से इन तीनों योगों को हृदयंगम करने के लिए मैंने आपको कहा है । भगवान का प्रकाश जब कभी शरीर में आएगा तो कर्मयोग के रूप में आएगा और आदमी कर्तव्यनिष्ठ होता हुआ दिखाई पड़ेगा । उसके लिए 'वर्क इज वरशिप' होगा । पूजा कर्म, श्रेष्ठ कर्म, आदर्श कर्म, लोकोपयोगी कर्म, मर्यादाओं से बँधे हुए कर्म–सभी कर्मयोग के अंतर्गत आते हैं जो हमें सिखाते हैं कि जब प्रकाश हमारे शरीर में आता है तो हमारे शरीर की प्रत्येक क्रिया को कर्मनिष्ठ होना चाहिए । परिश्रमी होना चाहिए । यह बताता है कि आदमी को जो प्रकाश का ध्यान करता है उसे हरामखोर और आलसी नहीं होना चाहिए । चोर और हरामखोर मेरी दृष्टि से दोनों बराबर हैं । महाराज जी हमारा बेटा बड़ा हो गया है और खूब कमाता-खाता है और हम तो अपनी मौज करते हैं । नहीं बेटे, कामचोर और चोर में तो कामचोर ही बड़ा होता है । मनुष्य के लिए यह सबसे बड़ी गाली है । कामचोर सबसे खराब आदमी है । नहीं गुरुजी, हमको तो पेंशन मिलती है और हम मौज करते हैं । नहीं बेटे, हम तुझे मौज नहीं करने देंगे । जब तक जिंदा है तब तक शरीर से तुझे कर्म करना पड़ेगा । अपने लिए रोटी खाने, पेट भरने को है, दूसरों के लिए तो नहीं है । उसके लिए कर । गुरुजी ! हमारे बेटे तो पढ़ गए और हम अब निश्चिंत हो गए । तेरे ही तो पढ़ गए, समाज के बेटे तो नहीं पढ़े । चल रात को नाइट स्कूल चलाया

कर और दूसरों के बच्चों को पढ़ाया कर । इसलिए मित्रो, क्या करना पड़ेगा कि जब वह प्रकाश, जो मैंने जप के साथ-साथ करने के लिए बताया है, अगर वह आपके भीतर नसों में स्फूर्ति के रूप में आए तो जब तक आप जिंदा हैं तब तक हम काम करेंगे, कर्मयोगी बनेंगे, मेहनत करेंगे, मशक्कत करेंगे, श्रेष्ठ काम करेंगे, कर्तव्यों का पालन करेंगे । जो हमारे लिए, हमारे समाज के लिए, देश के लिए, धर्म के लिए सबके लिए कर्तव्यों का बंधन बँधा हुआ है, इसका हम पालन करेंगे । अगर इस तरह की स्फूर्ति और नाड़ी अभ्यास बन जाए तो मैं समझूंगा कि आप कर्मयोगी हैं और आपने उस प्रकाश के ध्यान को जो मैंने बताया था, उसे सीख लिया और उसका मकसद समझ गए ।

दूसरा वाला प्रकाश का ध्यान करने के लिए जो मैंने बताया था और यह कहा था कि आप अपने मस्तिष्क में प्रकाश का ध्यान किया कीजिए । आपके मस्तिष्क में, मन में जब प्रकाश आए तब आपको ज्ञानयोगी होना चाहिए । कर्मयोगी शरीर से, ज्ञानयोगी मस्तिष्क से । आपके मस्तिष्क के भीतर जो भी विचार आएं निषेधात्मक नहीं, विधेयात्मक विचार आने चाहिए । अभी तो आप लोगों के मस्तिष्क में विचारों की कितनी भीड़, कितने मक्खी-मच्छर, कितनी वे चीजें जो आपके किसी काम की नहीं हैं, कितने विचार, कितनी कल्पनाएं आती रहती हैं । उनका यदि आप विश्लेषण करें तो देखेंगे कि मस्तिष्क में जाने कितने मक्खी-मच्छरों जैसे विचार भरे पड़े हैं । अभी उनमें से एक तो गुस्से का भरा था, एक काम-वासना का विचार करता रहा, एक सिनेमा का विचार करता रहा । एक यह विचार करता रहा कि मैंने लॉटरी के तीन टिकट खरीदे हैं उसमें से तीन-तीन लाख रुपए तो मिल ही जाएंगे । उन रुपयों से क्या-क्या करूँगा, अमुक काम करूँगा, अमुक बच्चे को, अमुक को दूँगा आदि बैसिर-पैर की सारी की सारी बातें, सारे के सारे ताने-बाने बुन रहा है । इससे आपकी सारी शक्तियाँ निरर्थक होती जा रही हैं । यह सब बेकार की कल्पनाएं हैं जिनके पीछे न कोई तारतम्य है, न वास्तविकता है और न इनसे आपको कुछ लेना-देना है । इस प्रकार की कल्पनाएं निरर्थक और अनर्थ मूलक ही होती हैं । सार्थक कल्पनाएं अगर आपके मस्तिष्क में आई होतीं, क्रमबद्ध रूप से आपने विचार किया होता तो आप में से अधिकांश व्यक्ति बाल्टेयर हो गए होते, रवींद्रनाथ टैगोर हो गए होते अगर आपने अपनी कल्पनाओं को क्रमबद्ध बनाया होता, दिशाबद्ध बनाया होता, उत्कृष्ट और

सक्षम बनाया होता । हमारी एक ही विशेषता है कि हम विद्वान हैं । इसलिए विद्वान हैं कि हमने अपने चिंतन की धाराओं को सीमाबद्ध-दिशाबद्ध करके रखा है । हमारा चिंतन अनावश्यक बातों में कभी भी नहीं जाता । जब कभी जाएगा क्रमबद्ध बातों में जाएगा, दिशाबद्ध बातों में जाएगा, आदर्श बातों में जाएगा और जो संभव है उनमें जाएगा । हमारा मस्तिष्क इतना ताना-बाना बुनता है कि वह वास्तविकता और व्यावहारिकता पर टिका रहता है । जो अवास्तविक है, अव्यवहारिक है और जो अनावश्यक है-ऐसे सारे के सारे विचारों को हम बाहर से ही मना कर देते हैं कि 'नो एडमीशन' यहाँ नहीं आ सकते, बाहर जाइए । आपको दाखिला हमारे मस्तिष्क में नहीं मिल सकता ।

मित्रो, ज्ञानयोग उस चीज का नाम है जिसमें कि अपने भीतर चिंतन में जो अवांछनीय तत्व घुलते चले जाते हैं, उनको हम हिम्मत के साथ रोकें और जिन चीजों की आवश्यकता है, जो चिंतन हमारे भीतर आना चाहिए उस चिंतन को बुला करके, निमंत्रित करके अपने भीतर स्थिर करें, तो हमारा मस्तिष्क वह हो सकता है जिसे हम ज्ञान का भंडार कह सकते हैं । विद्या की दृष्टि से, ज्ञान की दृष्टि से, सुलझाव की दृष्टि से एक से एक बहुमूल्य चीजें इसके भीतर से निकलती हुई चली आ सकती हैं । ज्ञान की गंगा हमारे मस्तिष्क में से वैसी ही बह सकती है जैसे कि शंकर जी के मस्तिष्क में से प्रवाहित होती थी । हमारे मस्तिष्क में संतुलन का चंद्रमा उसी तरीके से टँगा रह सकता है जैसे कि शंकर भगवान के मस्तिष्क पर टँगा हुआ था और हमारा तीसरा नेत्र, विवेक का नेत्र, दूरदर्शिता का नेत्र उसी तरीके से खुल सकता है जैसे कि शंकर भगवान के मस्तिष्क पर खुला हुआ था । मित्रो, यह ज्ञानयोग की साधना है । प्रकाश चमकना चाहिए हमारे ज्ञान को और विचारों को संतुलित और सुव्यवस्थित करने के लिए । अगर आपको ऐसा ज्ञान आए तो मैं समझूंगा कि हमने अपने अनुष्ठान में और साधना स्वर्ण जयंती वर्ष में सम्मिलित करके जिस ध्यान की बाबत बताया है उसको आपने जान लिया और उसका व्यावहारिक स्वरूप समझ गए । अगर आप उसका व्यावहारिक रूप नहीं जान पाए और कल्पना लोक में ही उड़ते रहे तो फिर ख्वाब ही देखते रहेंगे, सपने ही देखते रहेंगे । अध्यात्म सपना नहीं व्यावहारिकता है । यह हमारे इसी जीवन से ताल्लुक रखता है और आज से ताल्लुक रखता है । ख्वाबों का अध्यात्म नहीं है, सपनों का अध्यात्म नहीं है । ख्वाबों का, सपनों का भगवान नहीं है । भगवान है तो वह जो हमारे आज के, अभी के जीवन में

आना चाहिए और हमारे व्यक्तित्व के रूप में प्रकट होना चाहिए । हमारे भीतर से प्रकट होना चाहिए ।

मित्रो, तीसरा वाला प्रकाश का जो ध्यान हमने बताया है, वह अंतःकरण का प्रकाश है, विश्वासों का प्रकाश है, आस्थाओं का, निष्ठाओं का, करुणा का प्रकाश है । जो चारों ओर प्रेम के रूप में प्रकाशित होता है । हम प्रेम के रूप में भक्तियोग करते हैं । भक्तियोग से क्या मतलब होता है ? भक्तियोग का मतलब है-मोहब्बत । जिस तरह से हम व्यायामशाला में अभ्यास करते हैं और उससे अपने शरीर और कलाइयों को मजबूत बनाते हैं और फिर उसका हर जगह इस्तेमाल करते हैं । सामान उठाने में, कपड़े धाने में, बिस्तर उठाने में करते हैं, हर जगह काम में लाते हैं । किसको ? जो व्यायामशला में ताकत इकट्ठा की थी उसको । इसी तरीके से हम भगवान के साथ मोहब्बत शुरू करते हैं, प्यार शुरू करते हैं, भक्ति करते हैं । भगवान की भक्ति के माध्यम से जो हम ताकत इकट्ठा करते हैं, उस मोहब्बत को हर जगह फैल जाना चाहिए । हम अपने शरीर से मोहब्बत करें ताकि इसको हम अस्त-व्यस्त न होने दें, नष्ट-भ्रष्ट न होने दें । हम अपने शरीर को प्यार करें ताकि वह निरोग होकर के दीर्घजीवी बन सके । यह हमारा शरीर के प्रति प्यार है । यह भक्ति है शरीर के प्रति भगवान की । मन के प्रति हमारी भक्ति यह है कि हम पागलों की तरीके से अपने मन-मस्तिष्क को खराब न कर दें । यह देव मंदिर है और इतना सुंदर मंदिर है कि हमारे विचारों की क्षमता सूर्य की क्षमता के बराबर है । इसको हम असंतुलित न होने दें । हम अपने आप से प्यार करें । अपनी जीवात्मा से प्यार करें ।

जीवात्मा ! जीवात्मा की तो हमने इतनी उपेक्षा की है कि यह बिचारी कराहती रहती है और यह पूछती रहती है कि दोस्त हमारा क्या होना है ? बेटे, हमारा क्या होना है ? यह पूछते-पूछते वह बूढ़ी हो गई । बुढ़िया पूछती रहती है कि बेटा, हमारा भी कुछ होना है क्या ? और आप कहते रहते हैं कि अरे बुढ़िया ! तू तो मरने वाली है । तेरा तो यही बद्रीनाथ है, तू कहीं मत जा, यहीं पड़ी रह । यह बुढ़िया जो है हमारी जीवात्मा है और यह ऐसे ही कसकती-कराहती रहती है । वह अंधी हो गई है, आँखों से दिखाई नहीं पड़ता जीवात्मा को । अपनी जीवात्मा से यदि हमें प्यार रहा होता तो बेटे वह जवान हो गई होती । जीवात्मा से मोहब्बत अगर हमें होती तो वह इतनी प्रचंड और प्रखर हो गई होती कि हम साक्षात भगवान के रूप में काम आते । पर हमारी

जीवात्मा मर गई क्योंकि हम उससे प्यार नहीं करते । हम किसी से प्यार करते हैं क्या ? नहीं, हम किसी से प्यार नहीं करते । बीवी से प्यार करते हैं ? नहीं, बीवी के लिए तो हम जोंक हैं । खून की प्यासी जोंक जिससे चिपकती है उसका खून पी जाती है । औरत के लिए तो हम जोंक हैं । उसकी जवानी हमने चूस ली । उसको छूँछ बना दिया । पचासों बीमारियों की वह मरीज बन गई है । उसके पास जो कुछ भी था, अपने माँ-बाप के घर से गुलाब का सा शरीर लेकर आई थी हमने उसको वासना की आग में जला दिया । वह जली हुई औरत कराहती-कसकती-सिसकती हुई पड़ी रहती है । जल्लाद छुरे लेकर के जिस तरह से मारता है, हमने भी अपनी औरत में इतने छुरे मारे, इतने छुरे मारे कि सारा का सारा खून निकाल करके फेंक दिया । बच्चे पर बच्चा पैदा करते रहे और वह चिल्लाती रही कि हमारी हड्डियाँ इस लायक नहीं हैं और हमारे पास मांस उतना नहीं है, कृपा कीजिए अब हम बच्चा पैदा नहीं कर सकते और आप हैं कि बच्चे पैदा करते चले गए । वह हजार बीमारियाँ लेकर के कभी हकीम जी के यहाँ चक्कर काटती है, कभी आचार्य जी के यहाँ चक्कर काटती है और कहती है कि गुरुजी यह बीमारी है, वह बीमारी है । अगर आपने अपनी स्त्री को प्यार किया होता तो उसको पढ़ाया होता, शिक्षा दी होती, दीक्षा दी होती । उसके स्वास्थ्य की रखवाली की होती और उसको सुयोग्य बनाया होता । उसको विकसित किया होता और श्रेष्ठ बनाया होता । पर अब तो वह किसी काम की नहीं बची ।

प्यार है आपके पास । भक्ति है आपके पास । नहीं है । अगर भक्ति और प्यार रहा होता तो आपने अपने माँ-बाप की सेवा की होती । बहन-भाइयों की सेवा की होती । अपने बच्चों की सेवा की होती । नहीं, गुरुजी हमने तो की है । बेटे, आप सेवा करना नहीं जानते । प्यार करना जानते ही नहीं हैं । आप तो एक ही बात जानते हैं-पैसा । बेटे को पैसा दे जा । अरे क्यों पड़ा हुआ है इन बच्चों के पीछे । इनका भविष्य खराब करने के लिए पैसा जमा करता चला जा रहा है, क्या इनको शराबी बनाएगा, अय्याश बनाएगा ? नहीं, महाराज जी, मैं तो पैसा छोड़ करके जाऊँगा, बेटे को देकर के जाऊँगा और वह सारी की सारी जिंदगी मौज करेगा । बेटे, वह मौज नहीं अपनी जिंदगी खराब करेगा और सबका सत्यानाश करेगा । प्यार, मित्र किसे कहते हैं, आप जानते नहीं हैं । प्यार एक ही चीज का नाम है जिसमें आदमी को दिया जाता है । प्यार का अर्थ देना होता है । जिसको भी हम प्यार करते

हैं, उसको हम कुछ दिए बिना नहीं रह सकते । हम बच्चे को प्यार करेंगे तो उसको कुछ देंगे । जिस किसी को भी प्यार करेंगे उसको हम देंगे । भक्तियोग का अर्थ है दया, भक्तियोग का अर्थ है करुणा, भक्तियोग का अर्थ है प्रेम, भक्तियोग का अर्थ है सेवा । नहीं महाराज जी, सेवा का अर्थ होता है मूर्ति पर टन-टन घंटी बजा दी, बस हो गई नवधा भक्ति । तो यही है तेरी नवधा भक्ति । कौन सी-'पाद सेवनम् पंखाझलनम्'-पाद सेवन और पंखा झलने को ही नवधा कहता है । जो बातें भक्ति की हैं उनसे तो हजारों मील दूर भागते रहते हैं और स्वांग करते रहते हैं, खेल-खिलौने बनाते रहते हैं । दंड-कमंडल पेलते हैं और भगवान को भी धोखा देते हैं और अपने को भी धोखा देते हैं और कहते हैं कि नवधा भक्ति करते हैं । बेटे, इसे नवधा भक्ति नहीं कहते हैं ।

मित्रो, क्या करना पड़ेगा, भक्तियोग के उस वास्तविक स्वरूप को समझना पड़ेगा जिसके लिए हमने आपको बताया था कि आप प्रकाश का ध्यान किया कीजिए । प्रकाश का ध्यान करेंगे तब फिर आपको वहाँ चलने का मौका मिल जाएगा जहां कि 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' की बात बताई है । एकाग्रता ध्यान का एक उद्देश्य है । बिखराव को रोकना भी कह सकते हैं, क्योंकि हमने अपने आपको सब जगह बिखेर दिया है । यदि हमने अपने आपको एक लक्ष्य पर केंद्रीभूत किया होता तो बंदूक की नली में से बारूद जिस तरीके से एक दिशा में चली जाती है और लक्ष्य भेद करने में सफल होती है, हम भी अपने जीवन लक्ष्य में सफल हो गए होते । अर्जुन ने अपने बिखराव को एक केंद्र पर इकट्ठा कर लिया था । द्रौपदी-स्वयंवर में जब वह गया था तो द्रौणाचार्य ने लोगों से पूछा कि क्या दिखाई पड़ता है ? किसी ने कहा-मछली की टांग, मछली का पेट । तो आचार्य द्रोण ने कहा-आप मछली का निशाना नहीं बेध सकते, भागिए यहाँ से । फिर अर्जुन से पूछा कि आपको क्या दिखाई पड़ता है ? अर्जुन ने कहा-हमें एक ही चीज दिखाई पड़ती है और वह है मछली की आँख । तो मारिए निशाना और सफलता का वरण कीजिए । मित्रो, असंख्य दिशाओं में फैला हुआ हमारा मस्तिष्क कभी सफलता नहीं पा सकता । इसे एक दिशा में इकट्ठा कीजिए ।

यह ध्यान जो हम आपको बताते हैं-मेडिटेशन कराते हैं और कहते हैं कि अपने मन का बिखराव-फैलाव रोकिए । फैलाव के कारण न आपका विद्या पढ़ने में कभी मन लगता है, न स्वास्थ्य संवर्द्धन में कभी मन लगता है ।

हर समय बिखराव ही बिखराव है । यह जो मन की अस्त-व्यस्त स्थिति है, इसको आप इकट्ठा कीजिए भगवान के माध्यम से, जप के माध्यम से, ध्यान के माध्यम से और प्रत्येक काम को जब करना हो तो इतना तीखा अभ्यास डालिए कि जब जो काम करना पड़े उसी में तन्मय हो जाएं । सांसारिक कार्य में भी और भगवान के कार्य में भी । यह एकाग्रता आध्यात्मिकता का गुण है । आप जब भी जो भी काम करें उसमें इतने तन्मय हो जाएं कि 'वर्क इन वर्क' 'प्ले इन प्ले' अर्थात जब आप खेलें तो इस कदर खेलें कि खेल के अतिरिक्त और कोई चीज ध्यान में ही न रहे और जब आप काम करें तो इस मुस्तैदी से काम करें कि काम के अलावा आपको कोई दूसरी चीज दिखाई ही न पड़े । इस तरह की तन्मयता के साथ किए गए काम सफलता के उच्च शिखर तक पहुँचा देते हैं । मित्रो, तन्मयता हमारे जीवन का वह वास्तविक स्वरूप होना चाहिए जो वैज्ञानिकों के पास होता है । वैज्ञानिकों में और साधारण बी०एस०सी० में कोई विशेष फर्क नहीं पड़ता, दोनों एक जैसे होते हैं । वैज्ञानिक उसे कहते हैं जो अपने रिसर्च कार्य में जब लगता है तो इतना गहरा डूबता हुआ चला जाता है जैसे मोती ढूंढ़ने के लिए पनडुब्बी सागर में गहराई तक चली जाती है और उसको बीन करके ले आती है । यह एकाग्रता का चमत्कार है । आपको एकाग्रता केवल भजन में ही नहीं लानी चाहिए, वरन हर काम में इतना अभ्यास करना है । एकाग्रता का अभ्यास न होने के कारण ही सदैव यह शिकायत बनी रहती है कि गुरुजी हमारा मन भजन-पूजन में नहीं लगता । तो क्या किसी काम में आपकी एकाग्रता होती है ? हर काम में बिखराव है । आप अपने मन को निग्रहीत करना सीखिए । जब जो काम करना हो तब उसमें इतनी मुस्तैदी से तन्मय होना सीखिए ताकि आप जब भजन करना शुरू करें तो भजन में भी उतनी तन्मयता हो जाए जितनी एक योगी की होती है यदि आपने प्रकाश का ध्यान करना सही तरीके से सीख लिया तो मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि आप वह सब कुछ प्राप्त कर सकेंगे जो एक अध्यात्मवादी को प्राप्त करना चाहिए ।

ॐ शांतिः । *(६ अप्रैल १९७६)*

युग संधि की बेला व हमारे दायित्व

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि
धियो यो नः प्रचोदयात् ।

मित्रो, हममें से प्रत्येक परिजन को कुछ मान्यताएं अपने मन में गहराई तक उतार लेनी चाहिए । एक यह कि जिस समय में हम और आप जीवित रह रहे हैं, वह एक विशेष समय है । यह युग परिवर्तन की बेला है, इसमें युग बदल रहा है । जिस तरह प्रातःकाल का समय विशेष महत्वपूर्ण समय होता है । इसमें हर आदमी सामान्य काम न करके विशेष काम करता है अध्ययन से लेकर भजन तक के उच्चस्तरीय कार्य इसमें किए जाते हैं, क्योंकि प्रातः कालीन समय अत्यधिक महत्वपूर्ण माना जाता है । यह समय भी इसी तरह का है । यह संध्याकाल है, इसमें युग बदल रहा है । इस विशेष संध्याकाल को हमें विशेष कर्तव्यों के लिए सुरक्षित रखना चाहिए । हममें से प्रत्येक साधक को यह मानकर चलना चाहिए कि हमारा व्यक्तित्व विशेष है । हमको भगवान ने किसी विशेष काम के लिए भेजा है । कीड़े-मकोड़े और दूसरे सामान्य तरह के प्राणी पेट भरने के लिए और औलाद पैदा करने के लिए पैदा होते हैं । मनुष्यों में से भी बहुत नर-पामर और नर-कीटक हैं जिनके जीवन का कोई लेखा-जोखा नहीं । पेट भरने और औलाद पैदा करने के अलावा दूसरा कोई काम वे न कर सके । लेकिन कुछ विशेष व्यक्तियों के ऊपर भगवान विश्वास करते हैं और यह मानकर भेजते हैं कि यह हमारे भी कुछ काम आ सकते हैं, केवल अपने ही गोरखधंधे में नहीं फँसे रहेंगे । युग निर्माण परिवार के हर व्यक्ति को अपने बारे में ऐसी ही मान्यता बनानी चाहिए कि हमको भगवान ने विशेष काम के लिए भेजा है । यह कोई विशेष समय है और हममें से हर आदमी को यह अनुभव करना चाहिए कि हम कोई विशेष उत्तरदायित्व लेकर के आए हैं । समय को बदलने का उत्तरदायित्व, युग की आवश्यकताओं को पूरा करने का उत्तरदायित्व हमारे कंधों पर है । अगर इन बातों पर आप विश्वास कर सकें तो आपकी प्रगति का दौर खुल सकता है और आप महामानवों के रास्ते पर, जो कि अपने इस युग निर्माण परिवार का उद्देश्य है, सफलतापूर्वक चल सकते हैं ।

यह विशेष समय वैसा नहीं है जैसा कि शांति के समय का होता है ।

यह आपत्तिकाल जैसा समय है और आपत्तिकाल में आपातकालीन उत्तरदायित्व होते हैं । हमारे ऊपर सामान्य जिम्मेदारियाँ नहीं हैं, वरन युग की भी जिम्मेदारियाँ हैं, यह मानकर हमको चलना चाहिए और साथ ही यह भी मानकर चलना चाहिए कि रीछ-वानर जिस तरीके से विशेष भूमिका निभाने के लिए आए थे । जैसे पांडव विशेष भूमिका निभाने के लिए आए थे और ग्वाल-बाल श्रीकृष्ण भगवान के साथ विशेष भूमिका निभाने के लिए आए थे । गाँधी जी के सत्याग्रही उनके साथ विशेष भूमिका निभाने के लिए आए थे । बुद्ध के साथ चीवरधारी भिक्षु कुछ विशेष उत्तरदायित्व निभाने के लिए आए थे । आप लोग इस तरह का अनुभव और विश्वास कर सकें कि आप लोग हमारे साथ उसी तरीके से जुड़े हैं और विशेष उत्तरदायित्व महाकाल का सौंपा हुआ पूरा करने के लिए हम लोग आए हैं । अगर यह बात मान सकें तो फिर आपके सामने नए प्रश्न उत्पन्न होंगे और नई समस्याएं उत्पन्न होंगी और नए आधार, नए कारण उत्पन्न होंगे ।

इसके लिए आपको जो पहला कदम बढ़ाना पड़ेगा वह यह कि आप को अपनी परिस्थितियों में हेर-फेर करना पड़ेगा । जिस तरीके से सामान्य मनुष्य जीते हैं, उस तरीके से आप जीने से इन्कार कर दें और यह कहें कि हम तो विशेष व्यक्तियों और महामानवों की तरीके से जिएंगे । जब मात्र पेट ही भरना है तो गंदे तरीके से क्यों, श्रेष्ठ तरीके से क्यों न भरें । पेट भरने के अलावा जो कार्य कर सकते हैं, उसे क्यों न करें । जब यह प्रश्न आपके सामने ज्वलंत रूप से आ खड़ा होगा तब यह आवश्यकता आपको अनुभव होगी कि हम अपनी मन:स्थिति में हेर-फेर कर डालें, अपनी मन:स्थिति को बदल डालें और हम लौकिक आकर्षणों की अपेक्षा यह देखें कि इनमें भटकते रहने की अपेक्षा, मृगतृष्णा में भटकते रहने की अपेक्षा भगवान का पल्ला पकड़ लेना ज्यादा लाभदायक है । भगवान का सहयोगी बन जाना ज्यादा लाभदायक है । संसार का इतिहास बताता है कि भगवान का पल्ला पकड़ने वाले, भगवान को अपना सहयोगी बनाने वाले कभी घाटे में नहीं रहे । अगर इस बात पर विश्वास कर सकें तो जानना चाहिए कि हमने एक बहुत बड़ा प्रकाश पा लिया । ऊँचा उठने के लिए मन:स्थिति बदलना और सांसारिकता का पल्ला पकड़ने की अपेक्षा भगवान की शरण में जाना आवश्यक है । यही हमारा दूसरा कदम होना चाहिए ।

तीसरा कदम आत्मिक उत्थान के लिए हमारा यह होना चाहिए कि

हमारी महत्वाकांक्षाएं, कामनाएं, इच्छाएं बड़प्पन के केंद्र से हटें और महानता के साथ जुड़ जाएं । हमारी महत्वाकांक्षाएं यह नहीं होनी चाहिए कि हम जिंदगी भर वासना को पूरा करते रहेंगे और तृष्णा के लिए अपने समय और बुद्धि को खर्च करते रहेंगे और अपने बड़प्पन को, अपनी अहंता को, ठाट-बाट को लोगों के ऊपर रौब गालिब करने के लिए हम तरह-तरह के ताने-बाने बुनते रहेंगे । अगर हमारा मन इस बात को मान जाए और अंतःकरण स्वीकार कर ले कि यह बचकानी बातें हैं, छिछोरी बातें हैं, छोटी बातें हैं । अगर हम क्षुद्रता का त्याग कर सकें तो फिर हमारे सामने एक ही बात खड़ी होगी कि अब हमको महानता ग्रहण करनी है । महापुरुषों ने जिस तरीके से आचरण किए थे, उनके चिंतन करने को जो तरीका था, जिस तरीके से उनने आचरण किए थे, वही तरीका हमारा होना चाहिए और हमारी गतिविधियाँ उसी तरीके की होनी चाहिए जैसी कि श्रेष्ठ मनुष्यों की रही हैं और रहेंगी । यह विश्वास करने के बाद हमको अपनी क्रिया-पद्धति में, दृष्टिकोण में, मान्यताओं में, इच्छा-आकांक्षाओं में परिवर्तन करने, बदल देने के बाद व्यावहारिक जीवन में भी थोड़े से कदम उठाने चाहिए ।

साधकों के लिए यही मार्ग है कि मन और इंद्रियों की गुलामी को हम छोड़ दें और इनके स्वामी बनें । अब तक हम असहाय के रूप में, दीन-दुर्बल के रूप में इंद्रियों के कोड़े सहते रहे हैं और इनके दबाव और इनकी वजह से चाहे जहाँ घूमते हैं । मन हमको चाहे जहाँ घसीट ले जाता है । कभी गड्ढे में ढकेल देता है, कभी कहीं कर देता है । इंद्रियाँ हमसे जाने क्या-क्या करा लेती हैं । मन न जाने क्या-क्या करने के लिए कहता रहता है । हम असहाय एवं गुलामों के तरीके से इन्हीं का कहना मानते हैं । अब हमको इन परिस्थितियों को बदल देना चाहिए । हमारी आपसे प्रार्थना है कि आप इनके स्वामी बनें । स्वामी अपनी ललक-लिप्सा को छोड़ दे । इंद्रियों को नौकरानी के तरीके से इस्तेमाल करें बल्कि मन को नौकर के तरीके से इस्तेमाल करें । मन को हुकुम दें कि आपको हमारा कहना मानना ही पड़ेगा । इंद्रियों से कहें कि आप हमारी मर्जी के बिना जो भी चाहे नहीं कर सकतीं । हमारी आज्ञा के बिना कैसे करेंगी ? इस तरीके से इंद्रियों के ऊपर हुकूमत अगर हम कर पाएं तो हम गुलामी के बंधन से मुक्त हो जाएं । जिस के लिए हम मुक्ति चाहते हैं, भव बंधनों से मुक्ति चाहते हैं असल में यह कोई भव बंधनों से मुक्ति नहीं है । हमारे मन और इंद्रियों की गुलामी का नाम ही भव बंधन है । इनसे यदि हम

अपने को छुड़ा लेते हैं तो हम स्वभावत: जीवन मुक्त हो जाते हैं और मोक्ष मिल जाता है । अगर इसके लिए हम साहस इकट्ठा कर पाएं तब ।

संसार में रहकर हम अपने कर्तव्य पूरे करें, हँसी-खुशी से रहें, अच्छे तरीके से रहें, लेकिन इसमें इस कदर व्यस्त न हो जाएं, इस कदर न फँस जाएं कि हमको अपने जीवन के उद्देश्यों का ध्यान ही नहीं रहे । अगर हम इसमें फँसेंगे तो मरेंगे । मक्खी चाशनी के ऊपर दूर बैठकर रस लेती रहती है तब तो ठीक है । इस तरह वह जायका भी लेती रहती है और अपने को सुरक्षित भी रखती है, पर कोई ऐसी मूर्ख मक्खी जैसे कि आप हैं, चाशनी के ऊपर बेहिसाब टूट पड़ती है तो शहद खाना तो दूर, चाशनी खाना तो दूर, वह अपने पंखों में लपेट लेती है और बेमौत मरती है । आपने उन बंदरों का किस्सा सुना होगा जो अफ्रीका में पाए जाते हैं और जिनके बारे में यह कहा जाता है कि शिकारी लोग उसको मुट्ठी भर चने का लालच दे करके उसकी जान ले लेते हैं । उसे गिबबन कहते हैं । उसे फँसाने के लिए लोहे के घड़े में चने भर दिए जाते हैं और गिब्बन उन चनों को खाने के लिए आता है, मुट्ठी बाँध लेता है, लेकिन जब मुट्ठी निकालना चाहता है तो वह निकलती नहीं है । जोर लगाता है तो भी नहीं निकलती । इतनी हिम्मत नहीं होती कि मुट्ठी को खाली कर दे और हाथ को खींच ले, लेकिन वह मुट्ठी को छोड़ना नहीं चाहता । इसका परिणाम यह होता है कि हाथ बाहर निकलता नहीं और शिकारी आता है तथा उसको मार कर खत्म कर देता है । उसकी चमड़ी को उधेड़ लेता है । हमारी और आपकी स्थिति ऐसी ही है जैसे अफ्रीका के गिब्बन बंदरों की । हम लिप्साओं के लिए, लालसाओं के लिए, वासना के लिए, तृष्णा के लिए, अहंकार की पूर्ति के लिए मुट्ठी बंद करके बंदरों की तरीके से फँसे रहते हैं और अपनी जीवन संपदा का विनाश कर देते हैं । इससे हमको बाज आना चाहिए और अपने आपको इनसे बचाने की कोशिश करनी चाहिए ।

हमको अपनी क्षुद्रता का त्याग करना ही है । जब हम क्षुद्रता का त्याग करते हैं तो कुछ खोते नहीं वरन कमाते ही कमाते हैं । कार्ल्समार्क्स मजदूरों से यही कहते थे-"मजदूरो एक हो जाओ, तुम्हें गरीबी के अलावा कुछ खोना नहीं है ।" मैं कहता हूँ कि अध्यात्म मार्ग पर चलने वाले विद्यार्थियो ! तुम्हें अपनी क्षुद्रता के अलावा और कुछ नहीं खोना है, पाना ही पाना है । आध्यात्मिकता के मार्ग पर पाने के अलावा और कुछ नहीं है । इसमें एक ही

चीज हाथ से दी जाती है जिसका नाम है–क्षुद्रता और संकीर्णता । क्षुद्रता और संकीर्णता को त्यागने में अगर आपको बहुत कष्ट न होता हो तो मेरी प्रार्थना है कि आप इसको छोड़ दें और महानता के रास्ते पर चलें । जीवन में भगवान को अपना हिस्सेदार बना लें । भगवान के साथ अपने को जोड़ लें । अपने को जोड़ लेंगे तो यह रिश्तेदारी, यह मुलाकात आपके बहुत काम आएगी । गंगा ने अपने आपको हिमालय के साथ में जोड़े रखा है । गंगा और हिमालय का तालमेल तथा रिश्ता-नाता ठीक बना रहा और गंगा हमेशा पानी खर्च करती रही, लेकिन उसको पानी की कमी भी कभी नहीं पड़ने पाई । हिमालय के साथ, भगवान के साथ हम अपना रिश्ता जोड़ें तो हमारे लिए जीवन में कभी अभावों का, संकटों का अनुभव न करना पड़ेगा जैसे कि सामान्य लोग पग-पग पर किया करते हैं । गंगा का पानी सूखा नहीं, लेकिन नाले का सूख गया क्योंकि उसने महान सत्ता के साथ संबंध बनाया नहीं । बाढ़ का पानी आया तो सूखा नाला उछलने लगा, जैसे ही पानी सूखा, नाला भी सूख गया । नौ महीने सूखा पड़ा रहा । बरसाती नाला तीन महीने बाद ही सूख गया, लेकिन गंगा युगों से बहती चली आ रही है, कभी सूखने का नाम नहीं लिया । हम भी अगर हिमालय के साथ जुड़ने, भगवान के साथ जुड़ने की हिम्मत कर पाएं, तब हमें भी सूखने का कभी मौका नहीं आएगा ।

अपने आपको हम अगर भगवान को समर्पित कर सकें तो ही भगवान को पाएंगे । कठपुतली ने अपने आपको बाजीगर के हाथों सौंप दिया और बाजीगर की सारी कला का लाभ उठाया । हम भगवान की सारी कला का लाभ उठा सकते हैं, शर्त केवल यही है कि हम अपने आपको,अपनी महत्वाकांक्षाओं को और अपनी दुष्प्रवृत्तियों को भगवान के सुपुर्द कर दें । पतंग ने कुछ खोया नहीं, बच्चे के हाथ में अपने को सौंप दिया और बच्चे ने उस पतंग को डोरी के साहरे उड़ाया और पतंग आसमान छूने लगी । अगर पतंग ने इतनी हिम्मत और बहादुरी न दिखाई होती और बच्चे के हाथ में अपना मार्गदर्शन न सौंपा होता तो क्या पतंग उड़ सकती थी ? नहीं, जमीन पर ही पड़ी रहती । बंसरी ने अपने आपको किसी गायक को सौंपा । गायक के होठों से लगी और गायक होठों ने वह हवा फूँक मारी जिससे कि चारों ओर मधुर संगीत निनादित होने लगा । हम भगवान के साथ में अपने आपको इसी तरीके से जोड़ें जैसे कि कठपुतली, पतंग और बांसुरी अपने आपको जोड़ती हैं, न कि इस तरीके से कि पग-पग पर हुकूमत चलाएं भगवान के साथ और

अपनी मनोकामना पेश करें । यह भक्ति की निशानी नहीं है । भगवान की आज्ञा पर चलना हमारा काम है । भगवान पर हुकूमत करना और भगवान के सामने तरह-तरह की फरमाइशें पेश करना यह तो वेश्यावृत्ति का काम है । हममें से किसी की भी उपासना लौकिक कामनाओं के लिए नहीं, बल्कि भगवान की साझेदारी के लिए, भगवान को स्मरण रखने के लिए, भगवान के आज्ञानुवर्ती होने के लिए और भगवान को अपना समर्पण करने के उद्देश्य से उपासना होनी चाहिए । अगर आप ऐसी उपासना करेंगे तो मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि आपकी उपासना सफल होगी । आपको आंतरिक संतोष मिलेगा, बल्कि आपके व्यक्तित्व का विकास होगा और व्यक्ति के विकास का निश्चित परिणाम यह होता है कि आदमी भौतिक और आत्मिक दोनों तरह की सफलताएं भरपूर मात्रा में प्राप्त करता है ।

मेरा आपसे यह अनुरोध है कि आप हँसती-हँसाती जिंदगी जिएं, खिलती-खिलाती जिंदगी जिएं, हल्की-फुल्की जिंदगी जिएं । अगर हल्की-फुल्की जिंदगी जिएंगे तो आप जीवन के सारे का सारा आनंद पाएंगे और अगर आप वासना, तृष्णा, लोभ, लिप्सा में घुसेंगे तो नुकसान उठाएंगे । आप अपने कर्तव्यों को पूरा करने के लिए जिंदगी जिएं और हँसी-खुशी से जिएं । किसी बात को बहुत महत्व न दें । अपने किसी कर्तव्य की उपेक्षा भी न करें, लेकिन उसमें इतने ज्यादा मशगूल भी न हों कि किसी लौकिक काम को ज्यादा महत्व देने लगें और अपने मन की शांति खो बैठें ।

हमें माली की जिंदगी जीनी चाहिए मालिक की नहीं । मालिक की जिंदगी में बहुत भारीपन है और बहुत कष्ट है । माली की जिंदगी के तरीके से, रखवाली करने वाले चौकीदार की तरीके से हम जिएं तो पाएंगे कि जो कुछ भी कर लिया वह हमारा कर्तव्य ही काफी था । मालिक को चिंता रहती है कि सफलता मिली कि नहीं । उसको इतनी चिंता रहती है कि अपने कर्तव्य और फर्ज पूरे किए कि नहीं । हम दुनिया में रहें, काम दुनिया में करें, पर अपना मन भगवान में रखें अर्थात उच्च उद्देश्यों और उच्च आदर्शों के साथ जोड़कर रखें । कमल का पत्ता पानी पर तैरता है, लेकिन डूबता नहीं है । हम दुनिया में डूबें नहीं । हम खिलाड़ी के तरीके से जिएं । हार-जीत के बारे में बहुत ज्यादा चिंता न करें । हम अभिनेता के तरीके से जिएं और यह देखें कि हमने अपना पार्ट-प्ले ठीक तरीके से किया कि नहीं किया । हमारे लिए इतना ही संतोष बहुत है । ठीक है, परिणाम नहीं मिला तो हम क्या कर सकते हैं ।

बहुत सी बातें परिस्थितियों पर निर्भर रहती हैं । परिस्थितियाँ हमारे अनुकूल नहीं रहीं तो हम क्या कर सकते हैं । हमने अपना कर्तव्य पूरा किया, हमारे लिए इतना बहुत है । इस दृष्टि से अगर आप जिएंगे तो आपकी खुशी को कोई छीन नहीं सकता और आपको इस बात की परवाह नहीं होगी कि जब कभी सफलता मिले तब आप प्रसन्न हों । चौबीसों घंटे आप खुशी से जीवन जी सकते हैं । जीवन की सार्थकता, सफलता का यही तरीका है ।

आप मुनीम की तरीके से जिएं, मालिक की तरीके से नहीं । आप बंदीगृह के कैदी से अपने आपकी तुलना करें जिसका घर कहीं और है । जो जेल में रहता तो है पर याद अपने घर वालों की बनाए रखता है । सैनिक सेना में काम तो करता है, पर अपने घर वालों का भी ध्यान रखता है । हम अपने घर वालों का भी ध्यान रखें । जिस लोक के हम निवासी हैं, जिस लोक में हमको जाना है, उसका भी ध्यान रखें । इस लोक में हम आए हुए हैं, ठीक है यहाँ के भी कई कर्तव्य और जिम्मेदारियाँ हैं । चिंता में डूब नहीं जाएं, तो हमारे लिए जीवन की सार्थकता बन सकती है ।

साधकों में से कई व्यक्ति हम से यह पूछते रहते हैं कि हम क्या करें ? मैं उनमें से हर एक से कहता हूँ कि यह मत पूछिए, बल्कि यह पूछिए कि क्या बनें । अगर आप कुछ बन जाते हैं तो करने से भी ज्यादा कीमती है वह । फिर जो कुछ भी आप कर रहे होंगे वह सब सही हो रहा होगा । आप साँचा बनने की कोशिश करें । अगर आप साँचा बनेंगे तो जो भी गीली मिट्टी आपके संपर्क में आएगी, आपके ही तरीके के, आपके ही ढंग के, शक्ल के खिलौने बनते हुए चले जाएंगे । आप सूरज बनें तो आप चमकेंगे और चलेंगे । उसका परिणाम क्या होगा ? जिन लोगों के लिए आप करना चाहते हैं वे आपके साथ-साथ चमकेंगे और चलेंगे । सूरज के साथ में नौ ग्रह और बत्तीस उपग्रह हैं । वे सब के सब चमकते हैं और साथ-साथ चलते हैं । हम चलें, हम प्रकाशवान हों, फिर देखेंगे कि जिस जनता के लिए आप चाहते थे कि वह हमारी अनुगामी बने और हमारी नकल करे तो वह ऐसा ही करेगी । आप देखेंगे कि आप चलते हैं तो दूसरे लोग भी चलते हैं । आप स्वयं नहीं चलेंगे, और यह अपेक्षा करेंगे कि दूसरे आदमी हमारा कहना मानें तो यह मुश्किल बात है । आप गलें और वृक्ष बनें और वृक्ष बन करके अपने जैसे असंख्य बीज आप अपने भीतर से पैदा कर डालें । हमको बीजों की जरूरत है । आप बीज बनिए, गलिए, वृक्ष बनिए और अपने भीतर से ही फल पैदा करिए और

प्रत्येक फल में से ढेरों के ढेरों बीज पैदा कीजिए । आप अपने भीतर से ही बीज क्यों नहीं बनाएं ?

मित्रो, जिन लोगों ने अपने आपको बनाया है उनको यह पूछने की जरूरत नहीं पड़ी कि क्या करेंगे । उनकी प्रत्येक क्रिया इस लायक बन गई कि उनकी क्रिया ही सब कुछ करा सकने में समर्थ हो गई । उनका व्यक्तित्व ही इतना आकर्षक रहा कि प्रत्येक सफलता को और प्रत्येक महानता को संपन्न करने के लिए काफी था । सिक्खों के गुरु रामदास के शिष्य अर्जुन देव जी बर्तन-थाली साफ करने का काम करते थे । उन्होंने अपने आपको अनुशासन में ढालने का प्रयत्न किया था, पर जब उनके गुरु यह तलाश करने लगे कि कौन से शिष्य को अपना उत्तराधिकारी बनाया जाए । सारे विद्वानों की अपेक्षा, नेता और दूसरे गुण वालों की अपेक्षा उन्होंने अर्जुन देव को चुना और यह कहा कि अर्जुन देव ने अपने आपको बनाया है । बाकी आदमी इस कोशिश में लगे रहे कि हम दूसरों से क्या कराएं और स्वयं क्या करें । जबकि होना यह चाहिए था कि जिस तरीके से अर्जुन देव ने न कुछ किया था और न कराया था, केवल अपने आपको बना लिया था । इसलिए उन्हें गुरु ने माना कि यह सबसे अच्छा आदमी है । सप्त ऋषियों ने अपने आपको बनाया था । उनके अंदर तप की संपदा थी, फिर जो कोई भी जहाँ कहीं भी रहते चले गए, और जो भी काम उन्होंने किए वही महान श्रेणी का उच्चस्तरीय काम कहलाया । अगर उनका व्यक्तित्व घटिया होता तो फिर बात कैसे बनती ।

गाँधी जी ने अपने आपको बनाया था तभी हजारों आदमी उनके पीछे चले । बुद्ध ने अपने आपको बनाया, हजारों आदमी उनके पीछे चले । हम भी अपने में चुंबकत्व पैदा करें । खदानों के अंदर लोहे और अन्य धातुओं के कण जमा हो जाते हैं, उसका कारण यही है कि जहाँ कहीं भी खदान होती है, वहाँ चुंबकत्व रहता है । चुंबकत्व छोटी-छोटी चीजों को अपनी ओर खींचता रहता है । हम अपनी 'क्वालिटी' बढ़ाएं, अपना चुंबकत्व बढ़ाएं, अपना व्यक्तित्व बढ़ाएं-यही सबसे बड़ा काम करने के लिए है । समाज की सेवा भी करनी चाहिए, पर मैं यह कहता हूँ कि समाज सेवा से भी पहले ज्यादा महत्वपूर्ण इस बात को आप समझें कि हमको अपनी 'क्वालिटी' बढ़ानी है । कोयले और हीरे में रासायनिक दृष्टि से कोई फर्क नहीं ? कोयले का ही परिष्कृत रूप हीरा है । खनिज में से जो धातुएं निकलती हैं, कच्ची होती हैं, लेकिन जब पकाकर के ठीक कर ली जाती हैं और साफ-सुथरी बना दी

जाती हैं तो उन्हीं धातुओं का नाम स्वर्ण, शुद्ध स्वर्ण हो जाता है । उसी का नाम फौलाद हो जाता है । हम अपने आपको फौलाद बनाएं । अपने आपकी सफाई करें । अपने आपको धोएं । अपने आपको परिष्कृत करें । इतना कर सकना यदि हमारे लिए संभव हो जाए तो समझना चाहिए कि आपका यह सवाल पूरा हो गया कि हम क्या करें ? क्या न करें ? आप अच्छे बने । समाज सेवा करने से पहले यह आवश्यक है कि हम समाज सेवा के लायक हथियार तो अपने आपको बना लें । यह ज्यादा अच्छा है कि हम अपने आपकी सफाई करें ।

मित्रो, एक और बात कह करके हम अपनी बात समाप्त करना चाहते हैं । एक हमारा आमंत्रण अगर आप स्वीकार कर सकें तो बड़ी मजेदार बात होगी । आप हमारी दुकान में शामिल हो जाइए, इसमें बहुत फायदा है । इसमें से हर आदमी को काफी मुनाफे का शेयर मिल सकता है । माँगने से तो हम थोड़ा सा ही दे पाएंगे । भीख माँगने वालों को कहाँ किसने कितना दिया है । लोग थोड़ा सा ही दे पाते हैं । आप हमारी दुकान में साझेदार-हिस्सेदार क्यों नहीं बन जाते । अंधे और पंगे का योग क्यों नहीं बना लेते । हमारे गुरु और हमने साझेदारी की है । शंकराचार्य और मांधाता ने साझेदारी की थी इस दुकान में । सम्राट अशोक और बुद्ध ने साझेदारी की थी । समर्थ गुरु रामदास और शिवाजी ने साझेदारी की थी । रामकृष्ण और विवेकानंद ने साझेदारी की थी । क्या आप ऐसा नहीं कर सकते कि हमारे साथ शामिल हो जाएं । हम और आप मिल करके एक बड़ा काम करें । उसमें से जो मुनाफा आए उसको बाँट लें । अगर आप इतनी हिम्मत कर सकते हों कि हम प्रामाणिक आदमी हैं और जिस तरीके से हमने अपने गुरु की दुकान में साझा कर लिया है, आप आएं और हमारे साथ साझा करने की कोशिश करें । अपनी पूँजी उसमें लगाएं । समय की पूँजी, बुद्धि की पूँजी हमारी दुकान में शामिल करें और इतना मुनाफा कमाएं जिससे कि आप निहाल हो जाएं । हमारी जिंदगी के मुनाफे का यही तरीका है । हमने अपनी पूँजी को अपने गुरुदेव के साथ में मिला दिया है, उसी कंपनी में शामिल हो गए हैं । हमारे गुरुदेव हमारे भगवान की कंपनी में शामिल हैं । हम अपने गुरुदेव की कंपनी में शामिल हैं । आपमें से हर एक का आह्वान करते हैं कि अगर आपकी हिम्मत हो तो आप आएं और हमारे साथ जुड़ जाएं । हम जो भी लाभ कमाएंगे भौतिक और आध्यात्मिक, उसका इतना हिस्सा आपके हिस्से में मिलेगा कि आप धन्य हो

सकते हैं और निहाल हो सकते हैं, उसी तरीके से कि जैसे हम धन्य हो गए और निहाल हो गए । यही हमारा साधकों से आग्रह भरा अनुरोध इस बदलती विषम बेला में है ।

ॐ शांतिः । *(११ फरवरी १९८०)*

आपत्तिकाल का अध्यात्म

गायत्री मंत्र साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि
धियो यो नः प्रचोदयात् ।

देवियो, भाइयो ! कुछ समय ऐसे होते हैं जिनको हम सामान्य कह सकते हैं । सामान्य समय में सामान्य प्रकार की गतिविधियाँ चलते रहने का औचित्य समझ में आता है । रोज आदमी पैदा होते हैं, बढ़ते हैं, खेती-बाड़ी करते हैं, ब्याह-शादी होते हैं, बाल-बच्चे होते हैं, बड़े होते हैं और मौत के मुँह में चले जाते हैं । यह सामान्य क्रम है जो चलता रहता है । इसमें अचंभे की कोई नई बात नहीं है, लेकिन कभी-कभी कोई ऐसे समय भी आते हैं जिनको हम विलक्षण कह सकते हैं । जिनको 'आपत्तिकाल' कहा जा सकता है । मनुष्य के जीवन में आपत्तिकाल भी कई बार आते हैं । आपत्तिकाल में सामान्य प्रकार की प्रक्रियाएं लड़खड़ा जाती हैं । घर में आग लग जाए, छप्पर जल रहा हो, उस समय खाना, नहाना सब कुछ छोड़कर जलते छप्पर पर पानी डालने के लिए सभी दौड़ पड़ते हैं । दुर्घटना हो जाए तो आफिस जाना छोड़कर पहले बच्चे को अस्पताल ले जाएंगे और प्लास्टर कराकर आएंगे । यह क्या कह रहे हैं ? आपत्तिकाल की बात कह रहे हैं ? आपत्तिकाल की कीमत जो समझते हैं, मर्यादाएं समझते हैं, उनको यह भी ध्यान है कि आपत्तिकाल के लिए आपत्तिकालीन व्यवस्थाएं बनाई जाती हैं ।

देश के ऊपर जब कोई दुश्मन हमला कर देता है तो क्या करना पड़ता है ? दुश्मन बनना पड़ता है । सैनिकों की छुट्टियाँ बंद कर दी जाती हैं । नहीं साहब, हमारा ब्याह है, मुहूर्त भी छंट गया है । आपका ब्याह होगा अगले साल में अभी तो दुश्मन ने हमला कर दिया है, इसलिए आपकी छुट्टियाँ रद्द की जाती हैं और आपको लड़ने के लिए जाना होगा । हमारी माँ मर गई है उसका श्राद्ध करना है । श्राद्ध करना है तो अगले साल करना, इस वक्त बंद

कीजिए । यह सब सामान्य समय की बातें हैं । सामान्य समय पर श्राद्ध भी करना चाहिए । बाप बीमार है तो उसका इलाज भी करना चाहिए । सामान्य समय पर अपनी लड़की बड़ी हो गई है तो उसके लिए दूल्हा भी ढूँढ़ना चाहिए । पर असामान्य समय पर यदि आप मिलिट्री में हैं तो मोर्चे पर जाना चाहिए और अगर मिलिट्री में नहीं हैं तो यदि भर्ती के लिए हुक्म दे दिया गया है कि नवजवानों में से हर एक को भर्ती होना पड़ेगा, तब आप भर्ती हो जाइए । नहीं साहब, हमारा बी०ए० सेकंड ईयर है, हम फेल हो जाएंगे, थर्ड डिवीजन हो जाएंगे । आपकी बात सही है, लेकिन यह उस समय के लिए सही है जबकि सामान्य समय हो । सामान्य समय में आपको ट्यूशन करना चाहिए, पढ़ना चाहिए और जब आपत्तिकाल है तब पढ़ाई बंद करनी चाहिए । क्या करें ? आप एन०सी०सी० सीखिए और तुरंत मिलिट्री में चले जाइए, क्योंकि यह आपत्तिकाल है । आपत्तिकाल की मर्यादा जो आदमी समझते हैं, वे यह जानते हैं कि इसमें सामान्य जीवन के क्रम और सामान्य जीवन की व्यवस्थाओं के बारे में बाहर से अलग से विचार करना पड़ता है ।

साथियो ! मैं यह कह रहा था आपसे कि यह आपत्तिकाल है जिसमें से आप गुजर रहे हैं । इसे अगर आप हमारी आँखों से देख पाएं तो आप देख सकते हैं कि कैसे तूफान आ रहे हैं, कैसी आँधियाँ आ रही हैं । आपको अपनी आँखों से दिखाई नहीं पड़ सकता, क्योंकि आप सामने की चीजें देखते हैं । आपको केवल वही चीज दिखाई पड़ती है जो सामने है । जमीन आपको चलती हुई दिखाई नहीं पड़ सकती । आपकी आँखें बहुत छोटी हैं । आप तो कहेंगे कि मकान कहाँ भाग रहे हैं, पेड़ कहाँ भाग रहे हैं, वे जहाँ रात में थे वहीं पर अब भी हैं । सब गलत बात है । बेटे, एक मिनट में ६००० मील चाल से पृथ्वी इस तेजी से भागती हुई चली जा रही है कि उसके सामने बंदूक की गोली भी कोई चीज नहीं है । इस तेजी के साथ दनदनाती हुई पृथ्वी भाग रही है । आपको तो दिखाई नहीं देता, पर चंद्रमा की जमीन पर जो लोग गए थे, उन्होंने आकर खबर दी है कि चंद्रमा की जमीन पर हमारी पृथ्वी तीन गुना बड़ी दिखाई देती है । वह ग्लोब के तरीके से रंग-बिरंगी चलती हुई दिखाई पड़ती है । यह क्या है ? आँखों का फर्क है जो आपको दिखाई नहीं देता कि क्या हो रहा है ? गूलर के फूल के बीच में बंद रहने वाले भिनगे को कुछ पता नहीं है कि कब रात हुई, कब दिन । धूप है या बरसात, महामारी फैली है या सब कुछ ठीक चल रहा है । आपकी अकल और बनावट अगर

गूलर के भिनगे की तरीके से हो तो मैं कुछ नहीं कह सकता । तब आपके लिए दिन सामान्य हैं । जैसे हमेशा थे वैसे ही अब भी जगत की गति का असर आपके ऊपर नहीं हो सकता । 'सबसे भले विमूढ़ जिनहि न व्यापत जगत गति ।' जिनके लिए वही रोटी खाना, पैसा कमाना, बच्चे पैदा करना, इसके अतिरिक्त और कोई समस्या नहीं है, उन्हें मूढ़ के सिवाय और क्या कहा जाए ?

जिनके पास न अकल है, न दूरदृष्टि है और न ही जिन्हें कर्तव्यों का भान है, उनके लिए मैं कुछ नहीं कह सकता । पर आपको मैं उनसे अलग मानता हूँ कि आप अलग किस्म के आदमी हैं । आप ऐसे आदमी हैं जिनको कि भगवान ने तीसरी वाली आँख देना शुरू कर दिया है । तीसरी वाली आँख क्या होती है ? वह जो हम त्राटक से याद कराते हैं । तीसरी आँख खोलने के लिए प्रकाश का ध्यान कराते हैं । तीसरी आँख कहते हैं प्रकाश को जिससे कि बहुत दूर तक दिखाई पड़ता है । दूर की बातें दिखाई पड़ती हैं ? हमको मौत दिखाई पड़ती है, अगला जन्म दिखाई पड़ता है । हमको अपना भविष्य दिखाई पड़ता है, भगवान दिखाई पड़ता है मरने के बाद का चौरासी लाख योनियों का चक्र दिखाई पड़ता है और यह दिखाई पड़ता है कि हमारी अवांछनीय गतिविधियाँ जो आज हैं, वे हमारे लिए क्या नुकसानदायक हो सकती हैं । आगे चलकर इनकी क्या प्रतिक्रिया हो सकती है । आज हम जुलाब की गोली खा रहे हैं तो कल क्या हो सकता है । यह क्या है ? यह समझदारी की निशानी है जिसमें कि आदमी को अपने बाबत और दुनिया की बाबत आगे की बात दिखाई पड़ती है । जो आगे की बात सोचते हैं उनको यह आपत्तिकाल दिखाई पड़ता है । वर्तमानकालीन यह युग संध्या है । युग संध्या किसे कहते हैं ? इसका एक नमूना मैं आपको बता सकता हूँ । बताइए क्या है ? बेटे, एक युग वह है जिस समय हम एक पेट में बैठे हुए थे । पेट में से बैठकर के जब हमारा परिवर्तन हुआ, हमारे जीवन का दूसरा वाला चरण बढ़ा, जन्म हुआ, तो हाहाकार मच गया । यह क्या था आपत्तिकाल था परिवार के लिए । सारे का सारा काम, खाना, पीना सब एक ओर । यह क्या नई आफत आ गई । क्या हुआ था ? हमारा जन्म हुआ था ।

नए युग का जन्म होने जा रहा है । दो बातें होनी हैं-एक युग निर्माण की, दूसरा निर्माण से पहले ध्वंस होना है । ध्वंस भी होना है । इमारत जब बनाई जाती है, तब जमीन की खुदाई करनी पड़ती है । पीछे मिट्टी डालकर

कुटाई-पिटाई करते हैं और गड्ढे को ठीक करके तब दीवार की चिनाई की जाती है । 'नया मंदिर बनेगा, खंडहरी दीवार तोड़ो तुम'-यह गीत लड़कियाँ गाती रहती हैं, आपने सुना नहीं है ? भगवान के जब अवतार होते हैं तब एक काम नहीं करते, मात्र धर्म की स्थापना करते हुए नहीं आते, वरन अनीति का ध्वंस करते हुए भी आते हैं । भगवान जब अवतार लेते हैं तब कल्याण करते ही नहीं आते, वरन सफाया करते हुए भी आते हैं । सफाया किए बिना नया नहीं बन सकता । निर्माण के लिए ध्वंस आवश्यक है । ध्वंस के बिना निर्माण संभव नहीं है । दोनों चीजें आपस में मिली हुई हैं । एक चीज का ध्वंस होता है तो दूसरी चीज का निर्माण होता है । एक आदमी मरता है तो दूसरा जन्म लेता है । नई पीढ़ी पैदा करेंगे । बहुत शानदार नई पीढ़ियाँ पैदा होंगी ।

अवतारों की प्रक्रिया के साथ में दोनों बातें एक साथ जुड़ी हुई हैं-एक ओर ध्वंस की, दूसरी ओर निर्माण की । 'परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्' साधुओं का उद्धार बाद में करेंगे, पहले दुष्कृतों को मारकर खत्म करेंगे । आप सोचते हैं कि भगवानजी आएंगे तो रामराज्य लेकर के आएंगे, शक्ति लेकर, शांति लेकर के आएंगे । तो सही, पर यह भी ध्यान रखिए कि वे लाखों-करोड़ों के लिए रोना-पीटना और हाहाकार भी लेकर आएंगे । वे दया बरसाएंगे, तो क्रोध भी बरसाएंगे । दोनों तरह का संतुलन मिलता रहता है जब कभी परिवर्तन की संध्या वेला होती है । परिवर्तन की इस संध्या में आपको न तो कोई विशेष समय की माँग दिखाई पड़ती है, न कर्तव्यों की पुकार सुनाई पड़ती है और न ही भगवान का अवतार दिखाई पड़ता है । चारों ओर क्या हो रहा है, आपको दिखाई पड़ना चाहिए । अगर आप विमूढ़ ही बने रहे, रोटी खाने और पैसा कमाने से लेकर बच्चे पैदा करने तक के चक्र में ही पड़े रहे तो फिर मैं क्या कह सकता हूँ । लेकिन अगर आपके भीतर जीवन आ गया होगा, जाग्रति आ गई होगी तो आपकी एक और आँख खुल गई होगी जिसको त्राटक साधना में हमने बहुत महत्व दिया है ।

पंचकोशीय उपासना में इस वर्ष हमने त्राटक को बहुत महत्व दिया है और कहा है कि आपकी मदद करने के लिए हम तैयार हैं । यह आपत्तिकाल है, इसलिए आप कोई विशेष उपासना न करें तो भी कोई हर्ज की बात नहीं है । आपके बदले हम कर देंगे । आप अपनी उपासना थोड़ी देर करें तो भी काम चल सकता है । नहीं गुरूजी, हम तो योगाभ्यास सीखेंगे, कुंडलिनी जागरण सीखेंगे । बेटे, यह इतना सरल और सस्ता नहीं है जितना कि तू

समझता है । इसमें सारे के सारे जीवन का कायाकलप करना पड़ता है । अपने व्यक्तित्व को और चरित्र को उल्टा-पुल्टा करना पड़ता है । यह शीर्षासन है जीवनक्रम का । अध्यात्म क्या है ? जीवन का शीर्षासन है । तू क्या इसे बाजीगरी समझता है कि यह कर लूँगा, वह कर लूँगा । इसमें ऐसा कुछ नहीं है, वरन इसमें जीवन की दिशा उलटी जाती है, जीवन को पलटा जाता है । योगी की परिभाषा एक ही है कि योगी दिन में सोया करता है और रात में जागा करता है । क्या मतलब है इसका ? यह 'आश्वत्थम् प्राहुरव्ययम्' अर्थात पीपल का पेड़ है जिसकी टाँगे ऊपर हैं, जड़ें ऊपर हैं और उसकी शाखाएं एवं पत्ते नीचे हैं । मतलब यह कि दुनिया वाले जिधर चलते हैं, उससे ये तरकीबें भिन्न हैं । दुनिया वाले लोगों के सोचने, करने का जो तरीका है, आकांक्षाओं, इच्छाओं का जो ढंग है, उससे आध्यात्मिक जीवन की प्रक्रियाएं भिन्न हैं जिन्हें अलग ढंग से करना पड़ता है ।

मैं आपसे निवेदन कर रहा था कि पूजा-उपासना के बारे में, सिद्धि-चमत्कारों के बारे में, देवताओं के दर्शन के बारे में, ऋद्धि-सिद्धि पाने के बारे में जो तरह-तरह के खेल-खिलवाड़ आप करते रहते हैं, उसमें न पड़ें तो अच्छा है । क्योंकि आपके लिए वह कठिन पड़ेगा । आप पहली मंजिल पर ही टक्कर खाकर चकनाचूर हो जाएंगे । जब आपसे ब्रह्मचर्य के लिए कहा जाएगा कि शारीरिक ब्रह्मचर्य उतना आवश्यक नहीं जितना कि मानसिक ब्रह्मचर्य आवश्यक है, तब आप दाँत निकाल देंगे और कहेंगे कि शारीरिक ब्रह्मचर्य तो हमसे सधता नहीं, फिर मानसिक ब्रह्मचर्य की बात ही अलग है । चौबीस घंटे हमारा दिमाग और आँखें दुराचार में लगी रहती हैं । जब बेटे तेरी सारी शक्ति इसी में खर्च हो जाएगी तब फिर तेरा सहस्रार चक्र कहाँ से जागेगा ? सहस्रार चक्र में लगने वाली सारी शक्ति इसी में लय कर देंगे, तब फिर वह जागेगा कैसे ? सहस्रार को जाग्रत करने वाला जो प्रकाश है वह तो आपकी आँखों के रास्ते सारा का सारा बाइब्रेशंस तरंगों में से नष्ट हो जाएगा फिर आप कहें कि गुरुजी हमारा सहस्रार जगा दीजिए, तो कैसे जगाएं हम । इसके अंदर जो गर्मी थी, ऊर्जा थी वह तो तूने खत्म कर दी । इसी तरह आहार के आधार पर जो तेरा रक्त बनता है और जिससे बनता है मन, तमोगुणी अन्न, अनीति बेईमानी का कमाया हुआ अन्न, हराम का कमाया हुआ अन्न खाकर के तूने उसे तमोगुणी बना लिया है । उसे मैं कैसे स्थिर कर दूँ । सारे का सारा अन्न जिसे तू खाता है उसमें तमोगुण ही तमोगुण भरा हुआ है-

रजोगुण की सीमा में भी नहीं । पूरा परिश्रम चुका करके जो अन्न खरीदा नहीं गया वह भी बेईमानी का है । केवल चोरी या डाका डालकर लाया गया अन्न ही नहीं, यह भी अभक्ष्य होता है । प्राचीनकाल के पिपलादि ऋषि, कणादि ऋषि एवं अन्य दूसरे ऋषि सबसे पहले इस बात के लिए योगाभ्यास करते थे कि हमारे आहार के लिए अन्न कहाँ से आता है जिससे हमारा रक्त बनता है, शरीर बनता है जिससे हमें अच्छा कर्म करना आता है और हमारा मन जिसमें अच्छे विचार आते हैं, वह कहाँ से बनता है, अन्न से बनता है ।

बेटे, कान में उँगली लगा लेना या हर वक्त नाक में से प्राणायाम कर लेना भर योगाभ्यास नहीं है । योगाभ्यास जीवन का उपक्रम है जिससे जीवन में परिवर्तन करना पड़ता है । साधु को, तपस्वी को, अपने जीवन की प्रक्रिया उल्टी करनी पड़ती है । साधु या ब्राह्मण एक जीवन क्रम है, जीवन की एक फिलॉसफी है । सोचने और काम करने का एक तरीका है । योगाभ्यास, प्राणायाम आदि उसके ऊपर के शृंगार हैं । सान चढ़ाने के पत्थर हैं जिस पर घिस कर तलवार पर धार निकाली जाती है । लोहा न हो तो लकड़ी की तलवार नहीं बन सकती । अध्यात्म मार्ग पर भगवान की कृपा अनुकंपा पाने के लिए, सिद्धियाँ प्राप्त करने के लिए, आत्मशांति प्राप्त करने के लिए सबसे ज्यादा एक ही चीज की जरूरत है दूसरी कोई नहीं और उसका नाम है- व्यक्तित्व का परिष्कार । इसके लिए वहाँ से साधनाएं शुरू करनी पड़ती हैं जहाँ से मनुष्य के आहार और व्यवहार को संयमित करना पड़ता है, इंद्रियों पर संयम करना पड़ता है, कामेंद्रियों पर संयम करना पड़ता है । यह शुरूआत है । फिर मन का संयम करना पड़ता है । यह एक साइंस है । उपासना में मन को अस्त-व्यस्त नहीं जाने दिया जाता । उससे कहा जाता है कि हमारा और हमारे भगवान का संबंध है, आप यहीं रहिए । इतने पर भी यदि मन भागता है तो भगवान की किताब पढ़िए, भगवान की शक्ल देखिए, भगवान से बातचीत कीजिए । बातचीत नहीं कर सकते तो भगवान का ध्यान कीजिए । ज्ञान, ध्यान की बात करके मन को पकड़ करके रखिए ।

मन के निग्रह के बाद समय का निग्रह करना पड़ेगा । अपने आपको शिकंजे की तरीके से कसना पड़ेगा । यही तो एक संपत्ति है तेरे पास और दूसरी कोई चीज नहीं है । समय को व्यवस्थित नहीं किया तो फिर तेरे हाथ कुछ भी नहीं रह जाएगा । बिनोवा भावे से लेकर गाँधी जी तक जितने भी महापुरुष और अध्यात्मवादी हुए हैं, उनने समय को इस तरीके से कसा है कि

एक क्षण भी बेकार न जाने पाए । यही तो दौलत है तेरे पास जिससे चाहे आत्म-कल्याण कर ले, चाहे जनता की सेवा कर ले, चाहे अपना स्वास्थ्य बना ले, चाहे परिवार की सेवा कर ले । प्रगति करनी है तो समय का संयम करना पड़ेगा । धन का संयम करना पड़ेगा क्योंकि धन का संयम जब तक तू नहीं करता तब तक सैकड़ों तरह की बुराइयाँ आ जाएंगी । आलस्य, अहंकार, शराबखोरी, अपव्यय आदि सारी बीमारियाँ तो अनायास ही तेरे भीतर आ जाएंगी । धन का अगर संयम न कर सकेगा तो जो कुछ पुण्य-परमार्थ कर सकता होगा, सो नहीं करेगा और यदि इसे औलाद के लिए छोड़कर चला जाएगा तो वे आपस में लड़ेंगी और उनका सफाया हो जाएगा । उपार्जन और व्यय कैसे करना चाहिए-यह जीवन की एक शैली है, एक व्यवस्था है, एक क्रम है और एक आधार है ।

अध्यात्म एक साइंस है जिसमें जीवन का क्रम बदलना पड़ता है । इसलिए मैं आपसे निवेदन कर रहा था कि इस आपत्तिकाल में योगाभ्यासी बनने के लिए, सिद्ध महात्मा बनने के लिए कोशिश मत कीजिए । इस आपत्तिकाल में जिस चीज की जरूरत है आप वही काम करें । हम आपकी सहायता करेंगे । इस आपत्तिकाल में हमने अपने गुरु की सहायता की है और उसने हमारे लिए आवश्यकताओं को पूरा किया है । आपत्तिकाल में हनुमान जी ने रामचंद्र जी की मदद की थी और रामचंद्र जी ने जिन सिद्धियों की जरूरत थी पहाड़ उठाने से लेकर समुद्र छलांगने तक की सिद्धियाँ दे डाली थीं । रामचंद्र जी ने कहा था-आप हमारा काम कीजिए और हम आपका काम करेंगे । यह भी एक तरीका है-अंधे और पंगे का । अंधे की पंगे ने मदद की थी और पंगे ने अंधे की । आप हमारी मदद कीजिए और हम आपकी मदद करेंगे । आपके पास धन कम है, तो बेटे, मेरे पास भी कम है, पर जिससे हमारा संपर्क और संबंध है वह बड़ा मालदार आदमी है । उसकी बैंक बहुत बड़ी है । आप इसमें शामिल क्यों नहीं हो जाते ? आप हमारी कंपनी में बीमा करा लीजिए । हमारा बड़ी कंपनी में बीमा है । इसलिए हमने आपसे यह कहा था कि आप हमारी शृंखला में शामिल हो जाइए और उपासना का उत्तरदायित्व हमारे ऊपर छोड़ दीजिए तो काफी है । तो हम क्या करें गुरुजी ? बेटे, आप वही करें जो हम अपने गुरु का करते हैं । आपके लिए सबसे बेहतरीन, सबसे अच्छा, सबसे नफे का सौदा यह है कि जिस तरह से हमने अपने गुरु का कहना माना है और उसके कहने के मुताबिक

यह योगाभ्यास कर रहे हैं जो उसने हमको सुपुर्द कर दिए और जिससे शक्तियाँ पैदा होती हैं । आप भी ऐसा ही करें ।

जिस योगाभ्यास को आप इतना सरल समझते हैं, वह सरल नहीं वरन इतना कठिन है कि आप कर नहीं पाएंगे । आप समझते हैं कि गायत्री माता का अनुष्ठान २४ हजार जप में हो जाता है ? तो यह इतने से पूरा नहीं होता । गायत्री ब्राह्मण की कामधेनु है । अतः जप करने से पहले ब्राह्मण बन । नहीं साब, ब्राह्मण नहीं बनेंगे, रहेंगे तो हम डाकू और रहेंगे तो हम हत्यारे-कसाई ही, पर २४ हजार का जप करेंगे । तब बेटे, इससे क्या हो जाएगा ? गंदे नाले में गंगाजल डालते रहें तो क्या बनेगा ? गंगाजी में तू गंदे नाले को डाल दे तो गंगा जल हो भी सकता है, पर गंदे नाले में लाकर के एक किलो गंगा जल डाल देगा तो क्या सारा का सारा गंदा नाला शुद्ध हो जाएगा ? गंदा नाला शुद्ध नहीं होगा, वरन वह गंगा जल भी गंदा नाला हो जाएगा । तू मोटी बातें भी समझता क्यों नहीं, मोटी बातें समझ । इसलिए मैं आप लोगों में से हर एक का उत्साह जिसमें योगाभ्यास शामिल थे, तरह-तरह की जादूगरी शामिल थी, तरह-तरह के चमत्कार देखना और तरह-तरह की सिद्धियाँ देखना शामिल थे, तरह-तरह के शब्द कानों में सुनने शामिल थे, उनसे आपको निरस्त करता हूँ और यह कहता हूँ कि आप इधर से मन हटा लें और हमारी साधना में शामिल हो जाएं । कैसे शामिल हो जाएं ? यह आपत्तिकाल है । आपत्तिकाल में आपत्तिकालीन कार्यक्रम बना लें तो ठीक रहेगा । आपत्तिकालीन क्रियाकलाप में आप एक कार्यक्रम यह बना लें कि आप अपनी व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं को कम कर दें । सामान्य भारतीय जिस स्तर का जीवनयापन करता है, वहाँ तक आप अपने को सीमाबद्ध कर लें तो आप आपत्तिकाल में युग की माँग और समय की माँग के लायक कुछ कर पाएंगे । अगर आपकी महत्वाकांक्षाएं जिंदा रहीं तो आप कुछ नहीं कर पाएंगे, क्योंकि आदमी की महत्वाकांक्षाओं के पूरा होने की कोई गारंटी नहीं है । आपत्तिकालीन इस युग संध्या में अपने कर्तव्यों का पालन करने के लिए अगर आपकी इच्छा है तो आपको भगवान के कार्यों में सहायक होना चाहिए और योगाभ्यास का, साधना का पहला कदम यह मानकर चलना चाहिए कि हमारे लिए इतना ही काफी है जितने में हमारा गुजारा हो सके । औसत भारतीय स्तर के हर आदमी के हिस्से में जितना आता है, उसी स्तर का आप अपना और अपने परिवार का खान-पान और रहन-सहन और संग्रह बना लें ।

मित्रो! महत्वाकांक्षाएं अगर आपके दिमाग पर हावी रहें तो हमको कहना पड़ेगा कि आपत्तिकालीन युग में आप कुछ नहीं कर पाएँगे। नामवरी के लिए यश, लोभ या भड़कावे-बहकावे में आकर परोपकार के नाम पर कुछ खेल-खिलौना थोड़ा-बहुत कर भी लें, पर असल में आप कुछ ठोस काम कर नहीं पाएँगे। अपनी महत्वाकांक्षाओं को कम करिए। तो क्या महत्वाकांक्षाएं खत्म कर देने से आदमी का वर्चस खत्म नहीं हो जाएगा? नहीं बेटे, उसके प्वाईट बढ़ा दें, दिशाएँ बदल दें। जीवन को बड़प्पन की अपेक्षा महानता की दिशा मे मोड़ दें कि हम महान बनेंगे। महान किसे कहते हैं? जो सिद्धांतों के लिए काम करते हैं, आदर्शों के लिए काम करते हैं? इस दिशा में महत्वाकांक्षाओं को जितना बढ़ाना चाहें बढ़ा दें। गुरुजी हम तो ऋषि बनेंगे। बेटा, हम तुझे ऋषि बनाएँगे, ऋषि की महत्वाकांक्षा बढ़ा। हम तुझे ब्रह्मर्षि बना देंगे, राजर्षि बना देंगे, देवर्षि बना देंगे, पर शर्त एक ही है कि हमारे रास्ते पर चल और उधर की महत्

वाकांक्षाएं कम करके इधर की महत्वाकांक्षाओं में लगा दे, फिर जो भी तू कहेगा, हम बना देंगे। हम आपको सेठ नही बना सकते, मिनिस्टर नहीं बना सकते, राजा भी नही बना सकते, पर आपकी आध्यात्मिक महत्वकांक्षाओं को हम पूरा कर सकते हैं, क्योंकि वे स्वाभाविक और सरल हैं। उसमें दैवी शक्तियाँ सहायता करती हैं। पर आपकी भौतिक महत्वाकांक्षाओं में देवी शक्तियाँ सहायता नहीं करतीं। उसमें आपका कर्म और पुरुषार्थ सहायता करता है। यही घूम-घाम करके दैवी कृपा, आशीर्वाद के रूप में आ जाता है। फोकट में दैवी कृपा आदमी की भौतिक महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने में सहायक नहीं होती है। यदि देवता पैसा देते होते तो हिंदुस्तान जैसा देश जो देवताओं का देश कहलाता है, गरीब नहीं रहा होता। लक्ष्मी जी की पूजा करते हुए सात पीढ़ियाँ व्यतीत हो गईं फिर भी गरीबी हमारे घर से निकली नहीं, लक्ष्मी जी आई नहीं। हमने सुना है देवता कृपा करते हैं? देवता कृपा नहीं करते, भौतिक जीवन में योग्यताएं काम करती हैं, पुरुषार्थ काम करता है। जापानियों से पूछ कर आइए कि आपको जो संपत्ति मिली है उसे क्या लक्ष्मी जी ने भेजा है या आपके पुरुषार्थ ने। हर जापानी यही कहेगा कि हमारे पुरुषार्थ ने भेजा है, लक्ष्मी जी की इसमें कोई सहायता नहीं। देवताओं की सहायता एक काम में आती है-आध्यात्मिक जीवन, आंतरिक जीवन के विकास में, जो कि वास्तविक जीवन है और सारी सफलताओं का केंद्र है। यही जीवन आपका विकसित हो सकता है।

—

इस आपत्तिकाल में जो सामान्य समय नहीं है, यदि आप अपने जीवन की रीति-नीति और गतिविधियों को बदल दें, अपने भौतिक जीवन की महत्वाकांक्षाओं को कम कर दें । जितने कम में गुजारा हो सकता हो उतने कम पैसे, कम समय में अपना गुजारा कर लें और बाकी सारे का सारा समय श्रेष्ठ कामों के लिए, आध्यात्मिक कार्यों के लिए, आपत्तिकालीन क्रिया-कलापों के लिए समय की मांग को पूरा करने में लगा दें । यह नीति अगर आपकी समझ में आ जाएगी तो फिर मैं कहता हूँ कि बाद का रास्ता आपका साफ है । फिर आपकी मुक्ति का रास्ता खुल गया और जो चीजें आप चाहते थे, उसके मिलने की गारंटी हो गई । यदि आपने अपने आपको बदल दिया तो सिद्धियाँ भी मिल जाएंगी । सूरदास ने अपने आपको बदल दिया था तो वे विल्वमंगल से सूरदास हो गए थे । भगवान उनको इसी जीवन में मिल गए थे । तुलसीदास ने अपना जीवन क्रम बदल दिया था तो भगवान उनको इसी जीवन में मिल गए थे । बाल्मीकि ने अपने जीवनक्रम को बदल दिया था तो भगवान उनको इसी जीवन में मिल गए थे । बुरे से बुरे आदमियों में से जिन्होंने भी अपने जीवन क्रम को बदल दिया, उनको भगवान मिले थे । लेकिन जिन्होंने अपने जीवन क्रम में हेर-फेर नहीं किया, भगवान के ऊपर जाल फेंकते रहे और यह कहते रहे कि हमको दिला दीजिए बेटा और आप हमारी डकैती में फायदा करा दीजिए । बेटे ये देवी-देवता और भगत दोनों ही मरेंगे और दोनों ही पिटेंगे । मैं चाहता हूँ कि आप इस अज्ञान से, इस जंजाल से निकल आएं तो अच्छा है । मैं चाहता हूँ कि आपके सामने अध्यात्म की, शांति की, भगवान के प्यार की, सिद्धियों की, चमत्कारों की, जीवन की सार्थकता की एक स्पष्ट रूपरेखा हो तो काम चल जाए ।

यह आपत्ति धर्म है इसमें आप लोग एक काम करना कि अपनी व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं को जितना कम कर सकते हों, कम करना, ताकि उसी सीमा में आप ब्राह्मण होते चले जाएं । उसी सीमा में संत हो जाएं । जिस सीमा में आप ब्राह्मण हैं, संत है, उसी सीमा के हिसाब से, उसी मर्यादा के हिसाब से आपको भगवान की कृपा मिलेगी । देवताओं की, सिद्ध पुरुषों की सहायता मिलेगी । जो भी चीज आप चाहते हैं वह सब चीजें मिलेंगी विशेषकर इस आपत्तिकाल में, यदि आप अपने व्यक्तित्व को विकसित कर लें तो । इस जमाने में युग निर्माण जैसे महान कार्य के लिए, जलती हुई आग को बुझाने के लिए और उज्ज्वल भविष्य की संभावनाओं को बढ़ाने के लिए

महाकाल ने आपसे समय माँगा है । यदि आप अपनी भौतिक महत्वाकांक्षाएं कम करके आध्यात्मिक महत्वाकांक्षाओं में अपने मन को लगा सकें तो आपको शक्ति भी मिलेगी, समय भी बचेगा, पैसा भी बचेगा, अक्ल भी बचेगी, श्रम भी बचेगा । इतना ज्यादा सामान बचेगा कि आप कहने लगेंगे कि हम तो अपने आपको अभावग्रत समझते थे, पर हमारे पास इतनी ज्यादा दौलत निकल पड़ी कि हम दुनिया को निहाल कर सकते हैं ।

आपको करना क्या है ? आपके जिम्मे जो काम सुपुर्द किए गए हैं, वे परिव्राजक के काम सुपुर्द किए गए हैं । आपको परिव्राजक की वास्तविक भूमिका निभानी है, इससे कम में काम नहीं चलेगा । परिव्राजक की योजना को पूरा करने के लिए, परिव्राजक के उत्तरदायित्वों और कर्तव्यों को निभाने के लिए वही काम करना पड़ेगा कि आप अपनी महत्वाकांक्षाओं को कम कर दें और सामान्य जीवन यापन करने से संतोष कर लें । संतोष करने के बाद में यह देखें कि हमारे पास कितना ज्यादा समय है । उस समय का सदुपयोग कहीं भी कर सकते हैं । बाहर क्षेत्रों में भी भेज सकते हैं और अपने क्षेत्र में, गाँव में भी आप काम कर सकते हैं । वास्तव में परिव्राजक एक संकल्प है, एक व्रत है, एक नियम है, एक उपासना है, जिसमें श्रेष्ठ प्रकाश देने के लिए संपर्क स्थापित करना पड़ता है । संपर्क स्थापित कीजिए अपने घर-परिवार वालों से, अपने बच्चों से, अपने पड़ोसी और मोहल्ले वालों से । जिस दफ्तर में आप काम करते हैं, वहाँ लोगों से संपर्क स्थापित कीजिए अच्छे उद्देश्यों के लिए । आप वहाँ भी परिव्रज्या कर सकते हैं । आप दुकानदार हैं तो वहाँ भी सबेरे से शाम तक ५० आदमी आते हैं । दुकानदारी के साथ-साथ श्रेष्ठ कामों के लिए भी आप उतना समय निकाल सकते हैं । आप हर आदमी को २४ घंटे अच्छी सलाह दे सकते हैं, श्रेष्ठ प्रेरणाएं दे सकते हैं और सामान्य जीवन क्रम के साथ परिव्राजक व्रत का, जिसका उद्देश्य जनसंपर्क है हर समय पालन करते रह सकते हैं । आप कहीं भी जाएं, हम आपसे यह नहीं पूछेंगे कि इनमें कितनी सफलता मिली । सफलता मिले या न मिले, पर प्रयास कितना किया, यह समयदानियों से हमारा मूल प्रश्न रहेगा ।

इस युग की सबसे बड़ी मांग समयदान है । समयदान का दस सूत्री कार्यक्रम आप समझ लें और पूरा करने की कोशिश करें, तो बात पूरी होगी । पहले आप बाहर जाइए और अपने आपसे, दूसरों से भी कहिए कि युग बदल रहा है । यह आपत्तिकाल है । आपत्तिकाल में भगवान ने प्रत्येक जाग्रत आत्मा

से समय माँगा है । इस आड़े समय में आप समय दे पावें तो वह हीरे-मोती, जवाहरात के बराबर है । समय की पुकार के ऊपर जिन्होंने समय दिया, वे बेटे, गाँधी जी के मिनिस्टर हो गए, स्वतंत्रता सेनानी हो गए और आज उन्हें पेंशन मिल रही है । क्यों ? क्योंकि आपत्तिकाल में जब राष्ट्र पर आपत्ति आई थी तो देश को आजाद कराने के लिए वे सत्याग्रही सेना में शामिल हो गए थे और जेल की यातनाएं सही थीं । तो गुरुजी आप ऐसा कीजिए कि मुझे भी कहीं स्वतंत्रता सेनानियों में जेल भिजवा दीजिए । तीन महीने की जेल हो जाएगी और स्वतंत्रता सेनानी बन जाएंगे । ढाई सौ रुपया पेंशन मिल जाएगी । बेटे, तुझे मिलेगी नहीं, क्योंकि समय चूक गया । जेल जाने का भी समय था, अब वह समय कहाँ है । अब आपत्तिकालीन समय है यह । युग बदल रहा है । आज का समय देना हीरे के बराबर, मोती के बराबर है । अगर अगली बार देगा तो तू क्या देगा । जब समय बदल जाएगा तब हम तेरे समयदान का क्या करेंगे ? फिर समय की जरूरत नहीं पड़ेगी ।

इसलिए आप यहाँ से जाने के बाद में स्वयं से, अपने आप से और हर जाग्रत आत्मा से यह कहना कि सन् १९७८ से लेकर के सन् २००० तक के ये २२ वर्ष ऐसे हैं जिनमें दुनिया का कायाकल्प हो जाएगा । कैसे हो जाएगा, इस संबंध में मैं बेकार की भविष्यवाणियाँ तो नहीं करता, बेकार की भविष्यवाणियाँ करना मुझे नापसंद हैं, पर मैं दो भविष्यवाणियाँ कहे देता हूँ कि लोगों में बहुत तबाही आएगी । संसार में बहुत तबाही आएगी । तब आपको राहत के लिए लोगों में काम करना पड़ेगा । तबाही क्यों आएगी ? क्योंकि अवांछनीय तत्व जहाँ कहीं भी हैं वे सब घटेंगे । घटने के लिए विनाश होगा और विकास के लिए नए निर्माण भी होंगे । नए निर्माण के लिए आपको समय देना पड़ेगा और श्रम करना पड़ेगा । विनाश में तो अपको सहायता नहीं करनी पड़ेगी, पर राहत कामों में आपको सहायता करनी पड़ेगी, ताकि आपका आत्मबल विकसित हो सके और आपका देवत्व विकसित हो सके । यह काम होगा ? हाँ बेटे, होगा । अभी भी हो रहा है । मारकाट से भी कर रहे हैं, बीमारियाँ भी कर रही हैं, बाढ़ें भी कर रही हैं और जाने कौन-कौन कर रहा है । जहाँ कहीं भी देखिए हर जगह सूखे के साथ गीला जल रहा है । सब जगह तबाही ही तबाही मची है ।

बेटे, यह आपत्तिकाल है, राहत कार्यों में लगना पड़ेगा । भगवान कोई नुकसान पहुँचाने वाला नहीं है हमें यह नहीं कहने वाला है कि आप जहाँ

पीड़ा हो वहाँ सहायता कर सकते हैं । इसमें आपकी आत्म-परीक्षा है और वर्चस का अनुदान है । क्या आप मुसीबत में जहाँ के तहाँ हृदयहीन बने बैठे रहेंगे । मदद नहीं करेंगे ? जाग्रत आत्माओं के सामने आपत्तिकाल ने पुकार है कि आप राहत कार्यों के लिए मदद कीजिए । राहत कार्य केवल बाढ़ और भूकंप के नहीं हो सकते । पीड़ा और पतन इस जमाने में अभी और फैलेंगे । इनसे राहत दिलाने के लिए ही मैं आपसे कहता हूँ । देखते नहीं गुंडागर्दी कैसे बढ़ती चली जाती है, दूसरे अपराध कैसे बढ़ते चले जाते हैं । इस तरह के राहत कार्यों में आपकी हर जगह जरूरत है । आपको निर्माण के एक नहीं लाखों कार्य करने हैं । ये इम्तहान की घड़ियाँ हैं । आपको निर्माण कार्यों के लिए ईंट और चूने की भूमिका निभानी है । प्रत्येक व्यक्ति से समय इसी के लिए माँगा था । राम ने कभी समय माँगा था, कृष्ण ने कभी समय माँगा था । हम भी आपसे समय माँगते हैं । समय की किसी के पास कमी नहीं है, केवल दिलेरी और साहस की कमी है, उदारता की कमी है । अगर आप अपने भीतर दिलेरी और उदारता पैदा कर सकें तो काम बन जाए ।

आप यहाँ से जाने के बाद एक बात हर एक से कहना, अपने से सौ बार कहना और जो कोई जाग्रत आत्मा दिखाई पड़े उससे कहना कि महाकाल ने एक ही निमंत्रण भेजा है-समय की माँग का निमंत्रण । आप परिव्राजक हैं । जन संपर्क में आप जहाँ कहीं भी जाएं, आप कृपा करके एक ही बात कहना हर आदमी से जो कोई भी आपको भजन करता हुआ, पूजा करता हुआ दिखाई दे उससे यही कहना कि अगर आप भगवान का अनुग्रह पाने के इच्छुक हों, भगवान की सहायता करने के इच्छुक हों, तो गुरुजी ने पल्ला पसार करके, महाकाल ने पल्ला पसार करके, युग के देवता ने पल्ला पसार करके हर आदमी से समय माँगा है । आपके पास समय हो तो हमें दें-नवयुग के निर्माण के लिए, राहत कार्यों के लिए, पीड़ा और पतन से लोहा लेने के लिए, सत्प्रवृत्तियों के संवर्द्धन में योगदान देने के लिए और दुष्प्रवृत्तियों से संघर्ष करने के लिए । दोनों हाथ से इस आपत्तिकाल में भगवान ने पुकार की है । अगर आप कर सकते हों तो करना, यहाँ से जाने के पश्चात । समय देना केवल उनके लिए संभव हो सकता है जो अपनी भौतिक महत्वाकांक्षाओं पर नियंत्रण लगा सकते हैं । इसके अलावा कोई समय नहीं दे सकता मित्रो ! मैंने अपनी बातें कह दीं ।

समाप्त । ॐ शांतिः ।

(१३ सितंबर १९७८)

युग परिवर्तन की पूर्व वेला एवं संधिकाल

गायत्री मंत्र साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि
धियो यो नः प्रचोदयात् ।

देवियो, भाइयो ! इस समय जिसमें हम और आप रह रहे हैं, यह युग संधि का समय है । युग-संधि क्या है ? युग-संधि उसे कहते हैं जबकि दो महत्वपूर्ण चीजें आपस में बदलती हैं जैसे संध्या का समय । एक संध्या प्रातः काल होती है और एक सायंकाल होती है । दिन खत्म हो जाता है, रात आ जाती है, यह सायंकाल की संधि का समय है । रात चली जाती है और सवेरा आने लगता है, यह प्रातःकाल की संधि का समय है । दो चीजें जब मिलती हैं, तब उनको संधि कहते हैं-संध्याकाल कहते हैं । यह संध्या का समय है जिसमें एक दैत्य विदा होने जा रहा है और देव प्रकट होने जा रहा है । दैत्य वह, जिसको हम पदार्थवाद-भौतिकवाद कहते हैं जो देखने में चमकदार, शक्तिशाली और सामर्थ्यवान है, लेकिन भीतर से कलुषित है । उसकी प्रतिक्रियाएं स्वयं के लिए भी और दूसरों के लिए भी दुःखद हैं । रावण जिया तो सही, जप, तप भी किया, सोने की लंका भी बनाई, लेकिन ऋषियों को मारता-काटता रहा, दुःख देता रहा और दुःख पाता रहा और अंततः दुःख पा करके ही मरा । स्वयं भी दुःख पाया और स्त्री-बच्चों को भी दुःख से जलते-भुनते देखा । दैत्य दुःख देता है और दुःख पाता है । देखने में उसका बाहरी कलेवर सोने जैसा चमकदार मालूम पड़ता है । उसकी ताकत ऐसी मालूम पड़ती है मानो दस सिर और बीस भुजाओं वाला हो । सामान्य मनुष्य से ज्यादा ताकतवर होता है दैत्य, जाइंट । जाइंट पहली बार विदा होने जा रहा है । फिर कौन आने वाला है ? अब देव का युग, सहृदयता का युग, सादगी, सज्जनता और सद्भावना का युग आने वाला है । 'जाइंट' जो जाने वाला है, जिसे हम स्वार्थपरता कहते हैं, संकीर्णता, निष्ठुरता और कृपणता कहते हैं, वह आज जन-जन के भीतर छा गया है । आज आदमी कितना संकीर्ण, कितना स्वार्थी हो गया है । उसे दूसरों के बारे में कोई चिंता नहीं, केवल अपनी ही चिंता । यह कौन होता है ? केवल अपनी ही चिंता करने वाले को दैत्य कहते हैं । दैत्य मनोवृत्ति के रूप में भी आता है और व्यक्ति के रूप में भी आ सकता है । उसकी यही पहचान है ।

दैत्य कहाँ रहते हैं ? कहाँ बतावें आपको । अपना मुँह शीशे में देखिए तो आपको दिखाई पड़ेगा कि दैत्य, राक्षस, जाइंट आपके भीतर बैठा हुआ है । जिसकी हविस जितनी ज्यादा है वह उतना ही बड़ा दैत्य है । हर एक की हविस आसमान को छू रही है । सौ रुपये रोज कमाने वाले का भी गुजारा नहीं । हविस का राक्षस इस तरीके से उछलता और उबलता रहता है कि अच्छे कार्यों के लिए, भजन-पूजन के लिए कुछ नहीं बचता हमारे पास, फिर सेवा के लिए, परमार्थ के लिए, देवपूजन के लिए कहाँ बचेगा ? आपके पास है क्या जिससे पूजन करेंगे । आपके पास तो बची हुई एक हविस है जिसको पूरा करने के लिए आप हर एक को निगलना चाहते हैं । आपकी ख्वाहिशें इतनी बढ़ी हैं कि आप हर एक का सफाया करना चाहते हैं, हर एक को अपने पेट में भर लेना चाहते हैं । पेट में कौन भरता है-दैत्य । वह कभी भजन करता है रावण के तरीके से, तो कभी मारीच के तरीके से पूजन करता है । चारों ओर दैत्य छाया हुआ है । यह पढ़ा-लिखा भी है, बलवान भी है और विद्यावान भी है । कुबेर के खजाने से बँधा हुआ भी है यह 'जाइंट' जो आज सारे के सारे विश्व के मानस पटल पर छा गया है । दैत्य अब मरने जा रहा है, विदा होने जा रहा है ।

अब क्या आने वाला है ? देव आने वाला है । देव किसे कहते हैं ? शराफत को कहते हैं, भलमनसाहत को कहते हैं । देवता कहाँ रहते हैं ? आसमान में रहते हैं । नहीं, देवता एक सभ्यता का नाम है, संस्कृति का नाम है । इसी तरह दैत्य एक सभ्यता का नाम है, संस्कृति का नाम है । देव और दानव दो संस्कृतियों के नाम हैं । आज हर जगह दैत्य संस्कृति, जाइंट संस्कृति, बड़प्पन की संस्कृति, अहंकार की संस्कृति, विलासिता की संस्कृति, वेश्याचार की संस्कृति के रूप में हर मनुष्य के ऊपर हावी है । चाहे वह लंबे तिलक लगाता हो, चाहे पैंट पहनता हो । सब इस मामले में एक ही हैं कोई फर्क किसी में नहीं पड़ता । अब यह सभ्यता खत्म होने जा रही है और नई देव सभ्यता प्रारंभ होने वाली है । शायद आपको दिखलाई न पड़ता हो, पर हमको दिखाई पड़ता है । कैसे दिखाई पड़ता है ? आप समुद्र के किनारे बैठ जाइए । आपको आने वाले जहाजों के मस्तूल पानी के ऊपर दिखाई पड़ेंगे । इससे अंदाजा लगा लिया जाता है कि अभी मस्तूल दिखाई दे रहा है, थोड़ी देर में पूरा जहाज सामने आ जाएगा । बादल जब चमकते हैं तब हमको मालूम पड़ जाता है कि पानी गिरने वाला है । पहले वाली संभावनाएं

देखकर मालूम पड़ जाता है कि कुछ हेर-फेर होने वाला है, परिवर्तन होने वाला है । परिवर्तन का संकेत पाकर बिल्ली अपने बच्चों को लेकर चल देती है । मकड़ी अपने जाले को समेट लेती है । भविष्य की जानकारियाँ सभी को होती हैं । चिड़ियों और कुत्तों को भी तथा अन्य प्राणियों को भी । दिव्यदर्शियों को भी होती हैं और परिस्थितियों को अनुमान लगाने वाले कम्प्यूटरों को भी । ये सभी भविष्य के बारे में अनुमान लगा लेते हैं और इनमें से अधिकांश अनुमान सही भी होते हैं ।

युग संधि का जो यह समय है, उसमें एक ओर मालूम पड़ता है कि विनाश अपनी आखिरी बाजी लगाने जा रहा है । हारा हुआ जुआरी अंत में जो कुछ भी मिलता है उसी को दाँव पर लगा देता है, यहाँ तक कि बीवी को भी दाँव पर लगा देता है । वह बागी हो जाता है और क्या करता है ? चरम सीमा पर जा पहुँचता है । दैत्य भी इन दिनों चरम सीमा पर जा पहुँचेगा । अब वह समय निकट आ गया जिसमें दैत्य अपनी चरम सीमा पर होगा । आपने देखा होगा कि प्रातःकाल जब सूर्य उदय होने वाला होता है तो अँधेरा सबसे ज्यादा उसी वक्त होता है । रात्रि घनीभूत कब होती है जब प्रातःकाल नजदीक आ जाता है । दीपक की सबसे बड़ी लौ कब होती है जब दीपक बुझना शुरू होता है । चींटी के पंख कब उगते हैं ? जब उसके मरने के दिन नजदीक आते हैं । जब आदमी मरने को होता है तो बहुत जोर से सांस लेता है और चेहरे पर चमक मालूम पड़ती है ।

मित्रो ! युग संधि के बारे में कई तरह के विचार हैं कितनी ही तरह की मान्यताएं हैं । उसमें एक यह कि एक पक्ष नष्ट होने वाला है और एक पक्ष जीवित होने वाला है । ऐसे समय को 'प्रसव पीड़ा' कहते हैं जिसमें एक ओर प्रसूता के ऊपर जान की बन रही है । वह जीवन और मौत के झूले में झूल रही है । दूसरी ओर है खुशी, उमंग, मुस्कान कि नया बच्चा गोदी में आने वाला है । एक ओर खुशी भी होती है संतोष होता है कि नया बच्चा आने वाला है और दूसरी ओर प्रसव पीड़ा में जान भी निकलती है । यह प्रसव पीड़ा का समय है, युग की पीड़ा का, युग परिवर्तन का समय है जिसमें हम और आप रह रहे हैं । इसमें दैत्य मरने जा रहा है और देव अपना जन्म लेने जा रहा है, उदय होने जा रहा है ।

आपको इसका आभास कैसे मिलता है ? हम कई आदमियों से मालूम करते हैं, कई फैकल्टीज से मालूम करते हैं, कई विचारकों से मालूम करते हैं

तो नतीजा उसी स्थान पर जा पहुँचता है कि युग परिवर्तन का समय नजदीक आ गया । यह विनाश और विकास का संधिकाल है । इस संबंध में आकाश की जानकारी रखने वालों से पूछताछ की तो उन्होंने कहा कि अब दुनिया में घुटन पैदा होने वाली है । हवा के अंदर गर्मी और विषाक्तता इस कदर बढ़ती जा रही है । कल-कारखानों के द्वारा, मशीनों के द्वारा, उद्योगों के द्वारा कि सारा का सारा वातावरण विषाक्त होता जा रहा है । शहरों की गंदगी कहाँ डालते हैं ? नदियों में, परिणामस्वरूप सारी की सारी नदियाँ विषैली होती चली जा रही हैं । अब गंगा तक का पानी न नहाने लायक रहा है, न पीने लायक । न केवल हिंदुस्तान में, बल्कि सारे संसार में हवा और पानी खराब होते जा रहे हैं । हम चारों ओर से हवा और पानी के रूप में जहर पी रहे हैं । बढ़ता शोर-कोलाहल आदमी के मस्तिष्क को पागल बनाने के लिए काफी है । जिस तरह से कुपोषण के कारण छोटे बच्चे मौत के मुँह में चले जाते हैं, उसी तरीके से इन कुप्रभावों से आदमी की शारीरिक और मानसिक सेहत अब खराब होने वाली है ।

मौसम के जानकारों का कहना है कि अगले दिन हमारे लिए मुसीबत के होंगे क्योंकि तापमान इस कदर बढ़ता चला जा रहा है कि उत्तरी और दक्षिणी ध्रुवों पर जो बर्फ जमा है, वह बेतहाशा गलने वाली है और जल प्रलय का दृश्य सामने आने वाला है । इतिहास बताता है कि पृथ्वी जब से बनी है तब से कई बार ऐसे मौके आए हैं जब जल प्रलय हुई है और आबादियाँ डूब गई हैं । धरती बिना आबादी के रह गई है । और क्या बुरे दिन नजदीक मालूम पड़ते हैं ?

सांख्यिकी के जानकारों से जब हम पूछते हैं कि आपका क्या ख्याल है तो वे भी लगभग यही बात कहते हैं कि अगले दिन बहुत खराब आ रहे हैं । क्यों आने वाले हैं ? इसलिए आने वाले हैं कि जनसंख्या बेहद बढ़ती चली जा रही है । जनसंख्या का पृथ्वी पर बढ़ना एक बहुत बड़ा जुर्म है, एक बड़ा जोखिम है । पृथ्वी के भीतर असंख्य प्राणियों को जीवित रखने लायक खुराक नहीं है और न इसकी लंबाई-चौड़ाई इतनी है कि रबर की तरीके से हम इसको फैला दें । इन्सानों की एक सीमित मात्रा ही इस पर रह सकती है और खुराक पा सकती है । लेकिन इंसान के ऊपर जहालत इस कदर हावी होती चली जा रही है कि कीड़े-मकोड़ों के तरीके से, चूहे और कुत्तों के तरीके से ढेरों के ढेरों पिल्ले और बिल्लियाँ पैदा होते चले जाते हैं और दुनिया के लिए

आफत पैदा करते रहते हैं । बच्चे यदि इसी कदर बढ़ते रहे तो आप देख लेना दुनिया भूखों मरेगी । फिर यह 'नेचर' ऐसे बेहूदे लोगों के लिए हमेशा तीन डंडे तैयार रखती है–एक महामारी, दूसरा अकाल और तीसरा महायुद्ध । 'इकॉलाजी' के हिसाब से महामारियाँ फैलेंगी और मक्खी, मच्छरों के तरीके से अनावश्यक रूप से बढ़ी हुई औलादों को समाप्त कर देंगी । तूफान आएंगे, लड़ाइयाँ होंगी, अकाल पड़ेंगे ताकि भूख के मारे जरूरत से ज्यादा बढ़ी हुई आबादियाँ खत्म हो जाएं । ये मुसीबतें आएंगी और जरूर आएंगी ।

और कौन क्या कह रहा था ? जो ग्रह–नक्षत्र विद्या के जानकार हैं, वे कह रहे थे कि पृथ्वी का खाविंद सूर्य है । ये दोनों मियाँ–बीबी के तरीके से रहते हैं । सूरज कमाता रहता है और पृथ्वी को भेजता रहता है । उसी के आधार पर पृथ्वी जिंदा रहती है, फलती–फूलती है और हरी–भरी बनी रहती है । अगर सूरज की कमाई इसके हिस्से में न आई होती तो वह मर गई होती, मंगल और बुध की तरीके से जल–गल रही होती या फिर प्लूटो और नेप्चून के तरीके से इतनी ठंडी होती कि वहाँ बर्फ के अलावा और कुछ न होता । यदि सूरज ने अपनी आँखें मोड़ ली होतीं तो यह शनि और शुक्र की तरह गैस का गुब्बारा बनकर रह रही होती । लेकिन यह सूरज की मोहब्बत है जिसकी कमाई यह खाती रहती है और उससे गर्मी और रोशनी लेती रहती है । 'लाइफ' कहाँ से आ गई धरती पर ? सूरज से । कीड़े–मकोड़े, जीव–जंतु, इंसान सभी इन्हीं दोनों के 'कॉम्बिनेशन' से पैदा हुए हैं । पृथ्वी और सूरज का बहुत घना संबंध है । अब इसमें फर्क आ गया है । तलाक की नौबत तो नहीं आने वाली है, लेकिन नाखुशी की बहुत परिस्थितियाँ पैदा हो गई हैं । सूरज का पहले का भी इतिहास है कि जब कभी भी पृथ्वी और सूरज के संबंधों में जरा भी फर्क आया है, घर में कलह उत्पन्न हो गया है । अब यह कलह फिर उत्पन्न होने वाला है । सन् १९८१ से सूरज के ऊपर 'स्पॉट्स' उत्पन्न होने वाले हैं जो लगातार बीस वर्ष तक चलेंगे । 'स्पॉट्स' किसे कहते हैं ? 'स्पॉट्स' उन्हें कहते हैं जिनमें कि एक–एक लाख मील लंबी लपटें–ज्वालाएं सूरज में से निकलती हैं और वे इतनी खतरनाक विकिरण पैदा करती हैं कि उसका सबसे बड़ा प्रभाव पृथ्वी पर पड़ता है । पहले भी कई बार ऐसे विकिरण आ चुके हैं और उसने पृथ्वी के संतुलन बिगाड़ दिए हैं । दूसरी बात अगले दिनों ऐसे सूर्य ग्रहण शृंखलाबद्ध रूप से आ रहे हैं जैसे कि ८०० वर्षों के इतिहास में कभी नहीं आए । इनका परिणाम सारा विश्व देखेगा ।

तीसरी बात जो खगोल विद्या के जानकार बताते हैं वह यह कि सन् ८१ के बाद में एक और आपत्ति आने वाली है-वृहस्पति गरम होने वाला है । अंतर्ग्रही परिस्थितियों के जानकार भी बतलाते हैं कि अगले बीस-पच्चीस साल सन् १९८० से २००५ तक का समय युग संधि का वह पक्ष है जो नुकसानदेय है, खौफनाफ पक्ष है । अखण्ड-ज्योति में आपने कई बार ऐसी भविष्यवाणियाँ पढ़ी होंगी । अब कुछ और लेख जनवरी और फरवरी १९८० के अंक में जा रहे हैं ताकि लोगों को आगाह किया जा सके । यह लोगों को डराने वाली बात नहीं है, वरन परिस्थितियों का विश्लेषण है । इसी तरह एक और तथ्य है जिसकी वजह से हम कह सकते हैं कि यह नुकसान के समय हैं । इसके लिए धर्मशास्त्रों की गवाहियाँ पेश कर सकते हैं । बाइबिल में ईसा की वह भविष्यवाणियाँ हैं जिन्हें 'सेवन टाइम्स' के नाम से जाना जाता है । उनके अनुसार यह समय सन ८० से सन २००० तक का समय होता है । उन भविष्यवाणियों का सारांश केवल तबाही है । इंसानों पर आने वाली तबाही है । कुरान की भविष्यवाणी को हम देखते हैं तो उसमें लिखा है कि १४ वीं सदी में कयामत आएगी । कयामत का मतलब नुकसान भी हो सकता है । अभी वह कयामत जिसमें पृथ्वी का सफाया हो जाएगा, बहुत देर की बात है, लेकिन नुकसान का समय जरूर नजदीक है, मुसलमानों के लिए ही नहीं हम सबके लिए भी । सूरदास के ग्रंथों से लेकर प्राचीन धर्मशास्त्रों, भविष्य पुराण, कल्कि पुराण आदि सभी भविष्यवाणियों से भरे पड़े हैं । इससे मालूम पड़ता है कि अगले बीस वर्ष तबाही के खौफनाफ वर्ष आ रहे हैं ।

युग-संधि का एक लक्षण यह होता है कि तबाही होती है । एक सत्ता उखाड़ी जाती है और दूसरी जमाई जाती है । क्रांतियाँ होती हैं । एक चले गए, दूसरे आ गए । नुकसान होते रहे । दुनिया में जब एक सत्ता उखड़ती है और दूसरी सत्ता आती है, तब हमेशा गड़बड़ियाँ फैलती हैं, नुकसान होते हैं, दूसरी बातें होती हैं । युग संधि का यह पक्ष नंबर एक हैं । इसका एक और पक्ष है-सुनहरा वाला पक्ष जिसको हम 'प्रसव पीड़ा' कहते हैं और उसका जिक्र भी कर चुके हैं । इसमें बीज गलता जाता है और अंकुर पैदा होता जाता है । धान रोपी जाती है, खुशी के गीत गाए जाते हैं कि अगले दिन फसल होने वाली है । भवन का शिलान्यास किया जा रहा है, नींव चिनी जा रही है और अगले दिनों भवन खड़ा हो जाएगा । यह क्या है ? उज्ज्वल भविष्य की संभावनाएं हैं-शिलान्यास के रूप में, अंकुर पैदा होने के रूप में, बच्चा पैदा होने के रूप

में । अगर आप देख सकते हों तो इन दिनों उज्ज्वल भविष्य की संभावनाएं भी सामने हैं । जिस युग संधि में हम रह रहे हैं उसे आपत्ति काल कह सकते हैं, आपत्ति धर्म कह सकते हैं । ऐसे समय में जाग्रत आत्माओं की विशेष जिम्मेदारी होती है । उनको कुछ खासतौर से देख-भाल करनी, साज-संभाल करनी पड़ती है । परिवर्तन की घड़ियों में खासतौर से देखभाल करना उन लोगों की खास जिम्मेदारी हो जाती है जो जगे हुए आदमी हैं जिनमें से मैं आपको भी शुमार करता हूँ ।

ऐसे समय कुछ खास समय होते हैं जिन्हें आपत्तिकालीन समय के नाम से पुकारते हैं । मसलन मोहल्ले में आग लग जाए, छप्पर जलने लगे, तो आपको सामान्य काम बंद कर देना चाहिए और बाल्टी लेकर, रेत लेकर के चल पड़ना चाहिए और जहाँ भी आग लगी है, बुझाना चाहिए । आपत्तिकालीन समय में आपत्तिकालीन फर्जों को अंजाम देना पड़ता है । दुर्घटनाएं घट जाएं, भूकंप आ जाएं, रेलगाड़ी का एक्सीडेंट हो जाए आपके पड़ोस में और सैकड़ों लोग घायल पड़े हों, तब आप यह नहीं कह सकते कि हमारे पास समय नहीं है, फुरसत नहीं है । यह कहना बंद कीजिए । इस तरह के जो काम सामूहिक जिम्मेदारी के होते हैं, उनको पूरा करने में लग जाना चाहिए । नए युग का, नए जमाने का, महाकाल का, प्रज्ञावतार का खासतौर से आप लोगों से तकाजा है, उन लोगों से जो जाग्रत हैं, जगे हुए हैं जिसमें मैं आपको शुमार करता हूँ, जिनकी कि अक्ल जनसाधारण से ऊँची है । जनसाधारण से मेरा मतलब है, वे आदमी जो सिर्फ पेट के लिए जिंदे रहते हैं । इनको अपने स्वार्थ के अलावा, अपने मतलब के अलावा दूसरी चीज दिखाई नहीं देती । उनको न भगवान दीखता है, न दया-धर्म दीखता है, न देश दीखता है, न संस्कृति दीखती है । लोभी, लालची और लिप्सा में डूबे हुए आदमी, हविस के मारे हुए आदमी को मैं जनसाधारण आदमी कहता हूँ । वे उस भगवान की पूजा करना चाहते हैं जो दोना भर-भर के दे जाता है, बाल-बच्चे पैदा कर जाता है और इनाम दे जाता है । ऐसे भगवान की पूजा बंद कीजिए । वह भगवान नहीं हो सकता जो आवश्यकता को देखे बिना, औचित्य और अनौचित्य को देखे बिना हर एक की मनोकामना पूरी करता रहता है । जो भगवान आज आदमी के ऊपर छाया हुआ है वह भगवान नहीं शैतान है । भगवान की कुछ परिभाषा होनी चाहिए, कुछ क्रम होना चाहिए । भगवान सिद्धांतों को कहते हैं, आदर्शों को कहते हैं, उत्कृष्टता को सचाई को

कहते हैं, ईमानदारी और वफादारी को कहते हैं, संस्कृति की सेवा को कहते हैं । आप लोग जो तीन महीने के शिविर में आए हैं उनमें से मुझे वे आदमी मालूम पड़ते हैं जो भगवान को जानते हैं, भगवान की परिभाषा जिनके दिमाग में आ गई है । जो भगवान से संबंध रखने वाले हैं, भगवान को प्यार करने वाले हैं । आप सामान्य मनुष्यों की अपेक्षा कुछ असामान्य मालूम पड़ते हैं । असामान्य मनुष्यों से मुझे कुछ कहना है । सामान्य मनुष्य को मैं जानता हूँ कि वह दुखियारा है । उस बीमार को दवा की जरूरत है । ये मेरे पास आते रहते हैं और मैं उनसे यही पूछता रहता हूँ कि बेटे, बता क्या बात है ? क्या तकलीफ है । हारी-बीमारी से लेकर बेटे-बेटी की शादी-ब्याह, नौकरी, पदोन्नति तक की बातें करते हैं और मैं उनसे यही कहता हूँ कि भगवान से प्रार्थना करेंगे और करा देंगे तेरा काम । बस उस गरीब को और क्या चाहिए ।

मित्रो, क्या होना चाहिए ? बालकों को गुब्बारे के अलावा, टॉफी और चाकलेट के अलावा कुछ नहीं मालूम । उनसे कुछ काम नहीं होने वाला । वे तो गोदी में खेलने लायक और प्यार करने लायक हैं । वे मुसीबत में कुछ सहायता करने वाले नहीं हैं । उन से धर्म-अध्यात्म की, लोक-परलोक की, भगवान की, समाज-संस्कृति की कुछ भी बात नहीं कहते । उनसे तो यही कहा जा सकता है कि अपना पेट भरिए, अपनी हविस पूरी करिए और इंसान के तरीके से गुजारा कीजिए । लेकिन आप से कहना है, क्योंकि आप में वह तत्व हमें दिखाई पड़ते हैं जो जीवंतों में होने चाहिए । जीवंत वे जो सामान्य मनुष्यों से ऊँचे उठे हुए होते हैं, जैसे आपने सुबह सूरज को निकलते हुए देखा होगा । सबसे पहले सूरज की किरणें पहाड़ों की चोटी पर आती हैं, पेड़ों पर आती हैं, फिर नीचे आते-आते जमीन पर आती हैं । भगवान भी उनके ऊपर आते हैं, जिनके पास दिल होता है, हृदय होता है, जिनके पास भावनाएं होती हैं । भगवान बंसरी बजाते हुए, डमरू बजाते हुए या तीर-कमान चलाते हुए नहीं आते । तो फिर क्या करते हैं ? वे सिद्धांतों को ले करके आते हैं, आदर्शों को लेकर के आते हैं । वे ऐसी भावनाएं और हूक लेकर के आते हैं जो ऊँचे स्तर के लोगों में, भावनाशीलों में दिखाई देती है ।

आप क्या कहना चाहते हैं ? मैं यही कहना चाहता हूँ कि इस युग-संधि की वेला में आप कुछ महत्वपूर्ण काम कर पाएं तो आपके लिए शान की बात, गरिमा की बात होगी । क्या करना चाहिए ? करने को तो ढेरों के ढेरों काम पड़े हैं, पर हमने इन तीन महीनों में जो आपको याद दिलाया है वह यह-

कि हमको जमाने की फिजाँ बदल देनी चाहिए । बहुत सारे संकट हैं, लेकिन दुनिया का सबसे बड़ा संकट–आस्था संकट है । अक्ल का संकट नहीं है । पुराने जमाने में कोई कोई पढ़े–लिखे होते थे, बाकी सारी की सारी जनता बिना पढ़ी थी । हमारी माताजी जिनके पेट से हम पैदा हुए हैं, बिल्कुल बिना पढ़ी थीं । उन्होंने हमें बालकपन से ही इस प्रकार के संस्कार दिए कि हम भूल नहीं सकते । हमारा सबसे बड़ा गुरु हमारी माँ हैं, जो हमारे भीतर नैतिक, सामाजिक और व्यक्तिगत जीवन के सारे के सारे गुणों को अपने दूध के साथ में पिला करके और गोदी में खिला करके हमको सिखाकर के गई थीं । और माताएं भी ऐसी हो सकती हैं । बहुत से आदमी ऐसे हो सकते हैं जिनके पास शिक्षा न हो और ऐसे आदमी शिक्षित हो भी सकते हैं जिनकी अक्ल का तो कहना ही क्या ? इसके बारे में कल भी कह चुका हूँ कि मालाबार हिल के ऊपर एक वकील रहता था जिसने हिंदुस्तान और पाकिस्तान के बीच में इस कदर खाई पैदा कर दी कि दोनों देशों में तबाही आ गई । यह है अक्ल जिसके ऊपर हम लानत भेजते हैं । आप लोगों को एक ही काम करना है कि इस अक्ल को, विचारों को बदल देना है । शोध–अनुसंधान वालों से भी हमने यही कहा है कि आप केवल एक चीज की शोध कीजिए कि आदमी की विवेक बुद्धि को और चिंतन के ऊँचे वाले स्तर को जो गड़बड़ा गया है, उसको ठीक कीजिए क्योंकि आज आदमी बुद्धिजीवी हो गया है । उसकी बुद्धि को हर क्षेत्र में पटक–पटक कर मारना है । जिस तरह धोबी कपड़े को पीट–पीट कर धुलाई करता है, वैसे ही अक्ल को पीट–पीट कर ठीक करना है । यह अक्ल जिसका दूसरा नाम–'बेअकली' है, जो अक्ल का लिबास ओढ़ करके आदमी के दिमाग और जीवन पर हावी हो रहा है, इसको पटक मारनी है जिससे इसको ठिकाने लगाया जा सके ।

अब आप क्या करना चाहते हैं ? अब हम एक और काम करना चाहते हैं कि हमारा छोटा सा समूह, छोटा सा समुदाय एक और प्लानिंग करके चले तो मजा आ जाए । ऐसे समय में हम मूकदर्शक हो करके नहीं रह सकते । हमारा छोटा सा जखीरा ऐसे समय में पानी पिलाने के लिए जागरूकों की टोली में चलेगा ही । अभी हम बच्चे हैं, छोटी बाल्टी हमारे पास है, हाथ छोटे हैं तो क्या हुआ, अपना फर्ज हमें पूरा करना ही चाहिए । युग–संधि के इस वर्तमान समय में कुछ काम करने की हैसियत में हम हैं, उसे पूरा करने के लिए हम आमादा हो जाएं तो ज्यादा अच्छा होगा । इसके लिए हमने चार

पंचवर्षीय योजनाएं बनाई हैं । हमारा अपना भी ऐसा ख्याल है या जिनका नियंत्रण हमारे ऊपर है, उनकी सलाह-मशविरा से भी हम-इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि अगले २० साल सन् ८० से लेकर सन् २००० तक का समय ऐसा है जिसमें एक कोने में 'नए युग' का पौधा विकसित होकर इस लायक हो जाएगा कि उसकी छाया में लोगों को बिठाया जा सके । हम विनाश को, जो संभावनाओं के रूप में डराता रहता है, उस स्थिति में नीचे कर सकेंगे, निरस्त कर सकेंगे । जिससे लोगों को राहत मिले और वे चैन की सांस ले सकें । आदमी का संतुलन २० साल में बन जाएगा, ऐसा हमारा ख्याल है । पाँच-पाँच वर्ष की चार योजनाएं जो हमने बनाई हैं, मैं नहीं जानता कि कब तक संभालूँगा पर मैं इतना जरूर कहता हूँ कि चारों योजनाओं के गति पकड़ने तक हम किसी न किसी रूप में कहीं न कहीं अपना वजूद कायम रखेंगे और यह कोशिश करेंगे कि नया युग लाने का जो आंदोलन शुरू किया है उसका फल भी देखने को मिल जाए ।

पहली योजना बहुत सिंपल है, दूसरी योजना उससे कठिन है, तीसरी योजना और कठिन है और चौथी योजना सबसे ज्यादा कठिन है । पाँच सूत्री कार्यक्रम प्रत्येक के लिए है । सबकी जानकारियाँ कराने से आप परेशान हो जाएंगे और कहेंगे कि इतना बड़ा प्लान है जिसे हम पूरा नहीं कर सकेंगे । अतः हम आपको प्रायमरी कक्षा की जानकारी देते हैं कि प्राथमिक योजना में आप व्यक्तिगत रूप से और सामूहिक रूप से वातावरण को संशोधित करने की कोशिश करें । जो फिजाँ और हवा लोगों को धकेले ले जा रही है जिससे हर चीज सूख गई है, उसे दूर करने और लड़ाई लड़ने के लिए हमको दो काम करने चाहिए । एक तो आप अपनी व्यक्तिगत साधना में पहली जनवरी से दो चीजें मिला दें । पहली यह कि नया युग लाने के लिए एक धारा, एक प्रवाह कहीं से चला है, हम उसी से प्रवाहित होते हैं और आपको भी प्रभावित करने के लिए उसी ताकत का इस्तेमाल करते हैं । जो महान शक्ति इतना बड़ा कार्य कर रही है, नए युग को ला रही है, उसके साथ संपर्क बनाने वाली साधना-उपासना जो बहुत सरल है, आप पहली जनवरी से चाहें तो कर सकते हैं । इसके लिए आपको नित्य प्रातःकाल साढे चार बजे सांस के रूप में उस प्राण को खींचना है । हम भी प्रातःकाल उस प्राण रूपी माँ के दूध को पीते हैं, शक्तियाँ आ जाती हैं । दिन भर हम उछलते रहते हैं, फुदकते रहते हैं । आप लोगों को, जाग्रत आत्माओं को उस दूध को जो प्रातःकाल प्राणधारा

के रूप में आता है, ग्रहण करना चाहिए और रात्रि को सोते समय वातावरण में उसे तीर कमान की तरह इस तरीके से छोड़ना चाहिए कि इस वातावरण को संशोधित करने में मदद कर सके । इसकी एक उपासना पद्धति है जिसे मैं फिर कभी समझा दूँगा कि दोनों उपासनाएं एक प्रातःकाल की और दूसरी रात्रि को सोते समय कैसे करनी चाहिए ?

दूसरा है महापुरश्चरण, जिसमें सामूहिक उपासना मुख्य है । सामूहिक उपासना में बड़ी शक्ति है । एक समय पर एक मन से एकाग्र होकर की गई उपासना स्वर विज्ञान के हिसाब से और शक्ति संचार के हिसाब से अद्‌भुत सामर्थ्य उत्पन्न करती है । इसलिए हम कहते रहते हैं कि गायत्री मंत्र एक साथ बोलिए । मंत्र एक साथ बोले जाते हैं । स्वर एक साथ होने चाहिए । हवन में भी हम साथ बोलने पर जोर देते रहते हैं । एक समय पर एक साथ एक क्रम से की हुई उपासना का वह फल होता है, जैसे कि लोहे के बड़े पुलों पर से होकर जब कभी सिपाही चलते हैं तो कदम मिलाकर लेफ्ट-राइट से उन्हें मना कर दिया जाता है क्योंकि उससे पुल टूटने का खतरा रहता है । आप लोग सामूहिक रूप से एक साथ एक ही समय एक सी ध्वनि, एक ताल-लय, एक नाद का उपयोग कर सकें तो स्वर विद्युत का एक बहुत बड़ा आधार विनिर्मित होगा और वातावरण के संशोधन का प्रयोजन पूरा करेगा । इस तरह एक व्यक्तिगत उपासना है और दूसरी सामूहिक । यह हमारे पंचवर्षीय योजना के आध्यात्मिक प्रयोग हैं । भौतिक और रचनात्मक प्रयोग अलग है जो अपने स्थान पर चलते रहेंगे ।

एक और भी हमारा प्रयत्न है और वह उससे भी ज्यादा शानदार है । देवात्माओं के अवतरित होने का ठीक यही समय है । देवात्माएं युग को संभालने के लिए, युग को परिवर्तित करने के लिए जन्म लेने को व्याकुल हो रही हैं । जब रामचंद्र जी आए थे तो उनके साथ में देवता आए थे । उन्होंने कहा था-जिस जमाने में आप पैदा हुए हैं, आदमी दो कौड़ी के हो गए हैं । आदमियों से सहायता नहीं मिलेगी आपको । मरने-मिटने के लिए और बड़े काम संभालने के लिए तो आदमी शायद ही मिल पाएं आपको, लेकिन हम चलेंगे और रीछ, बंदरों के रूप में सारे के सारे देवता चलने के लिए आमादा हो गए थे । उन्होंने रीछ-बंदरों के यहाँ जन्म लिया था, परंतु इंसानों के घरों के घुटन भरे वातावरण में जन्म लेने से मना कर दिया था और कहा था कि इन पेटुओं के यहाँ हम कैसे रहेंगे जिनमें कषाय और कल्मष भरे हुए हैं । जिन

घरों में स्वयंभू मनु और शतरूपा रानी की परंपराएं नहीं हैं, उन घरों में हम कैसे जिएंगे ? उनका कुधान्य खाकर हम कितने दिन जिएंगे ? इसलिए देवताओं ने मनाकर दिया था और रीछ-बंदरों के घरों में पैदा हुए थे ।

आज की आवश्यकताएं सूक्ष्म हैं । मैं आपसे सूक्ष्म बातें कह रहा हूँ, विशुद्ध अध्यात्म की बातें । स्थूल बातें, समाज सेवा की बातें, पुरुषार्थ की बातें कल करूँगा । इस समय का सबसे बड़ा काम यह है कि युग को बदलने के लिए सामान्य नहीं, असामान्य आदमियों की जरूरत है । इसके लिए भीम, अर्जुन, भरत और हनुमान चाहिए । इसके लिए स्वराज्य लाने वाले गांधियों, नेहरुओं और सुभाषचंद्रों की जरूरत है । बड़ी आत्माओं की, जबर्दस्त हस्तियों की जरूरत है । मैं चाहता हूँ कि हैवानों के पेट में से जन्म लेने के लिए देवताओं को मजबूर न होना पड़े और इंसानियत को कलंकित न होना पड़े । कितना ही अच्छा होता कि सन् १९८० से देवता इंसानों के यहाँ जन्म लेते । इसके लिए हमें घरों का वातावरण ठीक करना चाहिए । हमारे दांपत्य जीवनों में मनु और शतरूपा रानी के संस्कारों वाली परंपरा पैदा होनी चाहिए, ताकि देवताओं का आह्वान किया जा सके । हमारे घरों में कुंती की परंपरा पैदा होनी चाहिए ताकि देवता उनकी कोख में और गोद में खेलने के लिए रजामंद हो सकें । देवता हर एक के यहाँ नहीं आ सकते । शकुंतला के पेट में से भरत आए थे । सीता के पेट में से लव-कुश आए थे । घर-परिवारों में ऐसी परिस्थितियाँ फिर से पैदा करने के लिए ही हमने 'परिवार निर्माण योजना' को जन्म दिया है और कहा है कि परिवारों में धार्मिक वातावरण बनाइए । दांपत्य जीवन में पूजा-उपासना की, आरतियों की, पंचयज्ञों की, गायत्री माता को प्रणाम करने की न्यूनतम उपासना की परंपरा आरंभ कीजिए । सारे के सारे घरों का वातावरण बनाने के लिए, ताकि कोई देवात्मा यदि जन्म लेने को इच्छुक हों तो उनको मौका मिल सके ।

मित्रो ! हमने इस कुंभ मेले पर जाति-बिरादरियों के शिविर लगाए हैं । इस माध्यम से हम विवाह परंपरा में ब्राह्मविवाहों का प्रचलन करना चाहते हैं । ब्राह्मविवाहों से मतलब है-आदर्श विवाह, शालीनता के, बिना खर्च के विवाह । आज सभी जगह असुर विवाहों, दैत्य विवाहों का प्रचलन है जिसमें बेटे वाला बेटी वाले का पेट फाड़ डालता है । दोनों तरफ पैसे की होली जलती है । ऐसे घरों में देवता नहीं गुंडे, धूर्त, राक्षस और कंस पैदा होंगे, हिप्पी और एक्टर पैदा होंगे और जन्म देने वालों के लिए आफत पैदा करेंगे ।

इसीलिए हमने विवाह परंपरा को शानदार बनाया है और इसलिए शानदार बनाया है कि हमारे परिवारों में, हमारे घरों में देवता जन्म ले सकें । यदि यह परंपरा चल पड़ी, फिजाँ फैल पड़ी, एक की देखा-देखी दूसरे ने ग्रहण कर लिया, तब फिर हमारी आर्थिक, सामाजिक, नैतिक और भावनात्मक परिस्थितियों में जमीन-आसमान जैसा फर्क आ सकता है । यह वह चीज है जो हमने पहली तीन पंचवर्षीय योजना में शामिल की है चौथी और भी अधिक क्रांतिकारी है जिसका जिक्र मैं कल करूँगा । आज अपनी बात यहीं समाप्त करता हूँ ।

ॐ शांतिः । *(२४ दिसंबर १९७९)*

युग शक्ति का अवतरण-प्रकाट्य

देवियो एवं भाइयो ! ये जमीन जिस दिन भगवान ने बनाई उसी दिन प्राणियों को भी बनाया, उसी दिन सूरज को भी बनाया । मुद्दतें हो गईं किसी का किसी से कोई खास संबंध नहीं हो सका । जब मनुष्य की बुद्धि का विकास हुआ तो उसने सूरज की धूप को, रोशनी को अपने कब्जे में करने की कोशिश की । सबसे पहले मिली उसे आग । जिस दिन उसे अग्नि प्राप्त हो गई, मनुष्य और जानवर के बीच फर्क पड़ना शुरू हो गया । आग ने मनुष्य का कायाकल्प कर दिया । आदमी की भौतिक जिंदगी में प्रगति की एक क्रांति खड़ी हो गई । मुद्दतें बीत गईं । मुद्दतों के बाद एक और आग मनुष्य के हाथ लगी जिसका नाम है विद्युत, बिजली । आज से पाँच सौ-चार सौ साल पहले बिजली आदमी के हाथ में आई व इसने आदमी की दुनिया ही बदल दी । पाँच सौ साल पहले के आदमी की और आज के आदमी की तुलना आप नहीं कर सकते । आज बिजली के कारण इतनी सुविधाएं हैं । तब की कल्पना कीजिए जब आदमी आज से पाँच सौ साल पहले बिना बिजली के अँधेरे में बिना यंत्रों के काम करता होगा । टार्च की रोशनी से लेकर अनेक कामों तक व टेलीफोन से लेकर कितने ही कामों तक बड़ी-बड़ी फैक्ट्रियाँ चलाने तक आदमी के काम बिजली ही आई व इसने मानव जीवन में एक क्रांति ला दी ।

ताप की एक तीसरी और शक्ति मनुष्य के हाथ में आई । तीसरे ताप का नाम क्या है-'एटम' । 'एटम' की, अणु की शक्ति आदमी के हाथ न आई

होती तो अब तक इतनी लड़ाइयाँ लड़ी गई होतीं कि दुनिया से तीन चौथाई आदमी खत्म हो गए होते । फर्स्ट वर्ल्ड वार हुआ, सेकंड वर्ल्ड वार हुआ लेकिन उसके बाद माहौल में गरमी इतनी अधिक बढ़ी-चढ़ी थी, स्वार्थ इतने बढ़े हुए थे कि अगर ये एटामिक हथियार हाथ में न आए होते तो आज तक न जाने कितनी लड़ाइयाँ हो चुकी होतीं और हर जगह न जाने क्या-क्या मुसीबतें आ गई होतीं । ताप ने, 'एटम' की शक्ति ने रोक दिया मनुष्य को कि लड़ना मत । जो कोई भी लड़ेगा, मारा जाएगा । छोटे-मोटे हमले आप लोग कर सकते हैं पर बड़ा युद्ध तो हमला करने वाले को भी तहस-नहस कर देगा । बड़ी तादाद में आपने कदम बढ़ाए तो यह एटॉमिक एनर्जी आपको खत्म करके रख देगी ।

ताप की इन तीन शक्तियों ने मनुष्य के हाथों में साधन दिए, उसकी भौतिक उन्नति कर उसे न जाने कहाँ से कहाँ पहुँचा दिया लेकिन एक शक्ति ऐसी है ताप की जो पहले से मौजूद थी व जिसने आदमी का कायाकल्प किया है । वह है ज्ञान की शक्ति । एक ज्ञान वह है जो शिक्षा के रूप में, उसकी भौतिक शक्ति के रूप में हमारे समक्ष है । जिससे हम डाक्टर बन जाते हैं, मास्टर, वकील बन जाते हैं, शिल्पी बन जाते हैं, कलाकार बन जाते हैं । हथियार, पैसे की तरह यह भी भौतिक शक्ति है । आदमी की खुशहाली के काम आती है लेकिन यह वह नहीं है जिससे आदमी आदमी बनता है, जीवन को ऊँचा उठाना सीखता है । वह शक्ति जो आदमी को खुशी देती है, शांति देती है, उसके जीवन में संवेदना का रस पैदा करती है, मानव-मानव के मध्य सहयोग की भाषा सिखाती है, परस्पर स्नेह और दुलार पैदा करती है, सहकारिता की आधार शक्ति है, वह विद्या है । यह थी तो पहले से लेकिन आदमी के हाथ में जब से आई, आदमी न जाने क्या से क्या होता चला गया । जानवर से आगे बढ़कर सही अर्थों में मानव बन गया । यह ज्ञान की शक्ति, विद्या की शक्ति का अवतरण कब धरती पर हुआ ? यह हम देखते हैं तो पाते हैं कि सृष्टि के प्रारंभ में आकाशवाणी हुई थी व ब्रह्माजी को यह कहा गया था कि आपको तप से ज्ञान प्राप्त करना चाहिए । तब उनके हाथ गायत्री मंत्र आया । ब्रह्माजी ने गायत्री मंत्र के चार चरणों को चार व्याख्यानों में विभाजित कर उसको प्रतिपादित करना आरंभ कर दिया । इन चार व्याख्यानों का नाम पड़ गया चार वेद । कब की बात है यह ? यह बड़ी पुरानी बात है । वेदों की उस सभ्यता व संस्कृति का आगमन क्या हुआ, आदमी आदमी नहीं रह गया,

देवता बन गया । इस देश में रहने वाले सभी जीवधारी जिनका नर तन था, तैंतीस कोटि देवताओं में गिने जाने लगे ।

आदमी नहीं । आदमी तो मामूली होते हैं पेट भरते हैं और जिंदा रहते हैं किसी तरह लेकिन देवता वे होते हैं जो खुश रहते हैं और खुश रखा करते हैं । खीज उनके पास कभी आ नहीं सकती क्योंकि शैतान उनके पास नहीं आता । हैसनी, बीमारी, खीज, चिंता, दुःख, क्लेश ये सब पाप की, शैतान की देन हैं । जब आदमी देवता बन गया तो ये सब संताप चले गए । देवता दिव्य होता है, खूबसूरत होता है, जवान होता है, हर आदमी की जरूरतें पूरी करता है । देवता बड़ा जबर्दस्त होता है और हर भारतीय नागरिक किसी जमाने में देवता था । कब से था ? जब से वह ताप हाथ में आया, जिसे मैं ज्ञान का ताप कहता हूँ, विद्या का ताप कहता हूँ और दूसरे शब्दों में गायत्री का ताप कहता हूँ । इसके आते ही आदमी देवता बन गया, निहाल हो गया । उस समय धन-दौलत तो कम थी, पर प्रसन्नता-संतोष ज्यादा था और वही सबसे बड़ी संपत्ति है । तब अपेक्षाकृत गरीबी थी लेकिन गरीब होते हुए भी मनुष्य कितना सुखी, कितना मोहब्बत-दुलार सहयोग-सुख से भरा था मैं आपको क्या बताऊँ मित्रो ! सौ वर्ष तक जिंदा रहते थे लोग क्योंकि मजेदार जिंदगी थी । आज हमारी आत्मा इन्कार करती है, कहती है हम जिंदा नहीं रहना चाहते । आत्मा जब कभी नाखुश होती है तो शरीर कहता है कि ठीक है आप जाइए जैसी आपकी मर्जी हो । आत्मा चली जाती है, जल्दी मर जाती है, शरीर किसी तरह जिंदा रहता है । आत्मा विहीन जिंदगी-यह बड़ी घिनौनी जिंदगी है जो जी रहा है आज का आदमी । इसमें भीतर सब कुछ जलता रहता है, रोम-रोम, नस-नस, अंतःकरण जलते रहते हैं । कोई भी ठंडी चीज इस आग को मिटा नहीं सकती । मित्रो ! पुराने जमाने की मैं याद करता हूँ तो यह बात सही मालूम पड़ती है । 'स्वर्गादपि गरीयसी' स्वर्ग से श्रेष्ठ यह भूमि किसी जमाने में रही होगी, मैं यह विश्वास करता हूँ । न बस थी, न टेलीफोन थे किंतु फिर भी स्वर्गादपि गरीयसी थी । स्वर्ग किसे कहते हैं ? जहां आदमी रहते हैं और आदमी-आदमी के बीच वे रिश्ते होते हैं जिन्हें देखकर आदमी की हिम्मत बँध जाती है, धीरज बँध जाता है । मेहमान को 'अतिथि देवोभव' कहकर घर में सम्मान से बिठाया जाता था । आज तो यदि अतिथि आ जाए तो आप सावधाना रहना । उसे ठहरने मत देना । सारी आफत मचा देगा वह । होशियार रहना उससे । कहना-"भाई साहब ! आप होटल में ठहरिए ।"

अतिथि आपके घर ठहरने लगा तो आपकी बहन-बेटियों का कोई ठिकाना नहीं । मित्रो ! आज जीवन नरक बन गया है क्योंकि सामान बहुत है, पैसा बहुत है पर उसका उपयोग करने की अक्ल देने वाली विद्या कहीं नहीं । वह विद्या, वह ज्ञान जिससे खुशहाली आती थी, जिसे संक्षेप में गायत्री मंत्र कहते हैं ।

ब्रह्माजी का दिया हुआ यह हथियार गायत्री मंत्र जिस दिन से मनुष्य जाति को मिला, उसी समय से उसे ज्ञान, चैन, संतोष, नैतिकता, प्रेम, सहयोग मिलने का सिलसिला चालू हो गया । यह इंसान की जिंदगी में सौभाग्य का दिन था । उसीने आपको, हमको, सबको एक धागे से जोड़ रखा है । हम सबको एक धागे में पिरो दिया है । ब्रह्माजी ने वेदों के ज्ञान के रूप में ऋषियों को यह विभूति दी और वही गायत्री अब युगशक्ति बनने जा रही है । इसी गायत्री का एक छोटा वाला रूप है-'प्रतीक पूजा' । क्या होती है प्रतीक पूजा ? बेटा ! प्रतीक उसे कहते हैं जिसमें किसी चीज का छोटा सा रूप सामने रख देते हैं, यह प्रतीक कहलाता है । प्रतीक नमूने को कहते हैं । जैसे आप हमारा फोटो ले जाएं । फोटो को आप माला चढ़ा दें । क्या है यह ? यह प्रतीक पूजन है । वस्तुतः कागज में कुछ भी नहीं है । कागज के पीछे जो व्यक्ति है, उसमें आपकी गहन श्रद्धा है, गहन जान-पहचान है । उसके प्रति आप अपनी मोहब्बत को, श्रद्धा को कायम रखने के लिए प्रतीक पूजन करते हैं । गायत्री की प्रतीक पूजा वह है जो हमने आपको आज से तीस साल पहले सिखाई थी । हमने यह बताया था आपको कि कैसे पंचपात्र हाथ में लेकर आचमन करना चाहिए, चोटी में गाँठ लगाना चाहिए । चौकी पर एक तस्वीर रखकर धूप, दीप, रोली, अक्षत चढ़ाना चाहिए । माला जपनी चाहिए । यह क्या था ? यह प्रतीक था । यह आपने क्यों कराया ? प्रतीक इसलिए कराया कि आपको उसकी बारीकियाँ, गहराइयाँ समझने का मौका मिले । हमें जानकारी बनी रहे कि गायत्री मंत्र क्या है, कितना महान है । घड़ी हमें अपने कर्तव्यों का भान कराने के लिए घंटे बजाती है इसी तरह हम आप से कहते थे कि रोजाना पूजन करना चाहिए । आपकी भौतिक व आध्यात्मिक प्रगति इस पर टिकी हुई है इसीलिए हमने आपसे नियमित गायत्री करने को कहा । किंतु यदि आपने गायत्री मंत्र की क्षमताएं व उसके भीतर छिपे रहस्य नहीं जाने तो क्या कहेंगे, मैं उसे नित्य कर्म कहूँगा । नित्य कर्म उन बहुत कामों को कहते हैं जो रोज करना जरूरी हैं । यदि आप रोज नहाएं तो क्या बाल-बच्चे हो

जाएंगे, रुपया मिल जाएगा ? नहीं बेटे, हम वायदा नहीं कर सकते । आपकी मर्जी है आप रोज नहाएं, चाहे न नहाएं । नहीं नहाएंगे तो बीमार पड़ेंगे । पर नहाने से कोई पुण्य मिलेगा, यह भी जरूरी नहीं है । इसे नित्य कर्म कहते हैं । रोज मन पर छाने वाली धूल को, गंदगी को साफ करने के लिए गायत्री मंत्र के उस स्वरूप की जरूरत है, जिसे हम प्रतीक पूजा कहते हैं । वो काफी है और उसका महत्व वहीं तक है ।

अगला वाला महत्व फिर शुरू होता है । उसी की आज सबसे बड़ी जरूरत है । ऐसा साहस देने वाला है यह गायत्री का अगला वाला स्वरूप, जो आदमी को व्यक्तित्ववान बनाता है, महापुरुष बनाता है, ज्ञानवान बनाता है, तपस्वी बनाता है । गायत्री मंत्र जिसे हम याद करते हैं, बार-बार कहते हैं, हमें बताता है कि गयः का त्राण करने वाली गायत्री । गय कहते हैं प्राणों को । इसका एक ही मतलब है जब कभी गायत्री मनुष्य के जीवन में प्रवेश करती है, उसके अंदर प्राण भर देती है, जीवट भर देती है । जीवट वह है जो अंदर से कुछ कर गुजरने की उमंग पैदा करती है । गायत्री व्यक्तिगत जीवन को समुन्नत बनाती है, खुशहाल बनाती है, समृद्ध बनाती है, दीर्घजीवी तथा मजबूत बनाती है । ऐसी गायत्री सिखाती है कि दौलतमंद तो बनो पर अंदर की हिम्मत भी इकट्ठी करो तभी दौलत का सही उपयोग कर सकोगे । पैसा कभी भी ताकत नहीं बन सकता । ताकत कौन सी ? वह जो आदमी का व्यक्तित्व है, उसके भीतर का दृष्टिकोण है, वह ताकत । आज जो आदमी कमजोर होता चला जा रहा है ज्ञान के हिसाब से, समृद्धि के हिसाब से, व्यक्तित्व के हिसाब से, तो एक ही चीज की जरूरत थी वह थी हमारे भीतर की प्राण शक्ति की । प्राणों का विस्तार करने के लिए, अंदर की ताकत बढ़ाने के लिए हम गायत्री का विस्तार करते हैं, आपसे गायत्री का जप करने को कहते हैं ।

गायत्री एक साइंस है । एटम की साइंस से भी बड़ी ताकत है । ऐसी शक्ति है जो सारी मनुष्य जाति ही नहीं, प्राणी मात्र ही नहीं, सारे ब्रह्मांड से संबंध रखती है । ऐसी ताकत है जो आदमी के भीतर उमंगों के रूप में, आदर्शों के रूप में, श्रेष्ठताओं के रूप में आती है व जीवन का कायाकल्प करती चली जाती है । इसी गायत्री के अवतार की बात हम आपसे कह रहे थे । कह रहे थे, युगशक्ति का अवतार होने जा रहा है । कैसे होगा ? यह होगा छोटे-छोटे मनुष्यों की चेतना के विकास के रूप में । चेतना का विकास अगले दिनों होकर रहेगा । मनुष्य जाति के भाग्य का फैसला होकर रहेगा ।

इंसान के अंदर का फिर देवता पैदा होगा, भगवान पैदा होगा । मानव में देवत्व आएगा और धरती पर स्वर्ग आएगा । हर व्यक्ति अपने सामाजिक जीवन में हिस्सा बँटाएगा ।

इंसान अपने आप तक सीमित नहीं रह सकता अब । इंसान सामाजिक प्राणी है इसलिए उसे समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन करना चाहिए । पीड़ा और पतन में दो कसौटियाँ भगवान ने दी हैं इंसान की परख करने के लिए । व्यवहार की पीड़ा और बौद्धिक पतन मनुष्य का कम करने में हम क्या मदद कर सकते हैं ? यह भगवान हमसे पूछता है । आप कर सकते हैं तो आप अच्छे इंसान हैं और खरे सोने के समान हैं । यही खुशहाली लाने वाला, मानव मात्र को एक बनाने वाला, तीसरा वाला चरण है जिसके ऊपर नवयुग की आधार शिला रखी जाने वाली है ।

मित्रो ! इस समय मनुष्य जाति के भाग्य का उदय होने वाला है । इंसान फिर सिर उठाकर चलेगा । इंसान का गर्दन झुकाकर चलना मुझे नापसंद है । आदमी की कमर झुकी हो तो कोई बात नहीं किंतु सिर झुका हुआ नहीं रहना चाहिए । आग की लौ की तरह से, अग्नि देव की लपटों के तरीके से आदमी को सिर उठाकर, ऊँचा करके चलना चाहिए । यही गायत्री मंत्र का चमत्कार होगा, युग शक्ति का चमत्कार होगा कि कमजोर से आदमी में इतनी हिम्मत, इतनी ताकत आ जाएगी कि वह सिर उठाकर चलना सीख लेगा । युग शक्ति का अवतार अर्थात एक ऐसी जीवट का पैदा होना जिसमें सिद्धांतों की और आदर्शों के परिपालन की बहादुरी आदमी में पैदा हो सके । दूसरा चमत्कार होने जा रहा है धरती पर स्वर्ग के अवतरण का । धरती स्वर्ग बनने जा रही है । जिसमें आदमी आदमी से प्यार करना सीखेगा । प्यार के साथ सहयोग भी करेगा । सहयोग और प्यार जब साथ-साथ रहें तो मैं समझता हूँ कि धरती पर स्वर्ग आ गया, खुशहाली आ गई । गरीबी रहेगी तो रहे, कोई हर्ज की बात नहीं है किंतु कृपणता नहीं रहना चाहिए । संतों में से हर एक के पास गरीबी थी, पर वे कृपण नहीं थे । गरीबी से आदमी दुःखी नहीं होता । दुःखी कृपणता से होता है । कृपण कौन ? तंग दिल, प्यार-मोहब्बत न बाँटकर संकीर्णता फैलाने वाला दरिद्र व्यक्ति जो बाहर से न सही, चिंतन की दृष्टि से दरिद्र है ।

आप प्यार बाँटेंगे तो बदले में प्यार मिलेगा । आप बच्चों को प्यार नहीं दे सके इसीलिए आप बच्चों के प्यार से महरूम हैं, आपने बाप को प्यार दिया

नहीं, इसलिए आप उनके आशीर्वाद से महरूम रह गए । आपने समाज के कर्तव्यों का पालन किया नहीं, इसलिए आपकी समाज ने उपेक्षा की, कोई सहायता नहीं की । प्यार से ही सहयोग मिलता है, सम्मान मिलता है । ऐसी धरती की कल्पना, मित्रो ! मैं करता हूँ जिसमें सब एकदूसरे के साथ प्यार व सहकार करेंगे । कब ? जब जन-जन तक गायत्री का संदेश पहुँचेगा तब । लेकिन गायत्री एकाकी नहीं है । गायत्री ज्ञान पक्ष है और यज्ञ उसका कर्म पक्ष है । ज्ञान एकाकी नहीं हो सकता । एकाकी ज्ञान में कोई दम नहीं है । एकाकी ज्ञान पंडितों के पास होता है, फिलास्फरों के पास होता है । ज्ञान और कर्म का समन्वय होना चाहिए । गायत्री और यज्ञ का समन्वय होना चाहिए । इसीलिए आपके समक्ष इस साधना स्वर्ण जयंती वर्ष में हमने एक कार्यक्रम सुपुर्द किया है कि इस तत्वज्ञान को घर-घर पहुँचाने का जिम्मा उठाइए । हम आपको बदले में इनाम देंगे । दौड़ लगा के दिखाइए, इनाम पाइए । नहीं साहब, वैसे ही दे दीजिए । नहीं मित्रो ! भगवान, इस युग में जितनी भी देवात्माएं हैं, उन्हें कुछ उपहार देना चाहता है । इतिहास की भूमिका में आपके लिए यह एक सुनहरा मौका है । इसके बाद युगों-युगों तक ऐसा मौका नहीं आने वाला । गाँधी फिल्म आई थी । उसमें नमक सत्याग्रह वालों को जाते हुए हम देखते रहे । यह महादेव भाई जा रहे हैं, यह प्यारे लाल जा रहे हैं, यह हरिभाऊ उपाध्याय जा रहे हैं । हम नाबालिग थे अतः नहीं जा पाए । हम पछताते रह गए । आए हुए समय को चूकने वाला पछताता ही रहता है । अब आप जेल जाएंगे तो स्वतंत्रता सेनानी की न पेंशन मिलेगी, न मिनिस्टर का पद । वो जो समय आया था न वह चूक गए । अब कुछ नहीं हो सकता ।

मैंने आपको इस समय इसीलिए बुलाया कि यह चूकने का समय नहीं है । खाने-कमाने के लिए पूरी जिंदगी आपकी है । सारी जिंदगी थी व जो आपकी बची हुई है वह भी उसी में लगने वाली है । गायत्री माता की कृपा आपके भीतर नहीं होने वाली और कभी । यह एक महत्वपूर्ण समय है, युग परिवर्तन का समय है । इसमें आपका सहयोग बन सके तो उन कार्यों को करिए जो भगवान ने हमारे गुरुदेव के सुपुर्द किए और हमारे गुरुदेव ने हमें सुपुर्द किए । हम आपके सुपुर्द करना चाहते हैं ताकि सारे संसार में गायत्री मंत्र का विस्तार हो । यह मात्र हिंदुओं तक सीमित न रहे । यह ब्राह्मणों का मंत्र मात्र बनकर न रह जाए बल्कि विश्व मानव का मंत्र बने । कभी यह गायत्री वेदमाता थी । कब थी ? जब वह ज्ञान के रूप में, आग के रूप में, ताप के

रूप में अवतरित हुई थी । अब क्या हो गई ? अब यह नाम बदल गया । अब वह देवमाता हो गई-देवत्व जिनके रोम-रोम में उतर जाए उनकी माता और अब बनने जा रही हैं-विश्वमाता । विश्वमाता से क्या मतलब है ? विश्वमाता से मतलब है सारा विश्व एक नए आधार पर बनने जा रहा है । एक नई संस्कृति आ रही है । एक नया सार्वभौम धर्म आ रहा है । सारी दुनिया इस एक ही केंद्र के ऊपर इकट्ठी होने जा रही है, बँधने जा रही है । एक आचार संहिता में, मातृभाव में बँधने जा रहे इस विश्व के निर्माण में आपकी भागीदारी हो, इसके लिए आपको मैं इस महापुरश्चरण में, धर्मानुष्ठान में भागीदारी करने के लिए आमंत्रित करता हूँ ।

मैंने उज्ज्वल भविष्य के सपने देखे हैं और सबको दिखाए हैं । मैं उन लोगों में से नहीं हूँ जो सतत डराते रहते हैं । सूरज की तबाही दुनिया की तबाही । नहीं मित्रो ! भगवान की तबाही कभी नहीं आएगी, खुशहाली की तबाही कभी नहीं आएगी । आएगा तो अब उज्ज्वल भविष्य और धरती पर स्वर्ग व आधार बनेगा मानव में देवत्व । कैसे ? गायत्री के तत्वज्ञान से, भारतीय संस्कृति के अनुगमन से । आप समय रहते उससे जुड़ सकें, औरों को जोड़ सकें, इससे बड़ी समझदारी और क्या हो सकती है ।

मेरी बात समाप्त । ॐ शांतिः शांतिः शांतिः । *(२६ फरवरी १९७६)*

आज के प्रज्ञावतार की, युग देवता की अपील

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि
धियो यो नः प्रचोदयात् ।

देवियो, भाइयो ! मनुष्य के जीवन में अनेक प्रकार के सौभाग्य आते हैं और उन सौभाग्यों के लिए आदमी सदा अपने आपको सराहता रहता है, पर ऐसे सौभाग्य कभी-कभी ही आते हैं, हमेशा नहीं । शादी-ब्याह कभी-कभी ही होते हैं, रोज नहीं । 'कन्वोकेशन' में डिग्री रोज नहीं मिलती, वह जीवन में एकाध बार ही मिलती है, जब हाथ में डिग्री लिए और सिर पर टोप पहने हुए फोटो खिंचवाते हैं । सौभाग्य के ऐसे दिन कभी-कभी आते हैं, उनमें लाटरी खुलना और कोई ऊँचा पद पाना भी शामिल है । लेकिन आदमी का सबसे बड़ा सौभाग्य एक ही है कि वह समय को पहचान पाए । आदमी समय को

पहचान ले तो मैं समझता हूँ कि इससे बड़ा सौभाग्य दुनिया में कोई हो ही नहीं सकता । खेती-बाड़ी सब करते हैं, लेकिन जो किसान वर्षा के दिनों सही समय पर बीज बो देते हैं, वे बिना मेहनत किए अपने कोठे भर लेते हैं । गेहूँ की फसल लेने के लिए जो समय को पहचान कर बीज बोते हैं वे अच्छी फसल कमा लेते हैं । अगर बीज बोने का समय निकल जाए तब फसल की पैदावार की आप उम्मीद नहीं कर सकते । शादी-ब्याह की एक उम्र होती है और जब समय निकल जाता है तो आदमी को कई बार बहुत हैरानियाँ बरदाश्त करनी पड़ती हैं, लगभग असफलता के नजदीक पहुँच जाता है वह । जो आदमी समय को पहचान लेते हैं, वे बहुत नफे में रहते हैं । विज्ञापन निकलते रहते हैं और जो अखबारों को देख लेते हैं कि हमारे लिए जगह खाली है, तुरंत अर्जी भेज देते हैं । गाड़ियों में रिजर्वेशन होता है । जो समय पर पहुँच जाते हैं, लाइन में लग जाते हैं, उन्हें गाड़ी में सीट मिल जाती है । जो टाइम को पास कर देते है, निकल जाने देते हैं, वे बहुत हैरान होते हैं ।

अभी मैं समय की महत्ता बता रहा था आपको । किसलिए बता रहा था ? इसलिए कि जिस समय में हम और आप रह रहे हैं वह ऐसा शानदार समय है कि आपकी जिंदगी में और इतिहास में फिर नहीं आएगा । आप लोगों की जिंदगी में तो दूर, आने वाली कई पीढ़ियाँ भी इसके लिए तरसती रहेंगी और कहेंगी कि हमारे बाप-दादे ऐसे समय में पैदा हुए थे । जो इसका फायदा उठा लेंगे उनकी घर-परिवार में सराहना होती रहेगी, समाज में, इतिहास में उनका नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेगा और जो सनक में बैठे रहेंगे, भूल में बैठे रहेंगे वे स्वयं पछताते रहेंगे और बाद में उनकी पीढ़ियाँ पछताती रहेंगी और कहेंगी कि ऐसे शानदार समय में हमारे बाप-दादों ने क्यों मुनासिब कदम नहीं उठाए ? यह कैसा शानदार समय है । चलिए मैं इसके कुछ आपको उदाहरण देना चाहता हूँ जिससे कि आप समझ सकें कि यह कैसा समय है और इस शानदार समय में आप थोड़े से मुनासिब कदम बढ़ा सकते हों तो मजा आ जाएगा ।

आपको मैं अवतार के किस्से सुनाता हूँ । जब कभी भी अवतार हुए हैं, जब कभी भी महापुरुष हुए हैं तब उनके साथ कदम से कदम मिलाकर चलने वाले लोगों को मैं बहुत भाग्यवान कहता हूँ और बहुत समझदार मानता हूँ । उनमें से एक का नाम था हनुमान, हनुमान कौन थे ? सुग्रीव के वफादार नौकर का नाम था हनुमान । सुग्रीव को जब उसके भाई ने मार-पीट कर भगा

दिया, बीवी-बच्चे छीन लिए, तब सुग्रीव अपने वफादार नौकर के साथ ऋष्यमूक पर्वत पर रहने लगे । एक समय आया जब रामचंद्र जी आए तो सुग्रीव ने हनुमान को भेजा था । हनुमान जी वामन-ब्राह्मण का रूप बनाकर उनके सामने गए थे कि कहीं ऐसा न हो कि हमारे साथ मारपीट होने लगे । तो क्या हनुमान जी कमजोर थे ? न होते तब बालि के साथ लड़ाई की होती और अपने बॉस की बीवी को नहीं छिनने दिया होता और अपनी जायदाद नहीं छिनने दी होती । लेकिन जब हनुमान जी ने समय को पहचान लिया और रामचंद्र जी के कंधे से कंधा मिलाया, कदम से कदम मिलाया तो क्या आप समझ सकते हैं कि किसी महत्वपूर्ण शक्ति के साथ कंधा मिलाने की क्या कीमत हो सकती है ? क्या फायदा हो सकता है ? आप तो अंदाज नहीं लगा पा रहे हैं, लेकिन हनुमान जी ने लगा लिया था और वह हिम्मत दिखाई थी जो आदर्शों को जीवन में उतारने के लिए आवश्यक है । आदर्शों को पालन करने के लिए शक्ति की जरूरत नहीं है, साधनों की भी जरूरत नहीं है । साधन तो आप सबके पास हैं, पर अध्यात्म एक ही चीज का नाम है-ऊँचे आदर्शों के लिए हिम्मत । इसी अध्यात्म को हनुमान जी ने पकड़ लिया और पकड़ने के बाद में रामचंद्र जी से कहा कि हम आपके काम आएंगे और आपकी मदद करेंगे । बस, यह शानदार हिम्मत हनुमान जी ने दिखाई और उस समय को पहचानने के बाद में आपको नहीं मालूम वे शक्ति के स्रोत बन गए और गजब के काम करने लगे । पहाड़ उखाड़ने लगे, समुद्र छलांगने लगे और लंका में रावण और उसके सवा दो लाख राक्षसों को चेलेंज करने लगे । कुंभकरण जैसों के साथ हनुमान जी अकेले लड़ने लगे ।

क्यों साहब, क्या बात थी कि हनुमान जी में इतनी ताकत कहाँ से आ गई ? यह वहाँ से आ गई जहाँ से उन्होंने अध्यात्म को अपने जीवन में उतार लिया था । अध्यात्म जीभ की नोक तक, पूजा की चौकी तक सीमित नहीं रहता । अध्यात्म उस चीज का नाम है याद रखना-'ऊँचे सिद्धांतों को अपने जीवन में धारण करने की हिम्मत को अध्यात्म कहते हैं ।' इससे कम भी कोई अध्यात्म नहीं है और इससे ज्यादा भी कोई अध्यात्म नहीं है । हनुमान जी ने वही अध्यात्म ग्रहण कर लिया । पूजा की थी, अनुष्ठान किया था, जप-तप किया था ? नहीं, तो फिर कैसे हो गया ? ऊँचे उद्देश्यों के लिए भगवान के कंधे से कंधा मिलाकर वे चल पड़े थे और निहाल हो गए । इससे बड़ी कोई तपस्या नहीं होती है । नल-नील ने पत्थरों का पुल बनाया था जो पानी

पर तैरता था । इतने बड़े समुद्र पर पत्थरों से ऐसा पुल बना दिया था कि जिसमें न पाये लगे हुए थे, न झूला लगा हुआ था, न गर्डर फैंसे थे और न सीमेंट की जरूरत हुई । ऐसे ही खाली पत्थर फेंकते गए और उनका बन गया पुल । क्यों साहब यह हो सकता है ? हाँ यह हो सकता है । कैसे हो सकता है ? ऊँचे उद्देश्यों के लिए, खासतौर से उस समय जबकि भगवान अवतार लिया करते हैं, तब जो आदमी उनके कंधे से अपना कंधा मिला लेते हैं वे शानदार हो जाते हैं और अपनी भूमिका निभाते हैं । रीछ-वानरों ने भी भगवान की सहायता के लिए वही काम किए थे । लकड़ी, ईंट-पत्थर ढोकर लाते और नल-नील के पास जमा करते जाते थे । क्यों साहब, यह कोई बड़ा काम था क्या, बताइए ? कोई बड़ा काम नहीं था, लेकिन भगवान के, अवतार के साथ, उनकी क्रिया-पद्धति के साथ जुड़ जाने की वजह से वे रीछ-बंदर भी न जाने क्या से क्या हो गए । हम उनकी कितनी प्रशंसा करते हैं, संतों, महात्माओं, योगियों की भी उतनी नहीं करते और रीछ-बंदरों का, जब तक उनका इतिहास में जिकर आता रहेगा वे अजर-अमर होते रहेंगे । क्यों ? उनकी क्या विशेषता थी ? एक तो यह कि उन्होंने समय को पहचान लिया कि यह सही समय है । सीता जी वापस आ जाती तब कोई हनुमान कहता कि हम तो रामचंद्र की सेना में भर्ती होंगे और सीता को तलाश करके लाएंगे, यह मौका हमको भी दीजिए । तब रामचंद्र जी यही कहते कि नहीं, हनुमान भाई साहब, अब समय निकल गया । आप समय भी नहीं देखते क्या ? ऐसे समय कभी-कभी ही आते हैं ।

इसी तरह गिलहरी ने क्या किया था ? अपने बालों में बालू भर कर लाती और समुद्र में पटक देती थी । बालों में बालू भर लेना कोई पुश्किल और बड़ा काम नहीं है । गिलहरियाँ ऐसे ही घूमती रहती हैं, बालू में बैठी रहती हैं और बालू भर जाती है फिर क्या खास बात थी उसमें ? यह थी कि उसने समय को पहचान लिया था कि अब भगवान आए हुए हैं, उन पर एहसान करना चाहिए । भगवान की जरूरत में, आवश्यकता में मदद करनी चाहिए । यह समझदारी उसने की और फिर गिलहरी कैसी हो गई । मैं क्या कहूँ गिलहरी के लिए भाई साहब कि वह कितनी शानदार हो गई भगवान का काम करने से । रामचंद्र जी ने उठा लिया और छाती से लगाया, उसकी पीठ पर हाथ फेरने लगे । उससे बहुत मुहब्बत की । किसके लिए ? बालू के लिए । नहीं, राई भर बालू से क्या होता है । उन्होंने सिद्धांतों के प्रति उसकी हिम्मत के लिए,

निष्ठा के लिए, उसकी जुर्रत के लिए उसको प्यार किया । मैंने सुना है कि जो गिलहरी रामचंद्र जी की सहायता करने आई थी, उसकी पीठ पर उनने प्यार से अपनी अँगुलियाँ फिराई थीं और वे धारीदार निशान आज भी गिलहरियों की पीठ पर पाए जाते हैं । धन्य हो गई थी वह गिलहरी जो रामचंद्र जी के लिए बालू लेकर आई थी । उसने समय को पहचान लिया था । समय को आप नहीं जानते क्या ? समय को आप नहीं पहचान सकते क्या ?

मित्रो, भगवान जब भी आते हैं तो उसके कई मकसद होते हैं । एक तो आपने पहले ही सुन रखा है कि वह धर्म की स्थापना करने के लिए और अधर्म का नाश करने के लिए आते हैं । यह दो मकसद तो आपको मालूम ही हैं, रामायण में भी आपने पढ़ा है, सब जगह पढ़ा है । यह दो ही बातें पढ़ी हैं न आपने, अच्छा तो एक और बात हमारी ओर से आप जोड़ लीजिए जो रामचंद्र जी ने या कृष्ण भगवान ने अपनी ओर से तो नहीं कही है, लेकिन हम अपनी ओर से कहते हैं-एक तीसरी बात । क्या कहते हैं ? जो सौभाग्यशाली हैं, उनके सौभाग्य को चमका देने के लिए, निष्ठावानों को, अपने भक्तों को सिर और माथे पर रखने के लिए भी भगवान आते हैं । उनको उछाल देने के लिए भी भगवान आते हैं । उनको इतिहास में अजर-अमर बना देने के लिए भी भगवान आते हैं । जो इस मौके को पहचान लेते हैं वे धन्य हो जाते हैं । केवट को उन्होंने धन्य बना दिया । केवट ने क्या काम किया था ? नाव में बिठाकर के रामचंद्र जी को पार लगा दिया था बिना कुछ कीमत लिए । तो गुरुजी चलिए हम भी आपको कार में बिठाकर घुमा लाएं और आप हमें केवट बना दीजिए । नहीं भाई साहब अब मुश्किल है । अब हम नहीं बना सकते । तब वे खास मौके थे तब आपने पहचाने नहीं और अब शिकायत करते हैं, अपने कर्म को दोष देते हैं कि ऐसा वक्त आया था और हम कुछ कर नहीं सके । मित्रो, शबरी ने भगवान को बेर खिलाए थे जिसकी प्रशंसा करते-करते हम थकते नहीं । भगवान ने शबरी से कहा-शबरी हम भूखे हैं । भगवान को जरूरत पड़ी थी, वे भूखे थे । आपकी अपनी जरूरत है, पर कभी-कभी भगवान को भी जरूरत होती है और मनुष्य के लिए वही सौभाग्य के वक्त हैं । शबरी ने मौके को पहचान लिया था । भगवान को जरूरत है, वे माँग रहे हैं, सो उसने उनकी भूख बुझाने के लिए बेर खिलाए थे । केवट ने भी भगवान की जरूरत को पहचान लिया था कि उनके पास नाव नहीं है । वे इंतजार में खड़े हुए हैं कि कोई आए और हमको नाव में बिठाकर पार लगा दे ।

मित्रो ! आदमियों की अपनी जरूरत होती है, यह तो मैं नहीं कहता कि जरूरत नहीं होती, पर कभी-कभी भगवान को भी आदमियों की जरूरत होती है । हमेशा नहीं कभी-कभी जरूरत पड़ती है और उस कभी-कभी को, मौके को जो पहचान लेते हैं वे गिलहरी के तरीके से, केवट के तरीके से, शबरी के तरीके से और रीछ-वानरों के तरीके से उनकी सहायता के लिए चल पड़ते हैं और धन्य बन जाते हैं । गिद्धों को आप जानते हैं, जब वे बूढ़े हो जाते हैं तो आपस में लड़ाई-झगड़ा करने लग जाते हैं । गिद्धों का मरना कोई बड़ी बात नहीं है, लेकिन एक गिद्ध ने समय को पहचान लिया था कि हमारी जरूरत है । किसको ? सीताजी को जरूरत है कि कोई हमारी सहायता करे और चल पड़ा और धन्य हो गया । क्यों साहब, हम भी बूढ़े हो जाएं और ऐसा कुछ करें ? नहीं भाई साहब, अब वह वक्त चला गया, आप समय को तो पहचानते नहीं । भगवान कभी-कभी हाथ पसारता है । आदमी तो भगवान के सामने हमेशा हाथ पसारता रहता है, पर भगवान आदमी के सामने कभी-कभी हाथ पसारता है और जब कभी वह हाथ पसारता है, तो उसकी हथेली पर कोई भी कुछ रख देता है तो रवींद्रनाथ की कविता के मुताबिक उसकी झोलियाँ सोने से भर जाती हैं । टैगोर की एक कविता है-'मैं गया भीख माँगने द्वार-द्वार इकट्ठी कर झोली गेहूँ के दानों से, एक आया भिखारी, उसने पसारा हाथ । मैंने एक दाना उसकी हथेली पर रखा, चला गया भिखारी । घर आया तो मैंने अनाज की झोली को पलटा । उसमें एक सोने का दाना रखा हुआ था ।' टैगोर ने बंगला गीत में गाया-'मैं सिर धुन-धुन के पछताया कि मैंने क्यों नहीं अपनी झोली के सारे दाने उस भिखारी को दे दिए ।' उस भिखारी से मतलब-भगवान से है, समय से है । समय-समय पर जब कभी भगवान हाथ पसारते हैं और जो कोई उस समय को, मौके को पहचान लेते हैं और भगवान के पसारे हुए उस हाथ पर कुछ रख देते हैं, वे न जाने क्या से क्या हो जाते हैं ।

भगवान के और किस्से सुनाऊँ आपको ? वक्त बहुत चला गया, इसलिए और भगवान की तो मैं नहीं कहता, पर एक भगवान को जो कल-परसों हो के चुका है, उसकी बात मैं कहता हूँ । उसने भी हाथ पसारा था । उसका नाम था-गाँधी । गाँधी जी ने भी हाथ पसारा था और उनकी हथेली पर जिन लोगों ने रखा था, उनका क्या-क्या हो गया आपको मालूम नहीं है । वे स्वतंत्रता संग्राम सेनानी हो गए, ताम्र पत्र धारी हो गए और तीन-तीन सौ रुपये पेंशन पाने लगे । यह खानदान त्यागियों का खानदान है । मित्रो !

मिनिस्टर उसी में से हुए हैं । अब तो बात दूसरी है, लेकिन शुरू के दिनों में जब आजादी आई थी तो सिर्फ वे ही मिनिस्टर बने थे जो स्वाधीनता सेनानी थे । आप वक्त को नहीं पहचानते, आप भगवान को नहीं जानते कि वह कभी-कभी हाथ पसारता है । जिस समय हमने आपको बुलाया है, आप यकीन रखें यह वह समय है जिसमें दुनिया बेतरीके से बदल रही है । आप तो यह भी नहीं देख पाते कि पृथ्वी घूम रही है । आपकी अक्ल कहती है कि पृथ्वी अपनी धुरी पर सनसनाती हुई चलती जा रही है, पर आँखें कहती हैं कि घूम रही होती तो हमारा मकान पूर्व से पश्चिम की ओर हो जाता । किसी को अपनी मौत कहाँ दिखाई देती है ? इसी तरह आपको जमाना बदलता हुआ दिखता है क्या ? नहीं दिखाई पड़ता । आपको भगवान का चौबीसवां अवतार होता हुआ दिखाई पड़ता है क्या ? दुनिया का कायाकल्प होता हुआ दिखाई पड़ता है क्या कि किस बुरी तरीके से गलाई-ढलाई हो रही है । आपको दिखाई न पड़ता हो तो देखिए कि हिंदुस्तान का ही पिछले बीस-तीस साल में क्या हो गया । कभी यहाँ राजा छाए हुए थे । तीन चौथाई हुकूमत राजाओं की थी । अब है कोई राजा ? पच्चीस साल में सब तबाह हो गए । जागीरदार और जमींदार देखे हैं आपने, न देखें हों तो राजस्थान चले जाइए । वहाँ जगह-जगह किले, गाँव-गाँव किले, जो अब खंडहर के रूप में पड़े हैं, उन्हीं के अवशेष हैं । सब कुछ समय बहा ले गया । राजा भी चले गए, जमींदार भी चले गए और कौन चले गए ? साहूकार भी चले गए जो कभी गिरवी रखने और अच्छा खासा ब्याज कमाने का धंधा किया करते थे । बीस सालों में बहुत कुछ बदल गया ।

मित्रो, इन दिनों दुनिया दो तरीके से बदल रही है । इसे कौन बदल रहा है ? बीसवीं सदी का अवतार, जिसे हम प्रज्ञावतार कहते हैं । आदमी की अक्ल बहुत ही वाहियात है । इस अक्ल ने सारी दुनिया को गुत्थियों में धकेल दिया है । जितनी ज्यादा अक्ल बढ़ी है, संसार में उतनी ही ज्यादा हैरानी बढ़ी है । आप कालेजों में, विश्वविद्यालयों में चले जाइए । पहले वहाँ अराजक तत्व, अवांछनीय तत्व कहाँ रहते थे, पर देखिए सारी खुराफातें कहाँ से जन्म ले रही हैं ? आपको बदलता हुआ जमाना दिखाई नहीं पड़ता, आजकल बहुत हेर-फेर हो रहा है । इस अक्ल ने दुनिया को हैरान कर दिया है । इस अक्ल की अक्ल से धुलाई करने के लिए एक नई अक्ल पैदा हो रही है, जिसका नाम है-'महाप्रज्ञा' । चौबीसवां अवतार प्रज्ञा के रूप में जन्म ले रहा है ।

आपको तो नहीं दिखाई पड़ता होगा शायद, पर आप हमारी आँखों में आँखें डालकर देखें । हमारी आँखें बहुत पैनी हैं और बहुत दूर की देखने वाली हैं । हमारी आँखों में टैलिस्कोप लगे हुए हैं । आप आइए जरा हमारी आँखों में आँखें डालिए, फिर देखिए क्या हो रहा है । जमाना बेहद तरीके से बदल रहा है । यह कौन बदल रहा है ? भगवान बदल रहा है । भगवान के अवतार जब कभी भी दुनिया में हुए हैं तब भक्तजनों को अपना सौभाग्य चमकाने का मौका मिल गया है । ऊपर हमने भगवान राम का उदाहरण दिया है, अभी और दूँ उदाहरण । अच्छा तो बुद्ध का और श्रीकृष्ण भगवान का उदाहरण देता हूँ आपको । कुब्जा जो चंदन लगा देती थी, उसके उदाहरण दूँ । कितने उदाहरण दूँ आपको । भगवान के अवतारों के साथ में जिन्होंने थोड़े से भी अहसान कर दिए, वे धन्य हो गए । भगवान तो क्या महापुरुषों के साथ भी जिन्होंने थोड़ा सा भी कंधा लगा दिया वे राजगोपालाचारी हो गए, बिनोवा हो गए । उनका नाम पटेल हो गया, नेहरू हो गया, जाकिर हुसैन हो गया, राधाकृष्णन हो गया, राजेंद्र बाबू हो गया । जिनका मैं नाम गिना रहा हूँ वे सभी हिंदुस्तान के बादशाह हो गए । वे इसलिए बादशाह हुए कि कोई खास अवतार युग को बदलने आया है और उसी की बिरादरी में शामिल हो गए, उसके कंधे से कंधा मिलाकर साथ-साथ चलने की अपनी जुर्रत-हिम्मत दिखा दी ।

आज का वक्त भी ऐसा ही है आप देखिए न । उस अवतार के साथ अगर आप कंधे मिला सकते हों, चरण मिला सकते हों, आप उसके पीछे चल सकते हों, उसका भार बँटा सकते हों तो मैं आप में से हर आदमी से कहूँगा कि अगले दिनों आप इतने शानदार, इतने भाग्यवान व्यक्ति कहलाएंगे कि आपका सौभाग्य आपके लिए सहायता ही देगा । हमने क्या किया है ? आप क्या समझते हैं कि हमने किताबें लिखी हैं, लेख लिखे हैं, लेक्चर देते हैं, पूजा करते हैं । अरे भाई साहब, पूजा तो हम चार ही घंटे करते हैं, पहले छः घंटे करते थे, पर अब चार ही घंटे करते हैं । आपको हम ऐसे आदमी बता सकते हैं जो हमसे चौगुनी पूजा करते हैं । दुनिया में और दिल्ली में चले जाइए वहाँ ढेरों के ढेरों आदमी रहते हैं और अपने बाल-बच्चों का पेट पालते रहते हैं । स्कूलों में, कालेजों में लेक्चर होते हैं, लेक्चर देना उनका धंधा ही है, रोटी ही इस बात की मिलती है उनको । फिर आपको इस तरह के मौके क्यों मिलते चले जा रहे हैं ? क्या वजह है इसकी ? इसकी एक ही वजह है कि

हमने यह पहचान लिया है कि भगवान का अवतार होता हुआ चला आ रहा है । अवतार के साथ कंधे से कंधा मिला कर, उसके कदम से कदम बढ़ाकर चलने का हमने निश्चय कर लिया कि साथ-साथ रहेंगे । उसके साथ अपनी जान की बाजी लगाएंगे । तब परिणाम क्या होता है ? वही जो आग और लकड़ी का होता है । दो कौड़ी की नाचीज लकड़ी जब आग के साथ मिल जाती है तो उसकी कीमत आग के बराबर हो जाती है । जिस लकड़ी को कल बच्चे उछालते फिर रहे थे, आग के साथ रिश्ता हो जाने की वजह से आज वही कहती है कि हमें छूना मत, आप हमारा गलत इस्तेमाल मत करना । आज आपने यदि हमको फेंक दिया तो हम आपके छप्पर को जला देंगे, गाँव को जला देंगे । एक घंटे पहले मैं लकड़ी थी, पर अब मैं आग हूँ । तो आग कैसे हो गईं आप ? हमने एक ही हिम्मत की है कि अपने आपको आग के साथ में घुला दिया है, मिला दिया है । अगर आप भी ऐसा कर सकते हों तो मैं आपको सौभाग्यवान कहूँगा ।

साथियों, भगवान तो अपना काम करेंगे ही, आप करें तो, न करें तो भी । तो क्या रामचंद्र जी रावण को मार सकते थे ? बिल्कुल मार सकते थे । रामचंद्र जी में इतनी शक्ति थी कि रावण सहित एकोएक राक्षस को मार डालते और अकेले अपने बलबूते पर सीता जी को छुड़ा लाते । लेकिन उनको श्रेय देना था । भक्तों को श्रेय ऐसे ही मौके पर दिया जाता है । भक्त की परीक्षा ऐसे ही मौके पर होती है और वे समय शानदार होते हैं । इम्तहान रोज-रोज कहाँ होते हैं ? भक्तों के भी इम्तहान हमेशा नहीं होते, बहुत दिनों बाद होते हैं । जिसमें आपको बुलाया गया है, उसमें नवरात्र का अनुष्ठान करने के लिए ही आपको नहीं बुलाया है । आप अनुष्ठान करते हैं बहुत अच्छी बात है । यहाँ गंगा का किनारा, हिमालय की गोद, गायत्री तीर्थ के पवित्र वातावरण में आप गायत्री का जप कर रहे हैं, यह बहुत ही प्रसन्नता और सफलता की बात है, पर आप याद रखिए हमने केवल अनुष्ठान करने के लिए ही आपको नहीं बुलाया । हमारे मकसद बड़े हैं और वे यह हैं कि आप ऐसे सौभाग्य वाले समय में क्या कुछ लाभ उठा सकते हैं ? क्या आप समय को पहचान सकते हैं ? क्या आप भगवान की सहायता कर सकते हैं ? क्या आप अपने जीवन में कुछ हिम्मत इकट्ठी कर सकते हैं ? हम इसीलिए बुलाते हैं और हर एक आदमी से बार-बार यही सवाल पूछते रहते हैं कि क्या आप इस शानदार समय को पहचान सकते हैं ? क्या आपकी अक्ल इतनी मदद करेगी कि आप

इस शानदार समय को पहचान लें ? अगर आपकी अक्ल इतनी सहायता कर दे और यह बता दे कि यह बहुत ही शानदार समय है तो फिर हम आपको एक और सलाह देते हैं कि ऐसे वक्त आप एक और हिम्मत कर डालना । कौन सी हिम्मत ? आप भगवान की माँग को तलाश करें और उसको पूरा करने की कोशिश करें । भगवान की भी कुछ माँगें होती हैं । उनने आप से भी कुछ माँगा है । उन माँगों को पूरा करने के लिए जरा आप कोशिश करें तो मजा आ जाए ।

क्या माँगें हैं भगवान की ? आप अखण्ड ज्योति के सब पाठक हैं और जानते हैं कि युगावतार ने क्या माँगा है ? प्रज्ञावतार ने यह माँगा है कि हम लोगों के दिमाग की सफाई करें, विचारों की सफाई करें । 'प्रज्ञा' इसी का नाम है । आदमियों के दिमाग पैने तो हो गए हैं, अक्ल तो बहुत पैनी हो गई है । अक्लमंद तो इतने हो गए हैं कि आप देखेंगे तो हैरान रह जाएंगे । अक्लमंद आदमियों ने जहाँ एक ओर बड़ी-बड़ी इमारतें बनाई हैं, बड़े-बड़े पुल बनाए हैं, बाँध बनाए हैं वहीं दूसरी ओर इन्हीं अक्लमंदों ने लोहा, सीमेंट, सब के सब हजम कर लिए हैं । जहाँ भी, जिस भी डिपार्टमेंट में चले जाइए सब जगह अक्लमंद लोग मिलेंगे । बेअक्ल लोग तो बेचारे चप्पल चुरा सकते हैं । अक्लमंद लोगों ने सारी दुनिया को धोखा दिया है । दुनिया का सफाया करने की पूरी जिम्मेदारी अक्लमंदों की है । हिंदुस्तान और पाकिस्तान का बँटवारा कराकर लाखों आदमियों का खून करा देने की जिम्मेदारी अक्लमंदों की ही है । आम बेचने वालों की नहीं । यह सब बड़े दिमाग वालों की है । इसलिए बड़े दिमाग वालों के मस्तिष्क की सफाई करने के लिए ही तो ऐसी लहर आ रही है जो दुनिया में सोचने के तरीके को बदल देगी । प्रज्ञावतार इसीका नाम है । प्रज्ञावतार की क्या माँगें हैं, इसको हम बराबर छापते रहे हैं । इसको फिर से कहने की जरूरत नहीं है, पर प्रज्ञा अभियान के रूप में आप इस लहर को समझ सकते हैं । यह प्रज्ञा अभियान इंसान का नहीं है, अगर इंसान का होता तो हमारे जैसे आदमी इसके लिए कमजोर पड़ते । लेकिन उस महाशक्ति का काम करने के लिए जब हम आमादा हैं तो फिर आप हमारी सफलताओं को नहीं देखते । आपको हमारी सफलताएं दिखाई नहीं पड़तीं । आप देखिए । हमारी सामर्थ्य, प्रतिभा, क्षमता और अक्ल को भी देखिए, सिद्धियों को भी देखिए, सब कुछ देखिए । पर मैं एक और बात कहता हूँ आप से कि आप तो इसको देखने की परिस्थिति में भी नहीं हैं क्योंकि जिस

आँख से आप देखना चाहते हैं वह आँखें ऐसी नहीं हैं जो हमारी आध्यात्मिक सफलताओं को और हमारे प्रयासों द्वारा संसार में जो हेर-फेर हो रहे हैं और होने जा रहे हैं, उनको आप देखने में समर्थ हो सकें ।

मित्रो, आप देखें या न देखें, पर सारी सफलताएं शानदार हैं । आप जरा फिर देखना, अभी तो हम हैं, कब तक जिएंगे कह नहीं सकते, लेकिन आप लोगों में से अधिकांश आदमी जिएंगे । जिएंगे तो फिर देखना और नोट करना कि हमारी सफलताएं कितनी शानदार होती हैं ? क्यों होती हैं ? क्योंकि हमने अवतार के साथ में कंधे से कंधा मिलाकर हनुमान के तरीके से काम करने का निश्चय कर लिया है । राधा एक साधारण से ग्वाले की लड़की का नाम था, किंतु नाचने के लिए वह थोड़े दिन तक कृष्ण का साथ देती रही और राधा हो गई । किसको किसको कहें, शानदार शक्तियों का साथ देने वाले न जाने कहाँ से कहाँ पहुँच गए और क्या से क्या हो गए । इसलिए इस शिविर में हमने आपको खासतौर से यह दावत देने के लिए बुलाया है कि अगर आपका मन बड़े फायदे उठाने का है और बड़े फायदे लायक अगर आपका व्यक्तित्व है, हिम्मत है तो आप आइए, इस मौके को गँवाइए नहीं । इस मौके से पूरा-पूरा फायदा उठाइए । आप लोगों में से हर एक को हम झकझोरते हैं, घर से निवृत्त हो चुके हैं, जिनके पास कोई महत्वपूर्ण जिम्मेदारियाँ नहीं हैं, उन सबसे हम प्रार्थना करते हैं, अनुरोध-आग्रह करते हैं कि अगर आप किसी तरीके से अपना गुजारा कर सकते हों तो आप आइए और हमारी मिलिट्री में भर्ती हो जाइए । आप में से हर आदमी को प्रज्ञावतार के कंधे से कंधा मिलाने के लिए हम दावत देते हैं, विशेषकर उन लोगों को जिन्होंने अपनी आदतें ठीक कर रखी हैं, परिश्रमी हैं, चरित्रवान हैं और जिनका वजन भारी नहीं है अर्थात जिम्मेदारियों का बोझ हल्का है । ऐसे लोगों के लिए सबसे बेहतरीन काम यह है कि अपना गुजारा करने के बाद में वे समाज के काम आएं, देश के काम आएं ।

मित्रो, आप में से हर उन आदमियों को भी हम दावत देते हैं जो भावनाशील हैं, जिनके ऊपर बहुत भारी वजन नहीं है, तब तो हम ठहरने के लिए कहेंगे । लेकिन थोड़ा वजन है तो उनकी भी सहायता करेंगे । हमें २४ हजार शक्तिपीठों के लिए उतने ही कार्यकर्ता चाहिए । इन इमारतों में प्राण भरने के लिए हमें कार्यकर्ताओं की जरूरत है । चौबीस हजार की भर्ती करनी है हमें । आप स्वयं अपना इंतजाम कर सकने की स्थिति में हों तो ठीक है,

अन्यथा हम आपके खाने का, कपड़े का, जेब खर्च का इंतजाम बिठा देंगे । आपके बीवी-बच्चों के लिए भी जो मुनासिब खर्च होगा, वह भी हम देंगे । कौन है हमारी पीठ के पीछे, आपको तो दिखाई नहीं पड़ता । आप आँख खोलिए और देखिए कि हमारे पीछे बहुत शानदार शक्ति है । हम खाली हाथ हैं तो क्या हुआ हमारा गुरु तो खाली हाथ नहीं है । हम अपने 'बॉस' के बारे में विश्वास करते हैं । हमें यह भी विश्वास है कि अगर हमें दो हजार कार्यकर्त्ता रखने पड़े तो भी पैसों का इंतजाम हम कर देंगे । उनमें से अधिकांश नौकर रखने पड़े तो भी पैसों का इंतजाम हम कर देंगे । इसलिए एक विज्ञापन निकाल देंगे कि जिसे नौकरी करनी हो सीधे शांतिकुंज चले आवें । एक लाख आदमी अगले ही महीने में एप्वाइंट करके दिखा दूँ आपको । युग परिवर्तन के लिए बहुत बड़े काम करने पड़ेंगे, परंतु यह काम नौकरों से नहीं हो सकेगा । यह काम भावनाशीलों का है, त्यागियों का हे । इसलिए हम आपकी खुशामदें करते हैं कि हमको भावनाशील आदमियों की जरूरत है, जिनको हम प्रामाणिक कह सकें, जिनको हम परिश्रमी कह सकें । जो परिश्रमी हैं वे प्रामाणिक नहीं हैं और वे जो प्रामाणिक एवं परिश्रमी हैं उनको मिशन की जानकारी नहीं है । हम इनको कब तक सिखाएंगे, कितना सिखाएंगे, इनको सिखाने में कितना समय लगेगा ? हमारे पास समय बहुत कम है । हमको आदमियों की जरूरत है, अगर आप स्वयं उन आदमियों में शामिल होना चाहते हों तो आइए हम स्वागत करते हैं और आपको यह विश्वास दिलाते हैं कि आप जो भी काम करते हैं, उन सब कामों की बजाय यह बेहतरीन धंधा है । इससे बढ़िया कोई धंधा नहीं हो सकता । हमने किया है, इसलिए आपको भी यकीन दिला सकते हैं कि यह बहुत फायदे का धंधा है ।

इन दिनों हमारे पास केवल दस लाख आदमी हैं जो बहुत कम हैं । सारी दुनिया में चार सौ पचास करोड़ आदमी रहते हैं । अकेले हिंदुस्तान में इन दिनों सत्तर करोड़ से ज्यादा आदमी हो गए हैं । इन सब तक पहुँचने के लिए दस लाख आदमी बहुत थोड़े हैं । अब हमें अपने कार्य क्षेत्र का विस्तार करने के लिए आपकी सहायता की जरूरत है । इसके लिए अब हमको वह वर्ग ढूँढ़ना पड़ेगा जिसको विचारशील वर्ग कहते हैं, भावनाशील वर्ग कहते हैं, त्याग और बलिदान के लिए आगे बढ़ने वाला वर्ग कहते हैं । अब हमें इंजीनियरों की जरूरत है, डाक्टरों की जरूरत है, सिपाहियों की जरूरत है, ओवरसियरों की जरूरत है । हमको उनकी जरूरत है जो राष्ट्र के निर्माण के

काम आ सकें । नए वर्ग में, नए क्षेत्र में जाने के लिए आप सब हमारी मदद कर दीजिए । क्या काम करेंगे ? हमने एक बहुत ही शानदार भवानी तलवार निकाली है । ऐसी शानदार योजना दुनिया में आज तक नहीं बनी । क्या बनी है ? हमने हर दिन हर पढ़े-लिखे को नियमित रूप से बिना मूल्य युग साहित्य पढ़ाने की योजना बनाई है । आप पढ़े-लिखे लोगों तक हमारी आवाज पहुँचा दीजिए, हमारी जलन को, हमारी चिनगारियों को पहुँचा दीजिए । लोगों से आप यह मत कहना कि गुरुजी बड़े सिद्ध पुरुष हैं, बड़े महात्मा हैं और सबको वरदान देते हैं, वरन यह कहना कि गुरुजी एक ऐसे व्यक्ति का नाम है जिसके पेट में से आग निकलती है, जिसकी आँखों में से शोले निकलते हैं । आप ऐसे गुरुजी का परिचय कराना, सिद्ध पुरुष का नहीं । विचार क्रांति अभियान को हमने युग साहित्य के रूप में लिखना शुरू कर दिया है और हर आदमी को स्वाध्याय करने के लिए मजबूर किया है । हमारे विचारों को आप पढ़िए और हमारी आग की चिनगारी को जो प्रज्ञा अभियान के अंतर्गत युग साहित्य के रूप में लिखना शुरू किया है, उसे लोगों में फैला दीजिए । जीवन की वास्तविकता के सिद्धांत को समझिए, ख्वाबी दुनिया में से निकलिए और आदान-प्रदान की दुनिया में आइए । आपके नजदीक जितने भी आदमी हैं उनमें आप हमारे विचार फैला दीजिए । यह काम आप अपने काम करते हुए भी कर सकते हैं । आप युग साहित्य लेकर अपने सर्किल में पढ़ाना, अपने पड़ोसियों को पढ़ाना शुरू कर दीजिए । उनको हमारे विचार दीजिए, हमको आगे बढ़ने दीजिए, संपर्क बनने दीजिए और आप हमारी सहायता कर दीजिए ताकि हम उन विचारशीलों के पास, शिक्षितों के पास जाने में समर्थ हो सकें । इससे कम में हमारा काम चलने वाला नहीं है और न ही हमें संतोष होगा । मित्रो, हमारे विचारों को लोगों को पढ़ने दीजिए । जो हमारे विचार पढ़ लेगा, वही हमारा शिष्य है । हमारे विचार बड़े पैने हैं, तीखे हैं । हमारी सारी शक्ति हमारे विचारों में सीमाबद्ध है । दुनिया को हम पलट देने का जो दावा करते हैं वह सिद्धियों से नहीं अपने सशक्त विचारों से करते हैं । आप इन विचारों को फैलाने में हमारी सहायता कीजिए । अब हमको नई पीढ़ी चाहिए इसके लिए आप पढ़े-लिखे विचारशीलों में जाइए, उनके घरों में जाइए, खुशामदें करिए, उनका जन्मदिन मनाइए, दरवाजा खटखटाइए और हमारी विचारधारा उन तक पहुँचाइए । यह हमारा नया कार्यक्रम है ।

मित्रो, युग साहित्य पढ़ाना, प्रज्ञा अभियान पढ़ाना, जन्मदिन मनाना-यह

तीन कार्यक्रम प्रज्ञा अभियान के अंतर्गत आते हैं । आप में से जो आदमी प्रज्ञापुत्रों के रूप में हमारे साथ शामिल हो सकते हैं, वे अंगद के तरीके से आएं, नल-नील के तरीके से आएं, हनुमान के तरीके से आएं, गिलहरी के तरीके से आएं, शबरी के तरीके से आएं, केवट के तरीके से आएं । आएं तो सही, कुछ करें तो सही हमारे लिए । हम आपके लिए करेंगे आप हमारे लिए करिए । हमने गायत्री माता के लिए किया है और गायत्री माता ने हमारे लिए किया है । हमने अपने गुरु के लिए किया है और गुरु ने हमारे लिए किया है । क्या आप हमारे काम नहीं आएंगे ? आप हमारे काम आइए और हम आपके काम आएंगे । अब हमारा हर एक कार्यक्रम में जाना नहीं हो सकेगा, लेकिन आप में से हर एक सक्रिय कार्यकर्ता को साल भर में एक बार अपने गुरुद्वारे में अवश्य आना चाहिए । अभी तक आप हमारे पास वरदान माँगने के लिए आते रहे हैं, पर अब हम आपसे वरदान माँगते हैं । आपके पसीने का वरदान, आपकी मेहनत का वरदान । जब आप देने के लिए आना, कुछ पसीना बहाने के लिए आना, कुछ समय देने के लिए आना, कुछ अक्ल देने के लिए आना । मित्रो, अब हमें उन लोगों को बुलाना है जो आशीर्वाद देने में समर्थ हो सकें, हमारे कंधे से कंधा मिला सकें । जो हमारा गोवर्धन उठाने में लाठी का टेका लगा सकें । जो हमारे समुद्र पर पुल बाँधने में ईंट और पत्थर ढो सकें और गाँधी जी के कंधे से कंधा मिलाकर जेल जा सकें । हमने सारे विश्व को अपना कार्यक्षेत्र बना लिया है । अब हम हर एक आदमी को बुलाएंगे और उसी स्तर के लिए उसमें प्राण फूँकेंगे । आप लोग इन योजनाओं में हमारी सहायता करना । भगवान ने हाथ पसारा है । हमने आपके सामने हाथ पसारा है । हमारे गुरुदेव ने हमारे सामने हाथ पसारा था । विवेकानंद के सामने रामकृष्ण ने हाथ पसारा था, चाणक्य ने चंद्रगुप्त के सामने और समर्थ गुरु रामदास ने शिवाजी के आगे हाथ पसारा था । भगवान की हथेली पर रखने वाला आदमी कभी घाटे में नहीं रहा । आप भी घाटे में नहीं रहेंगे । हम आपके आगे हाथ पसारते हैं, आपका श्रम माँगने के लिए, समय माँगने के लिए, आपकी क्षमता माँगने के लिए, आपकी भावना मांगने के लिए । अगर आप देंगे तो विश्वास कर सकते हैं कि हमारे खेत में अगर बीज बोएंगे तो हमारी जमीन उसको खाने वाली नहीं है । हम आपको हजार गुना फल उगाकर देंगे और आपको निहाल कर देंगे । आप कुछ दीजिए तो सही हमको । आप देना नहीं चाहते क्या ? आप दीजिए, अपना श्रम दीजिए, समय

दीजिए, भावना दीजिए, यही है आपके सामने आज के प्रज्ञावतार की अपील, युग के देवता की अपील, महाकाल की अपील और हमारी अपील । आप कुछ करना चाहते हों तो करना । आज की बात अब खत्म करते हैं ।

ॐ शांतिः । *(४ अगस्त १९८३)*

देवत्व विकसित करें, कालनेमि न बनें

(परमपूज्य गुरुदेव का प्रस्तुत प्रवचन सूक्ष्मीकरण साधना के तुरंत बाद जन-साधारण के समक्ष पर्वों पर दिए गए उद्बोधनों में अंतिम व अत्यधिक महत्वपूर्ण है । गुरु पूर्णिमा १९८६ के बाद वे कभी शांतिकुंज के मुख्य मंच पर नहीं आए ।)

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ बोलें,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि
धियो यो नः प्रचोदयात् ।
ॐ अखंड मंडलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् ।
तत्पदं दर्शितम् येन तस्मै श्री गुरुवे नमः ।।

देवियो, भाइयो ! बहुत पुराने समय की बात है जब रावण सीता जी को चुरा कर ले गया था और सबके सामने यह समस्या थी कि उसका मुकाबला कैसे किया जाए ? रावण से युद्ध कैसे किया जाए ? बहुत सारे लोग थे, राजा-महाराजा भी थे, पर किसी की हिम्मत नहीं पड़ी कि रावण से लड़ने के लिए जाए, कौन अपनी जान गँवाए, कौन मुसीबत में फँसे ? इसलिए कोई भी तैयार नहीं हुआ । रामचंद्र जी कहने लगे कि क्या कोई भी लड़ने हमारे साथ नहीं जाएगा ? तो फिर क्या हुआ ? देवताओं ने विचार किया और कहा कि भगवान के काम में हमको सहायता करनी चाहिए और सुग्रीव की सेना में, हनुमान की सेना में सम्मिलित होकर रावण से लड़ने के लिए चलना चाहिए । देवताओं ने बंदर का रूप बनाया, रीछ का रूप बनाया । कहाँ रावण और कहाँ बेचारे बंदर, दोनों का कोई मुकाबला नहीं था, फिर भी वे लड़ने के लिए चल पड़े, क्यों ? क्योंकि वे देवता थे । देवता न होते, अगर रीछ-बंदर रहे होते तो पेड़ों पर कुदक रहे होते, मचल रहे होते, बच्चे पैदा कर रहे होते, कुछ और काम कर रहे होते, फिर वे सीता जी को छुड़ाने के लिए रामराज्य की स्थापना के लिए, लंका को तहस-नहस करने के लिए भला इस तरह के कार्य कैसे कर सकते थे ? लेकिन उन्होंने किया । आप लोगों को मैं रीछ और बंदर के

रूप में देवता मानता हूँ । आज फिर उसी ऐतिहासिक घटना की पुनरावृत्ति होने जा रही है । आप लोग पहले जन्म के देवता हैं । अकेले में जब कभी आपको शांति का समय मिले, एकांत का समय मिले तब आप अपने अंदर झांक कर देखना कि आप रीछ-बंदर हैं या देवता हैं । वास्तव में आप देवता हैं । देवताओं के सिवाय आड़े वक्त में कोई और काम नहीं आ सकता, देवता ही काम आते हैं । आप लोगों में से हर एक को मुझे यही कहना है कि आपको जब कभी अपने आप में मौका मिले तो कहना कि गुरुपूर्णिमा के दिन गुरुजी ने कहा था कि हमारे भीतर देवता बैठा हुआ है, देवता विराजमान है । देवता जो काम किया करते हैं, वे जिस काम के लिए अपना जीवन लगाया करते हैं, जिसके लिए पुरुषार्थ किया करते हैं, वही पुरुषार्थ हमारे सुपुर्द किया गया है ।

एक बात तो मुझे आपसे यही कहनी थी । दूसरी बात यह कहनी थी कि जब महाभारत हुआ था, तब अर्जुन यह कह रहा था कि हम तो पाँच पांडव हैं और कौरव सौ हैं और उनके पास विशाल सेना भी है, जबकि हमारे पास सेना भी नहीं है, थोड़े से पाँच-पचास आदमी हैं । ऐसे में भला युद्ध कैसे हो सकता है । हम मारे जाएंगे । इसलिए वह बार-बार मना कर रहा था और कह रहा था कि महाराज हमें लड़ाइए मत, इसमें हमको सफलता नहीं मिल सकती । आप हिसाब लगाइए कि इनसे लड़कर हम फतह कैसे पा सकेंगे ? जीत कैसे सकेंगे ? तब भगवान ने उससे कहा था कि देखो अर्जुन, इन सबको तो मैंने पहले से ही मार कर रखा है और तुम्हारे लिए सिंहासन सजाकर रखा है । तुम पाँचों को सिंहासन पर बैठना पड़ेगा, राज्य करना पड़ेगा और कौरवों को मारना पड़ेगा । ये तो सब मरे-मराए रखे हैं, तुम तो खाली तीर-कमान चलाओगे । इसी तरह जो काम मेरा था सो मैंने करके रखा है । इस युग को बदलने के संबंध में जो महत्वपूर्ण कार्य करने हैं उनके संबंध में आपको तो श्रेय भर लेना है । जीतना किससे है और हारना किससे है ? न किसी से हारना है, न किसी से जीतना है । न किसी को मारना है और न कोई पुरुषार्थ करना है । आपको तो जो विजयी होने का श्रेय मिलना चाहिए और वही श्रेय आपको प्राप्त करना है । अर्जुन ने भी प्राप्त किया था । इससे पहले जब वह ज्यादा बहस करने लगा था कि मेरे बाल-बच्चे हैं, मेरा काम हर्ज हो जाएगा, फलाना हो जाएगा, मुझे टाइम नहीं है, तब कृष्ण भगवान झल्ला पड़े और फिर उन्होंने एक हुक्म दिया-'तस्मात् युद्धाय युजस्व' लड़, दुनिया भर

के बहाने मत बना, लड़ाई कर । भगवान हमारा क्या होगा ? यह पूछने पर श्रीकृष्ण ने कहा था कि तेरी जिम्मेदारी हम उठाते हैं, तू तो युद्ध कर ।

साथियो, आज गुरुपूर्णिमा का दिन है, आप में से हर एक आदमी की, देवता की जिम्मेदारी हम उठाते हैं । देवता जब रीछ-बंदर बनकर चले आए थे तो पीछे उनके घर बीवी-बच्चे रह गए थे, कुटुंब रह गया था, उन सबको भगवान ने संभाला था । आपके घर को संभालने की, व्यापार को संभालने की, खेती-बाड़ी को संभालने की, हारी-बीमारी को संभालने की जिम्मेदारी हमारी है और आपकी यह सब जिम्मेदारियाँ हम उठाते हैं । आप हमारा काम कीजिए हम आपका काम करेंगे । हम आपको यकीन दिलाते हैं, आप हमारा विश्वास कीजिए हम आपका काम जरूर करेंगे । पिता ने बच्चे का हर काम किया है । पिता से बच्चे ने जब जो माँगा है, दिया है । जब टॉफी माँगी है तो टॉफी दी है, झुनझुना माँगा तो झुनझुना दिया है । तुम तो छोटे बच्चे हो, इसलिए यही माँगते रहते हो । आते ही यह माँगते रहते हो । अब आगे से जो भी कहना हो बेटे लिखकर दे जाना । लिखना और कहना बराबर है और फिर हमारा जवाब सुनते जाना और नोट करके ले जाना कि गुरुजी ने यह वायदा किया है कि चौबीस पुरश्चरणों का जो पुण्य पहले कमाया था उसका, और अब हमको तीन साल हो गए हैं, एकांत मौन रहकर साधना की है, उसकी पुण्य संपदा जो हमारे पास जमा है, उसमें आपका हिस्सा बराबर है । माँ के पेट में जब बच्चा आता है तब कानूनन उसका हक बाप की जायदाद पर हो जाता है । इसी तरह हमारी कमाई पर आपका हक है । प्रार्थना मत कीजिए, निवेदन मत कीजिए, मनुहार मत कीजिए, वरदान मत माँगिए । आप अपना हक माँगिए कि हम आपका काम करते हैं और आपको हक चुकाना पड़ेगा । आप बीमार रहते हैं तो हम आपकी बीमारी को अच्छा करेंगे । आप पैसे की तंगी में आ गए हैं तो हम उस तंगी को भी दूर करेंगे । आप लड़ाई-झगड़े में फँस गए हैं तो हम उसमें भी आपकी मदद करेंगे । आप पर मुसीबत आ गई है तो हम आपकी ढाल बनकर उस मुसीबत को रोकेंगे ।

श्रीकृष्ण ने अर्जुन का रथ चलाया था, आपका रथ हम चलाएंगे । काहे का रथ ? आपके कारोबार का रथ, आपके व्यापार का रथ, आपके धंधे का रथ, आपके शरीर का रथ, आपकी गृहस्थी का रथ-यह सब हम चलाएंगे, इसका हम वायदा करते हैं, लेकिन साथ-साथ आपसे यह निवेदन भी करते हैं कि आप हमारे रास्ते पर आइए, साथ-साथ चलिए । हमारे कंधे से कंधा

मिलाइए । इसमें आपको कोई नुकसान नहीं होगा । आप यह यकीन रखिए हमने उन विरोधियों को मार कर रखा है और विजय की माला आपके लिए गूँथ कर रखी है । पाँचों पांडवों के लिए विजय की मालाएं बनी हुई रखी थीं, मात्र उनके गले में पहनानी भर थीं । आपके लिए भी मालाएं रखी हैं, मात्र आपको पहनना है, आपको श्रेय भर लेना है । यह जो नवयुग का क्रम चल रहा है, उसमें जब आप भागीदार होंगे तो श्रेय आपको ही मिलेगा । तो गुरुजी हमारे बीवी-बच्चों का क्या होगा ? बेटे, उनकी जिम्मेदारी हमारी है । यदि वे बीमार रहते हैं तो हम उनकी बीमारियाँ दूर कर देंगे । व्यापार में नुकसान होता है तो तेरे उस नुकसान को पूरा करना हमारी जिम्मेदारी है । तेरे व्यापार में जो घाटा पड़ जाए तो तू हमसे वसूल कर ले जाना । लेकिन जब बच्चा बड़ा हो जाता है तब कुछ बड़ी चीज दी जाती है जो छोटे बच्चे को नहीं दी जा सकती । अब आप जवान हो गए हैं । अब कोई बच्चा नहीं दिखाई पड़ता, आप सब जवान हो गए हैं । अब हम सबको काम-धंधे से लगाएंगे और जो हमारे पास बाकी बचा है वह भी आप सबको बाँट देंगे । नहीं गुरुजी, जब आप जाएंगे तब अपनी कमाई भी अपने संग ले जाएंगे ? बेटे, हम ऐसा नहीं करेंगे । हम आपको यकीन दिलाते हैं कि हमारी जो भी कमाई है वह सब आपको देकर जाएंगे चाहे वह पुण्य की कमाई हो, चाहे वह सांसारिक कमाई हो, चाहे आध्यात्मिक हो । उस कमाई में तुम्हारा हिस्सा है ।

साथियों, हमने जीवन भर दिया है । बाप-दादों की दो हजार बीघे जमीन थी, वह हम दे आए और स्त्री के पास जेवर था वह भी हम दान में दे आए । बच्चों की गुल्लक में पैसे थे वह भी हम दे आए । अब आपके पास कुछ और धन है ? नहीं बेटे, धन के नाम पर एक कानी कौड़ी का लाखवां हिस्सा भी हमारे पास नहीं है । आपको तलाशी लेना हो या मरने के बाद पता लगाना हो कि गुरुजी के पास क्या मिला, तो मालूम पड़ेगा कि शांतिकुंज में एक ऋषि रहा करता था और यहाँ की रोटी खाया करता था, और सारे दिन चौबीसों घंटे काम करता था । बेटे, धन के नाम पर हमारे पास कुछ भी नहीं है, लेकिन हाँ एक पूँजी है हमारे पास, यदि वह न होती तो हम इतनी बड़ी बात क्यों कहते ? हमारे पास वह पूँजी है तप की, जिसको हम सामान्य क्लास का कहते हैं । जिससे हम आपकी मुसीबतों में, कठिनाइयों में सहायता कर सकते हैं । दूसरा वह जिसमें हम आपको संसार का नेता बनाना चाहते हैं । हमको भगवान ने नेता बनाकर भेजा है । चाणक्य को नेता बनाकर भेजा

था । वह नालंदा विश्वविद्यालय के डीन थे । अब्राहम लिंकन को, जार्ज वाशिंगटन को, गारफील्ड को नेता बनाकर भेजा था । बिनोवा को नेता बनाकर भेजा था । हम भी आप में से हर एक आदमी को नेता बनाना चाहते हैं, नेता बनाने की हमारी इच्छा है । आपकी इच्छाएं क्या हैं, यह हमको मालूम हो या न हो तो आप लिखकर दे जाना । हमारा एक क्रम है । जब हम बैठते हैं तब देख लेते हैं । रात में हमारा क्रम पूजा-उपासना का रहता है । सवेरे से लेकर दोपहर तक हम अपना लेख लिखते हैं ताकि अखण्ड-ज्योति बीस साल तक बराबर निकलती रहे । बीस साल के लिए लेख और जो पुस्तकें लिखनी हैं, वह सब हम लिखकर रख जाएंगे । जब यह युगसंधि समाप्त होगी और सन् २००० आएगा, उस वक्त तक आप यह अनुभव करेंगे कि गुरुजी जो लिखकर रख गए थे, उनकी लेखनी में कोई फर्क नहीं आया, उनके अक्षरों में कोई फर्क नहीं आया । उनकी पुस्तकों में, पत्रिकाओं में कोई फर्क नहीं आया है । मिशन में कोई फर्क नहीं आया है और न ही आएगा । दोपहर बाद तो अब हमने मिलना भी शुरू कर दिया है । पाँच-पच्चीस आदमी को ऊपर बुला भी लेते हैं । यह हमारा दोपहर से शाम तक का क्रम है । इस तरीके से कभी आएंगे तो जब किसी को बहुत जरूरी काम हो तो मिल लेना । सांसारिक कठिनाइयाँ हों तो माता जी से कह देना । यह महकमा मैंने माता जी के जिम्मे कर दिया है । संसार की आपको जितनी कठिनाइयाँ हों, सब माता जी से कहिएगा । कोई आध्यात्मिक बात हो या कुछ ऊँचा उठना हो तो फिर हमारे पास आना । बड़ा कदम नहीं उठाना है, अपनी कोई मुसीबत कहनी है तो माताजी से कह दें और कोई बड़ा कदम उठाना है तो हमारे पास आवें । हम आपके बड़े कदम उठाने में मदद करेंगे । हमने इस दुनिया में बड़े कदम उठाए हैं और बड़े कदम उठाने के लिए आपसे भी कहते हैं । दो बातें हो गई हैं आप ध्यान रखना ।

एक और बात मैं अपने सबूत में आपको बताता हूँ जो विश्व के एक बहुत बड़े भविष्यवक्ता ने सैकड़ों वर्ष पूर्व कही थी । संसार में ऐसे भविष्यवक्ता तो बहुत से हैं जो हाथ देखकर यह बताते हैं कि तेरा विवाह कब हो जाएगा, पैसा कब आएगा, कब क्या हो जाएगा । इसी तरह जन्मपत्री बनाने वाले बहुत से लोग हैं, किंतु दुनिया में एक ऐसा व्यक्ति भी हुआ है जिसने सारे संसार की राजनीति के बारे में लिखा है जिसमें आठ सौ भविष्यवाणियाँ सही हो चुकी हैं । एक हजार वर्ष पहले हुआ था वह, नाम था-नास्ट्राडोमस ।

उसने ऐसी भविष्यवाणियाँ की थीं जो एकोएक सौ फीसदी सही हो जाती थीं । ब्रिटेन का तब नामोनिशान नहीं था जब नास्ट्राडोमस पैदा हुआ था । स्काटलैंड था, आयरलैंड था, इंग्लैंड था, पर ब्रिटेन नहीं था, लेकिन उसमें लिखा था कि ब्रिटेन बनेगा, इतने दिनों तक राज्य करेगा और सन् १९४२ में इसका सीराजा बिखर जाएगा और तब जितना भी उसका राज्यमंडल है सब खत्म हो जाएगा । वह सब एक-एक अक्षर सही हुआ । यह तो नमूने के लिए बता रहा हूँ । उसकी ऐसी भविष्यवाणियाँ कवितामय पुस्तक में लिपिबद्ध हैं जिसे फ्रांस के राष्ट्रपति मितरा सिरहाने रखकर सोया करते हैं । उस कवितामय पुस्तक पर हजारों आदमियों ने टिप्पणियाँ की हैं । उसी में से एक आप अखण्ड-ज्योति के अगले अंक में पढ़ेंगे जो उसने हिंदुस्तान के बारे में की है । उसकी भविष्यवाणी है कि हिंदुस्तान का अध्यात्म और पाश्चात्य का तत्व विज्ञान-यह दोनों आपस में मिल जाएंगे, पाश्चात्य भौतिक विज्ञान और अध्यात्म मिल जाएंगे, रूस और हिंदुस्तान मिल जाएंगे, चीन से अमेरिका की लड़ाई हो जाएगी, आदि-आदि बहुत सी भविष्यवाणियाँ हैं । उन बहुत सी भविष्यवाणियों में से आपके काम की एक ही है कि हिंदुस्तान सारी दुनिया का नेतृत्व करेगा जैसा कि आजकल अमेरिका कर रहा है । चाहे वह बम बनाए, चैलेंजर बनाए, स्टारवार की योजना बनाए, किंतु बाद का नेतृत्व भारत करेगा । हिंदुस्तान को सारी दुनिया का नेतृत्व करने के लिए बड़े कर्मठ व्यक्ति चाहिए, बड़े शक्तिशाली और क्षमता संपन्न व्यक्ति चाहिए, बड़े लड़ाकू योद्धा चाहिए, बड़े इंजीनियर चाहिए, बड़े-बड़े समर्थ आदमी चाहिए और वही मैं तलाश कर रहा हूँ । बेटे, तुममें योग्यता नहीं है तो तुम्हें योग्यता हम देंगे । तुम्हारी खेती-बाड़ी को ही नहीं संभालूँगा वरन योग्यता भी दूँगा ताकि तुम संसार का नेतृत्व कर सको ।

नालंदा विश्वविद्यालय की तरीके से हमने यहाँ नेता बनाने का एक विद्यालय बनाया है । नालंदा विश्वविद्यालय में चाणक्य जहाँ पढ़ाता था उसमें दस हजार विद्यार्थी पढ़ते थे एक साथ । हमारी भी इच्छा है कि हम दस हजार विद्यार्थी एक साथ पढाएं, पर यहाँ इतने विद्यार्थियों के लिए जगह नहीं है । अभी यहाँ कल तक साढ़े अट्ठाइस सौ आदमी थे, आज चार हजार हो गए हैं । ठूँस-ठूँस कर भी रखना चाहें तो चार हजार से अधिक व्यक्ति नहीं आ सकते, जबकि हमारा मन है कि जिस तरीके से चाणक्य दस हजार आदमियों को पढ़ाता था और पढ़ाकर के हिंदुस्तान से लेकर सारे विश्व में अपने आदमी

भेजता था । चंद्रगुप्त को उसने चक्रवर्ती राजा बनाया था । हमारी भी इच्छा है कि ऐसे-ऐसे नेता बनाएं, पर बना नहीं सकते क्योंकि जगह हमारे पास कम है । ऐसे में पढ़ा नहीं सकते । तो फिर क्या योजना है ? कुछ नई स्कीम है जो आज गुरुपूर्णिमा के दिन कहना है और वह यह है कि प्रज्ञा विद्यालय तो चलेगा यहीं, क्योंकि केंद्र तो यही है, शक्ति का उद्‌भव यहीं होगा । जेनरेटर तो यहीं लगेगा, लेकिन जगह-जगह प्रज्ञा पाठशालाओं की स्थापना हमें करनी है । इसके लिए आप सब जितने भी आदमी हैं, उनको एक काम सौंपते हैं । एक महीने की प्रज्ञा पाठशालाएं तो यहीं होंगी, पर पंद्रह दिन की पाठशाला क्षेत्रों में शक्तिपीठों पर चलेंगी । यहाँ बड़े साइज का प्रमाण-पत्र उत्तीर्ण होने पर दिया जाता है, पर वहाँ छोटे साइज का दिया जाएगा । परीक्षा ली जाएगी और वहाँ भी हम नेता बनाएंगे । आपको हम हिंदुस्तान का ही नहीं, सारे विश्व का नेता बनाने वाले हैं । हिंदुस्तान में हमने दस-दस गाँवों के खंड काटे हैं और उन्हें एक-एक व्यक्ति के सुपुर्द किया है और कहा है कि आप अपने यहाँ प्रज्ञा पाठशालाएं चलाएं । पिछले साल आप लोगों ने हमारे कहने पर किसी ने यज्ञ किए, किसी ने शक्तिपीठ बनाए, किसी ने क्या किया, हजारों काम बताए और लोगों ने किए हैं । इस वर्ष अब आप सब लोग यह विचार लेकर जाएं कि या तो हम प्रज्ञा पाठशाला चलाएंगे या चलवाएंगे । इस कार्य में कोई रुकावट नहीं आवेगी ।

आज गुरुपूर्णिमा के दिन से आप लोग एक काम यह करना कि हमेशा यह अनुभव करना कि आप देवता हैं । रीछ-बंदर का लिवास पहने बैठे हैं । कोई कुर्ता पहने बैठा है, कोई धोती पहने बैठा है, कोई चश्मा लगाए बैठा है, तो कोई कुछ किए बैठा है, पर आप हैं वास्तव में देवता जो किसी खास काम के लिए, खास उद्देश्य के लिए, किसी खास निमंत्रण पर आप काम करने के लिए आए हैं । यह हुई बात नंबर एक । दो जो आपको मुश्किल जान पड़ती है कि संसार में से बुराइयाँ कैसे दूर होंगी और अच्छाइयों की वृद्धि कैसे होगी ? इस संबंध में नोस्ट्राडोमस की राजनीतिक भविष्यवाणी तो हमने बता दी है और अब अपनी स्वयं की भविष्यवाणी बताते हैं कि हमने आपके बैरियों को, दुश्मनों को मार दिया है । वे मरे हुए रखे हैं और आपके लिए श्रेय जीवित है, सौभाग्य जीवित है । आपके लिए मुकुट जीवित है, बड़प्पन जीवित है, आप उस बड़प्पन को उठा लेना । आज आप से तीसरी बात यह कहनी थी कि नालंदा विश्वविद्यालय बनाने का हमने संकल्प लिया था कि

एक लाख कार्यकर्ता हम देश को, समाज को, विश्व को देंगे । इस काम में आप लोग हमारी मदद कीजिए और पंद्रह-पंद्रह दिन के लिए अपने यहाँ प्रज्ञा पाठशाला चलाने के लिए कोशिश कीजिए । हम वहाँ पढ़ाने के लिए तो नहीं आएंगे, पर अपनी शक्ति देंगे, अपनी बुद्धि देंगे, अपनी भावना देंगे, अपना प्राण देंगे, अपना जीवट देंगे-सब चीज देंगे इसलिए जब आदमी जाएगा तो कुछ का कुछ होकर जाएगा ।

कितने काम हो गए-तीन । एक और काम कहता हूँ, उसे ध्यान से सुनना । हमने जो लड़ाई छेड़ी है वह दुष्प्रवृत्तियों के विरुद्ध छेड़ी है और सत्प्रवृत्तियों के संवर्द्धन की छेड़ी है । रामराज्य की स्थापना की छेड़ी है और लंका दमन की छेड़ी है । यह काम बहुत बड़ा है और इसमें कुछ मुसीबतें भी आएंगी, पर उन मुसीबतों को आप तक नहीं पहुँचने देंगे । उन मुसीबतों को अपने ऊपर लते रहेंगे । राणा सांगा जो था, उसे जहाँ कहीं भी दीखता कि उसके साथियों पर गाज गिरी, उनके ऊपर तलवार गिरी, वह भागकर वहीं आ जाता था और उनके बदले का भाला, तलवार अपने शरीर पर झेल जाता था । उसने ढेरों आदमी इस तरह बचा दिए थे । जब उसके शरीर पर अस्सी घाव हो गए तब वह बेहोश हो गया और अपना काम बंद कर दिया । अस्सी घाव खाने तक तो कोई भी मुसीबत आपके ऊपर नहीं आवेगी । मुसीबत आएगी तो हमारे ऊपर आएगी । पहले भी आई थी । श्रीकृष्ण भगवान के पास आई थी । रामचंद्र जी पर भी मुसीबत आई थी । सीताहरण हो गया था । किसी का क्या हो गया । लेकिन हमारे ऊपर एक और तरह की मुसीबत आएगी जिसकी जानकारी आपको देना चाहता हूँ । वह मुसीबत इस तरह की है जैसी कि कालनेमि ने पैदा की थी । कालनेमि रावण का कुटुंबी था । स्कंद पुराण में कथा आती है कि वह सबकी बुद्धि बिगाड़ देता था । बड़ा भाई कुंभकरण था । उसने योगाभ्यास किया, तप किया । वह चाहता था कि ६ महीने जगा करूँ और एक दिन सोया करूँ, लेकिन कालनेमि ने उसकी ऐसी बुद्धि बिगाड़ दी, भ्रष्ट कर दी कि कुंभकरण यह माँगने लगा कि ६ महीने सोया करूँ और एक दिन जगा करूँ । अगर वह ६ महीने जगा होता तो रावण का ढेर हो गया होता । इसी तरह मारीचि ने भी तप किया था । वह स्वर्ग चाहता था, पर कालनेमि ने उसकी ऐसी बुद्धि भ्रष्ट की और कहा कि तू यह मत माँग कि मैं स्वर्ग जाऊँ, वरन यह माँग कि सोने का हिरण बन जाऊँ । कारण चमड़े वाले को तो मारता है एक आदमी पर सोने वाले को मारेंगे सौ आदमी । बेचारा

छिपा-छिपा बैठा रहता था अपने वेष को बनाए । एक बार सोने का वेष बनाया, सो सीता जी के कहने पर रामचंद्र जी ने उसे मार डाला ।

कालनेमि की कथा सुना रहा हूँ-स्कंद पुराण की आपको । पूतना के कोई बालक-बच्चा नहीं था । कालनेमि ने उससे कहा कि तेरे बच्चा नहीं होता है तो तू जादू का मंत्र लेकर जा और श्रीकृष्ण को दूध पिला दे । तेरा दूध पिएगा तो अपनी मम्मी को भूल जाएगा और तेरे पास रहने लगेगा । कालनेमि के बहकावे में आकर पूतना बेचारी गई कि मेरे बेटा नहीं होता तो बेटा ले आऊँ और बेटा तो मिला नहीं, उल्टे थुक्काफजीहत और हुई । सूपणखा से कालनेमि ने कहा-तू ब्याह करेगी ? उसने कहा-हाँ । वह बोला-राक्षस तो काले-कलूटे होते हैं, माँस खाते हैं, शराब पीते हैं, तुझे गाली भी देंगे और मारेंगे भी । हम तुझे ऐसा दूल्हा बताते हैं कि उससे खूबसूरत तुझे दुनिया में कहीं नहीं मिलेगा । बस तेरे जाने भर की देर है, तू गई और ब्याह हुआ । दूल्हे का नाम राम है । उनके पिता के तीन ब्याह हुए थे, राम के भी दो ब्याह करा देंगे । सीता जी भी बनी रहेंगी और तू भी बनी रहेगी और राजगद्दी पर बैठेगी । तू गोरी होगी और तेरे बच्चे भी गोरे होंगे । सूपणखा कालनेमि के बहकाने पर रामचंद्र जी के पास गई और अपनी फजीहत कराकर लौटी । उसकी बुद्धि जो बिगाड़ दी थी कालनेमि ने । मंथरा की भी बुद्धि बिगाड़ दी थी उसने । उससे कहा कि भरत के साथ तेरा ब्याह करा देंगे । ये जो कैकेई है वह जाएगी मर और तू रानी बनेगी, राज्य करेगी । उसको समझा करके भरत के लिए राज्य माँग ले । मंथरा की ऐसी बुद्धि बिगाड़ी कि उसने कैकेई को पट्टी पढ़ाकर अपना काम बनाना चाहा । इस तरह दुनिया भर की अंडम-बंडम करके उसने मंथरा की भी मिट्टी पलीद की ।

कालनेमि की जो यह घटना है वह हमारे ऊपर भी लागू होती है । हमारे प्राणों से प्यारे बच्चे, हमारे हृदय के टुकड़ों को अलग करके, बहका करके इनको हमसे दूर करने की कोई कालनेमि कोशिश कर रहा है । तो गुरुजी आपका नुकसान हो जाएगा ? नहीं, बेटा, हमारा क्या नुकसान हो जाएगा । अभी ये लड़के गा रहे थे-'कोई साथ न दे तो अकेला चल ।' अकेले चल देंगे हम । अकेले वामन ने सारी जमीन नापी थी । अकेले परशुराम ने सारी पृथ्वी पर से इक्कीस बार भार उतारा था और अकेले हम भी कम नहीं हैं, लेकिन हमको अपने बच्चे प्यारे लगते हैं । बच्चों को कोई छीन न ले जाए, चुरा न ले जाए, अगर कोई घर में से बच्चों को उठा ले जाए तो माँ-

बाप को दुःख होता है । हमें भी दुःख होता है जब कोई कालनेमि हमारे बच्चों को हमसे दूर कर देता है, बागी कर देता है । अपने ये जो चौबीस हजार बच्चे हैं उनकी हमें फिकर है कि कोई कालनेमि उनकी बुद्धि को भ्रष्ट न कर दे । कालनेमि से हमारा नुकसान है । उसकी हमें फिकर रहती है और कोई फिकर नहीं । न मिशन की फिकर रहती है और न मरने की, न काम की । मिशन बढ़ रहा है ओर वह बढ़ेगा ही । काम भी हो रहा है । उसकी फिकर थोड़े ही है । काम तो बढ़ ही रहा है । गंगा में बाढ़ तो आएगी, रुकेगी नहीं । उसे कोई रोकने वाला नहीं है । मिशन के लिए हम नहीं कहते कि आप कोई सहायता कीजिए । कहते हैं तो इसलिए कि नफा होगा आपको । आप नेता हो जाएंगे । सरदार पटेल, नेहरू, आर्ज वाशिंगटन, अब्राहम लिंकन बन जाएंगे । नेता बनना जिनको पसंद होवे आगे आएं, कदम से कदम और कंधे से कंधा मिलाकर चलें । साथ नहीं चलेंगे तो योग्य आदमी कैसे बनेंगे ?

आज और कुछ नहीं कहना है, केवल इतना ही कहना है कि जो हमारे बच्चे हैं, जिनको हमने पैदा किया है, पाला है, वे हमारी छाती से अलग न होने पावें । आप हमारी छाती से अलग हो जाएंगे तो हमें बहुत दुःख होगा, कष्ट होगा । किसी और बात से हमें दुःख नहीं होगा, पर जब ये छोटे-छोटे बच्चे जिनसे हमने बड़ी-बड़ी उम्मीदें लगाकर रखी हैं, वे अगर बागी होते दीखेंगे, विरोधी होते हुए दीखेंगे तो हमें बेहद कष्ट होगा । कालनेमि से तो कहना ही क्या है वह तो भगवान ने ही बनाया है । अगर वह न होता तो लंका का सत्यानाश क्या होता ? रावण सीताजी को नहीं चुराता जो कालनेमि की माया ही थी तो किसकी हिम्मत थी जो रावण सहित लंका का सफाया करता । जहाँ कहीं भी कालनेमि गया वहीं हाहाकार पैदा किया । बस चौथी बात यही कहनी है कि हमारा कोई भी बच्चा हमारी छाती से अलग न होने पाए । कोई चोर, कोई बाबाजी इन्हें अपनी झोली में डालकर ले जाएगा तो हमको दुःख होगा कि हमारा प्यारा बच्चा हमसे दूर हो गया । कितना कष्ट होगा आप नहीं समझते । आपने तो नेतागीरी देखी । जनता पार्टी की फजीहत देखी है कि किसी तरीके से फूट डाली जाती है और कैसे अलग किया जाता है । आपने तो यही किस्से देखे हैं, वे किस्से नहीं देखे हैं कि मिल-जुलकर कैसे रहते हैं ? एक होकर कैसे रहते हैं ?

चार बातें हो गईं बेटा अच्छा ध्यान रखना । हमने एक बात तो यह कही है कि आप रीछ-वानर के रूप में देवता हैं । दूसरी यह कि तुम्हें श्रेय देने के

लिए दुश्मनों को मारकर रख दिया है और तुम्हारे लिए राज सिंहासन बनाकर रख दिया है । तुम उसको ग्रहण करना । तीसरी बात यह कि तुम अपनी व्यक्तिगत कठिनाइयों के बारे में परेशान मत होना । तुम्हारी व्यक्तिगत कठिनाइयाँ कौन हल करेगा ? हमारा पुण्य, हमारा तप करेगा । हमारा पुण्य जो पिछले समय से आया है, वह हर एक के काम आएगा और किसी के काम नहीं आएगा । हमारा काम रुकने वाला नहीं है, वह बढ़ता ही जाएगा । बस आप तो अपने आपको कालनेमि से बचाए रखना । बहक जाएंगे तो हमें दुःख होगा कि हमारा कैसा प्यारा बच्चा था । कितने प्यार और मोहब्बत से इसको हमने पाला था, और देखो आज यह कहाँ फिर रहा है । चोरों के यहाँ फिर रहा है, भिखारियों के यहाँ फिर रहा है । कहाँ-कहाँ धक्के खा रहा है । ऐसा आप लोग मत करना । यह चार बातें कहनी थीं आपसे । वसंत पंचमी के बाद अब व्याख्यान दिया है । आज इतना ही बहुत है । इन्हीं बातें पर बार-बार विचार करना । आपके काम की देखभाल हम करेंगे । आप देवता हैं, ध्यान रखना । आपको श्रेय लेना है, सिंहासन लेना है । आपको नेता बनना है और किसी झोली वाले बाबाजी से होशियार रहना है कि वह झोली में डालकर भाग खड़ा नहीं हो । बस आपसे बिदा लेते हैं ।

ॐ शांतिः । *(गुरुपूर्णिमा संवत् २०४३, जुलाई १९८६)*

मुद्रक: युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा